अर्पण पत्रिका.

रा. सा. शेठ वसनजी त्रीकमजी जे. पी.

ज्ञान नक्तिजावित, श्रावकरत्न,

आप आर्हत धर्मना उत्तम उपदेशने ग्रहण करनारा छो, ते उपदेशना पूर्ण अधिकारी छो, अने ते उपदेशनी असरथी उपदेशनी सार्थकता करवाने सदा तत्पर रहेनारा छो, इत्यादि आपना उत्तम गुणोने आधीन थइ आ उपदेश ग्रंथ के जे आर्हत धर्मना समर्थ उपदेशक श्री हरिजद्रसूरिनी उपदेश वाणीरुप सुधानो शीतळ प्रवाह छे. तेने आपना निर्मळ नामथी अंकित एवी ग्रंथमाळामां मणका रुपे गुंथी आमे अति आनंदित थइए छीए.

आमो छीए आपना धर्मबंधुओ,

श्री जैन धर्म विद्या प्रसारक वर्गना—व्यवस्थापको.

प्रस्तावना.

जे समय आ भारत मंडळने पूर्वना महोपकारी जैन महर्षिओथी सुशोभित, सनातन आर्हत धर्मरुप प्रचंड मार्तंडनी प्रकाशित अने विविध विश्वोपकार, सदाचरण, जिनपूजा, जैनतीर्थयात्रा, तथा दान, शील, तप अने भाव ए चतुर्विध धर्मभाग सर्व प्राणीओना कर्मकलापने भस्म करतो हतो, तथा त्रिकरणशुद्धिपूर्वक धर्म अने शुक्ल ध्यानमां आरुढ थयेल पवित्र वृत्तिओथी भव्य प्राणीओने आलिंगित करी अने दिव्य केवल ज्ञान तथा केवल दर्शनना धारणहार पुरुषोने अलंकृत करी, ऐहिक तथा पारलौकिक विषयोथी विमुखता संपादन द्वारा सिद्धशिलाना सानिध्यमां परमानंदरुप मोक्षमहोदधिमां निमग्न करी देतो हतो, तेज समय आज सनातन आर्हत धर्ममार्गने तिरोहित करनारा दुराचार, कुरीवाज अने कुसंस्काररुप अंधकारोने फेलावी प्राचीन पवित्र पद्धतिने विलुप्त करी दीधी छे. इर्ष्या, राग, द्वेष, कुसंप, स्पर्धा विगेरे दुर्गुणोनुं दल प्रसारी आर्हत प्रजानी उन्नतिना मार्गने आच्छादन करी दीधो छे.

ए सांप्रतकाळरुप प्रचंड पवने साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविका ए चतुर्विध संघरुप चार समुद्रने डोळी नाखवा मांड्या छे. समतारसने धारण करनारा साधुओ परस्पर विषमतानी विपत्तिमां आवी पड्या छे. द्वादशव्रतना अधिकारी केटलाएक श्रावको परस्पर इर्ष्या दोषरुप दावानळमां दग्ध थता जाय छे. आवा समयमां शुं करवुं उचित छे ? तेने माटे विचार करतां मालुम पडे छे के, पूर्वना महर्षिओना सद्विचारो, सदाचारो अने सत्प्रवर्त्तनोना संग्रहरुपे लखाएला ग्रंथोना आविर्भाव करी, जैन प्रजा समक्ष रजु करवा अने तेमना उत्तम उपदेशोने जैन प्रजाना हृदयपर आरुढ करवा. तेम करवाथी आ विकराळ काळना प्रचंड पाशमांथी वखते मुक्ति थवा संभव छे.

आ संसाररुप विशाळ क्षेत्रमां आवेला मनुष्यने शो विचार करवो जोइए ? तेणे प्राप्त करेलुं मनुष्यत्व केवुं

दुर्लभ छे, अने ते मनुष्यत्वनेमाटे तेणे शुं शुं करवानुं छे ? तेनो पूर्ण विचार करवानो छे. अने ते विचार करी ते मनुष्यत्वनो सदुपयोग करवाने प्रवृत्ति करवानी छे.

जे आजे वर्त्तमानकाळ विपरीते प्रवर्त्ते छे, ते काळना प्रचंड वेगमां मनुष्योथी तणाइ न जवाय अने मनुष्यपणानी दुर्लभतानो विचार करी ते विपरीत काळनो पराभव करी शकाय तेवा उत्तम हेतुथी जगत्‌ना भविष्यने जाणनारा आपणा ज्ञानी मुनिओए उपदेशना अनेक ग्रंथो रचेला छे. अने सर्व जैन प्रजा उपर अपार उपकार करेला छे.

ते मांहेलो आ एक उपदेशपद नामे ग्रंथ छे. आ ग्रंथना कर्त्ता पंडित शिरोमणि श्रीहरिभद्रसूरिए उत्तम प्रकारना उपदेशना उद्देशथी आ ग्रंथनी योजना करेली छे. ग्रंथनी मूळ गाथाओ मागधी भाषामां छे, अने ते उपर संस्कृत भाषामां विवरण करेलुं छे. ग्रंथकार ग्रंथना आरंभमां पोतानो पवित्र उद्देश दर्शाववाने नीचे प्रमाणे एक उत्तम पद्य लखे छे.

पूर्वैर्यद्यपि कल्पितैव गहना वृत्तिः समस्त्यल्पधी–
र्लोकः कालबलेन तां स्फुटतया बोद्धुं यतो न क्षमः ।
तत्तस्योपकृतिं विधातुमनघां स्वस्यापि तत्त्वानुगां
प्रीतिं संतनितुं स्वबोधवचनो यत्नोऽयमास्थीयते ॥ १ ॥

भावार्थ—आ शास्त्रनी पूर्वाचार्योए करेली वृत्ति जो के हयात छे. छतां ते गहन होवाथी वर्त्तमानकाळे अल्पबुद्धिवाळा लोको तेने स्फुट रीते समजी शकता नथी. माटे तेमनो उपकार करवा अने पोताने पण तत्त्वने अनुसरती प्रीति वधारवा आत्मबोधने अनुसारे आ यत्न करवा मांडयो छे.

ग्रंथकर्त्ता श्रीहरिभद्रसूरि आ श्लोकथी पोतानो आशय दर्शावी आ उपयोगी ग्रंथनो आरंभ करे छे. ते पछी

उपदेशपद ए ग्रंथना नामनुं विवेचन करवामां आव्युं छे. आ जगत्मां उपदेश करवा योग्य वस्तु मोक्षज छे. सर्व पुरुषार्थोमां मोक्षज प्रधान छे. तेथी नावथी उपदेशपणुं तेनामांज रहेलुं छे. तेथी उपदेशनो अर्थ एवो थाय छे के, मोक्ष संबंधी शिक्षा तेज उपदेश, ते उपदेशनां पदो एटले मनुष्य जवनी दुर्लजता वगेरे प्रतिपाद्य विषयो अथवा उपदेशो एज पदो एटले वचनो ते उपदेशपद.

आ प्रमाणे ग्रंथना नामनुं विवेचन करी महोपकारी श्रीहरिजद्रसूरिजी प्रथम मनुष्यपणानी दुर्लजता विषे विवेचन करे छे. ते विषय उपर चोल्लक, पाशा, धान्य, द्यूत, रत्न, स्वप्न, चक्र, चर्म, युग, अने परमाणुओ ए दश द्रष्टांत आपेला छे. ते दरेक द्रष्टांत उपर सारुं विवेचन करी मनुष्यजवनी अति दुर्लजता दर्शावी आपी छे. चुल्लकनो अर्थ चरु करेलो छे. पहेला द्रष्टांतमां ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्तीनो मित्र कोइ ब्राह्मण चक्रवर्त्तीने घेर जमीने पछी आखा जरतक्षेत्रमां रहेनार राजा वगेरे लोकोने घेर जम्या पछी फरीवार चक्रवर्त्तीने घेर ते चरुनुं जोजन करे—ए जेवुं दुर्लज छे. तेवुं मनुष्य जन्म दुर्लज छे. बीजा द्रष्टांतमां चाणाक्यना पाशाने जीतवा जेवा मुश्केल छे, तेम मनुष्यपणुं प्राप्त करवुं मुश्केल छे, त्रीजा द्रष्टांतमां जरतक्षेत्रना सघळा धान्य वच्चे सरसवनी पाली जेळीने ते पाछी जुदी पाडवी जेम मुश्केल छे, तेम मनुष्यत्व प्राप्त करवुं मुश्केल छे. चोथा दृष्टांतमां एकसो आठ थांजलाने अकेक थांजले एकसो आठ खूणा अने दरेक खूणे निरंतर एकसो आठवार जुगार रमी जीत मेळववी जेवी अशक्य छे. तेवी रीते मनुष्यत्व प्राप्त करवुं अशक्य छे. पांचमा दृष्टांतमां कोइ शेठना पुत्रे जुदा जुदा देशना वेपारीओने वेचेला रत्नो फरीने पाछा एकठा करवा जेम मुश्केल छे, तेम पुनः मनुष्यत्व उपलब्ध थवुं मुश्केल छे. छठा दृष्टांतमां स्वप्नामां मोटुं राज्य मळ्युं जोइ फरीने तेवुं स्वप्न जोवा इच्छनार मनुष्यने जेवुं ए स्वप्न दुर्लज छे, तेम फरीवार मनुष्य जन्म प्राप्त थवुं दुर्लज छे. सातमा दृष्टांतमां राजकुमार सुरेंद्रदत्ते आठ चक्रना फरता आरामांथी राधापुतळीनी आंख विंधी, ते जेम फरीवार थवाने दुर्लज छे, तेम मनुष्यत्व दुर्लज छे. आठमा दृष्टांतमां एकज छिद्रवाळा मोटा चामडावडे ढांकेला मोटा दरमां रहेला काचबानी कोट ते छिद्रमां पेशी गइ, पछी फरीवार ते कोट तेमां पेशवी जेवी दुर्लज छे, तेवी रीते मनुष्यतानी प्राप्ति दुष्प्राप्य छे. नवमा

दृष्टांतमां मोटा समुद्रने पूर्व कीनारे धूसरीनी बे समेलो जुदी करीने नाखी होय, अने पश्चिम किनारे धूसरी नाखी होय तेम छतां पोतानी मेळे तेओ छिद्रमां दाखल थाय तेवी रीते मनुष्यभवनी अशक्यता छे. दशमा दृष्टांतमां अनंत परमाणुना संघातथी थयेलो कोइ थांभलो तेने कोइ देवता चूरेचूरा करी तेना परमाणु जुदा करी नाखे, ते परमाणुओ पाछा एकठा थाय अने पछी तेनो स्तंभ बने तेवी रीते मानव जन्मनी दुर्लभता छे.

आ प्रमाणे दश दृष्टांतो सविस्तर आपी ग्रंथकारे मनुष्यभवनी दुर्लभता सामान्यरीते सिद्ध करी ते पछी तेने उपपत्ति सहित सिद्ध करेली छे. ते मनुष्यत्वनी दुर्लभता शाथी छे ? ए वात जणाववाने ग्रंथकारे अज्ञान अने प्रमाद ए बे दोष जणाव्या छे. पूर्व पुण्यना बळथी मानव जन्मने प्राप्त थयेलो मनुष्य प्राणी अज्ञान अने प्रमादने वश थइ पोताना मनुष्यत्वनो सदुपयोग करतो नथी. ते मनुष्य आ जगतमां मनुष्यपणाथी तद्दन विलक्षण एवी एकेंद्रियजीवोनी जातिओमां रेंटनी घटमाळनी माफक फरी फरीने जन्म्या करे छे. आ बाबत सिद्ध करवाने ग्रंथकार ते एकेंद्रियजीवोनी असंख्यात उत्सर्पिणी तथा अवसर्पिणी रुप कायस्थिति विषे सारुं विवेचन करेलुं छे. ते पछी ग्रंथकारे सम्यक् रीते धर्ममां उद्यम करवानी वात जणावी सम्यग् धर्मनी प्ररुपणा करेली छे. ते पछी ' सम्यग् धर्मनुं अनुसरण सूत्रने अनुसारे थाय छे, ' ए वात जणावी सूत्रग्रहणनी योग्यता माटे विनयादि गुणनी आवश्यकता दर्शावी ते विषे सारुं ब्यान आपेलुं छे. ते प्रसंगे अभयकुमार मंत्रीनुं दृष्टांत आपी शास्त्रने संपादन करवामां विनयगुणनी केटली आवश्यकता छे, ते वात सिद्ध करी आपी छे. ते विषे बीजा दृष्टांतो आपी ए सिध्धांतने विशेष पुष्टि आपी छे. ते पछी चालता प्रसंगने लइने मिथ्यात्वने ज्वरनी उपमा आपी तेनी साथे सूत्रनी योजना करी मिथ्यात्वनुं खरुं स्वरुप दर्शाव्युं छे. अने ते प्रसंगे मिथ्यात्वना सात भेद विवेचन सहित आपेला छे.

आ बधा शिष्यने उद्देशीने कहेला प्रसंगो छे. तेने पूर्ण कर्या पछी ग्रंथकारे गुरुने उद्देशीने उपदेश आपेलो छे. गुरुए पण विधिपूर्वक योग्य शिष्योने सुत्रानुसारेज सूत्रो शीखववां जोइए सूत्रने शीखवानी इच्छा राखनार शिष्यनी परीक्षा करी तेनी सर्व रीते योग्यता जोया पछीज गुरुए सूत्रशिक्षण आपवुं जोइए, केवा अने केटली मुदतना

दीक्षित शिष्यने कयां कयां सूत्रो शीखववां जोइए ते विषे ग्रंथकारे सारुं विवरण करेलुं छे. जे वांचवाथी मुनिवाचकने उत्तम प्रकारनो बोध मळी शके छे. ते पछी ते विषय उपर चंपानगरीना सिद्धाचार्यनी असरकारक कथा आपेली छे, ते विषयने बीजा दृष्टांतथी पल्लवित करी ग्रंथकारे सूत्रानुसारे प्रवृत्ति करवानो विशेष अधिकार दर्शावी आप्यो छे. ते प्रसंगमां घणाज मनन करवा योग्य बुद्धिना भेद बताव्या छे. ते बुद्धिना भेदो अने तेनां उदाहरणो एवां सरस रीते वर्णव्यां छे के, जे जाणवाथी अथवा सांभळवाथी योग्य मनुष्यो बुद्धिना निधानरुप बनी शके छे. औत्पातिकी वैनयिकी, कर्मजा अनें पारिणामिकी ए चार प्रकारनी बुद्धिना भेदने जणावाने पणीत, वृक्ष, मुद्रारत्न, पट, सरट, कागडा, उच्चार, हाथी, भांड, गोळ, स्तंभ, क्षुल्लक, मार्ग, स्त्री, बे पति, अने पुत्र,—ए सत्तर उदाहरणो आपी ग्रंथकारे ते ज्ञेय विषयने एटलो बधो पल्लवित कर्यो छे के, ते वांचवाथी वाचकनी मनोवृत्ति बुध्धिबल प्राप्त करवाने उत्तम अधिकारिणी बनी जाय छे. दरेकनां सविस्तार उदाहरणो आप्या पछी कर्मजा बुध्धिनां उदाहरणो पूर्ण करी आ उपदेश प्रतिपादक महान् ग्रंथनो प्रथम भाग समाप्त करवामां आव्यो छे.

आर्हत प्रजाना महोपकारी श्रीहरिभद्रसूरिए ग्रथन करेलो आ ग्रंथ उपदेशना स्वरूपने प्रतिपादन करी अभ्यासी वाचकोने तथा उपदेशदायक मुनिओने घणोज उपयोगी छे. मूळ गाथाने उपदेशथी संग्रहीत करवामां ग्रंथकारे पोतानी चमत्कारी बुध्धिनुं गौरव सारी रीते दर्शावी आप्युं छे. अने वृत्तिकारे ते विषे सारुं विवेचन करी कर्त्ताना शुध्ध आशयने प्रकट करवामां स्वोपज्ञतानो आभास कराव्यो छे. स्थळे स्थळे सुंदर छटादार विवेचन आपेलां छे, तथा सर्व स्थळे प्रस्तुत विषयने सिध्ध करवाने सारो प्रयास करेलो छे.

अभ्यासी जैनमुनिओ अने जैन युवकोनी सगवडतानी खातर आ ग्रंथने मूळ साथे भाषांतरथी अलंकृत करी प्रसिद्ध करवामां आव्यो छे. अने तेमनी सर्व प्रकारनी अनुकूलता साचववाने मूळ अने भाषांतरनी योजना पत्रानुक्रमे गोठववामां आवी छे, तेमज व्याख्याताओनी उपयोगिता जाळववाने ग्रंथनी आकृति पण तेवी रचवामां आवी छे.

आ ग्रंथना कर्त्ता श्रीहरिभद्रसूरि आर्हत इतिहासमां विख्यात छे. तेमना जीवन चरित्र माटे अनेक स्थळे

दर्शाववामां आवेलुं छे, तथापि तेननुं संक्षिप्त वृत्तांत आ स्थले निरुपयोगी नहि थाय. पंमित शिरोमणि हरिजद्रसूरि चित्रकूट (चितोम) नगरना निवासी हता. तेओ जाते ब्राह्मण हता. चित्रकूट नगरना राजा जितारिना ते विद्वान् पुरोहित हता. ब्राह्मण जातिमां पण तेमनुं नाम हरिजद्रजट हतुं, ब्राह्मण हरिजद्रजटना हृदयमां बुद्धि अने राजमानने लइने विद्यानो गर्व विशेष हतो. ए गर्वना प्रचंम आवेशथी ते पुरोहित हरिजद्रे एवुं पण लीधुं हतुं के, " कोइनुं जणेलुं जो हु न समजी शकुं, तो तेनो हुं शिष्य थइ जाउं. " आ पण तेणे केटलोक वखत नजाव्युं हतुं.

एक वखते गर्वधारी हरिजद्रजट जैनना उपाश्रय पासेथी प्रसार थतां याकिनी नामनी एक जैन साध्वीना मुखथी तेणे एक मागधी जाषानी गाथा सांजळी हती. ते गाथानी अंदर ' चक्की' शब्द वारंवार आवतो हतो, ते उपरथी गर्वी हरिजद्रे ते साध्वीने पूछ्युं के, " तमारी गाथामां चाकचिक्य, बहु कर्युं छे," त्यारे ते विदुषी साध्वीए तेनो योग्य उत्तर आप्यो के " हे पुत्र, ते ' ग्रमयार्द्रलिप्त ' छे. ते सांजळी गर्वी हरिजद्रे विचार्युं के, " खरेखर आ महाचतुर साध्वीए मने वचन विवादमां पण जित्यो छे. तेम आ गाथानो अर्थ हुं समजी शकतो पण नथी. " आ प्रमाणे विचारी तेणे ते याकिनी साध्वीने ते गाथानो सर्व अर्थ समजाववाने कह्युं; त्यारे चतुर साध्वीए कह्युं के " पंमितजी, अमारा जैन आगमनो अर्थ अमारा गुरुनी अनुमति शिवाय तमोने अमाराथी कही शकाय नहि. जो तमारे तेनो अर्थ जाणवानी इच्छा होय, तो तमे आ नजीक रहेला चैत्यमां रहेला अमारा गुरुनी पासे जाओ. " साध्वीनां आ वचन सांजळी हरिजद्रजट ते चैत्यमां गया. त्यां रहेला जिनजद्र नामना आचार्य तेमना जोवामां आव्या. हरिजद्रे ते पवित्र महानुजावने ते गाथानो अर्थ जाणवानी विनंति करी. आचार्य जिनजद्रे कह्युं के, " जो तमे जैनदीक्षा ग्रहण करो तोज तमोने ते अर्थ अमाराथी समजावी शकाशे. " ते अर्थ जाणवानी इच्छाथी उत्कंठित थयेला हरिजद्रे पूर्व पुण्यना उदयथी चित्रकूट नगरना संघनी समक्ष आचार्य जिनजद्र पासे जावपूर्वक जैनदीक्षा ग्रहण करी हती. दयालु अने महोपकारी जिनजद्रे हरिजद्रमुनिने ते गाथानो अर्थ समजावी अनुक्रमे जैन आगमना पारंगत बनाव्या हता.

आर्हतदीक्षाने पामेला हरिभद्रमुनि गुरुनी कृपाथी सूरिपदने प्राप्त थया. अने तेमणे पोतानी बुद्धिना बळथी अने उपदेश आपवानी असाधारण शक्तिथी भारतभूमि उपर विचरी अनेक शिष्यो कर्या हता.

आ समयमां बौद्ध लोको पोताना धर्मनी छाया नीचे भारतभूमिने आच्छादित करवा प्रवर्त्तता हता. हंस अने परमहंस नामना कोइ बे शिष्यो हरिभद्रसूरिना शिष्य मंडळमां अग्रणी हता. एक वखते तेमणे पोताना गुरुनी पासे बौद्ध लोकोना प्रमाण शास्त्रो जाणवानी इच्छा प्रगट करवाथी सूरिवरे तेमने त्यां जवा आज्ञा आपी हती. परंतु सूरिजीए नैमित्तिक शास्त्र जोइने तेमने प्रथमथी जणाव्युं हतुं, के, त्यां जवामां विघ्न उत्पन्न थशे. तथापि ते शिष्योनी मनोवृत्तिने आधीन थइ तेमणे त्यां जवानी आज्ञा आपी हती. हंस अने परमहंस बंने वेष बदलीने बौद्ध गुरुनी पास रह्या हता, अने त्यां रही तेमणे बौद्धोना प्रमाण शास्त्रोनो सारो अभ्यास कर्यो हतो. छेवटे बौद्धाचार्यने तेमने माटे शंका आवतां तेमनी परीक्षा करवाने पोताना उपाश्रयनी सीडी उपर जैन प्रतिमानुं चित्र करी मूक्युं हतुं, कारणके, ते बौद्धाचार्ये विचार कर्यो हतो के,'जो तेओ खरेखरा जैन हशे, तो तेमनी उपर पग मूकीने चालशे नहीं.' हंस अने परमहंस बंनेए ते सीडी उपर जैन प्रतिमाने जोइ, त्यारे तेमणे विचार्युं के, "आपणा गुरु श्रीहरिभद्रसूरिए सूचवेली आपत्ति आजे आपणी उपर खरेखर आवी पडी छे. तेथी हवे अहिं आपणुं मृत्यु थाय, तोपण डरवुं नहीं" एम विचारी तेओए ते जिन प्रतिमाना चित्र उपर खडीथी त्रण लींटीओनी जनोइ करी तेने बौद्धनी प्रतिमा बनावी, अने तेपर पग मूकीने चाल्या गया हता. आ खबर बौद्धाचार्यने पडवाथी तेणे पोताना सुभटोनी मारफत ते हंस अने परमहंस बंनेनो वध कराव्यो हतो.

आ खबर हरिभद्रसूरिना जाणवामां आवतां तेमने भारे क्रोध उत्पन्न थयो हतो. तेओ मंत्र विद्यामां प्रवीण हता, तेथी तेमणे एक तेलनी उष्णकडा तैयार करावी, अने तेमां बौद्धाचार्यने तेना चौद हजार अने चुंमालीश शिष्यो साथे होमी देवा आकर्षण करी आकाशमां स्थिर कर्या हता. आ खबर तेमना गुरुना सांभळवामां आ-

वतां तेमणे आवी हरिजद्रसूरिने उपदेश आपी शांत कर्या हता, अने ते बौध्धाचार्यने तेना शिष्यो सहित छोमाव्यो हतो.

समर्थ विद्वान् हरिजद्रसूरिए ते पापनी शुध्धिने माटे चौद हजार अने चुमालीश बौध्धाचार्यना शिष्योनी संख्याने अनुसारे तेटला ग्रंथो रचेला छे ; जे मांहेलो आ उपदेशपद ग्रंथ पण छे. ते महानुजावना रचेला घणा ग्रंथो अद्यापि प्राचीन ग्रंथो विधिमांथी[1] उपलब्ध थाय छे, तोपण आर्हत प्रजाने माटे तेमणे जे ग्रंथ समृध्धिनो वारसो मूकेलो हतो, ते पूर्ण वारसो मेळववाने आर्हत प्रजा पूर्ण रीते जाग्यशाळी थइ नथी, ए आ विपरीत काळनोज प्रजाव छे. तथापि ते महानुजावना उपयोगी लेखो जेओ जैनोना प्राचीन ग्रंथनिधिमां अद्यापि संरक्षित थएला छे, तेओनो पण जो आवी रीते उद्धार करवामां आवे तो जैन प्रजाने केटलेक अंशे संतोष पामवानुं कारण थइ पमशे.

महानुजाव हरिजद्रसूरिना रचेला ग्रंथोमां आ ग्रंथ शिवाय अनेकांतजयपताका, शिष्यहिता नामे आवश्यक टीका, ललितविस्तरा नामनी चैत्यवंदन वृत्ति, जंबूद्वीप संग्रहणी, ज्ञानपंचक विवरण, दर्शन सप्ततिका, दशवैकालिक वृत्ति, दीक्षाविधि पंचाशक, धर्मबिंदु, ज्ञानचित्रिका, पंचाशक, मुनिपति चरित्र, लग्नकुंमलिका, वेद वाह्यता निराकरण, श्रावकधर्मविधि पंचाशक, समरादित्य चरित्र, योगबिंदु प्रकरण वृत्ति, योगदृष्टिसमुच्चय, षट्दर्शन समुच्चय, पंचसूत्रवृत्ति, पंच वस्तुकवृत्ति, अष्टक, अने षोमशक वगेरे बीजा मुख्य मुख्य ग्रंथो प्रख्यात छे.

महानुजाव हरिजद्रसूरिए पोताना उत्तम शिष्योना विरहथी पोताना दरेक ग्रंथने छेमे पोतानी कृतिनी निशानी दाखल ' विरह ' शब्द मूकेलो छे. तेथी विरह शब्दथी अंकित थयेला ग्रंथो ए महोपकारी महानुजावनी उत्तम कृतिने अद्यापि सूचवे छे. ते साथे वळी तेमनी प्रतिबोधक साध्वी ' याकिनी' नुं नाम पण तेमना ग्रंथना पश्चि-

१ जूना पुस्तकोना भंडारमांथी.

म जागे आरोपित थयेलुं जोवामां आवे छे. ए महानुभाव विक्रम संवत्‌ना छठा सैकामां विद्यमान हता, अने तेमनुं स्वर्ग गमन विक्रम संवत् ५३६ ना वर्षमां थयेलुं छे. एम गच्छोत्पत्ति प्रकरणमां दर्शाववामां आवेलुं छे.

आवा महोपकारी महानुभावना ग्रंथो मूल सहित भाषांतर साथे प्रगट थवाथी आर्हत प्रजाने मोटो लाभ थाय, एवा हेतुथी आ उपदेशपद ग्रंथने प्रगट करवाने अमे सामर्थ्यवान् थया छीए. अमारुं आ सामर्थ्य सर्व साधर्मिबंधुओनी उन्नतिने इच्छनारा अने तेवी पवित्र भावनाथी भावित थएला रा. रा. शेठ वसनजी त्रिकमजी जे. पी. ने आभारी छे; कारण के, तेमणे उदारताथी अर्पण करेल दश हजार रुपीआनी मोटी रकमनी सहायथीज आ उपयोगी महान् ग्रंथनो उध्धार करवामां अमे प्रवृत्त थया छीए. श्रीवीर परमात्मा एवा धर्मवीर पुरुषने श्रेयः साधनने संपादन करवामां सहायभूत थाय. अने पोताना शासननी उन्नतिने माटे प्रवृत्ति करनारा बीजा पण तेवा पुरुषो प्रगट थाय, एवी योजनाने माटे शासन देवताने प्रेरणा करे एज अमारी अंतरनी प्रार्थना छे.

पौष पूर्णिमा
संवत १९६५.

श्री जैन धर्म विद्या प्रसारक वर्ग,
पालीताणा.

रा. सा. शेठ वसनजी त्रिकमजी जे. पी. नुं संक्षिप्त जीवन चरित्र.

महाराव एवा नामथी अंकित चंद्रवंशी राजाओथी सुरक्षित एवा कछ देशमां आर्हत धर्मना उपासक कच्छी दशा ओशवाळ ज्ञातिना घणा कुटुंबो वसे छे. ते देशमां आवेला सुथरी नामना गाममां रा. सा. शेठ वसनजी त्रिकमजीना वडिलो वसता हता. तेमना पितामह शेठ मूळजी देवजी संवत् १८९० ना वर्षमां प्रथम व्यापार अर्थे मुंबइ आव्या हता. ते वखते मोहमयीनगरी व्यापार लक्ष्मीनुं उच्च शिखर बनी हती. विदेशी व्यापारीओनी मोटी मोटी पेढीओ ते स्थळमां पोतपोतानो व्यापार कळाने प्रसारती हती. ते व्यापारीओमां कच्छवासी मरहुम शेठ नरशी केशवजी नायकनी पेढी व्यापार कळामां सारी ख्याति पामेली हती. शेठ वसनजीभाइना पितामह शेठ मूळजीए पोताना व्यापारनो आरंभ शेठ नरशी केशवजीना व्यापारनी साथे भागथी जोड्यो अने ते शिवाय पोतानी स्वतंत्रताथी पण बीजो व्यापार करवा मांड्यो. पूर्वपुण्यना प्रभावथी तेमणे व्यापार लक्ष्मीनी सारी वृद्धि करी. संवत् १९२१ ना वर्षमां ज्येष्ठ मासमां शेठ वसनजीभाइनो जन्म थयो. पुत्र जन्मथी तेमना पिता अने पितामहने अति आनंद थयो हतो. कर्मनी गति विचित्र छे. एक तरफ पुत्रजन्मनी वधामणी चालती हती अने बीजी तरफ ते पुत्रनी माता सूतिकागृहमांज अचानक व्याधिग्रस्त थयां. छेवटे शेठ वसनजीभाइने छ दिवसना मूकी तेओए स्वर्गवास कर्यो. शेठ वसनजीभाइना मातुश्रीनुं नाम लाखबाइ हतुं, तेओ स्वभावे शांत अने सद्गुणी हतां, पण कोइ पूर्व कर्मना उदयथी पोताना पुण्यवान् पुत्रने मातानो सदाने माटे वियोग थयो, एज वर्षमां शेठ वसनजीभाइना पितामहे शेठ केशवजी नायकथी जूदा पडी पोताना पुत्र त्रिकमजी मूळजीना नामथी नवीन पेढी उघाडी पोतानी व्यापारकळानो समारंभ कर्यो. व्यापारकळानी कुशळताथी अने उत्तम प्रकारनी प्रमाणिकताथी ए पवित्र पेढीए मोहमयीनगरीमां सारी प्रतिष्ठा संपादन करी व्यापार लक्ष्मीनो मोटो वधारो कर्यो.

शेठ वसनजीभाइनी बाल्यावस्था पुण्यनी प्रभाथी प्रकाशित हती. तेमना शरीरनी अने मननी चंचळता

विलक्षण हती अने ते उपरथी भविष्यमां तेमने माटे सारी आशा बंधाती हती. संवत् १९३० ना वर्षमां तेमना प्रेमी पिता शेठ त्रीकमजीभाइनो स्वर्गवास थयो. ते वखते शेठ वसनजीभाइनी वय मात्र आठ वर्षनी हती. पोताना पुत्र शेठ त्रीकमजीभाइना स्वर्गवासथी तेमना पिता शेठ मूळजीभाइना हृदयने खेद थयो हतो, तथापि तेओ धार्मिक वृत्तिना होवाथी आ संसारना क्षणिक स्वरुपने जाणता हता, तेमज पोताना बाळपौत्र शेठ वसनजी त्रिकमजीमां अस्फुट देखाता सद्गुणोने लइने भविष्यमां तेमने माटे सारी आशा बांधता हता, तेथी तेओ पुत्रमरणना शोकाग्निने शमन करनारी मनोवृत्तिमां शांति राखी रह्या हता.

शेठ वसनजीभाइना पितामह मूळजी शेठ धर्म तरफ सारी आस्ता धरावता हता. सुकृत कर्ममां लक्ष्मीनो व्यय करवानी उत्तम अभिलाषा तेमना हृदयमां सर्वदा रहेती हती. ते अभिलाषाने लइने तेमणे संवत् १९२७ ना वर्षमां श्री केशरीयाजी तीर्थनी यात्रानो मोटो संघ काढ्यो हतो. यात्रालुओने सुखकारी सगवडता करी आपवामां अने ते प्रसंगे धार्मिक कार्यो करवामां तेमणे भारे उदारता दर्शावी हती. जेमां तेमने चाळीश हजार रुपीआनो गंजावर खर्च थयो हतो. संवत् १९३२ ना कार्तिक मासनी कृष्ण एकादशीने दिवसे मूळजी शेठनो पवित्र आत्मा आ लोकमांथी अदृश्य थइ परलोकमां गयो, अने ते महान् व्यापारनी धुरा बाल्वयना शेठ वसनजीभाइना कोमळ शिरपर आवी पडी. पवित्र प्रेमी अने पौत्रवत्सल मूळजी शेठे पोताना पुत्र त्रीकमजी शेठना स्वर्गवास पछी पोतानी व्यापारी पेढीने पोताना पौत्र वसनजीभाइना नामथी अंकित करी हती, तेथी ए व्यापारनुं महान् कार्य शेठ वसनजी त्रीकमजीना नामथी चालतुं हतुं. शेठ वसनजीभाइनुं बाल्यवय होवाथी, तेमनी विशाळ पेढीनो बधो कारभार शा. लखमशी गोविंदजी नामना एक प्रमाणीक गृहस्थे चलावेलो हतो.

शेठ वसनजीभाइ बाल्यवयथीज पोताना उपकारी मातपिताना वियोगी थया हता, तेमनी शारीरिक अने मानसिक स्थितिने संभाळ राखी केळववाने कोइ पण वडिल तेमना वैभववाळा वासगृहमां हाजर न हतुं, तथापि तेमणे स्वेच्छाथी देशभाषा अने राजभाषानो अभ्यास करी यथाशक्ति अनुभव मेळव्यो हतो. तेमनुं हृदय जो पोताना

व्यापारनी चिंतामां भेरायेलुं न होत, तो तेओ तीव्र बुद्धिना योगथी एक सारा विद्वान् तरीके मख्यात थात. पण तेमना सत्कर्मनो उदय अने तीव्र बुद्धिनुं बळ व्यापार कळामांज कृतार्थ थवाथी तेओनी मवीणता तेमांज वृद्धि पामवा लागी, अने जनमंडळमां तेमनी विख्याती तेमनाथीज विशेष थइ.

विनय, विवेक, धैर्य, उत्साह, औदार्य, दया, अने द्रढता विगेरे जे गुणो उत्तम प्रकारनी विद्वताथी संपादित थाय छे, ते गुणो शेठ वसनजीभाइना जीवनना आरंभमांज स्वाभाविक रीते मगट थया हता. अने तेथी तेओ मोहमयी नगरीना राजकीय अने व्यापारी मंडळमां सारी प्रतिष्ठा पामता गया. तेओ धनाढ्य कुटुंबमां जन्म्या छतां गर्भश्रीमंताइनो लाभ लेवाने समय ओळखी सखावत करवाना उत्तम गुणने प्राप्त करी पोतानुं धनिक जीवन सार्थक करवाने सदा तत्पर रहेवा लाग्या.

शेठ वसनजीभाइए युवावस्थाए पोताना कुटुंबनी अंदर आ संसारनी घटमाळना विविध प्रसंगोमां सुख दुःखनो अनुभव करेलो छे. तेमनो प्रथम विवाह शा वालजी वर्द्धमानना विख्यात कुटुंबमां जन्मेलां खेतबाइनी साथे थयो हतो. खेतबाइ एक पवित्र अने कुलीन श्राविका हतां तेमना उदरथी प्रेमाबाइ अने लीलबाइ नामे बे पुत्रीओ अने शामजीभाइ नामे एक पुत्र थयेल छे. ते त्रण संतानोने मूकी खेतबाइए पोताना सौभाग्य साथे स्वर्गवास कर्यो हतो. आ संसार सागरने तरवाना आरंभमांज ए संसारनी नाविका भांगी जवाथी शेठ वसनजीभाइए शेठ नरशी नाथाना कुटुंबमां उत्पन्न थयेला रतनबाइनी साथे फरीवार लग्न कर्युं. तेमना उदरथी मेघजीभाइ नामे पुत्र अने लक्ष्मी नामे पुत्रीनो जन्म थयेलो छे. ए भाइ बेनने कुशळ—क्षेम मूकी सौभाग्यवंता रतनबाइए पण स्वर्गवास कर्यो. आ संसारना बीजा भंगथी शेठ वसनजीभाइने विशेष शोक उत्पन्न थयो हतो, तथापि तेओ संसारस्वरुपना ज्ञाता होवाथी ते दुःख सहन करी पोताना व्यवहारमार्गने आगळ चलाववा लाग्या.

शेठ वसनजी त्रिकमजीनो संसार आवी विषम अवस्थामां जेटलो वहेलो शरु थयो, तेटलोज वहेलो तेमने दुःखदायक थइ पड्यो हतो, तथापि द्रढताना गुणथी अने स्नेही संबंधीओना आग्रहथी तेमने त्रीजा संसारमां प्रवे-

ड करवानो विचार करवो पड्यो. जेथी शेठ ठाकरशी पसाइआनां पुत्री वाइ वालवाइ साथे तेमनो विवाह संबंध जोड़ायो. जे संबंध तेमना पुण्य उदयथी अत्यारे बीजानी दृष्टिए पूर्व दुःखने जरा विस्मरण करावी सुखसाधक थइ पड्यो छे. तथापि ते दीर्घविचारी शेठ आ संसारनी अनुभवेली विषमताने कदिपण भूलता नथी.

शेठ वसनजी त्रिकमजीने तेमना परिवारनुं सांग सुख मळ्युं नथी. तथापि तेओ अवशिष्ट परिवारथी संतोष मानी तटस्थ वृत्तिवडे संसारने दुःख अने सुखथी मिश्र जाणीने पोताना आत्माने प्रवृत्तिमार्गमां जोडे छे; तोपण अंतरवृत्तिने निवृत्तिमार्ग तरफ प्रेमी बनावे छे. तेमने सर्वथी मोटां प्रेमावाइ नामे पुत्री छे, तेओ सारी केळवणी पामी पिताना कुटुंबने अलंकृत करे छे. संवत १९४१ ना वर्षमां तेमनो जन्म थयेलो छे. तेमनी माता खेतवाइनो तेमने वाल्यवयथी वियोग छे, तथापि ते पवित्र अपर मातामां मातृबुद्धि राखी पोताना प्रेमी पिताना कुटुंबमां केळवणीरुप कल्पलतानो आश्रय करी सुखे काळ निर्गमन करे छे. तेमने शामजी नामे एक लघु बंधु हता, पण ते मात्र बे वर्षनी वयमांज आ संसारमांथी चाल्या गया छे. शेठ वसनजीभाइने प्रथम पत्नी खेतवाइना उदरथी लीलवाइ नामे एक पुत्री थयां हतां, तेमनो जन्म सवत १९४५ ना पोष शुदी नवमीने दिवसे थयो हतो. ए पवित्र आत्मानुं वाल्यवय शेठना सुखी कुटुंबमां सारी रीते निर्गम्युं हतुं. परंतु अनंतकाळरुप महासागरमां ए आत्मा तरुण वयमांथी निमग्न थइ गयो छे. ए सद्गुणीवाळाना वियोगनो शोकानळ अद्यापि शेठ वसनजीभाइना हृदयमां स्मरणरुपे प्रज्वलित लीलवाइना सद्गुणनी ललित लीला तेमना जीवनचरित्ररुपे आनंदमंदिर नवलकथानी आदिमां विस्तारवामां आवी छे. जे उपरथी शेठ वसनजीभाइना संसारनुं केटलुंएक सुंदर स्वरूप जोवामां आवे छे.

शेठ वसनजीभाइनां स्वर्गवासी द्वितीय पत्नी रतनवाइथी थयेल मेघजी अने लक्ष्मी नामे भाइ ब्हेननी एक जोडी शेठना सुखी कुटुंबमां विद्यमान छे. संवत् १९५१ ना भाद्रपद मासनी कृष्णद्वादशीए मेघजीभाइनो जन्म थयेल छे. संवत् १९५३ ना आश्विन मासमां दीपोत्सवीने दिवसे ब्हेन लक्ष्मीनो जन्म थयेल छे. मेघजीभाइ तथा लक्ष्मीब्हेन वाल्यवय छतां स्वभावे सुशील अने नम्र छे. तेमने सद्गुणी बनाववाने तेमना प्रेमी पिताए उत्तम

प्रकारनी केळवणी आपवानी सारी योजना करेली छे. ते बन्ने बाळक पोताना मायाळु मातपितानी शीतळ छाया नीचे केळवणीरुप कल्पलतानुं सेवन करे छे.

शेठ वसनजीभाइनां तृतीय पत्नी वालबाइ अत्यारे गृहिणीपद उपर विद्यमान छे. तेमणे पोताना सुशील अने शांत स्वभावथी शेठना कुटुंबने सुशोभित बनावेलुं छे. केळवणीपर अतिशय व्हाल धरावनारां वालबाइ अति धार्मिक अने सांसारिक केळवणी पाम्यां छे, तथापि तेओ ज्ञाननो वधारो करवाने सदा उत्सुक छे. विख्यात पंडित लालननना विशाळ हृदयनुं शिक्षण शेठना सुखी कुटुंबमां चालु रहे छे. अने तेथी तेमना दरेक कुटुंबीना हृदयमां सद्गुणोनी सुवास प्रसरी रही छे.

संवत् १९६० ना मागशिर मासनी कृष्ण प्रतिपदाने दिवसे विद्यावंतां वालबाइए वकिमचंद नामना पुत्रने जन्म आप्यो छे. ते बाळक हजु माताना उत्संगमां क्रीडा करे छे, तथापि तेनामां चंचळता अने नम्रता विगेरे केटलाएक उत्तम गुणोनुं स्वाभाविक रीते अत्यारथीज दर्शन थाय छे. जेने माटे भविष्यमां सारी आशा बांधवामां आवे छे. आ प्रमाणे विद्यमान परिवारथी परिवृत थयेला शेठ वसनजीभाइ ते संसारमां संतोष मानी रह्या छे. संसारमां रह्या छतां एमनुं लक्ष्य विद्वानोना समागमद्वारा ज्ञानविलासमां बद्ध छे. ते साथे तेओ धार्मिक अने सांसारिक केळवणीना हिमायती छे, अने ते द्वारा पोतानी कोमना उदयनी सतत अभिलाषा राखे छे, अने तेवा कार्यने माटे लक्ष्मीनो व्यय करवामां तेओ सदा बद्धपरिकर रहे छे.

शेठ वसनजीभाइनी सखावतनो आरंभ तेमना बाल्यवयथीज थयेलो छे. वडिलनो वियोग थया पछी ज्यारथी तेमना व्यवहारनो तथा कुटुंबनो भार तेमने शिर आरुढ थयो, त्यारथीज तेमनी सखावतना जीवननो आरंभ थयो छे. संवत् १९३३ना वर्षमां तेमना माताजी अने दादाजीना उजमणामां तेमणे घणो खर्च कर्यो हतो. जे प्रसंगे तेमनी उदारता प्रशंसापात्र जोवामां आवी हती. शेठ वसनजीभाइए कच्छ साएरामां पोताने खर्चे एक भव्य जिनालय बंधा-

प्रतिष्ठा करवामां आवी ते समये आसपासना घणां गामोमांथी कच्छी जैन प्रजानो मोटो समुदाय एकठो थयो हतो. तेमनो सत्कार करवा माटे ए शेठे सारी लागणी दर्शावी हती. सर्वेना आतिथ्यने माटे भोजन वगेरेनी सारी गोठवण करी हती ए प्रसंगे लक्ष्मीनो सदुपयोग करवाथी तेमनी धर्मकीर्त्ति आखा कच्छ देशमां प्रसरी हती.

संवत् १९५२ ना वर्षमां उदार शेठ वसनजीभाइए स्वज्ञातिना गरीब बंधुओने ओछे भावे अनाज आपवानी एक मोटी दुकान उघाडी हती, अने ते दोढ वर्ष सुधी चालु राखी ते पाछळ पांच हजार रुपिआनी मोटी रकम खर्ची हती. जेने माटे तेओ स्वज्ञातिजनोमां पूर्ण प्रशंसा पाम्या हता. ज्यारे मोहमयी नगरीमां मरकीनो भयंकर रोग प्रवर्त्यो, त्यारे ए दयाळु शेठे मरकीथी पीडाता लोकोने शांति आपी सारवार करवा माटे बंदर उपर एक खास औषधालय स्थापी मरकीथी पीडाता बंधुओने सारो लाभ आप्यो हतो, अने ते शुभ कार्य त्रण वर्ष सुधी चलावी ते पाछळ रुपीआ चाळीश हजारनो गंजावर खर्च थयो हतो. जेमां कोइनी पण मदद न हती. आथी प्रसन्न थइ नामदार सरकारे तेमने प्रमाणपत्र आपेलुं छे. जेनी अंदर शेठ वसनजीभाइनी परोपकारी वृत्तिनी प्रशंसा करवामां आवी छे.

गया छप्पनना भयंकर दुकाळना संकटमां आवी पडेला लोकोने मदद आपवामां शेठ वसनजीभाइए सारी सहाय आपी हती. पोतानी जन्मभूमि कच्छ सुथरीमां अनाजनी दुकान काढी घणां गरीब कुटुंबोने तेमणे सारो आश्रय आप्यो हतो, अने तेथी तेमणे घणा दीनजनोनी अंतरनी आशीषो लीधी हती. आ शुभ कार्यनी पाछळ तेमणे उदारताथी पंदर हजार रुपिआनो खर्च कर्यो हतो.

आ तेमनी उत्तम सखावतनी सुगंध चारे तरफ प्रसरवाथी तथा तेमनी लायकातनी अने परोपकार विगेरे उत्तम गुणोनी परीक्षानी पिछान करी नामदार सरकारे तेमने जे. पी. (सुलेहना अमलदार) नी उत्तम पदवी आपी हती, अने पाछळथी रावसाहेबनुं बिरुद नवाजी शेठ वसनजीभाइना सन्मानमां मोटो वधारो कर्यो हतो. आ पदवी अने सन्मान मेळववामां शेठ वसनजीभाइ आखी कच्छी जैनप्रजामां पहेलाज छे. आवुं सारुं सन्मान पाम्या छतां

पण शेठ वसनजीभाइनुं जीवन अति सरल, शुद्ध, सादुं अने स्वच्छ रहेलुं छे. एक खरा सद्गृहस्थने घटती सर्व नम्रता, सादाइ अने सत्य प्रीति तेमनामां रहेली छे. धंधामां प्रतिष्ठा, स्वदेशीओमां मान, लोकप्रीति अने महान् संपत्ति ए सर्वनी परिसिमाए पहोंच्या छतां पोते केवळ अहंकार शून्य छे. नाना मोटा सर्व साथे एक सरखा भावथी वर्त्ते छे. तेओनी सखावतनो प्रवाह प्रकाश गुप्त रीते वधारे चाले छे. तेमनी केटलीएक सखावतो प्रकाशमां आवती नथी. तेम तेने प्रकाशित करवाने तेओ इच्छता पण नथी. कीर्त्तिदानना करतां गुप्त दानने तेओ वधारे मान आपे छे. एवा गुणथी तेओनुं जीवन उत्तम प्रकारनुं गणाय छे.

शेठ वसनजीभाइनी नानी मोटी घणी सखावतो प्रख्यात छे. धार्मिक अने सांसारिक कोइ पण लोकोपयोगी कार्यमां तेमनी लक्ष्मीनो हिस्सो आव्या वगर रहेलो नथी. तेओ गरीबो तेमज श्रीमंतो तरफ एक सरखी नजरे जुवे छे. दुकाळना संकट वखते रुना वेपारीओए उभा करेला फंडमां शेठ वसनजीभाइए सारो हिस्सो आप्यो हतो. शेठ वसनजीभाइए मरहुम पेहेला सरदीनशाह पीटीटना मित्र होवाथी तेमनी यादगिरिना फंडमां सारो भाग लइ त्रण हजार रुपीआ अर्पण कर्या हता. सर जमसेदजी होस्पीटालना नरसिंग फंडमां छसो रुपीआ, लेमीनोर्थकोट हिंदु ओरफनेजना फंडमां एक हजार रुपीआ, एदमवाळी होस्पीटालना फंडमां पांचसो रुपीआ, फरग्युशन कोलेजमां त्रणसो रुपीआ अने जखमी थयेला जापानीओनी सारवार माटेना फंडमां बारसो बावन रुपीआ शेठ वसनजीभाइ तरफथी आपनामां आव्या छे.

शेठ वसनजीभाइनी धार्मिक सखावत पण उत्तम प्रकारनी छे. जैन देरासरना जीर्णोद्धार माटे तेमणे बे हजार रुपीआ आपेला छे, ते शिवाय तेवी घणी टीपोमां तेओनी न्यायलक्ष्मीनो सदुपयोग थाय छे. संवेगी अने गोरजी एवा बे मुनिवर्ग अर्वाचीन काळमां उभा थयेला छे. संवेगी मुनिओ पोताना चारित्रपक्षमार्गमां शुद्ध अनुयायी कहेवाय छे. त्यारे गोरजीओ तेमनाथी उलटी रीते प्रवृति करनारा कहेवाय छे. ए गोरजीना शिष्यो जैन संप्रदायना होवाथी जो कोइ रीते सुधारी शकाय, तो भविष्यमां सारो लाभ थाय. आवा पवित्र हेतुथी शेठ वसनजी

जाइए गोरजीओना शिष्योने सुधारवाने साठसात हजार रुपीआनी मोटी रकम अर्पण करी छे.

शेठ वसनजीजाइ बाळकेळवणी तथा स्त्रीकेळवणीना मोटा हिमायती छे. ते साथे ज्ञानक्षेत्रने पुष्टि आपवामां तेओ सर्वदा उत्सुक रहे छे. " जैनोनी प्राचीन विद्यानो उद्धार थाय अने पूर्वाचार्योना लेखो जैनमंमळमां प्रसिद्ध पामी वंचाय " एवा उत्तम हेतुथी तेमणे प्राचीन पुस्तकोनो उद्धार करवाने दश हजार रुपीआनी मोटी रकम अर्पण करी छे. ए महान् कार्यने उठावनारा श्री जैन धर्म विद्याप्रसारक वर्गना तेओ स्थापक थया छे. अने वर्गरूप कल्पवृक्षने उत्तेजनरूप जळनुं सिंचन करी तेने नवपल्लवित करवा सदा उत्सुक रहे छे.

शेठ वसनजीजाइ जेवा सखावतमां बहादूर छे, तेवाज तेओ प्रजा उपयोगी कार्योमां उमंगथी जाग लेनारा छे. दृढमतिक, सत्यवक्ता अने प्रमाणिक नर तरीके तेओए सारी प्रतिष्ठा मेळवी छे. तेथी तेओ सर्व रीते लोकोना विश्वासपात्र बन्या छे. तेओ खोजा जनरल रीमींग रुमना जींदगी सुधीना सज्ञासद छे. अने मांगरोळ जैन समाजना प्रतिनिधि छे. शेठ नरशी नाथाना चेरीटी फंडना, कुमठा देरासरना, सिद्धक्षेत्रमां स्थपाएल वीरबाइ पाठशाळा तथा पवित्र नामथी अंकित जैन बोर्डींग के जेना माटे पचास हजार रुपीआनी मोटी गंजावर रकम अर्पण करी छे. तेना तेओ मानवंता ट्रस्टी छे. ए उपरांत केटलीएक मीलोना तेओ डीरेकटर छे. आवी उत्तम प्रतिष्ठा प्राप्त करी तेमणे पोताना मानवजीवननी सफळता करेली छे.

" माणस विदेशमां गमे तेटली प्रतिष्ठा प्राप्त करे, पण ज्यांसुधी ते स्वदेशमां के स्ववतनमां पोतानी उदारता के सखावत प्रसारे नहीं, त्यांसधी ते प्रतिष्ठा पूर्ण कहेवाती नथी." आ नीतिसूत्रने समजनारा शेठ वसनजीजाइए पोताना कुटुंबनी जन्मजूमी कच्छ—सुथरी विगेरे गामोमां सारां सारां कार्यो करेलां छे. अने तेथी तेओ कच्छपति महाराव श्री सर खेंगारजी सवाइ बहादूर जी. सी. आइ. इनी आगेवानी प्रजामां प्रकाशी नीकळ्या छे. महारावश्री तेमने प्रेमनी दृष्टिए नीहाळे छे, अने तेओनी योग्यता प्रमाणे तेओने मान आपे छे.

केळवणीरुप कल्पलताने पल्लवित करवाने शेठ वसनजीजाइए पोताना वतन सुथरीमां पोतानां स्वर्गवासी

पत्नीओना निर्मळ नामथी खेतबाइ जैन पाठशाळा अने रतनबाइ जैन कन्याशाळा स्थापी छे. तेमज पोताना विद्यमान सौभाग्यवंतां पत्नी वालबाइना नामथी जशापुर गाममां एक बीजी जैन पाठशाळा पण स्थापित करेली छे. ते शिवाय कच्छी जैनप्रजामां ज्ञानवृद्धि करवाने नानी जैनशाळाओ कच्छ देशमां उघाडवामां तेमणे सारी सहाय आपेली छे. अने अद्यापि आपवाने सदा उत्सुक रहे छे.

भारतवर्षनी प्राचीन जैन धार्मिक अने सांसारिक पद्धति जे आपणी दृष्टि समक्ष अवनवीन भासे छे. तेनुं ज्यारे सूक्ष्म अवलोकन करीए छीए, त्यारे कांइक कांइक प्रबळ विचारोर्मि आपणा हृदयमां उछळे छे. ते पद्धतिनो पुनः प्रचार करवाने अने ज्ञातिबंधनना सत्तावान थइ बेठेला रीति कुतिरूप कुरिवाजो तथा एकज 'दिशामां प्रयत्न करवाथी उध्धार थशे ' एम माननारा तथा तदनुसार विरुद्ध वर्त्तनारा सुधारकोने पूर्वनी नीतिरीतिथी वर्त्तावबाने शेठ वसनजीभाइ तन, मन, धनथी प्रयत्न करनारा छे. तेमज व्यापार अने उद्योगना व्यवहारमां निपुण थवाने विदेशगमन करवामां अने पाश्चिमात्य प्रवृतिओमां स्वधर्मने दूषित कर्या विना भळवामां तेओ हृदयथी संमत छे, अने तेमने सहाय आपवामां तेओ सर्वदा उत्सुक रहे छे. पोतानी कोमना लोको विद्वान् तथा उद्योगी थवा इच्छता होय, तेमने मासिक वेतन (स्कोलरशीप)आदिथी निर्वाहनी चिंतामांथी मुक्त करवा. अने तेमने उन्नतिना उंचा शिखरनुं दर्शन कराववुं, एवी शेठ वसनजीभाइना हृदयमां सदा इच्छा रह्या करे छे. आ देशना तेमज परदेशना म्होटा विद्वानोने, कविओने अने ग्रंथकारोने तेमना कार्यमां उत्तेजन आपवामांज तेमनी उदारता साधक थाय छे. "केळवणी पामी संस्कारिणी थयेली श्राविकाओ स्वतंत्र, समर्थ, सदाचारी अने धर्मिष्ट विदुषिओ थइ श्रावकसंसारने दीपावे अने पोतानी बाळप्रजा केळवी वीरपुत्रनी पदवी सार्थक करे " ए इच्छा शेठ वसनजीभाइना हृदयकमळमां सदा जाग्रत रहे छे. " जैनप्रजा सदा आरोग्य, स्वस्थता, शक्ति, सुंदरता अने कल्याण प्राप्त करवाने अधिकारी थाय, " एवी उत्तम भावना तेओ धारण करे छे.

शेठ वसनजीभाइनुं वर्त्तमान जीवन उच्च प्रकारनुं छे. तेओ प्राये करीने नियमित रीते पोतानुं प्रवर्त्तन च-

लावे छे. तेमनी दिनचर्या नियमित अने सत्कर्मथी जरपूर छे. आर्हत धर्मनी आराधना करवामां अने सद्विचारथी सुशोजित एवां सत्पुस्तको वांचवामां तेमनो समय घणा जागे निर्गमन थाय छे. तेओ व्यवहारने अनुसरी प्रवर्त्ते छे, तथापि तेमना हृदयमां तात्त्विक विचारो सदा उद्जव्या करे छे. तेमनो स्वजाव दयामय अने प्रेमालु होवाथी तेओ प्रत्येक स्थाने उत्तम मान पामे छे. कोइ पण विद्वान् के गुणी तेमनी मुलाकात ले छे. ते तेमना विनय, विवेक अने सादाइ विगेरे उत्तम गुणो जोइ संतोष पामे छे.

शेठ वसनजीजाइ पोताना सुखी कुटुंबमां संतोषथी रही स्वकर्त्तव्यमां तत्पर रहे छे. तेओनी अर्वाचीन जावनाओ प्राचीन जावनाओने अनुसरे छे. तेओ व्यवहार मार्गने मान आपे छे, तथापि "जोगैश्वर्यमांथी—विषयवासनामांथी निवृत्त थवुं अने साधुता संपादन करवी. ए आपणुं पोतानुं कार्य छे, अने आपणा पोताना वशमां छे." एम तेओ हृदयथी माने छे. वळी तेओ सारी रीते समजे छे के, "देशकाळना बळे मनुष्य मात्रने चालता युगना—आराना धर्मो प्राप्त थाय छे, अने ते धर्मना प्रतिपालनमां मनुष्ये शुं करवुं जोइए? तेनी स्वाजाविक रीते गणना थाय छे, अने थवी जोइए. अने ते गणनामां फळनी कसोटी पण वास्तविक रीते स्वीकारवी जोइए, तथापि महत्वानुं खरुं बीज पोतपोताना कर्त्तव्यमांज छे. संसारना मोहमांथी निवृत्ति परायण एवा जीवनने जो कर्त्तव्यमां जोरुवामां आवे, तो ते जीवन पोतानी ए स्थितिनुं फळ सारी रीते मेळवी शके छे." आवा विचारोने लइने शेठ वसनजीजाइ हमेशां धनाढ्य गृहस्थ तरीकेनुं पोतानुं कर्त्तव्य अदा करवाने तत्पर रहे छे, अने तेमांज पोताना जीवननी सार्थकता माने छे.

आवा उच्च, उन्नत, उदार लक्षणोवाळा एक धनाढ्य नरनुं जीवन आ लोकमां सर्वने अनुकरणीय छे. तेमनी कृतिओ उपरथी जविष्यमां हजु ते जीवन केवुं प्रशंसनीय थशे? ए वातनी आपणने पूर्ण प्रतीति प्राप्त थाय छे. शेठ वसनजीजाइना जीवननो प्रजाव सर्व जैन कोममां अने आर्य श्रीमंतोमां उज्वल कीर्तिस्तंजरुप छे. ते आदरथी अने मान्यजावथी हमेश जळवाशे, एमां संशय नथी. आवा योग्य नरनुं संक्षिप्त जीवन वांचवाथी अनेक प्रकारना ला-

भ थाय छे अने भविष्यमां ते बीजाने प्रोत्साहक अने उत्तेजक थइ पडे छे. श्रीपरमात्मा एवा वीरपुत्रने दीर्घायुष्य आपो, अने तेमना निर्मल हृदयने हवे पछीना जीवनमां सारां सारां कार्यो करवाने प्रेरणा करो. एज मारी नम्र प्रार्थना छे.

श्री जैन धर्म विद्या प्रसारक वर्ग.

श्री उपदेशपद.

(नमः श्रीसर्वज्ञाय).

यस्योपदेशपदसंपदमापदंत—संपादिकां सपदि संघटितश्रियं च। आसाद्य संति त्नविनः कृतिनः प्रयत्नात्—तं वीरमीरितरजस्तमसं प्रणम्य,—१ तत्त्वामृतोदधीना—मानंदितसकलविबुधहृदयानां। उपदेशपदानामह—मुपक्रमे विवरणं किंचित्. ॥ २ ॥ पूर्वैर्यद्यपि कल्पितेह गहना वृत्तिः समस्त्यल्पधी—र्लोकः कालबलेन तां स्फुटतया बोद्धुं यतो न क्षमः। तत्तस्योपकृतिं विधातुमनघां स्वस्यापि तत्त्वानुगां—प्रीतिं संतनितुं स्वबोधवचनो यत्नोयमास्थीयते. ॥ ३ ॥

जे प्रभुनी आपदनो अंत लावनारी अने लक्ष्मीने जोडनारी उपदेशसंपद् हाल पामीने भव्यजनो कृतकृत्य थाय छे ते रजस्—तमस् रहित (रागद्वेष मोहरहित) वीर प्रभुने नमीने—तत्त्वरूप अमृतना समुद्र समान अने सकळ विबुधना हृदयने आनंदित करनार उपदेशना पदोनुं हुं कांइक विवरण करूं छुं. (१—२)

आ शास्त्रनी पूर्वाचार्योए जोके वृत्ति करेली हयात छे, छतां ते गहन होवाथी काळना योगे अल्पबुद्धिवान् बनेला लोको तेने स्फुटरीते समजी शकता नथी, माटे तेमनो उपकार करवा अने पोताने पण तत्त्वने अनुसरती प्रीति वधारवा पोताना बोधना अनुसारे आ यत्न करवा मांड्यो छे ॥ ३ ॥

इह खल्वार्यमंमलमध्योपलब्धजन्मानोपि निःपंकपंकजपुंजोज्वलकुलजातिप्रभृतिगुणमणिरमणीयताभाजोपि तथाविधशास्त्राभ्यासवशोपजातजात्यमतिमाहात्म्यापहस्तितबृहस्पतयोपि विहितौदार्यदाक्षिण्यप्रियंवदत्वाद्यनुपमकृत्यपरंपरासंपादितसकलमनस्विमानवमनःप्रमोदसंपदोपि स्वभावत एव मंदमोहमदिरामदतया मनाकूप्राप्तनिर्वाणपुरपथानुकूलविषयवैराग्या अपि प्राणिनः प्रायो जिनोपज्ञानि सकलकुशलारंभमूलबीजानि अत एवाधरीकृतनिधानकामधेनुप्रमुखपदार्थप्रभावाणि दूरसमुत्सारितप्रचुरतरमोहतिमिरप्रसराण्युपदेशपदानि विना न सम्यग्दर्शनादिपरिपूर्णमोक्षमार्गावतारसारा भवितुमर्हंति.

आ जगत्मां खरेखर आर्यदेशमां जन्मेला, निर्मळ पंकजना माफक उज्वळ कुळजाति वगेरे गुणमणिथी रमणीय रहेला, तथाविध शास्त्राभ्यासना वशथी उत्पन्न थएली उत्तम बुद्धिना बळथी बृहस्पतिने वण हरवनारा, औदार्य—दाक्षिण्य—प्रियभाषित्व वगेरे अनुपम कामोनी परंपरा करवाथी सघळा मनस्वि मनुष्योना मनने प्रमोद आपनारा अने स्वभावथीज मोहमदिरानो ओछो छक होवाथी निर्वाणपुरना मार्गने अनुकूळ एवा विषयवैराग्यने जराक प्राप्त थएला प्राणिओ पण प्राये जिनेश्वरप्रणीत सकळ कुशळ कामना मूळबीज रुप अने तेथीज निधान अने कामधेनु वगेरे पदार्थोना प्रभावने हलका पाडनार अने अति आकरा मोहरूप अंधकारना जोरने दूर करनार उपदेशना पदो विना सम्यक् दर्शन वगेरे परिपूर्ण मोक्षमार्गमां उतरी शकता नथी.

कथंचित्तत्रावतीर्णा अपि अनादिकालविलग्नविलीनवासनासंतानविषवेगावेशवशेन क्षोभ्यमाणमनसो न स्थैर्यमवलंबितुमलं. यद् वक्ष्यति—सफलो एसुवएसो—गुणठाणारंभगाण भव्वाण, परिवडमाणाण तहा—पायं न उ तट्ठियाणं तु. इत्यवधार्य परहिताधाननिविडनिबद्धबुद्धिर्भगवान् सुगृहीतनामधेयः श्रीहरिभद्रसूरिरुपदेशपदनामकं प्रकरणं चिकीर्षुरादावेव मंगलाभिधेयप्रयोजनप्रतिपादकमिदं गाथायुग्ममाह.

नमिऊण महाभागं—तिलोगनाहं जिणं महावीरं । लोयालोयमियंकं—सिद्धं सिद्धोवदेसत्थं,— ॥ १ ॥ वोच्छं उवएसमए—कइइ अहं तदुवदेसओ सुहुमे । भावत्थसारजुत्ते—मंदमइविबोहणट्ठाए ॥ २ ॥

कदाच कोइ रीते तेमां तेओ उतरे छे, तोपण अनादिकाळथी लागेली भूरी वासना रूप विषना जोरना लीधे मन मुंझातां तेमां स्थैर्य धारण करी शकता नथी, जे माटे आगळ कहेशे के—प्राये आ उपदेशगुणस्थानना आरंभक अथवा तो पडतां पडनाराओने कामनुं छे, पण तेमां स्थिर रहेलाओने तेनी जरूर नथी.

एम धारीने परहित करवामां सज्ज बुद्धि करनार भला नामवाळा भगवान् हरिभद्रसूरि उपदेशपद नामे प्रकरण करता थका आदिमां मंगळ, अभिधेय, अने प्रयोजन जणावनारी आ बे गाथा कहे छे:—

महाभाग, त्रिलोकनाथ, लोकालोकमां चंद्रसमान, सफळ उपदेशवाळा, कृतकृत्य महावीर जिनने नमीने तेना उपदेशने अनुसरी हुं मंदमति जनोने बोधवा माटे केटलाक सूक्ष्म उपदेशना पद कहीश. (१—२)

इह चाद्यगाथया सकलाकुशलकलापनिर्मूलोन्मूलकत्वेन समीहितशास्त्रनिष्पत्तिहेतुरादिमंगलमुक्तं,—द्वितीयया तु प्रेक्षावत्प्रवृत्त्यर्थं साक्षादेवोपदेशपदलक्षणमभिधेयं—मंदमतिश्रोतृजनाववोधलक्षणं च प्रयोजनं. सामर्थ्याच्चाभिधानाभिधेययोर्वाच्यवाचकभावलक्षणः—अभिधेयप्रयोजनयोश्च साध्यसाधनभावस्वभावः संबंध उक्त इति समुदायार्थः संप्रत्यवयवार्थः प्रतन्यते.—तत्र नत्वा प्रणम्य प्रशस्तमनोवाक्कायव्यापारगोचरभावमानीयेति यावत् महावीरमित्युत्तरेण योगः—कीदृशमित्याह,—भागोऽचिंत्या शक्तिः—ततो महान् प्रशस्यो भागो यस्य स तथा तं महाभागं ॥

इहां पहेली गाथाथी सघळा अशिवसमूहने मूळथी उखेरुनार होइ इच्छित शास्त्रनी निष्पत्तिनुं कारण आदिमंगळ कर्युं,—अने बीजी गाथावडे बुद्धिमान् पुरुषोनी प्रवृत्तिना माटे खुल्ली रीते उपदेशपदरूप अभिधेय अने मंदमति श्रोताओने अवबोध थवा रूप प्रयोजन कह्यां छे. अभिधान अने अभिधेयनो वाच्यवाचकभाव रूप संबंध तथा अभिधेय अने प्रयोजननो साध्यसाधनभाव रूप संबंध सामर्थ्यथीज जणावेल छे. ए रीते समुदायार्थ छे.

हवे अवयवार्थ कहीयेछीये :—त्यां नमीने एटले प्रणाम करीने अर्थात् प्रशस्त मनवचनकायना व्यापारना विषय बनावीने (कोने) महावीरने, महावीर केवा छे ? ते कहे छे,—महान् एटले वखाणवा योग्य भाग एटले अचिंत्य शक्ति छे जेमने ते महाभाग छे.—

महाभागता चास्य जन्ममज्जनकाल एव सहस्राक्षशंकाशंकुसमुत्खननाय वामचरणांगुष्ठकोटिविघट्टितामरगिरिवशात् संकुलशैलराशेरिलाया विशंस्थूलतासंपादनेन, शक्रकृतपराक्रमप्रशंसासहिष्णोः क्रीमनव्याजानीतात्मपरिभवस्य स्वस्कंधभगवदारोपणानंतरमेवारब्धगगनतलोल्लंघनकारिकायवृद्धेः सुरस्य वज्रनिष्ठुरमुष्टिपृष्ठघाताद्भूमिवत्कुब्जताकरणेन, सकलत्रैलोक्यसाहाय्यनिरपेक्षतया प्रव्रज्यानंतरमेव दिव्याद्युपसर्गसंसर्गाधिसहनांगीकारेण, केवलज्ञानलाभकाले चाष्टमहाप्रातिहार्यसपर्योपस्थापनेन,—तदनु—आंतरतमःपटलपाटनपटीयसा समस्तजनमनोहारिणा अवितथकथापथस्फीतिकारिणा जातिजरामरणापहारिणा प्रधानार्द्धमागधभाषाविशेषेण समकालमेव मित्रस्वरूपनरावरादिजंतुसंशयसंदोहापोहसमुत्पादनेन, स्वविहारपवनप्रसरेण च पंचविंशतियोजनप्रमाणचतुर्दिग्विभागमहीमंमलमध्ये सर्वाधिव्याधिरजोराशेरपसारणेन, सकलसुरासुरातिशायिशरीरसौंदर्यादिगुणग्रामवशेन च, त्रिभुवनस्यापि प्रतीतैव.

नीचेना कामोथी तेमनी महाभागता त्रणे जगत्ने जाणीती छेः—तेमणे जन्मस्नात्र वखते इंद्रनी शंका टाळवा डाबा अंगुठथी मेरुने दबावी अनेक पर्वतोवाळी जमीनने विसंस्थूळ करी,—इंद्रे करेल प्रशंसाथी चीडाइने रमतमां पोताने हारेलो बतावी तेमने पोताना खंधे चडावी आकाशलगी शरीरने वधारनार देवने तेमणे वज्रमाफक मूठ मारी भूमि सरखो कुब्ज बनाव्यो,—कोइना पण साहाय्यनी अपेक्षा न राखतां दीक्षा लेवा बाद तरतज दिव्य उपसर्ग सहेवा कबूल कर्या,—केवळ ज्ञान थतां तेमने आठ महाप्रातिहार्य उपस्थित थयां,—बाद आंतरना अंधारने दूर करनार सौना मनहरनार सत्य वातोने जणावनार जन्मजरा मरणने टाळनार अर्धमागधी भाषावडे समकाळेज अनेक सुरासुरादि जंतुओना संशयो तोड्या, पोताना विहारथी पचीश योजनलगी चारे दिशाओमां सघळी आधि व्याधि दूरथी,—अने सघळा सुरासुर करतां तेमना शरीर सौंदर्यादि गुणो अधिक हता. आ कारणोथी ते महाभाग हता.

पुनरपि कीदृशमित्याह,—लोक्यते केवलालोकलोचनबलेन केवलिभिर्दृश्यते यः स लोकः स च धर्माधर्मजीवपुद्गलास्तिकायोपलक्षित आकाशदेशः—तदुक्तं धर्मादीनां वृत्ति—र्द्रव्याणां भवति यत्र तत् क्षेत्रं, तैर्द्रव्यैः सह लोक—स्तद्विपरीतं ह्यलोकाख्यं ॥ १ ॥ इह तु तदेकदेशोऽपूर्ध्वादिर्ग्रामैकदेशग्रामवल्लोक इत्युच्यते—ततस्त्रयो लोकाः समाहतास्त्रिलोकं—त्रिलोकस्य लोकत्रयवर्त्तिनो भव्यजनस्य नाथो,ऽप्राप्तसम्यग्दर्शनादिगुणाधानेन प्राप्तगुणानां च तत्तदुपायप्ररूपणेन रक्षणतो योगक्षेमकर्त्ता यस्तं त्रिलोकनाथं, जिनं दुरंतरागाद्यंतरवैरिवारजेतारं, कमित्याह—दुर्गसुराधमसंगमकादिक्षुद्रजंतुकृतोपसर्गवर्गसंसर्गेपि अविचलितसत्त्वतया महान् बृहद्वीरः शूरो यस्तं महावीरं—अपश्चिमतीर्थाधीश्वरं वर्द्धमाननामानमित्यर्थः ॥

वळी ते केवा छे ते कहे छे.—केवळ ज्ञान रूप लोचनना बळे केवळिओथी जे जोवाय ते लोक छे. ते धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, जीवास्तिकाय, अने पुद्गळास्तिकायथी भरेला आकाश देश छे. जे माटे कहेलुं छे के "ज्यां धर्मास्तिकायादिक द्रव्यो होय ते क्षेत्र ते द्रव्योनी साथे लोक कहेवाय छे अने तेथी विपरीत ते अलोक छे." पण इहां तो तेनो ऊर्ध्वादिक एक देश पण, गामना भागने पण गाम कहेवाय तेम लोक कहेवाय छे. तेथी त्रण लोकना भव्यजनोना नाथ एटले अणपामेला सम्यग्दर्शनादि गुणने पमाडनार अने पामेला गुणोना ते ते उपाय बतावीने रक्षण करनार एम योगक्षेम कर्त्ता छे, तथा जिन एटले दुरंत रागादिक अंतरवैरिओने जीतनार छे. एवा ते कोण छे ते कहे छे.—अधम सुर संगमक वगेरे क्षुद्र जंतुओए करेला उपसर्गमां पण अविचळ हिम्मत राखनार होवाथी महान् एटले वडा वीर एटले शूर ते महावीर एटले के छेल्ला तीर्थपति वर्द्धमान स्वामी.—

पुनरपि कीदृशमित्याह—लोक उक्तलक्षणस्तद्विपरीतश्चालोकः—लोकालोकयो र्मृगांक इव केवलालोकपूर्वकवचनचंद्रिकाप्राग्भारेण यथावस्थिततत्स्वरूपप्रकाशनात् तं लोकालोकमृगांकं, तथा षिञ्बंधने इतिवचनात्सितं चिरकालबद्धं कर्म ध्मातं निर्दग्धं शुक्लध्यानानलाग्नेन स निरुक्तात्सिद्धः—षिधु गत्यामिति गतो निर्वृत्तिं—ख्यातो भुवनाद्भुतभूतविभूतिभाजनतया—षिधू शास्त्रे मांगल्ये चेति वचनात्समस्तवस्तुस्तोमशास्ता विहितमंगलः—षिधु संराद्धौ राध साध संसिद्धाविति वचनात् साधितसकलप्रयोजनो वा सिद्धस्तं सिद्धं,—उक्तं च—ध्मातं सितं येन पुराणकर्म—यो वा गतो निर्वृतिसौधमूर्ध्नि, ख्यातोऽनुशास्ता परिनिष्ठितार्थो—यः सोऽस्तु सिद्धः कृतमंगलो मे.

वळी ते केवा छे ते कहे छे:—लोक अने अलोकमां केवळ ज्ञान रुप अजवाळा पूर्वक वचनरुप चंद्रिकावडे तेनुं खरेंखरूं स्वरूप प्रकाशित करनार होवाथी चंद्रसमान,

तथा "षिञ् बंधने" ए धातुपरथी सित एटले चिरकाळथी बांधेल कर्म ते ध्मात एटले शुकळध्यान रूप अग्निथी बाळ्युं छे जेमणे ते निरुक्तथी सिद्ध कहेवाय छे—अथवा "षिधु गत्यां" ए धातुपरथी निवृत्तिने पामेला के जगतने आश्चर्यकारक विभूतिना भाजन होवाथी प्रख्यात रहेला ते सिद्ध छे—अथवा "षिधू शास्त्रे मांगल्येच" ए धातुपरथी सघळी चीजोना शास्ता अने कृत मंगळ ते सिद्ध छे—अथवा "षिधु संराद्धौ—राधसाध संसिद्धौ" ए धातुपरथी सकळ प्रयोजन साधनार ते सिद्ध जाणवा. कहेलुं पण छे के:—

जेणे बांधेलां जूनां कर्म बाळ्यां छे, अथवा जे निवृतिरूप महेलना शिखरपर गया छे, अथवा जे ख्यात छे अनुशास्ता छे के कृतकृत्य छे ते सिद्ध मने मंगळकारी थाओ.

तथा सिद्धः प्रमाणबलोपलब्धात्मतत्त्व उपदेशस्य प्रवचनस्यार्थः जीवाजीवादिरूपोऽभिधेयविशेषो यस्य स तथा—अथवा सिद्धः सकलक्लेशविनिर्मुक्तो जीवविशेषः स एवोपदेशस्याज्ञाया अर्थः प्रयोजनं यस्य स तथा—भगवदाज्ञाया मोक्षैकफलत्वेन परमर्षिभिः प्रतिपादितत्वा—दतस्तं सिद्धोपदेशार्थं. अत्र च विशेषणबाहुल्यं अज्ञातज्ञापनफलमेवोक्तं, न पुनर्व्यवच्छेदार्थं,—यथा कृष्णो भ्रमरः शुक्ला बलाका इत्यादीवेति. वक्ष्येऽभिधास्ये—किमित्याह—उपदेशपदानि—इह सकललोकपुरुषार्थेषु मोक्ष एव प्रधानः पुरुषार्थ इति तस्यैव मतिमतामुपदेष्टुमर्हत्वेन तदुपदेशानामेव भावत उपदेशत्वमामनंति—तत उपदेशानां मोक्षमार्गविषयाणां शिक्षाविशेषाणां पदानि स्थानानि मनुष्यजन्मदुर्लभत्वादीनि, यद्वा उपदेशा एव पदानि वचनानि उपदेशपदानि तानि.

वळी प्रमाण बळेथी सिद्ध थयो छे जेना उपदेशनो एटले प्रवचननो जीवाजीवादि रूप अर्थ जेनो ते सिद्धोपदेशार्थ कहेवाय—अथवा सिद्ध एटले सकळक्लेशरहित जीव तेज जेना उपदेश एटले आज्ञानो अर्थ एटले प्रयोजन छे ते सिद्धोपदेशार्थ जाणवा. केमके भगवाननी आज्ञानुं फळ एकलो मोक्षज छे एम परमर्षिओए कहेलुं छे.

इहां जाजां विशेषणो अजाण्याने जणाववा खातरज छे, नहिके व्यवच्छेद माटे,—जेमके काळो भमरो धोळी बगली—इत्यादि माफक.

उपदेशना पदो कहीश. त्यां सघळा पुरुषार्थोमां मोक्षज प्रधान छे तेथी बुद्धिवानोए तेनोज उपदेश करवो योग्य होवाथी ते संबंधी उपदेशोनेज भावथी उपदेशपणुं कहे छे, तेथी उपदेशो एटले मोक्षमार्ग संबंधी शिक्षाओना पदो एटले मनुष्यजन्म दुर्लभ छे इत्यादि पदो, अथवा उपदेशो एज पदो एटले वचनो ते उपदेशपदो जाणवा.

कतिचित्स्वरूपानि सूत्रतोऽर्थतस्त्वपरिमाणानि—सर्वसूत्राणामनंतार्थाभिधायकत्वेन पारगतगदितागमे प्रतिपादनात्. तथा चार्ष—सव्वनईणं जाहुज्ज—वालुया सव्वउदहिजं तोयं । एत्तो अणंतगुणिओ—अत्थो सुत्तस्स एक्कस्स. । कथं वक्ष्ये इत्याह. तस्य महाभागादिगुणभाजनस्य भगवतो महावीरस्योपदेशास्तदुपदेशास्तेभ्यस्तदुपदेशतः महावीरागमानुसारेणेत्यर्थः—स्वातंत्र्येण छद्मस्थस्योपदेशदानानधिकारित्वात्. कीदृशानीत्याह—सूक्ष्माणि सूक्ष्मार्थप्रतिपादकत्वात् कुशाग्रबुद्धिगम्यानि, अतएव भावार्थऔदंपर्यं तदेव सारः पदवाक्यमहावाक्यार्थेषु मध्ये प्रधानं तेन युक्तानि भावार्थसारयुक्तानि.

केटलाक एटले सूत्रथी थोडा बाकी अर्थथी तो अपरिमित—केमके सर्वे सूत्रो अनंत अर्थना कहेनार छे एम सर्वज्ञप्रणीत आगममां कहेलुं छे. जुवो ऋषिवाक्य आ रीते छे :—

सर्वे नदीओनी जेटली वालुका छे तथा सर्वे समुद्रोनुं जेटलुं पाणी छे तेनाथी अनंतगणो एक सूत्रनो अर्थ छे.

केम कहीश ते कहे छे :—ते महाभागादिगुणवान भगवान् महावीरना उपदेशने अनुसरीने, केमके स्वतंत्रपणे छद्मस्थने उपदेश देवानो अधिकार नथी.

वळी केवां ते कहेछे :—सूक्ष्म एटले के सूक्ष्म अर्थना जणावनार होवाथी कुशाग्र बुद्धिथी जणाइ शके एवां, अने तेथीज भावार्थ एटले ऐदंपर्य (तात्पर्य) तेज पदार्थ, वाक्यार्थ, ने महावाक्यार्थमां सार एटले प्रधान गणाय छे तेणे करीने युक्त.

भावार्थश्च "एयंपुणएवंखलु"—इत्यादिना वक्ष्यते किमर्थमित्याह—मंदा जना संशयविपर्ययानध्यवसायविप्लवोपेता तत्त्वप्रतीतिं प्रति मतिर्बुद्धिर्येषां ते तथा—तेषां विबोधनं संशयादिबोधदोषापोहेन परमार्थप्रकाशनं तदेवार्थः प्रयोजनं यत्र भणने तन्मंदमतिविबोधनार्थं—क्रियाविशेषणमेतत्. अथ पदेषूपदेशपदेषु सर्वप्रधानमुपदेशपदं तदभिधित्सुराह ;—

लद्धूण माणुसत्तं—कहंचि अइदुल्लहं भवसमुद्दे । सम्मं निउंजियव्वं—कुसलेहि सयावि धम्मंमि ॥ ३ ॥

लब्ध्वा समुपलभ्य मानुषत्वं मनुजभावलक्षणं कथंचित्केनापि प्रकारेण तनुकषायत्वादिनाध्यवसायविशेषेणेत्यर्थः—यदवाचि.

भावार्थनुं स्वरूप "एयं पुण एवं खलु" ए वगेरे गाथाओथी आगळ कहेवामां आवशे.

शामाटे कहीश ते कहे छे—तत्वनी प्रतीति प्रते मंद एटले संशय विपर्यय, अने अनध्यवसायनी गरबडवाळी जड बुद्धि छे जेमनी तेवा मंदमतिओनुं विबोधन एटले संशयादिक दोष टाळीने तेमने परमार्थ जणाववो तेना अर्थे एटले प्रयोजने आ क्रिया विशेषण छे.

हवे ए उपदेशना पदोमां जे सौथी प्रधान उपदेशपद छे ते कहे छे.

आ भवसमुद्रमां अति दुर्लभ मनुष्यपणुं कोइ पण रीते पामी करीने कुशळ पुरुषोए हमेशां धर्ममां उद्यम करवो. ३.

मानुषत्व एटले मनुजपणुं कोइ पण प्रकारे करी एटले के अल्पकषाय वगेरे अध्यवसाय विशेषे करीने लहीने एटले पामीने—जे माटे कहेलुं छे के :—

पयईइ तणुकसाओ—दाणरओ सीलसंजमविहूणो । मज्झिमगुणेहि जुत्तो—मणुयाउं बंधए जीवो ॥१॥ अतिदुर्लभमतीवदुरापं वक्ष्यमाणैरेव चोल्लकादिभिर्ज्ञातैर्भवसमुद्रे अनेकपरजात्यंतरनीरभराकीर्णे रूनर्वाकूपारे संसाराकूपारे, किमित्याह—सम्यक् स्वावस्थोचितानुष्ठानारंभरूपसंगतभावयुक्तं यथा भवति एवं नियोक्तव्यं मनोवाक्कायसामर्थ्यागोपनेन व्यापारणीयं कुशलैरज्ञानादिदोषकुशलवंचनकलाकलापकलितैः मतिमद्भिः पुंभिरित्यर्थः—सदापि बालयुवत्वादिसर्वावस्थाव्याप्त्या सर्वकालमेव, धर्मे श्रुतचारित्रलक्षणे जिनप्रणीते, एतएव पठ्यते बाल एव चरेद्धर्म—मनित्यं खलु जीवितं । फलानामिव पक्वानां—शश्वत् पतनतो भयं ॥ १ ॥

स्वभावे पातळा कषायवाळो शीळसंयमरहित छतां दानपरायण एम मध्यम गुणवान् जीव मनुष्यनुं आयु बांधे छे.

ते वक्ष्यमाण चोल्लकादिक दृष्टांतोथी अनेक जातिरुप नीरथी भरपूर लांबा संसार समुद्रमां अति दुर्लभ छे. माटे ते पामीने शुं करवुं ते कहे छे :—सम्यक् एटले पोतानी अवस्थाने उचित अनुष्ठान करवा रुप रंगभावथी तेने कुशळ एटले अज्ञानादि दोषने छेतरवामां बरोबर कळावाज बुद्धिमान् जनोए हमेशां एटले बाळपण तथा जुवानी वगेरे सघळी अवस्थाओमां श्रुतचारित्र रूप जिनप्रणीत धर्ममां मन वचन कायनुं सामर्थ्य छुपाव्या वगर वापरवुं. जे माटे कहेवाय छे के—

बाळ छतां पण धर्म करता रहेवुं. केमके जीवित अनित्य छे, तेथी पाका फळोनी माफक हमेशां तेना पडवानुं भय रहे छे. १

अद्य श्वो वा परश्वो वा—श्रोष्यते निष्पतिष्यतः, परिपक्कफलस्येव— वपुषोपि ट-णक्कः ॥ ३ ॥ मनुजत्वदुर्लभत्वमेवाह—

अइदुल्लहं च एयं—चोल्लगपमुहेहिं अत्थ समयंमि, भणियं दिट्ठंतेहिं—अह-मवि ते संपविक्खामि ॥ ४ ॥

अतिदुर्लभंचातिदुरापमेव एतन्मानुषत्वं चोल्लकप्रमुखैरनंतरमेव व्याख्यास्यमा-नैर्दशभिरत्रार्हते समये सिद्धांते भणितं निरूपितं वर्त्तते दृष्टांतैरुदाहरणैः—यदि नामैवं ततः किमित्याह अहमपि कर्त्ता—न केवलं पूर्वैरेवोक्ता इत्यादिशब्दार्थः—तान् चो-ल्लकादिदृष्टांतान् संप्रवक्ष्यामि भगवद्भद्रबाहुस्वामिभणितानुसारसांगत्येन प्रतिपाद-यिष्यामि.

आजे, काले, के परमदिने पाकेला फळनी माफक पमनार शरीरनो टणकारो संभळाशे. ३.

मनुष्यभवनुं दुर्लभपणुंज कहे छे :—

जैन सिद्धांतमां चोल्लक वगेरे दृष्टांतोथी ए मनुष्यपणुं अतिदुर्लभ कहेलुं छे, तेथी हुं पण ते दृष्टांतो क-हीश. ४.

अति दुर्लभ एटले अति मुश्केलीथी पमाय छे आ एटले मनुष्यपणुं चोल्लक वगेरे हवे तरतमां कहेवामां आ-वनार दश दृष्टांतोथी एम आ समयमां एटले जैन सिद्धांतमां कहेलुं छे.

ज्यारे एम छे त्यारे हुं आ ग्रंथनो कर्त्ता पण—(नहिके फक्त पूर्वाचार्योज कही गया छे—) ते चोल्लका-दिक दृष्टांतो भगवान्भद्रबाहुस्वामीए कहेला छे तेने अनुसारे प्रतिपादन करीश.

ननु पूर्वैरेवोपदेशपदानामुक्तत्वात् किं भवतः पिष्टपेषणप्रायेण तद्भणनेन प्रयोजनमिति ?

उच्यते — पूर्वैस्तत्कालभाविनः प्रौढप्रज्ञान् श्रोतृन् स्वयमेव भावार्थप्रतिपत्तिसहानपेक्ष्य भावार्थाविष्करणानादरेण नोपदेशप्रणयनमकारि, — संप्रति तु तुच्छबुद्धिः श्रोतृलोको न स्वयमेव भावार्थमवबोद्धुं क्षमते इति तदनुग्रहधिया भावार्थसारयुक्तोपदेशपदप्रणयनं प्रस्तुतमिति.

चोल्लकादिदृष्टांतानेवाह — चोल्लगपासगधण्णे — जूए रयणे य सुमिणचक्के य, ।
चम्मजुगे परमाणू — दस दिट्ठंता मणुयलंभे. ५.

कदाच कोइ एम पूछशे के उपदेशना पदो तो पूर्व पुरुषोने कहेलाज छे, तो पछी पीसेलाने पीसवा माफक तमारे ते कहेवानुं शुं प्रयोजन छे.

एनो जवाब ए छे के, पूर्व पुरुषोए ते काळे रहेला प्रौढ बुद्धिवाळा सांभळनाराओ के जेओ पोतानी मेळेज भावार्थ समजी शके तेमना खातर भावार्थ बताव्या वगर उपदेश करेल छे, पण हमणांना तुच्छ बुद्धि श्रोताजनो पोतानो भावार्थ समजी शके तेम नथी; तेथी तेमनापर अनुग्रह बुद्धि लावी भावार्थना सारसहित उपदेश पदो कहेवाने शरु कर्या छे.

चोल्लक विगेरे दृष्टांतोज कहे छे.

चोल्लक, पाशक, धान्य, द्यूत, रत्न, स्वप्न, चक्र, चर्म, युग, अने परमाणुओ, ए दश दृष्टांत मनुष्यभव पामवामां अपाय छे. ५

चोल्लकश्च पाशकौ च धान्यानि चेति चोल्लकपाशकधान्यानि—धन्नेत्येकवचननिर्देशः प्राकृतत्वात्—एवमन्यत्रापि (३), द्यूतं प्रतीतमेव, (४), रत्नानि च (५), स्वप्नश्च चक्रं चेति स्वप्नचक्रे (६—७), चः समुच्चये, चर्म च युगं चेति चर्मयुगे (८—९), पदैकदेशेपि पदसमुदायोपचारादिह युगशब्देन युगसमिले गृह्येते, परमाणवः (१०),—अमी दशसंख्याः दृष्टं प्रमाणोपलब्धमर्थं मनुजत्वदुर्लभत्वादिलक्षणमंतं श्रोतुः प्रतीतिपथं नयंतीति दृष्टांताः मनुजलंभे मानुष्यप्राप्तावित्यर्थः—

दृष्टांतभावना चैवं कार्या.

चोल्लक, बे पासा, अने जूदी जूदी जातना धान्यो—ए त्रण–इहां धान्यो घणां छतां प्राकृतभाषाना कारणे एकवचनथीज ते बताव्यां छे. एम बीजा स्थळे पण समजवुं. चोथुं जुगार, पांचमा रत्नो, छठुं स्वप्न, सातमुं चक्र, चकार समुच्चयार्थ छे, आठमुं चर्म अने नवमुं युग एटले पदना एक देशथी आखो पदसमुदाय लेतां इहां युग शब्दे करी युग एटले धूसरीनी बे समेलो लेवी, अने दशमा परमाणुओ—एम ए दश दृष्टांतो एटले प्रमाणवडे जाणवामां आवता मनुष्यभव दुर्लभत्वादिरूप अर्थने अंतपर एटले के सांभळनारनी खात्रीपर लावे ते दृष्टांतो मनुष्यभव पामवामां छे,

दृष्टांतोनी भावना आ रीते करवी.

जीवो मानुष्यं लब्ध्वा पुनस्तदेव दुःखेन लप्स्यत इति प्रतिज्ञा अकृतधर्मत्वे सति बह्वंतरायांतरितत्वादिति हेतुः

यद्यद्बहुभिरंतरायैरंतरितं तत्तत् पुनर्दुःखेन लभ्यते,— ब्रह्मदत्तचक्रवर्त्तिमित्रस्य ब्राह्मणस्यैकदा चक्रवर्त्तिगृहे प्राप्तभोजनस्य सकलभरतक्षेत्रवास्तव्यराजादिलोकगृहपर्यवसाने पुनश्चक्रवर्त्तिगृहे चोल्लकापरनामभोजनवत्, ॥ १ ॥ चाणाक्यपाशकपातवत्, ॥ २ ॥ भरतक्षेत्रसर्वधान्यमध्यप्रक्षिप्तसर्षपप्रस्थपुनर्मीलकवत्, ॥ ३ ॥—अष्टाधिकस्तंभशताष्टोत्तराश्रिशताष्टसमर्गलशतवारानिरंतरद्यूतजयवत्, ॥ ४ ॥ महाश्रेष्टिपुत्रनानावणिक्देशविक्रीतरत्नसमाहारवत्, ॥५॥

जीव मनुष्यभव पामीने फरीने ते भव मुश्केलीए पामे छे ए प्रतिज्ञा एटले आपणी साध्य वात छे. त्यां हेतु ए छे के, धर्म न करेल होवाथी त्यां घणा अंतराय आवी पडे छे. आ उपरथी एवी प्राप्ति थइ शके छे केः—

जे जे बहु अंतरायवाळुं होय ते ते दुःखे पमायः—ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्तिनो मित्र ब्राह्मण चक्रवर्त्तिने घेर जमीने पछी आखा भरतक्षेत्रमां रहेनार राजादिक लोकोना घेरे जम्या बाद फरीने चक्रवर्त्तिना घेरे चरु के भोजन करे तेनी माफक ॥ १ ॥ चाणाक्यना पासाने जीतवा माफक ॥ २ ॥ भरतक्षेत्रना सघळा धान्य वच्चे सरसवनी पाली भेळीने ते पाछी जूदी पाडवी तेनी माफक ॥ ३ ॥ एकसो आठ थांभला—अकेक थांभले एकसो आठ खूणा, अने दरेक खूणे एकसो आठ वार निरंतरपणे जुगार रमतां जीत मेळववी तेनी माफक ॥ ४ ॥ शेठना पुत्रे जूदा जूदा देशना वेपारीओने वेचेलां रत्नो फरीने एकठा करवा तेनी माफक ॥ ५ ॥

महाराज्यलाभस्वप्नदर्शनाकांक्षिस्वप्नकार्पटिकतादृशस्वप्नलाभवत्, ॥६॥ मंत्रिदौहित्रराजसुतसुरेंद्रदत्ताष्टचक्रारकपरिवर्त्तांतरितराधावेधवत्, ॥ ७ ॥ एकच्छिद्रमहच्चर्मावनद्धमहाह्रदसंभूतकच्छपग्रीवानुप्रवेशोपलब्धपुनस्तच्छिद्रलाभवत्, ॥ ८ ॥ महासमुद्रमध्येविघटितपूर्वापरांतविक्षिप्तयुगे समिलास्वयंछिद्रानुप्रवेशवत्, ॥ ९ ॥ अनंतपरमाणुसंघातघटितदेवसंचूर्णितविभक्ततत्परमाणुसमाहारजन्यस्तंभवद्वा, ॥ १० ॥—

इति दृष्टांताः

अनेक जात्यंतरप्राप्तिलक्षणबह्वंतरायांतरितं च मानुषत्वं जन्मेत्युपनयः तस्माद्दुरापमिति निगमनमिति.

मोटुं राज्य मळ्युं एवुं स्वप्न जोइ फरीने तेवुं स्वप्न जोवा इच्छनार कापडीने तेवुं स्वप्न फरीने आवे तेनी माफक ॥ ६ ॥ मंत्रिना दोहित्र राजकुमार सुरेंद्रदत्ते आठ चक्रना फरता आरामांथी राधा पूतळीनी आंख वींधी तेनी माफक ॥ ७ ॥ एकज काणावाळा मोटा चामडायी ढांकेला मोटा द्रहमां रहेला काचबानी कोट ते काणामां पेसी गइ एटले फरीने ते छिद्र तेने मळे ते माफक ॥ ८ ॥ मोटा समुद्रमां पूर्व किनारे धूसरीनी समेलो जूदी करीने नाखी होय अने पश्चिम किनारे धूसरी नाखी होय तेम छतां पोतानी मेळे तेओ छिद्रमां दाखल थाय ते माफक ॥ ९ ॥ अने अनंत परमाणुना संघातथी बनेलो थांभलो कोइ देवता चूरेचूरो करीने तेना परमाणु जूदा करी नाखे ते पाछा एकठा थइने स्तंभ बने तेनी माफक ॥ १० ॥

अनेक तरेहनी जूदी जूदी जातिओ पामवारूप घणा अंतरायोथी मनुष्यभव लांबे अंतरे मळे छे. ए उपनय छे.

अथैतानेव दृष्टांतान्विस्तरतः क्रमेण नावयन्नाह.

चोल्लति नोयणंवंनदत्तपरिवारनारहजणंमि, सयमेव पुणो डुलहं—जह तत्य, तहेत्य मणुयत्तं ॥ ६ ॥

गाथानावार्थः कथानकादवसेयस्तच्चेदं.—

अत्थि इह नरहवासे—दाहिणनरहद्धमज्झखंमंमि, निच्चमकंपिल्लंपर—नयाहि कंपिल्लनामपुरं. ॥ १ ॥ सुइणासीलेण धणेण—नूरिणा वाढवूढमाहप्पो, सुमिणेवि जत्थ न कुणइ—परदारालोयणं लोगो ॥ २ ॥ दक्खिन्नामयजलही—पियंवओ थिरगहीरचित्तो य, अइपनरी पनरजणो—जायपमोओ सया वसइ ॥ ३ ॥

माटे ते दुर्लन छे ए निगमन जाणवुं.

हवे एज दृष्टांतोने विस्तारथी अनुक्रमे कही बतावे छे.

चोल्ल एटले नोजन ते ब्रह्मदत्तना (मोटा परिवार तथा नरतक्षेत्रना (घणा) जनोमां (करवानुं होवाथी) फरीने चक्रवर्त्तिना घरे मळवुं दुर्लन छे, तेम इहां मनुष्यपणुं छे. ६

गाथानो नावार्थ कथानकथी समजवानो छे, ते कथानक छेः—

आ नारतवर्षमां दक्षिण नरतार्द्धना मध्य खंममां दुश्मनोना नयथी हमेशां अकंप्य (अमग) रहेतुं कांपिल्यपुर नामे नगर हतुं. १ पवित्र शीळ अने पुष्कळ धनथी अतिशय मोटाइ पामेला त्यांना लोको स्वप्नमां पण परस्त्री तरफ नजर नहीं करतां. २ त्यां दाक्षिण्यरुप अमृतना दरियासमान, मीठुं बोलनारा, अमग अने ऊंमा मनवाळा पुष्कळ माणसो हमेशां हर्षथी वसता हता. ३ जे शहेरनी अंदर सारी जातिवाळी, अति मनोहर, अति चळकता तिलकवाळी

सज्जाईओ सुमणोहराउ अइफारतिलयकलियाओ, पुन्नागसंगसुगया—रमणिज्जपयोहराओ य ॥ ४ ॥ सच्छायाओ सुवओजुयाउ सरलाउ सुरहिगंधाओ, जत्थं तो रीमाओ—वहिया आरामपंतीओ ॥ ५ ॥ उज्जलसुवन्नतारून्नयाउ पारद्धदुक्करवयाओ, लच्छीउ जत्थ सज्जणगिहेसु विहवंगणाओ य ॥ ६ ॥—अविय, जत्थ जिणमंदिरोवरि—धणपवणपणोल्लियापडायाओ, रेहंति व धम्मियजणकित्तिओ सग्गचलियाओ ॥ ७ ॥ तं च अणेगच्छेरयसारं पालेइ विउलबलकलिओ, इक्खागुवंसवसहो—बंभो-नामेण नरनाहो ॥ ८ ॥ अइपीवरेहिं अइदीहरेहिं कत्थवि अपत्तखोडेहिं, जस्स गुणेहिं व गुणेहिं दामिया सइथिरा लच्छी ॥ ९ ॥ सामेण य दंडेण य—भेएण उ-

उमदा गाणसोने परणेली, रमणीय स्तनवाळी, सारी कांतिवाळी, सारी वयवाळी, सफळ अने शरीरे सुगंधथी वहेकती स्त्रीओ हती, तेमज जे शहेरना बाहेर जायना वेलावाळी, फळोथी भरपूर, अति मोटा तिलक नामना झाडवाळी, पुन्नाग नामना झाडोथी शोभती, सुंदर फुंवारावाळी, सारी छायावाळी, सारा पक्षिओवाळी, सरल हारोवाळी, सुगंधथी वहेकती वाडीओ हती. ४–५ ज्यां सारा लोकोना घरोमां विधवा स्त्रीओ उजळी कांति अने यौवनवाळी छतां दुष्कर व्रत पाळती अने लक्ष्मीओ पण उजळा सोना अने रुपाना ढगलारुपे रहीने (स्थिर रहेवारुप) दुष्कर व्रत पाळती. ६ वळी ज्यां जिनमंदिरोना उपर तोफानी पवनथी उडती धजाओ जाणे धार्मिक लोकोनी कीर्तिओ स्वर्गे जती न होय तेवी लागती. ७ ते अनेक आश्चर्योथी भरेला नगरने मोटा लश्करवाळो इक्ष्वाकुवंशनो धुरंधर ब्रह्म नामे राजा पाळतो हतो. ८ जे राजाना अति पुष्ट, अति लांबा, अने क्यां पण नहीं तूटेला गुणोवडे रसीओथी जीकडायली होय तेम तेनी पासे लक्ष्मी हमेशां स्थिर थइ रहेती. ९ तेणे अवसर प्रमाणे साम, दान, दंड, तथा भेद वापरी खूब जस वाप्यो हते. १० दुश्मन

वप्पयाणकरणेण, अवसरपत्तेण जसो—जेण पवित्थारिओ दूरं ॥ १० ॥ तस्सुज्ज-मरिउजमकोसिघमणजन्नसियपुरिसकारस्स, बहुपणयरयणखाणी— चुलणीनामा य आसि पिया ॥ ११ ॥ अन्नेविसु तस्स मित्ता—निक्कित्तिमभित्तिभावसंजुत्ता, चउरो चउराणणचउरबुद्धिकलिया महीपाला ॥ १२ ॥ कासीणाहो कडओ—कणेरूदत्तो य गयउराहिवई, कोसलसामी दीहो—चंपापहु पुप्फचूलो त्ति ॥ १३ ॥ निरवज्जरज्ज-चिंताधुरंधरो तह धणू महामच्चो,—पुत्तो तस्स वरधणू—धणियं कलिओ पिउगुणे-हिं ॥ १४ ॥ ते पंचवि रायाणो—बंभाईया परूढपणयवसा, विरहं अणिच्छमाणा —परोप्परंएव भणाणिंसु ॥१५॥ पत्तेयं पत्तेयं—पंचसु रज्जेसु वरिस मेक्केक्कं, नियपरिवा-रजुएहिं—जुगवं चिय संवसेयव्वं ॥ १६ वोलीणंमि य काले—केवइए दूर सुराय-

सुभटोनी कोर मरडनार ते राजानी बहु प्रेमरूप रत्ननी खाणसमान चुलणी नामे प्रिया हती. ११ ते खरी मैत्रीवाळा अने चतुर्मुख ब्रह्मानी माफक चार बुद्धियो शोभता चार राजाओ मित्र हता:—एक काशीपति कटकराजा, बीजो गजपुरनो धणी कणेरुदत्त, त्रीजो कोशळदेशनो धणी दीर्घ, अने चोथो चंपानो धणी पुष्पचूल. १२–१३ तेने चोखवा रीते राज्य-चिंतामां महागुरु धनु नामे मोटो अमात्य हतो. अने ते अमात्यनो तेनाज जेवा गुणवाळो वरधनु नामे पुत्र हतो. १४ हवे ते पांचे राजाओ जामेली प्रीतिने योगे एकबीजाना विरहने नहीं इच्छता थका अरसपरस आवुं कहेवा लाग्या. १५ आपण दरेके पांचे राज्योमां एकेक वर्ष सपरिवार साथेज रहेवुं. १६ आ रीते उदार मनथी बहु पुण्ये पामी शकाय एवुं भोगसुख भोगवतां थकां तेमने लांबोकाळ पसार थवा

पणाणं, वहुपुरापावणिज्जं—जोगसुहं जुंजमाणाणं ॥ १७ ॥ अह अन्नया कयाई—रयणीए मज्झनागसमयंमि, चुलणी अइफारफले—चउदस सुमिणे नियच्छेइ ॥१८॥

जहा—कुंजरवसहसीहअइसेया—दामसोमरविझयअभिसेया, कुंभंजोरूहसर-जलनिहिणो—दिव्वविमाणरयणगणसिहिणो (१)

तक्खणमेव पवुध्दा—सा मुध्दा कहइ वंजनरवइणो, जह सामि संपइ मए—चउदस सुमिणा इये दिट्ठा ॥ १९ ॥ राया रंजियहियओ—धाराहयनीवकुसुमसम पुलओ, फुल्लिंदीवरनयणो—जणइ इयं देवि ते होही,— ॥ २० ॥ अम्ह कुलकप्परू-क्खो—कुलज्झओ कुलपईवसंकासो, महिमंडलमउलमणी—गुणरयणखणी सुपुत्तो त्ति ॥ २१ ॥ साहियनवमासंते—संतेसु च वाउधूलिरूमरेसु, उज्जोइयदिसिचक्को—

लाग्यो. १७ एवामां एक वेळाए मध्यरात्रिना वखते चुलणी राणीए बहु मोटां फळवाळां चौद स्वप्न जोयां. १८

ते चौद स्वप्न आ प्रमाणे छे:—१ हाथी, २ बळद, ३ सिंह, ४ अतिश्वेत फूलनी माळा, ५ चंद्र, ६ सूर्य, ७ धजा, ८ अभिषेक, ९ कुंभ, १० कमळोथी भरेला तळाव, ११ समुद्र, १२ दिव्य विमान, १३ रत्ननो ढगलो, अने १४ शिखावाळी अग्नि. (१)

ते राणी तरत जागीने ब्रह्मराजाने कहेवा लागी के, हे स्वामि! में हमणां ए चौद स्वप्न दीठां. १९ त्यारे राजा पाणीनी धाराथी छंटेला नीपना फूलनी माफक पुलकित थइने विकस्वर कमळनी माफक नेत्र उघाडी करी कहेवा लाग्यो के, हे देवी! तने अमारा कुळमां कल्पवृक्ष समान—ध्वजा समान—दीवा समान, भूमंडळनो मुगटमणि, अने गुणरत्नोनी खाण, एवो सुपुत्र थशे. २०-२१ बाद कंइक अधिक नव मासना छेडे पवन अने धूळनो रूमर शांत थया

जाओ तणओ कायचमक्को ॥ २२ ॥ वद्धावणयाईसुं—विहिएसुं विविहजाइकम्मेसु, समयंमि तस्स नामं—पइट्ठियं बंभदत्त त्ति ॥ २३ ॥ सियपक्खं सोममंडल—मिव वुड्ढिं एस लहु चारुओ, लच्छीनिवाससिरिवच्छकलियवच्छत्थलयएसो ॥ २४ ॥ कत्थइ समए कडगाइएसु पत्तेसु बंभनिवपासे, बंभस्स सिरे रोगो—जाओ दाविय सुयण सोगो ॥ २५ ॥ सुत्तत्थ पारगेहिं—पहाणविज्जेहि ओसहाईसु, सम्मं पउंजिएसुवि—न निवत्तइ जा सिरो वियणा ॥ २६ ॥ मरणावसाण मेयं—जय मेवं निच्छयं मणे काउं, वाहरिया कडगाइ—समप्पिओ बंभदत्तो सिं ॥ २७ ॥ जह सयलकलाकुसलो—पावियनीसेसरज्जपब्भारो, जायइ सुओ ममेसो—कायव्वं ति भणिया य ॥ २८ ॥ तत्तो कमेण पत्तो—परलोयपहंमि बंभनरनाहो, मयकज्जेसु कएसुं—स-

छतां, दिशाओना चक्रने उजवनार अने चमत्कार करनार पुत्र थशे. २२ तेना वधामणी विगेरे अनेक जन्मकर्म कर्या बाद समयसर तेनुं ब्रह्मदत्त एवुं नाम पाड्युं. २३ ते शुक्लपक्षना चंद्रमंडळ माफक वधवा मांड्यो, अने तेना वक्षस्थळमां लक्ष्मीना निवासनुं स्थान एवुं श्रीवत्सनुं चिह्न शोभवा लाग्युं. २४ हवे कोइक समये ब्रह्मराजा पासे कटकादिक राजाओ आव्या हता, तेवामां तेने मस्तकमां रोग थयो के, जेथी तेना सगां स्वजनोमां जोर शोक थवा लाग्यो. २५ त्यारे सूत्रार्थना पारंगामि मोटा वैद्योए बरोबर रीते तेनी दवाओ विगेरे कर्या छतां पण ते माथानी वेदना बंध पडी नहीं. २६ त्यारे राजाए मनमां निश्चय कर्यो के, आ जगत् मरणशीळ छे, तेथी तेणे कटकादिकने बोलावीने कह्युं के, आ ब्रह्मदत्त तमने सोंप्यो छे. २७ माटे ए मारो पुत्र जेम सकळ कळाओमां कुशळ थइ समग्र राज्यभारने पामे तेम तमारे करवुं. एम तेणे तेमने कह्युं. २८ बाद ते ब्रह्मराजा परलोक पाम्यो, अने लोकप्रसिद्ध सर्वे मृतकार्य करवामां आव्यां. २९ पछी

व्वेसुवि जणपसिद्धेसु ॥ २९ ॥ ते रज्जकज्जसज्जं—संठाविय तत्थ दीहनरनाहं, कम-गाई तिन्नि निवा—संपत्ता नियनिययरज्जेसु ॥३०॥ चुल्लणीए दीहस्स य—दोण्हवि कज्जाइं चिंतयंताणं, सीलवणदहणपवणो—जलणो व्व विजंभिओ मयणो ॥ ३१ ॥ अगणियकुलपालिसा—चुल्लणी चलुलत्तणेण चित्तस्स, दूरुज्झियजणलज्जा—रज्जि-त्था पावदीहंमि ॥ ३२ ॥ इयरो उण दिद्दओ—कुडिलमई विसयगिद्धिविसपुण्णो, चुल्लणीए सत्थो—संजाओ दीहपट्टो व्व ॥ ३३ ॥ नायं नीसेस मिणं—चरियं चुलणीइ सीलभंगफलं, धणुणा मच्चेण विचिंतियं च नो कुमरकुसल मओ ॥ ३४ ॥ भणिओ य वरधणू तेण पुत्त कुमरस्स अप्पमत्तेण, कुज्जा सरीररक्खा—जणणी णो सुंदरा जेण ॥ ३५ ॥ समए य माउचरियं—जाणावेयव्वओ तए सव्वं, जेण ण मा-

राजकाज चलाववामां समर्थ दीर्घराजाने त्यां स्थापिने वामना करकादिक त्रण राजा पोतपताना राज्यमां आव्या. ३० हवे चुल्लणी अने दीर्घराजा बन्ने कामकाजनी मसलत करवा लाग्या, तेवामां तेमने शीळवनने अग्निनी माफक बाळवामां समर्थ कामविकार जागृत थयो. ३१ त्यारे चुल्लणी मननी चपळतायी कुळना कलंकने नहीं गणकारतां लोकलाज दूर मेलीने ते पापिष्ट दीर्घराजामां मोहित थइ. ३२ अने ते दीर्घ पण छिद्र जोइ कुटिल बुद्धि धरीने विषयगृद्धिना विषथी भरेल होवाथी दीर्घपृष्ठ (विलान)नी माफक चुल्लणीमां रक्त थयो. ३३ आ बधुं चुल्लणीना शीळभंगनुं चरित्र धनु नामना अमात्ये जाणी लीधुं अने विचार्युं के, आथी कुमारने कुशळ नथी. तेथी तेणे पोताना वरधनु नामना पुत्रने कह्युं के, तारे खबरदार रहीने कुमारनी शरीररक्षा करवी केमके एनी मा वगरूडी छे. ३४–३५ वळी समय पामी

बेज इमो—उवद्दवं केणइ बलेण ॥ ३६ ॥ उवलद्धे जणणीए—चरिए तो तिव्व-
अमरिसवसणाहो, कुमरो कालवसेणं—संजाओ जोव्वणाभिमुहो ॥ ३७ ॥ जणणीइ
जाणणकए—जे जे असमाणजाइणो जीवा, कोइलकायाईया—विसरिसआयारकर-
णरया ॥ ३८ ॥ अंतेउरस्स अंते—गयाइ तीए य ते पदंसेइ; भणइ य सको-
ववयणो—अम्ह निग्गिहामि अहमेए ॥ ३९ ॥ अन्नो च्चिय जो मज्झं—रज्जे
णायारसेवणं काही, दूरं निगिण्हियव्वो—निरवेक्खमणेण सो सव्वो ॥ ४० ॥
एवं अणेगवारे—विणिग्गिण्हंतं तहा भणंतं, दट्ठूण बम्भदत्त—दीहो चुलणि समुल्ल
वइ ॥ ४१ ॥ नेयं परिणामसुहं—जं जंपइ एस तुज्झ किल पुत्तो, सा भणइ बालभावो
इत्थ वरज्झइ न सब्भावो. ॥ ४२ ॥ मुद्धे न अवहे यं—आरूढो जोव्वणं इमो कुमरो,

एने एनी मातुं सघळुं चरित्र जणावी देवुं के, जेथी ए कोइ पण छळमां फसाइने हेरान नहि थाय. ३६ हवे कुमारने माताना चरित्रनी खबर पडतां ते भारे गुस्से थयो थको अनुक्रमे यौवनअवस्थाने अभिमुख थयो. ३७ त्यारे माताने चेतववा खातर ते जे जे जूदी जूदी जातना कोयल कागडा विगेरे प्राणिओ अनाचार करवा तैयार थता तेमने पकडीने अंतःपुरमां लइ जइ माताने बतावीने गुस्सो धरी बोलतो के, हे माता! हुं एमनो निग्रह करुं छुं. ३८–३९ आ रीते बीजो पण जे कोइ मारा राज्यमां अनाचारनुं सेवन करशे, तेने निर्दय थइ हुं बरोबर निग्रह करीश. ४० एम अनेकवार निग्रह करता अने ते रीते भाषण करता ब्रह्मदत्तने जोइने दीर्घराजा चुलणीने आ रीते कहेवा लाग्यो. ४१ आ तारो पुत्र जे कंइ बोले छे, ते परिणामे हितकारक नथी. त्यारे चुलणी बोली के, ए बाळपणथी भोळे भावे एम करे छे, माटे एमां एनो वांक न गणाय. ४२ दीर्घ बोल्यो के अरे मुग्धा! हुं कहुं छुं ते तेमज छे. कुमार यौवनपणु

मुज्झं तुज्झय मरणाय होहिही जणइ इय दीहो ॥४३॥ तो मारिज्जउ एसो---केणावि अलक्खिए णुवाएण, मइ साहीणे जहे---अन्ने होहिंति तुह पुत्ता ॥ ४४ ॥ रइराग परवसाए---इह परजवकज्जवंझचित्ताए, पडिवन्नं चुलणीए---धिरत्थु इत्थीण चरियाइं ॥ ४५ ॥ जं सव्वलक्खणधरे---लायएणुक्करिसनिजियकुसुमसरे, सव्वाविणयविरहिए-- नियपुत्ते ववसिया एवं ॥४६॥ वरिया य तेहिंतत्तो--तस्स कए जूमिपहुसुया एगा, पउणीक्यं च करव्वं---विवाहपाउग्ग मुवगरणं ॥ ४७ ॥ थंजसयन्निविट्ठं---अइगूढपवेसनिग्गमडुवारं, काराविय जउहरं---वासनिमित्तं कुमारस्स ॥ ४८ ॥ णाओ एस वइयरो-- धणुणा तो रज्जकज्जाकुसलेण, जणियो य दीहराया---एस सुओ वरधणू मज्झ ॥४९॥ संपत्तजोव्वणजरो---निव्वाहसहो य रज्जकज्जाण, वणगमणावसरो मे---अणुमएणसु जामि जं तत्थ ॥ ५० ॥ तो कइणवेण जणियो---दीहेण अमच्च एय नयरठिओ,

पाम्यो छे, माटे मारा अने तारा मरण माटे ए थशे. माटे कोइ छाना उपायथी एने मारी नाखवो जोइए, अने हुं तारे आधीन छुं एटले बीजा घणा पुत्रो तारे थशे. ४३-४४ त्यारे रतिरागना परवशपणाथी आ जव अने परजवना काम विचारवामां शून्य चित्त बनेला चुलणीए ते वात कबूल राखी. माटे स्त्रीना चरित्रने धिक्कार थाओ. ४५ केमके सर्व लक्षण संपूर्ण, लावण्यगुणथी कामदेवने जीतनार अने अविनयथी तद्दन रहित एवा पोताना आ पुत्रमां पण तेणी आ रीते वर्तवा लागी ! ! ! ४६ बाद तेमणे कुमारना माटे एक राजानी पुत्री वरी अने विवाह माटे तैयारी करवा मांडी. ४७ तेमणे कुमारने रहेवा माटे सो थांजला पर गोठवेलुं अने पेसवा तथा नीकळवाना अतिगूढ द्वारवाळुं लाखनुं घर बंधाव्युं. ४८ आ व्यतिकरणनी धनुमंत्रीने खबर पडी एटले ते राजकाजमां कुशळ होवाथी दीर्घराजा पासे जइ कहेवा लाग्यो के, आ मारो वरधनु पुत्र छे. ते यौवनवय पाम्यो छे, अने राजकाज चलावी शके तेम छे. माटे मारो हवे वनमां जवानो वखत छे, तेथी जो रजा आपो तो हुं त्यां जाउं. ४९-५० त्यारे दीर्घराजा कपटथी बोल्यो के, हे अमात्य ! तुं

दाणाइणा पहाणं—करेसु परलोयणुट्ठाणं ॥ ५१ ॥ पडिवज्जिऊण एयं—पुरपरिसरवाहिगंगतीरंमि, काराविया विसाला—एगा धणुणा पवा पवरा ॥ ५२ ॥ परिवायगाण तह भिक्खुगाण णाणाविहाण पहियाण, भद्दगइंदो व्व तहिं—दाणं दाउं पयट्टो सो ॥ ५३ ॥ सम्माणदाणगहिएहिं अप्पणो निव्विसेसपुरिसेहिं, चउगाउयं सुरंगं—करावइ जाव जउगेहं ॥ ५४ ॥ एवं वियंपि नरवइकसा सा णिययपरियरसमेया, वीवाहत्थं पत्ता—कंपिल्ले ऊसियपडाए ॥ ५५ ॥ वित्तं पाणिग्गहणं—वासनिमित्तं तओ य रयणीये, वरधणुवहूसमेओ—पवेसिओ जउहरं कुमरो ॥ ५६ ॥ जामदुगंपि अइगए—निसाइ पज्जालियं च तं भवणं, जाओ य कलयलरवो—अइभीमो सव्वओ तस्स ॥ ५७ ॥ पक्खुहियजलनिहिनिहं—कुमरेणा यसिऊण हलबोलं, आ-

आज नगरमां रहीने दानादिकवडे परलोकनुं रुडुं अनुष्ठान कर. ५१ मंत्रिए ते वात कबूल करीने ते नगरनी नजीकमां वहेती गंगाना किनारे एक मोटी प्रपा (परब) करावी. ५२ त्यां ते परिव्राजक तथा अनेक जातना भिक्षुको तथा वटेमार्गुओने दानकरता भद्र हाथीनी माफक दान देवा लाग्यो. ५३ ते साथे तेणे मानदानथी संतोषेला पोताना अंगत माणसो रोकीने ते लाखना घर सूधी चार गाउनी सुरंग करावी. ५४ एवामां राजकन्या पोताना परिवार साथे फरती धजावाळा कांपिल्लपुरमां परणवामाटे आवी पहोची. एटले तेनुं पाणिग्रहण—थयुं बाद राते वसवा माटे वरधनुं अने वहु साथे कुमारने ते लाखना घरमां मोकलवामां आव्यो. ५५—५६ बाद मधरात थतां ते घरने सळगाववामां आव्युं एटले त्यां चारे कक्लाट थवा लाग्यो. ५७ ते क्षोभेला दरिया जेवा घोंघाटने सांभळी कुमार वरधनने पूछवा लाग्यो के ओ-

पुच्छिओ वरधणू—किमकम्हे ममर मेयं ति ॥ ५८ ॥ कुमर तुहा णत्थकए—एसो वीवाहवइयरो रइओ, एसा न रायकन्ना—अस्संश्चिय काइ तस्सरिसा ॥ ५९ ॥ तो तीइ मंदपणओ—कुमरो जंपेइ किं विहेय मओ, तो ज्ञणिओ वरधणुणा—पणिहपहारं अहो देसु ॥ ६० ॥ दिसंमि तंमि पत्तं—सुरंगदारं विणिग्गया तेण, दोन्निवि गंगातीरे—पवापएसंमि संपत्ता ॥ ६१ ॥ पुव्वंचिय धणुणा ठवियंमि जम्मंमि तुरयजुयलंमि, तक्खाण मारूढा ते—पन्नासं जोयणाणि गया ॥ ६२ ॥ अइदीहरपहखेएण—खेइयाज्झत्ति निवडिया तुरया, पाएहिं चेव गंतुं—ज्ञग्गा पत्ता तओ गामं— ॥ ६३ ॥ कुडाजिहाण मेत्थं—कुमरेणं वरधणू इमं ज्ञणिओ, जह वाहए छुहा मे —परिसंती तह दढं जाओ ॥ ६४ ॥ गामवहिंसिय तं ठविऊण गामंतरे पविट्ठो सो,

चिती आ शी गरूपम यइ छे. ५८ वरधनुए कह्युं के हे कुमार, तने मारवा खातर आ विवाहनो ठाठमाठ करवामां आव्यो छे, अने आ कंइ राजकन्या नथी, पण तेना सरखी कोइ बीजी स्त्री छे. ५९ ते सांजळी कुमार तेनाथी प्रीति उतारी कहेवा लाग्यो के त्यारे हवे शुं करवुं? त्यारे वरधनुए कह्युं के आ ठेकाणे तारी पेनी वती ठोकरो आप. ६० तेम करतां तेमने सुरंगनो दरवाजो मळ्यो एटले ते बन्ने जण गंगाना कांठे प्रपाना प्रदेशमां आवी पहोच्या. ६१ त्यां प्रथमथीज वरधनुए बे जातवंत घोडा राखेला हता तेनापर तेओ तरत स्वार थइने पचाश योजन दूर नीकळी गया ६२ हवे लांबो रस्तो कापवाना थाकथी थाकीने घोडा ठठ दइ पडी गया, त्यारे तेओ पगे चालीने एक गामे आवी पहोच्या. ६३ ते गामनुं नाम कुडु करीने हतुं. त्यां कुमार वरधनुने कहेवा लाग्यो के मने भूख पीडे छे अने खूब थाकी पण गयो छुं. ६४ त्यारे कुमारने गामनी बाहेरज राखीने वरधनु गामना अंदर आवी एक हजामने लइ आव्यो अने

घेत्तूण एहावियं आगएण मुंडाविओ कुमरो ॥ ६५ ॥ वत्थे कसायरत्ते—निवा-सिओ पट्टएण वच्छो य, चउरंगुलेण वत्थे—सिरिवत्थो लच्छिकुलनिलओ ॥ ६६ ॥ वेसनियत्तासाओ—अरधणुणाविय कओ परावत्तो, जइ कहवि दीहराया—जाणेज्ज हणेज्ज तो अम्हे. ॥ ६७ ॥ इय संभमं वहंता—तप्पडियारं तहा कुणंता य, गामंतो संपत्ता—एगाओ माहण गिहाओ,—॥ ६८ ॥ निग्गच्छ दासचेडेण—नासिया भुंज-हेह गेहंमि, जुत्ता तत्थ निवोचियलीईए तदत्र ताणंमि,—॥ ६९ ॥ एगा पहाणम-हिला—कुमरस्स सिरंमि अक्खए देइ, जणइ य बंधुमईए—कत्ताइ वरो इमो होहि. ॥ ७० ॥ अच्चंतं णिगगोवणपरेण जणियं अमच्चपुत्तेण, किं अस्स कए हिज्जइ—खेओ मुक्खस्स वडुयस्स ॥ ७१ ॥ उप्फुल्ललोयणेणं—जणियं घरसामिणा सुणसु सा-

तेनी पासेथी कुमारनुं माथुं बोडाव्युं. तेमज भगवां कपडां पहेराव्यां तथा चार आंगळना पाटाथी छातीपरनुं श्रीवत्स बांधी लीधुं. ६४–६६ तथी वरधनुए पण पोतानो वेश बदली नाख्यो, एम धारीने के जो कोइ रीते दीर्घराजा जाणशे तो ते मने मारीज नाखशे. ६७ एम संभ्रम धरी तेनो प्रतिकार करता तेओ गामनी अंदर आव्या एटले एक ब्राह्मणना घरमांथी एक चाकरे नीकळीने तेमने कह्युं आ घरमां तमो जमो, तेथी तेओ राजाने योग्य आदरमानथी त्यां जम्या. बाद—एक भली स्त्रीए कुमारना कपाळमां चांदलो करी चोखा चोड्या अने बोलीके बंधुमतीकन्यानो आ वर थशे —६८—६९—७० त्यारे मंत्रिकुमार पोताने खूब-छाना राखवामाटे बोल्यो के आ मूर्खबटुकना माटे कां हेरान थाओ छो? ७१

मि, नेमित्तिएण पुव्वं—भणिय मिणं जो घरे एही.—॥ ७२ ॥ पट्टाच्छाइयवत्थो—चित्तजुओ भोयणं करिस्सइ य, एयाए बालाए—वरो स होही न भण अन्नो. ॥ ७३ ॥ तो तंमिचेव दिवसे—पाणिग्गहणं करेइ सो कुमरो, तक्खणमेव विलग्गो—परोप्परं निब्भरो नेहो. ॥७४॥ तुच्छी हूओ जणगाइएसु चिरपरिचिएसुवि जणेसु, पडिबंधो तीए जं—भणंति कुसला इयेरिसगं. ॥ ७५ ॥ बालत्तणंमि पिइ माइभाइसहियायणो पिओ होइ, आरूढजोव्वणाणं—जुवईण पिओ पिओ एगो. ॥७६॥ नीया रयणीसा तेणतीए सद्धिं सकोउगयणाए, अइलज्जबुत्तणओ—सव्वंग पणप्पणंतीए. ॥७७॥ बीयदिणे वरधणुणा—भणिओ गंतव्वमत्थि ते दूरं, कहिओ बंधुमईए—सब्भावो निग्गया दोवि. ॥ ७८ ॥ गामंतरंमि पत्ता—अइदूरपहंमि वरधणू तत्थ, सलिलनिमित्त

त्यारे विकसित नेत्रवाळा घरधणीए कह्युं के हे! स्वामि, तमे सांभळो अमोने पूर्वे एक नैमित्तिके कहेलुं छे, जे आ घरमां आवशे, जेनी छाती कपडाना पाटाथी ढाकेली हशे अने चित्रसहित होइ जमशे ते आ बाळानो वर थशे' बीजो नहि थाय७२—७३ तेथी तेज दीवसे कुमारे तेनुं पाणीग्रहण कर्युं. अने तरतज तेमनो परसपर गाढ स्नेह बंधायो. ७४ बाळानो चिरपरिचित जनकादिक जनमां प्रतिबंध ओछो पड्यो, जे माटे चतुरजनो आ रीत कहेछेः—७५ स्त्रीओने नानपणमां पिता भाइ तथा सखियो प्रिय होय छे, पण ज्यारे तेओ यौवन पामे छे त्यारे तेमने एकलो भर्त्तारज प्रिय होयछे. ७६ त्यां कुमारे ते रात ते उत्सुकमनवाळी बाळासाथे पसार करी, पण तेणीए शरमाळपणाथी पोतानुं सर्वांग अर्पण कर्युं नहि. ७७ बीजे दिने वरधनुए कुमारने कह्युं के तारे हजु दूर चालवानुं छे. तेथी बंधुमतीने खरी हकीकत कहीने ते बे जण त्यांथी चालता थया. ७८ तेओ घणुं लांबुं चाली बीजे गामे आव्या. त्यां वरधनु पाणी लेवा

मइगओ—वहुं तओ निग्गओ, न्नणइ॥७९॥ निसुओ जणप्पवाओ—मए जहा दीहरा-इणा मश्रा, सव्वेयि वंनदत्तस्स—गहणहेउं निरुद्धत्ति.॥८०॥ ताना सिज्जह दूरेण मग्ग चागं करित्तु गच्छासो. जाया महाम्रवीए—पमिया तिसिओ वहुं कुमरो. ॥ ८१ ॥ वरधणुणा वम्हदिट्ठा—ववियो एसो गओ स सलिलत्था, जायं दिणावसाणं—न य मुदगं परं एसो— ॥ ८२ ॥ दिट्ठो दीहन्नडेहिं—दढं च हम्मंतओ सरोसेहिं, पत्तो कुमरासन्ने—कहिंवि विरलद्दुमंतरिओ. ॥ ८३ ॥ कयसंकेओ विहिओ—तेण कुमारो पलायसु सुदूरं, तत्तो स तिव्ववेगो—पलायमाणो दुरुत्तारं—॥८४॥ कंतारं कायर-लोय सोय संपायगं गओ जत्थ, हरिणारिणो वियंतंति न्नीमरवनरियगिरि कुहरा. ॥ ८५ ॥ रविपाया जत्थ न ओयरंति तरुवहलपल्लवंतरिया, मन्ने नवनवजइंतदन्नसूई

माटे लावे जइ त्यांथी झट वाळो आवी वोल्यो के—हुं लोक मवाद सांजळी आव्यो बुं के व्रह्मदत्तने पकरवा माटे दीर्घ राजाए सवळा रस्ता रोकेला छे ७९ माटे आपणे रस्तो मेलीने दूर नाशिये—एम कही तेओ एक मोटी अटवीनां आवी चड्या. त्यां कुमार वाहु तरसेलो थयो. ८१ त्यारे वरधनुए तेने वम्हेठे बुपो राख्यो अने पोते पाणि नरवा गयो पण दिवस आथमवा आव्याथी पाणी मळ्युं नहि—पण उलटो ते दीर्घराजाना माणसोनी नजरे चड्यो एटले तेमणे गुस्से थइ तेने खूब मार्यो. छतां जेम तेम ते कुमारनी नजीक आवी झाडना ओथे पूर्वे कहेलो संकेत करवा लाग्यो के कुमार तुं दूर जा, एटले कुमार तीव्र वेगथी ते दुरुत्तार अटवीमां नाशवा लाग्यो. ८२—८३—८४ ते नाशतो थको कायरलोकोने शोकमां नाखनार कांतारमां रवाने थयो के ज्यां नयंकर अवाजथी पर्वतनी गुफाओने नरी नाखता सिंहो गाजी रहे बे—वळी ज्यां झाडोना पांदमायी सूर्यना किरणो पण अटकी रहे छे, अने जाणे नवी नवी उगती दर्जनी

कयन्नयाओ. ॥ ८६ ॥ मयरायपहयगयकुंभगलियमुत्ताहलाइं रेहंति, जत्थु न्नयतरुसिहरग्गखलियताराक्लीओ य. ॥ ८७ ॥ जत्थ बहुभिल्लभल्लय सल्लियचित्तगझरंतरुहिरेण, जाइ मही वणदेवय चलणालत्तयरसेण व. ॥ ८८ ॥ जं जमपुरं व सवराहएहि उद्दंमपुंमरीएहिं, तरुसाहासिहरोलंबिएहि जीमेहि एगत्थ,—॥ ८९ ॥ अन्नत्तो हरिहिंसियसमयगंइदट्ठिवियरकूमेहिं, निच्चं संतासुक्करिसकारगं पहियलोयाणं. ॥ ९० ॥ गयगंधगब्भिणेसु—तरुसु सत्तच्छएसु गुविलेसु. करिसंकिणो मइंदा—नसंति विहलक्कमा जत्थ. ॥ ९१ ॥ जत्थ गमइंति कइणो—हेमंत तरुवरग्गसंलग्गा, सययं पसरियअइगुरुगीसासुपेहेहि पवणेहिं. ॥ ९२ ॥ तण्हाछुहाकिलंतो—तं अमवि मइक्कमिउ तइयदिणे, पेच्छइ तावस मेकं—तवसुसियतणु पसन्नमणं. ॥ ९३ ॥ तद्दंसणमित्तेणवि—

आणीए जयतुंग सूचन करे छे.८५—८६ वळी ज्यां सिंहोए विदारेला हाथीओना कुंभस्थळथी पडता मोतीओ जाणे ऊंचा झाडोनी टोचमां अटकीने खरता ताराओ न होय तेम शोभता हता. ८७ ज्यां भीलोना भालाथी हणायला चित्ताओनी झरती लोहीते जाणे वनदेवताना चरणना अलतानो रस होय तेम जमीनने रंगजवती. ८८ जे एक ठेकाणे भीलोए हणेला अने झाडोनी शाखाओ पर लटकावेला भयंकर सिंहोना चामडाओथी अने बीजे ठेकाणे सिंहोए मारेला मोटा हाथीओना हाडकाना ढगलाओथी वटेमार्गुओने यमपुरी माफक बीहामणुं लागतुं हतुं.८९—९० वळी ज्यां हाथीनी गंध आपना राक्षणी नामना गीच झाडोमां हाथीओ होवानुं वहेम लावी सिंहो फोकटनी छलंगो मारता भमता हता. ९१ ज्यां वांदराओ शियाळानां झाडोनी नीचे रही भारे नीसासाथी भला थएला पवनवडे वखत पसार करता. ९२ ते अटवीने ओळंगता त्रस्या कुमारे उल्लंघी करीने त्रीजे दीवसे एक तपथी सूकायला शरीरवाळो अने प्रसन्न मनवाळो

संजाया तस्स जीवियासंसा, पयपणिवायपुरस्सर—आपुट्ठो तेण सो भगवं. ॥ ९४ ॥
तुम्हाण मासयो कत्थ तेण कहिओ तओ कुलवइस्स, नीओ समीव मानासिओ य
सब्भावं सेएण. ॥ ९५ ॥ बहुपच्चवाय मेयं—रणं सुण्णं च सज्जण जणेण, ता
कह तुह आगमणं—जायं संपइ महाभाग. ॥ ९६ ॥ सब्भावगब्भ मेयं नाऊण
जहट्ठिओ नियगिहस्स, कुमरेणं वुत्तंतो—कहिओ सव्वोवि कुलवइणो. ॥ ९७ ॥
दूभग्गप्पणयपरव्वसेण कुलसामिणा तओ भणिओ, वंभस्स तुम्ह पिउणो—भायाहं
चोल्लगो आसि. ॥९८॥ ता वच्छ निओ च्चिय एस—आसमो निब्भयं परिवसाहि, मुंचसु
विसाय मेयारिसाइं संसारचरियाइं. ॥ ९९ ॥ होऊण उन्नयाओ तहभरियाओ जलस्स
जंतंमि, जह घडियाउ खणाओ—जायंते इयररूवाओ. ॥ १०० ॥ तह इत्थं भवचक्के

तापस जोयो. ९३ तेने जोताज कुमारने जीववानी आशा आवी, तेथी तेणे ए भगवानने पूछ्युं. ९४ तमारो आश्रय क्यां छे. तापसे ते कहीने तेने कुळपतिनी पासे आण्यो. कुळपतिये तेने प्रीति पूर्वक आ रीते बोलाव्यो. ९५ आ अरण्य हण।जे.सत्कवालुं अने सारा जनोनी वसतिथी रहित छे माटे हे महाभाग, तारुं इहां शी रीते आववुं थयुं छे ? ९६ ते कुळपतिने खरा दिलवाळो जाणीने कुमारे पोताना घरनो वृतांत जेम बन्यो हतो तेम कह्यो. ९७ त्यारे दौर्भाग्यअने प्रीतिने लीधे खेंचाइने कुळपतिए तेने कह्युं के हुं तारा ब्रह्म पितानो नानो भाइ हतो. ९८ माटे हे वत्स, आ ताहरोज आश्रय छे, तुं इहां निर्भय थइने रहे, अने विषाद छोडी दे, केमके संसारना बनाव एवाज छे. ९९ जेम जळयंत्रमां घडीओ ऊंची अने भरेली थइ पाछी तरत खाली अने नीची थाय छे, तेम आ भवचक्रमां जीवो लक्ष्मीना निलय अने उत्तमकुळवाळा थइ पाछा काळना वशे तेथी विपरीत थता रहे छे. १००—१०१ स्त्री चरित्रमां कोइए कंइ वि-

—अच्चीनिलया जणुत्तमकुला य, होतं कालवसाओ—जीवा जायंति विवरीया. ॥१०१॥ इत्थी चरिए सु न कोइ—केणई विम्हओ विसाओ वा—कज्जे, जओ अणज्जइमाउ अणवट्ठियमणाओ. ॥ १०२ ॥ रज्जंति अरत्तेसुवि—णियमणचवलत्तणेण एयाओ, अणिमित्तं चिय रत्तेसु—झत्ति पावंति य विरत्तिं.॥१०३॥ खणरत्ताणं कूराण मेव अवसाणविहियतिमिराण, संझाण व रामाणं— वसंमि को कुसल मुव्वहइ. ॥ १०४ ॥ तम्हा चयसु विसायं—जं धीर च्चिय तरंति विसमदसं, इयरे गहिरजले इव—अतारगा झत्ति वुड्डुंति. ॥ १०५ ॥ लद्धाभिप्पाओ कुलवइस्स सो तत्थ अच्छिउं लग्गो, पत्तो वासारत्तो जलवाहाउवियगयणयलो. ॥१०६ ॥ नयनीलियवत्थेहिव—सव्वत्थ समुत्थिया तिणेहि मही, विरहि जणुम्माहेहि व—फुरियं तह इंदगोवेहिं. ॥ १०७ ॥

समय के विषाद न करवो केमके तेओ अनार्य अने अनवस्थित (चंचल) मनवाळी छे. १०२ तेओ पोताना मननी चपळताथी अणरागीमां रागवाळी बने छे, अने रागीमां वगरकारणे झट दइने विरक्त बनेछे. १०३ क्षण रक्त, क्रूर अने छेवे अंधकार करनारी संध्याओनी माफक स्त्रीओना वशमां पडेलो कोण कुशळपणुं पामे ? १०४ माटे तुं विषाद मूकी दे, केमके जे धीर होय तेओज विषयदशाने पार पहोंचेछे, बाकी कायरो तो ऊंडा पाणीमां अणतारुनी माफक झट दइने बूडे छे. १०५ आ रीते कुळपतिनो अभिप्राय जाणीने ते त्यां रहेवालाग्यो. एवामां त्यां वादळाथी आकाशने जरी नाखतो वर्षाकाल आव्यो. १०६ जमीन सघळा स्थळे जाणे नवां नीलां वस्त्र ओढ्यां होय तेम घासथी छवाइ गइ; अने विरहिजननां कंदर्पनी माफक इंद्रगोप उजराबा लाग्या. १०७

सुमुणीण माणसाणि व—धवलाउ वियंभिया वलायाओ, सुयणाण संगमेण व—नियद्वदाहो जणो जाओ.॥१०७॥उज्जोइयभुवणयला—पत्ता चिय निहयदूरतिमिरत्तरा, धम्मियजणधम्मकहव्व—झत्ति विज्जोइयाविज्जू.॥१०८॥ अइगहिरघणारवसवणखुहिय वल्लह जणाणुरागाओ; नियगणाभिमुहाओ—पंथियमालाउ चलियाओ.॥ ११० ॥ सो कुलवइणा धणुवेय माइयाओ कलाउ सयलाओ, अणहिजियपुव्वाओ—सम्म सिक्खाविओ कुमरो॥ १११ ॥ पत्तो य सरयकालो—परिपंडुरजलयवलयकलियनहो, उप्फुल्ल कमलवणलोल हंसकलरावरमणिज्जो.॥११२॥कइयाइ कंदफलजलगवेसणे तावसे अणुसरंतो रुज्झंतो कुलवइणा—कुउहला तरलिओ संतो,— ११३ सो रन्नपरिसरं-

सारा मुनिओना मननी माफक धोली बगलीओ ऊडवा लागी, अने सुजननो समागमनी माफक लोकने दाह निवृत्त थयो. १०७ जगतने ऊजवनारी अने आवी के अंधकारने दूर करनारी धर्मिजननी धर्मकथामाफक वीजळी चमकवा लागी. १०८ अतिऊंडो गर्जारव सांभळी ने झोभेली प्रियाओ पर प्रेम लावीने पथिकजनो पोताना घरतरफ चालना थवालाग्या. ११० तेने कुळपतिए पूर्वे नहि शीखेली धनुर्वेद विगेरेनी सघळी कळाओ बरोबर शीखवी. १११ एवामां शरत्काळ आव्यो जेमां धोळा वादळाथी आकाश छवाइ रहेतो, अने फूलेला कमळोना वनमां हंसो मधुर अवाज करता. ११२ हवे एकवेळा कंदफळ अने पाणी शोधता तापसोनी पाछळ कुमार चाल्यो. तेने कुळपतिए निवार्यो छतां कुतूहळथी चंचळ थइ अने ते अरण्यनी आसपास सुंदर वनोने जोतो अंजनगिरि जेवो ऊंचो एक हाथी तेनी नजरे पड्यो. ११३ ११४

रंसी—आलोइंतो वणाइं रम्माइं, अंजणगिरि व्व तुंगं—मायंग महो पलोएइ. ॥११४॥ थिरथोरकरं सियदसुणकोभियोभिज्जमाणवणसंडं, निज्झरझरंतमयजलनिब्भरलोलालिपरि किण्णं. ॥ ११५ ॥ सत्तंगपइट्ठाणं—कुंभत्थलजियनभत्थलाभोयं, पलयघणगहिरगलग-जिएहि परिपूरियदियंत ॥११६॥ सो दट्ठूण कुमारं—संमुह मिंतं सरोससिग्घगई, चलिओ तिमुहं पच्चक्ख मेव नज्जइ जमो भीमो ॥ ११७ ॥ तक्केलिकोउगेणं—तिलतुस-मेत्तामपलायमाणेणं, पक्खित्ता मुत्तरीयं—काऊणं भेंडलागारं ॥११८॥ संमुह मिंतस्स तेणावि तक्खणादेव गहिय मुक्खित्तं, सुंडादंडेण नहंगणंमि जाओ स रोसंधो ॥ ११९ जा सो रणगइंदो—गहियं दक्खत्तणेण छलिऊण, तं कुमरेण अक्खुब्भो—सो तं कीलाविउं लग्गो ॥ १२० ॥ सुंडग्गघायफुंसणवड्ढियवेगस्स तस्स वणकरिणो, अणु-

हाथीनी सूढ स्थिर अने भयानक देखाती हती, ते पोताना धोळा दांतोथी झाडोने मरडतो, अने तेना कुंभस्थळनी नीझरणानी माफक झरता मदजलपर भमराओ लपाय रह्या हता. ११५ ते साते अंगे मजबूत हतो तेना कुंभस्थळ आकाशने भरी नाखता हता, अने प्रळयकाळना मेघना माफक ऊंडा गर्जारवथी ते दिशाओना छेडाओने भरी नाखतो. ११६ ते हाथी कुमारने सामे आवतो जोइ गुस्साथी उतावळो थइ जाणे प्रत्यक्ष भयंकर यम होय तेम सामे धायो. ११७ त्यारे तेनी गम्मतना कौतुकथी कुमारे लगार पण हठ्या शिवाय पोताना उत्तरीय वस्त्रने गोळ वींटाळी तेनी सामे नाख्युं. ते तेणे तरत उपाडीने सुंडथी आकाशमां उछाळ्युं अने ते गुस्साथी आंधळो बन्यो. ११८—११९ तेटलामां कुमारे चतुराइथी तेने चूकवीने ते वस्त्र लइ लीधुं, बाद क्षोभ पाम्यावगर कुमार तेने आ रीते रमाडवा लाग्यो. १२० कुमार ते जंगली हाथीनी सूंढने अडक्यो एटलेहाथी सामे दोड्यो तेवामां कुमार तेना आगळ दाडयो तेटलामां

मग्गगामिणो खण--मह कुमरो धाविओ पुरओ ॥ १२१ ता जा सो खलियकमो---
जाओ चलिऊण पच्छिमे भागे, मुट्ठिपहारेण हओ-----विमुक्कहक्कारवरउद्दं ॥ १२२ परि-
वत्तइ जा तत्तो----अवराहुत्तं कमेइ ता इयरो, पायंतरालभागेण-----करयलामुसिय-
तब्भागो ॥ १२३ ॥ एवं कुलालचक्केण----भामिओ जा समं परं पत्तो, तत्तो थंभिय-
तद्देसचारिमयजूह मइमहुरं,----॥ १२४ ॥ लग्गो कागलिगीएण गाइउं मुक्कसेसवा-
वारो, कुमरो ताव करिंदो---आयसइ तडवियकसो ॥ १२५ ॥ किंचि अपेच्छंतो तह---
थिरविहियकरो निरुद्धकमपसरो, चित्तलिहिउ व्व जाओ---खणेण सो वारणाहि-
वई. ॥ १२६ ॥ दसणग्गलग्गपयपंकएण पविमुक्कसव्वतासेण, पिट्ठिपएसे कुमरेण सो
तओ सुदढ मारुढो. ॥ १२७ ॥ पम्मिपुन्नकोउगो अह---सणियं सणियं समुत्तमित्ताण,

हाथी पगे पछमायो एटले कुमारे तेनी पाछळ जइ तेने एवा जोरथी मुक्की मारी के ते जोरे चीस पाडवा लाग्यो.१२१---
१२२ हवे हाथी जेवो एकबाजु फर्यो के कुमार तेना पगनीचे जइ हाथथी तेना पेटमां आंचकी मारी बीजी बाजु जतो
रह्यो. १२३ आ रीते कुंभारना चाकनी माफक तेने कुमारे भमाव्यो एटले ते खूब थाक्यो, त्यारे कुमार शेष काम छोडी
काकलिस्वरथी ते ठेकाणे फरता हरणोने जता रोके एवा अतिमधुर गीतथी गावालाग्यो. त्यारेते हाथी कान टेकवीने ते
सांभळवा लाग्यो १२४ १२५ ते हाथी कंइ पण जोयाविगर तथा पग स्थिर राखी जाणे चित्रामणमां आलेख्यो होय
तेमजनो रह्यो. १२६ त्यारे तेना दांतपर पग टेकवीने वगरबीके कुमार तेनी पूंठपर चढीबेठो. १२७ आ रीते कौतुक

लग्गो गंतुं पडिपहपरायणो मूढदिसिचक्को. ॥ १२७ ॥ तत्तो विसंठुलगई—परी-ब्भमंतो नईइ एगाए, तद्देसट्ठिय गिरिणो—कुहराओ नीहरंतीए.—॥ १२९ ॥ तडसं-ठियं पुराणं—पडियगिहं खंडभित्तिसित्तेण, उवलक्खिज्जंतं नगर—मेग मह पासइ. कुमारो. ॥ १३० ॥ तद्दंसणंमि संजायकोउहल्लो निरिक्खिउं लग्गो, जायं ताव वि-यड्ड—वंसकुडंगं महागुविलं. ॥ १३१ ॥ परिमुक्कपासखेडगखग्गं तो कोउगेण तं ख-ग्गं, वाहेइ वंसयालीइ तीइ छेयस्स मायराओ. ॥ १३२ ॥ पडियं वंसकुडंगं—तं भ-त्ति तदंतरालभागंमि, पडिपुन्नचंदमंडलसरिसं तह वयणतामरसं ॥ १३३ दट्ठुण उटचोट्ठिय—मय विहियं मए ज मेरिसगो, निहओ अकयवराहो—कोइ नरो सज्ज-णसरूवो. ॥ १३४ हद्धी मह बाहुबलं—कोउहल्ल मज्झिय मेरिसं मज्झं, पज्ञायावपर-

पूरु करी कुमार हळवे हळवे ते हाथीपरथी उतरीने पाछा मार्गे वळवा मांड्यो तेवामां ते दिशाचक्रने ओळखवामां मुंझाइ-गयो. १२७ तेथी जेमतेम फरतां ते ते ठेकाणे रहेला पर्वतनी खीणमांथी नीकळती एक नदीना किनारे रहेला जूनापुराणा अने पडीगयेला घरवाळा छतां खंडेरोनी भींतोथी ओळखवामां आवता एक नगरने जोवा ला-ग्यो. १२९ — १३० ते जोइने कुमार कुतूहलथी जोवा लाग्यो एवामां तेणे एक गीच वांसनुं झुंड जोयुं. १३१ त्यारे तेणे ते वांसना झुंडने कापवामाटे कौतुकथी पोताना खड्ग म्यानमांथी खुल्लो करीने वापर्यो, एटले ते वांसनुं झुंड झट दइने पड्युं अने तेसाथे तेना वच्चेथी पूनमना चंद्रसरखुं एक मनुष्यनुं मुखकमळ पण पड्युं. १३२ —१३३ ते जोइ कुमार विचारवा लाग्यो के मे आ चूंरुं काम कर्युं के आ कोइ आवो सज्जनस्वरूप निरपराधी माणस

वसो—किं करणिज्जं ति चिंतेइ ॥ १३५ ॥ आलोयंतेण दिसंतराइं दिट्ठं कवंध मुज्झ-
कमं, पारद्धधूमपाणं—विज्जासंसाहणपहाणं. ॥ १३६ ॥ अहियथरं से अधिई—जा-
या हा हा मए कओ विग्घो, एयस्स ता किमित्तो—होज्जा मे पग्गिविहाणं ति ॥
१३७ ॥ इय झूरमाणहियओ—जा परिसक्कइ निहालए ताव, उज्जाण मुज्जुयागार-
सालसंदोहसोहिल्लं ॥ १३८ ॥ वियसियसव्वोउयसाहिकुसुमसंभारपरिमलविलोलं, ज-
रयालिजालमक्कलरवरुद्धदिसं सया सहइ. ॥ १३९ ॥ तह उच्चतालतरुसंभमरु-
ली जाइ पवणकयकंपा, कुमरनवरूवदंसन विम्हयरसधुणियसीसव्व ॥ १४० ॥ तत्थ-
य महल्लपल्लवककिल्लितरुहि सव्वओ चेव, परिकिण्णं पासायं—सत्ततणं ऊसियपडागं.
—॥ १४१ ॥ नियजित्तिजागपसरंत कंतिपब्भारसलिलधोयदिसं, तुंगत्तणगुण घट्टिय

मारीनाख्यो. १३४ माटे मारा बाहुबळने धिक्कार थाओ अने आ मारु जूठा कुतूहलने पण धिक्कार थाओ एम पश्चात्ताप करता कुमार चिंतववा लाग्यो के हवे मारे शुं करवुं ? १३५ बाद कुमारे आमतेम जोतां विद्या साधवा तत्पर थइ ऊंधे पगे टींगायलो अने धूमपान करतो धड जोयो. १३६ त्यारे कुमारने वधारे दिलगीरी थइ के हायहाय में एने विघ्न कर्यो, माटे मारे एनुं शुं प्रतिविधान करवुं? १३७ एम झूरतोथको कुमार आगळ चाल्यो एटले तेणे सीधा शालवृक्षोनी घटाथी शोभतुं उद्यान जोयुं. १३८ ते उद्यान सर्व ऋतुना फुलोनी सुगंधथी बहेकतुं हतुं अने त्यां भमराओ गुंजारथी दिशाओ भरी नाखता हता एम ते शोभतुं हतुं. १३९ त्यां ऊंचा ताळतरुनी हार पवनथी कंपती थकी जाणे कुमारनुं नवुं रूप जोवानो विस्मयथी माथुं धुणावती होय तेम लागती हती. १४० ते उद्यानमां मोटा पांदडावाळा अशोकना झाडोथी चारेबाजु

रविरहपहसिहरसंताणं. ॥ १४२ ॥ पासइ पासपरिट्ठियसरसीजलसीयलेण पवणेण, दूरोसारियदाहप्पसरं मणिकम्मरम्मतलं. ॥ १४३ ॥ तत्थ कमेणा रूढो—जूमीए सत्तमीइ पेच्छेइ, एगं कमलदलच्छं—कन्नं लायन्नजलजलहिं. ॥ १४४ ॥ तो रूवाखित्तमणो—उप्फुल्लविलोयणो य पुणरुत्तं, तं चेव पासमाणो—विचिंतिउं इय समाढत्तो. ॥ १४५ ॥ घेत्तुं केइ अपुव्वे—परमाणू मीसिऊण अमएण, नियसिप्पदंसणत्थं—नूण मिमा निम्मिया विहिणा. ॥ १४६ ॥ एएणं पएहि दलिओ—चंदो मुहमच्छरं परिवहंतो, पयनहछलाउ खंडीन्नावं कह मन्नहा जवइ. ॥ १४७ ॥ इस्से नियंबबिंबजियसुरसरिविउलवालुयापुलिणं, उवन्नाइ तिजयजयसंतकुसुमसरसयणफलगं व. ॥१४८॥ मन्ने अणंगकरिणो—निविडकरग्गहनिपीडणातणुयं, मज्झं मज्झट्ठियरोमराइमिसदा-

वंटायलो' सात माळवाळो, उडती धजावाळो,—पोतानी जींतोनी पसरती कांतिथी दिशाओने उजळी करतो' ऊंचाइमां सूर्यना रथना मार्गने अडकतो.—पडखे रहेला तळावना जळथी थंडा थता पवनवडे तापना जोरने दूर करतो, अने मणिओथी जेना माळ जडेला हता एवो एक महेल जोयो १४१—१४२—१४३ ते महेलपर कुमार अनुक्रमे चडवा लाग्यो. त्यां सातमा माळपर तेणे कमळना दलजेवी आंखवाळी अने लावण्यजळना दरिया समान एक कन्या जोइ. १४४ त्यारे तेना रूपथी खेंचाइने कुमार आंखो उघाडी वारंवार तेनेज जोतो थको आ रीते विचारवा लाग्यो. १४५ खरेखर विधाताए पोतानी कारीगीरी बताववामाटे कोइ अपूर्व परमाणुओ लइने तेमने अमृतथी मिश्र करी आ कन्या बनावेली छे. १४६ एना पगोए एना मुखपर मत्सर राखताचंद्रने खरेखर चूरी नाख्यो छे, नहितो पगना नखोना मिषथी ते कडकाकडका थएलो कां देखायछे? १४७ एणीनुं नितंब गंगाना रेतीनाकिनाराने जीतेलुं छे अने त्रणे

णलेह मिसं. ॥ १४९ ॥ एसा सहावगहिरा—नाही एयाहि नज्जइ जणेण, जयवेहकारिणो कूविगव्वमयरद्धयरसस्स. ॥ १५० ॥ तिवलीमिसे णिमीए—उयरे रेहंति तिण्ण रेहाओ, मन्ने विहिविहियाओ—नियतणुनिज्जियतिहुयणाए. ॥ १५१ ॥ उत्तुंगपीणथणमंडलस्स वत्थत्थलस्स को सोहं, लहइ इमीए जं समरसारजुयजूयफलगसमं. ॥ १५२ ॥ कप्पतरुणो लया ओ व्व दोवि रेहंति मीइ बाहूओ, करपल्लवाउ करुरुहकुसुमाउ सणिद्धरूवाओ. ॥ १५३ ॥ सोहइ वयण मिमीए—कसिणुज्जलकलियकुंतलकलावं, ससिमंडलं व उवरिं—घमंतअइकसिणघणपडलं. ॥ १५४ ॥ दीहरनयणनईए—वम्महवाहो निरंतरं एहाइ, कह मन्नहा तमीए—दीसइ न्रमुहा धणुलय व्व. ॥ १५५ ॥ गोरे मुहंमि एईइ—ताइ अहरो निसग्गसोणपहो, रत्तोप्पलपत्ताच-

जगतने जीतवाथी थाकेला कामदेवनुं सूवानुं फळक होय तेम शोभे छे. १४८ एणीनुं मध्य कामरूप हाथीमी सूंढथी पकडेलुं होवाथी पातलुं बनेल लागेछे अने तेमां वच्चे रोम राजि छे ते ते हाथीना दानजळनी रेखा होय एम लागेछे. १४९ आ स्वभावे ऊंडी नाभि तो जयवेध करनार कामना रसनी वावडी होय तेम लोकोने जणायछे. १५० एणीए पोताना शरीरथी त्रण जगत् जीत्या छे तेथीज जाणे विधाताए एना उदरमां त्रिवळीना मिषे त्रण रेखा करेली लागे छे. १५१ एणीना ऊंचा अने मजबूत स्तनमंडळवाळुं उरःस्थळ के जे कंदर्पनुं जूवा खेलवानुं मजबूत फलकसमान छे तेनी शोभा कोण पामी शके ? १५२ एणीनी बे बांयो कल्पतरुनी वेलडीओ जेवी लागे छे, तेमां हाथ छे ते पल्लव छे अने सुंवाळा नख छे ते कुसुम छे. १५३ एणीनुं काळा अने चळकतावाळो वाळुं मुख जाणे काळा वादळामां रहेलुं चंद्रमंडळ होय तेवुं लागे छे. १५४ एणीनी लांबी आंखरूप नदीमां मन्मथ पारधी हमेश न्हाय छे, नहीं तो तेना

ओ व्व—धवलकमले कयनिवासो. ॥ १५६ ॥ सवणा सहंति एईइ नयणसरिपवह-परुक्खलणकुसला, जमुहाधणुणो अंते—वम्महवाहस्स पास व्व. ॥ १५७ ॥ अन्नो जं जं दीसइ—अवयवरूवं इमाइ देहंमि, तं तं मणणिव्वुइकारि—होइ सुरतरुलयाए व्व. ॥ १५८ ॥ दिट्ठि तीए अब्भुट्ठिओ य दिन्नं च आसणं तत्तो, पुट्ठा सा तेण तुमं—का सुंदरी एत्थ परिवससि. ॥ १५९ सज्झसरुज्झंतगलाइ तीइ परिजंपियं महाभाग, गरुओ मह वुत्तंतो—न तरामि सयं परिकहेउं. ॥ १६० ॥ ता कहसु तुमं नियमेव वइयरं की तुमं इह कहंवा, गंतुं पयट्टओ होसि—सोउं मेवं तओ कुमरो,—॥१६१॥तीसे कलकोइलकोमलाइ अइनिउणभणणकुसलाए, वाणीइ रंजियमणो—जहट्ठियं कहिउं माढत्तो.॥१६२॥पंचालसामिणो वंभराईणो सुयणु वंभदत्तो हं,—पुत्तो कज्जव

किनारापर धनुष्य जेवी भमरो कां देखाय छे? १५५ एणीना गौर मुखमां स्वभावे लाल होठ धोळा कमळमां रहेलराता उत्पलना गुच्छा माफक लागे छे. १५६ एणीना कानो आंखरूप नदीना प्रवाहने अटकाववामां समर्थ होइ भ्रकुटीरूप धनुषवाळा मन्मथ पारधीना जाणे फांसा होय तेवा लागे छे. १५७ खरेखर एणीना शरीरमां जे जे अवयव देखाय छे ते ते कल्पवेलनी माफक मनने आनंदकारी छे. १५८ ते कन्या पण कुमारने आवतो जोइ उभी थइ अने तेणीए तेने आसन आप्युं. बाद कुमारे तेणीने पूछ्युं के, हे सुंदरी! तुं कोण छे अने इहां केम रहे छे? १५९ त्यारे भयथी गळुं रुंधातां तेणी बोली के, हे महाभाग! मारो वृत्तांत एटलो मोटो छे के ते हुं पोते कही शकुं तेम नथी.१६०माटे तमेज पोतानो व्यतिकर कहो के तमे कोण छो अने इहां केम आवेला छो? ते सांभळीने कुमार ते कोयलना माफक कोमळ स्वरथी चतुराइथी बोलती कन्यानी वाणीथी खुश थइने खरी वात कहेवा लाग्यो १६१—१६२

माओ——समागओ रणमज्झंमि. ॥ १६३ ॥ तव्वयणाणंतरमेव——हयिससल्लिलेण पूरियच्छिपुन्ना, सव्वंगुग्गयरोमंचकंसुया सोमवयणा य,——॥ १६४ ॥ पडिया कमकमलेसुं——तओय सा तस्स रोविउं लग्गा, कारुणमहण्णवससिणेण तेणु न्नयं काउं,——॥ १६५ ॥ वयणसरोरुह मान्नासिया य मा रुयसु कलुणरगव्वं, कहसु जहट्ठिय मा-कंदणस्स जं कारणमिमस्स. ॥ १६६ ॥ परिफुसियनयणसलिला——सा जणइ कुमार-हं तुहम्मेव, चुलणीए देवीए——सहोयरप्पुप्फचूलस्स,——॥ १६७ ॥ नरवइणो धूया तुम्हचेव दिन्ना पडिच्छमाणीए, मह वीवाहस्स दिणं जायं तिदिणा घरुज्जाणे,—— ॥ १६८॥ पुलिणंमि दीहियाए——णाणाकीलाहि कीलमाणी ता, विज्जाहराहमेणं——

१६२ हे सुतनु, हुं पंचाळदेशना ब्रह्मराजानो ब्रह्मदत्तनामे पुत्र छु अने कामयोगे आ अटवीमां आवेलो छुं. १६३ ते बोल सांभळतांज ते कन्यानी आंखो हर्षजळथी भराइ आवी, अने तेना सघळा अंगमां ते रोमांचित थइ थकी सौम्य मुख धरीने कुमारना पगे पडी रोवा लागी. त्यारे करुणासागर कुमारे तेनुं मुखकमळ ऊंचकी तेने ऊंची करी. १६४ १६५ अने कुमार तेणीने कहेवालाग्यो तुं आवा करुण स्वरे रो मा पण आ रोवानुं जे कारण होय ते खरेखररीते कहे?१६६ त्यारे ते कन्या आंसु लूंछीने बोली के हे कुमार हुं तारी चुलणीमाताना सगा भाइ पुष्पचूल राजानी पुत्री छुं अने ते तनेज अपायली छुं. अने त्रीजा दिने मारो विवाह थनार छे तेनी राह जोती हुं घरपासेना बगीचामां वावडीना किनारे अनेक प्रकारनी क्रीडाओथी रमती हती, एवामां कोइ नीच विद्याधर मने उपाडीने इहां लाव्यो छे. १६७—१६८——१६९ हवे अहीं हुं बंधुविरहरूप आगथी बळती रहेलीछुं तेटलामां अजाणी सुवर्णनी वृष्टिसमान तमे इहां

केणावि अहं समाणीया. ॥ १६९ ॥ बंधुविरहग्गिरुज्झंतमाणसा जाव एत्थ चिट्ठामि, ताव तुमं अवितक्कियहिरण्णवुट्ठीसमो सहसा,—॥ १७० ॥ कत्तोवि आगओ मज्झ—पुण्णजोगेण जीवियव्वासा, संपुन्ना, तेण पुणो—वुत्ता सो कत्थ मह सत्तु? ॥ १७१ ॥ जेण परिक्खेमि बलं—तस्स असं, भासियं तओ तीए, दिन्ना मे विज्जा संकरित्ति तेणं पढियसिद्धा. ॥ १७२ ॥ भणियं च तुज्झ एसा—सुमरियमेत्ता भवितु परिवारो, साहियमाणं कज्जं—काही पडिणीयरक्खं च. ॥ १७३ ॥ साहिस्सइ य वइयरं—ममसंतं. समरिया तए एसा, नामेण नट्टमत्तो—विक्खाओ सोवि भुवणंमि. ॥ १७४ ॥ पुन्नेहि समहियाए—मम तेयं असहमाणओ संतो, विज्जासिद्धिनिमित्तं—मं मोत्तु मिमंमि पासाए,—॥ १७५ ॥ भगिणीण जाणणकए—विज्जं जाणावणं च पेसेउं, वं-

ओचिंता पधार्या छो. १७० मारा पुण्ययोगे तमे गमे त्यांथी पधार्या एथी मने जीववानी आशा पूरी थइ छे. त्यारे कुमारे फरीने तेणीने कह्युं के, ते मारो शत्रु क्यां छे? १७१ केमके हुं तेना बळनी परीक्षा करुं. त्यारे ते कन्या बोली के, तेणे मने मात्र बोलवाथीज सिद्ध थती शांकरी विद्या आपेली छे. १७२ ते साथे तेणे कहेलुं छे के, आ विद्या संभारतांज तुं जे काम कहीश ते तारो परिवार करी आपशे अने वळी ए तने दुश्मनथी बचावशे—तेमज मारा संबंधी खबर अंतर पण ए पूरी पाडशे—तेथी तेणीए ते विद्या संभारी. बाद ते कहेवा लागी के, तेनुं नाट्यमत्त नामे नाम छे अने ते जगतमां विख्यात छे. १७३–१७४ हुं अधिक पुण्यवाळी होवाथी मारुं तेज सहन नहि करी शकवाथी ते मने आ महेलमां मेली पोते विद्या साधवा गएलो छे. १७५ ते पोतानी बेनोने जणाववा माटे ज्ञापनी विद्या मोकलावीने आ गोच वांसना

सकुरंगे गहणंमि—संपयं सो पविट्ठो त्ति. ॥ १७६ ॥ मं परिणेही साहियविज्जो अज्जं च सिद्धिदिवसो से, सिट्ठं कुमरेण तओ—जहा हओ सो मए अज्ज. ॥ १७७ ॥ हरिसुस्ससिपसरीरा—सा जासइ सुट्ठु सुट्ठु ते विहियं, जं तारिसाण डुन्नयपराण मरणं चिय वरं ति. ॥ १७८ ॥ गंधव्वविवाहेणं—परिणीया तक्खणं पणयखाणी, तीए य समं सहिओ—जा कालं किंचि ता निसुओ,—॥ १७९ समए अन्नंमि सुहावुदिसमो सवणतीस सुवणिंतो, दिव्ववलयाण सद्दो—पुट्ठा सा तेण किमियं ति. ॥ १८० ॥ एयाओ ताओ तुह—अज्जउत्तस्स नट्टुम्मत्तस्स, भगिणीओ खंड विसाहनामगाओ सुरूवाओ. ॥ १८१ ॥ तस्स विवाहनिमित्तं—घेत्तुं उवगरणं आगया एत्थ, ता तुम्हे थोव सुवक्कमेह डहु एयगणाओ. ॥ १८२ ॥ जाणामि जाव मेयासि—म-

कुंजमां हणणा पेठो छे. १७६ ते विद्या साधीने मने परणनार छे अने आज तेनी विद्या सिद्ध थशे. त्यारे कुमारे कह्युं के, तेने तो में आज मारी नाखेलो छे. १७७ त्यारे हर्षथी उछळती ते कन्या बोली के, तेम बहु सारुं कर्युं. केमके एवा अन्यायिओ मरे तेज तेमनुं भलुं छे. १७८ बाद ते प्रेमाळ कन्याने गंधर्वविवाहथी कुमार परण्यो अने ते साथे केटलोक काळ रह्यो, एटलामां एक वेळा तेणे अमृतनी वृष्टि माफक कानने आनंदित करतो दिव्य वलयोनो अवाज सांभळ्यो. एटले ते पूछवा लाग्यो के, आ शुं छे ? १७९–१८० एओ तमारा आर्यपुत्र नाट्यमत्तनी रूपवंती खंडा अने विशाखा नामनी बेनो छे. १८१ तेओ तेना विवाह माटेनुं सरसामान लइने इहां आवे छे, माटे तमे अहींथी उत्पट थोडा दूर जाओ. १८२ हुं एमना मननो भाव पारखीश के तमारापर एमने प्रीति छे के नहि ? जो प्रीति हशे तो राती धजा ऊंची

त्थिनत्थी तुमंमि अणुराओ, जइ होही ता रत्तं—पमाग मुवरिं पयालिस्सं. ॥१८३॥ अन्नह परिपंडुरमेव—मेस तीए विइण्णसंकेओ, थेवाए वेलाए—धवलपमागं परिचलं तं,—॥१८४॥ दट्ठुण मवक्कंतो—तओ पएसाउ गिरिनिगुंजंमि, पत्तो दिट्ठं च महा-सरोवरं केरिसं तं च. ॥ १८५ ॥ सज्जणमणं व सच्छं—परपियकरणं व सीयलसहावं, सावेगं संगहचिट्ठियं व बहुलोलकल्लोलं,— ॥१८६॥ कामिकुलं व समुज्जलरुवं चंदस्स विंयय ठाणं व, हियं व फलिहगिरिणो—जलनिहिसलिलं व गयपारं. ॥ १८७ ॥ गयणंगणोवदप्पणकप्पं गलिएहि केसकुसुमेहिं, नयणंजणेहि तणुकुंकुमेहि कमलग्गल-त्तेहिं. ॥ १८८ ॥ तह तिलगचंदणेहिं—इओतओ नयणगोयरगएहिं, संसूइयखेयरना-रिण्हाण मलिकुलसमालीढं. ॥ १८९ ॥ एहाओ तत्थ जहिच्छाइ भिन्नपहलग्गसव्वसं-

फरकावीश, अने नहि तो धोळी फरकावीश एम तेणीए संकेत आप्यो; बाद थोडो वखत जतां धोळी धजा फरकती जोइ,कुमार त्यांथी खसीने पर्वतनी खीणमां आव्यो. त्यां तेणे एक सरोवर जोयुं. सरोवर केवुं हतुं ते वर्णवे छे. १८३-१८४ १८५सज्जन पुरुपना मन माफक ते स्वच्छ हतुं,परतुं प्रिय करवा माफक ते शीतळ हतुं,धरपकड माफक वेगवाळुं हतुं. कामि-जनोनी माफक बहु चंचळ तरंगवाळुं हतुं, चंद्रना चळकता बिंबनी माफक उजळुं हतुं, स्फटिकना पर्वतनी माफक हितकारी हतुं, दरियाना पाणी माफक ऊंडुं हतुं. १८६-१८७ वळी ते आकाश जोवाना दर्पण जेवुं हतुं, तेमज आमतेम नजर-पर चडता केशमांथी खरेला फूलो, आंखमांथी गळेला अंजन, शरीरपरथी गळेल कुंकुम, पगपरथी गळेला अळता, तथा निलकना चंदनथी तेमां विद्याधरनी नारीओ न्हाइ हती एम जणातुं अने त्यां जनराओ जराया हता. १८८--१८९

तावो, अग्घाइयवियसियपुंडरीयसुरसुरभिगंधभरो. ॥ १९० ॥ तीरुत्तिमेण पलोइया य सरपच्छिमुत्तरे भाए, नवतारुण्णा उन्नयपओहरा कन्नगा एगा. ॥ १९१ ॥ तक्काला-रोवियचावदंडमुक्केहिं मम्महसरेहिं, सल्लिज्जंतसरीरो—वसेणं सो समाढत्तो. ॥ १९२ ॥ अयो सुकयपरिणई—मज्झे सा जं कुरंग सुयनयणा, रण्णे एयंमि कहिंचि दिट्ठिपह-चारिणी जाया. ॥ १९३ ॥ धवलेहि सिणेहसमुज्जलेहि नयणेहि तं पलोयंती, च-लिया तओ पएसा—विज्जु व्व अदंसणीहूआ. ॥ १९४ ॥ तत्तो मुहुत्तमेत्तेण पे-सिया चेडिया इमीइ इहं, पत्ता, समप्पियं वत्थजुयलं मइकोमलमहग्घं. ॥ १९५ ॥ तं बोलं पुप्फाणिय—अन्नंपि सरीरसंठिईजोग्गं, भणियं च तीइ जा सा—सरपेरंते तए दिट्ठा,—॥ १९६ ॥ संतोसदाणमेयं—पहियं तीए तुहं तहा भणियं, मज्झाभि-

ते तळावमां कुमार मरजी मुजब न्हायो, अने रस्ते चालतां लागेलो थाक उतार्यो, तथा तेणे खीलेला कमळोनी सुगंध सूंघी १९० ते तळावना किनारापर चढतां तेनी वायु कोणपर कुमारे एक नवयौवन ऊंचा स्तनवाळी कन्या जोइ. १९१ त्यारे तत्काळ धनुषमांथी छूटेला कामना बाणोथी वींधायलो कुमार आ रीते तेने वर्णववा लाग्यो. १९२ अहो ! मारा सुकृत फळ्यां के, आ अरण्यमां आ हरिणाक्षी मारी नजरे पडी. १९३ हवे ते कन्या पण धोळी अने स्नेह भरेली आंखोथी तेने जोती थकी त्यांथी चालती थइने वीजळीना माफक अदृश्य थइ गइ. १९४ बाद मुहूर्त्त मात्रमां तेणीए दासी मोकलावी, तेणीए त्यां आवीने कुमारने अति कोमळ अने बहु मूल्ला बे वस्त्र आप्यां. १९५ तेमज ते दासीए तांबूल अने फूलो तथा बीजी पण वापरवा लायक चीजवस्तु तेने आपीने कह्युं के, जे तमे तळावना किनारे कन्या जोइ हती,

त्थिनत्थी तुमंमि अणुराओ, जइ होही ता रत्तं—पमाग मुवरिं पयासिस्सं. ॥१८३॥ अन्नह परिपंडुरमेव—मेस तीए विइणसंकेओ, थेवाए वेलाए—धवलपमागं परिचलं तं,—॥१८४॥ दट्ठुण मवक्कंतो—तओ पएसाउ गिरिनिगुंजंमि, पत्तो दिट्ठं च महा-सरोवरं केरिसं तं च. ॥ १८५ ॥ सज्जणमणं व सच्छं—परपियकरणं व सीयलसहावं, सावेगं संगहचिट्ठियं व बहुलोलकल्लोलं,— ॥१८६॥ कामिकुलं व समुज्जलरुवं चंदस्स विंयव ठाणं व, हियंयं व फलिहगिरिणो—जलनिहिसलिलं व गयपारं. ॥ १८७ ॥ गयणंगणोवदप्पणकप्पं गलिएहि केसकुसुमेहिं, नयणंजणेहि तणुकुंकुमेहि कमलग्गल-त्तेहिं. ॥ १८८ ॥ तह तिलगचंदणेहिं—इओतओ नयणगोयरगएहिं, संसूइयखेयरना-रिण्हाण मलिकुलसमालीढं. ॥ १८९ ॥ एहाओ तत्थ जहिच्छाइ भिन्नपहलग्गसव्वसं-

फरकावीश, अने नहि तो धोळी फरकावीश एम तेणीए संकेत आप्यो; बाद थोडो वखत जतां धोळी धजा फरकती जोइ,कुमार त्यांथी खसीने पर्वतनी खीणमां आव्यो. त्यां तेणे एक सरोवर जोयुं. सरोवर केवुं हतुं ते वर्णवे छे. १८३-१८४ १८५सज्जन पुरुषना मन माफक ते स्वच्छ हतुं,परतुं प्रिय करवा माफक ते शीतळ हतुं,धरपकड माफक वेगवाळुं हतुं. कामि-जनोनी माफक बहु चंचळ तरंगवाळुं हतुं, चंद्रना चळकता बिंबनी माफक उजळुं हतुं, स्फटिकना पर्वतनी माफक हितकारी हतुं, दरियाना पाणी माफक ऊंडुं हतुं. १८६-१८७ वळी ते आकाश जोवाना दर्पण जेवुं हतुं, तेमज आमतेम नजर-पर चमता केशमांथी खरेला फूलो, आंखमांथी गळेला अंजन, शरीरपरथी गळेल कुंकुम, पगपरथी गळेला अलता, तथा तिलकना चंदनथी तेमां विद्याधरनी नारीओ न्हाइ हती एम जणातुं अने त्यां जनराओ चराया हता. १८८-१८९

तावो, अग्घाइयवियसियपुंडरीयसुइसुरहिगंधभरो. ॥ १९० ॥ तीरुत्तिसेण पलोइया य सरपच्छिमुत्तरे भाए, नवतारुण्णा उन्नयपओहरा कन्नगा एगा. ॥ १९१ ॥ तक्कालारोवियचावदंडमुक्केहिं मम्महसरेहिं, सल्लिज्जंतसरीरो—वन्नेउं सो समाढत्तो. ॥ १९२ ॥ अहो सुकयपरिणई—मज्झे सा जं कुरंग सुयनयणा, रन्ने एयंमि कहिंचि दिट्ठिपहचारिणी जाया. ॥ १९३ ॥ धवलेहि सिणेहसमुज्जलेहि नयणेहि तं पलोयंती, चलिया तओ पएसा—विज्जु व्व अदंसणीहूआ. ॥ १९४ ॥ तत्तो मुहुत्तमेत्तेण पेसिया चेडिया इमीइ इहं, पत्ता, समप्पियं वत्थजुयलं मउकोमलमहग्घं. ॥ १९५ ॥ तं बोलं पुप्फाणिय—अन्नंपि सरीरसंठिईजोग्गं, भणियं च तीइ जा सा—सरपेरंते तए दिट्ठा,—॥ १९६ ॥ संतोसदाणमेयं—पहियं तीए तुहं तहा भणियं, मज्झाभि-

ते तळावमां कुमार मरजी मुजब न्हायो, अने रस्ते चालतां लागेलो थाक उतार्यो, तथा तेणे खीलेला कमळोनी सुगंध सूंघी १९० ते तळावना किनारापर चढतां तेनी वायु कोणपर कुमारे एक नवयौवन ऊंचा स्तनवाळी कन्या जोइ. १९१ त्यारे तत्काळ धनुषमांथी छूटेला कामना बाणोथी वींधायलो कुमार आ रीते तेने वर्णववा लाग्यो. १९२ अहो ! मारा सुकृत फळ्यां के, आ अरण्यमां आ हरिणाक्षी मारी नजरे पडी. १९३ हवे ते कन्या पण धोळी अने स्नेह भरेली आंखोथी तेने जोती थकी त्यांथी चालती थइने वीजळीना माफक अदृश्य थइ गइ. १९४ बाद मुहूर्त्त मात्रमां तेणीए दासी मोकलावी, तेणीए त्यां आवीने कुमारने अति कोमल अने बहु मूल्ला बे वस्त्र आप्यां. १९५ तेमज ते दासीए तांबूल अने फूलो तथा बीजी पण वापरवा लायक चीजवस्तु तेने आपीने कह्युं के, जे तमे तळावना किनारे कन्या जोइ हती,

मुहं हलि वणलयाइ एसो महाभागो,—॥ १०७ ॥ जइ महपित्त मं[illegible]
यइ संठिओ तहा कुणसु, ता एह तत्थ तुझे—[illegible]
मउलियकरकमलाए—[illegible]

[illegible] —विसयसुहं निब्भरं अणुहवंतो, वोलेइ कालं मन्नंमिवासरे [illegible] —११७ नियबलेण सणेओ—समीवदेसंतराइं हणिउमणो, पल्लीवइ [illegible] समुच्चलिओ ११३ हंतव्वगाभवाहिं—कमलसरोवरतडंनि [illegible] ततो दोवि.—११४ पढमघणसंठि- [illegible] —तेणावि इमो ततो दोवि. [illegible] —चंदकंतिणो विम्हकुमुय [illegible] धवलच्छपुन्निमा—चंदकंतिणो विम्हकुमुय अः [illegible] मुखगया रोविउं लग्गा, संठविओ य कुमारो [illegible] कुमरो सुहय—कहसु किं ते मम प्परो- [illegible] ११६ [illegible] नियचरियं. ११७ वरधणुणावि य जणियं [illegible] —देहुभागे तुमं ठविउं. ११८

[illegible] तेमणे एक दिवसे ते पल्लिपति पो- [illegible] थयो. ११९—१३

[illegible] पण कुमारने [illegible] अने तेणे पण कुमारने [illegible] अने पुनमना चंद्रनी को- [illegible] वाद [illegible] पछी तेणे कुमारने पूछ्युं के हे सुभग, मारो गोलागजी- [illegible] १२७ हवे वरधनु बोल्यो के हे कुमार, मारो [illegible] —पाणी लेवा गयो, पण मां मे एक मोटो तलाव जोयो, [illegible]

ण जलं चलिओ—तुहं तिगे ताव
ओ य वहुं, पुट्ठो रे रे वरधणु—
—तेहि तो दठयरं हओमि अहं,
त्तो तओ नमंतो—कमेण गओ
, तो कया वयणे,—॥ २२३ ॥ प-
, जाओ विचेयणो तो—मओ त्ति णा-
ो—गुलिया सा कड्डिया मुहाउ मए,
दट्ठो. ॥ २२४ ॥ एगं गाम भइगओ—
पणमित्ता—कोमलवयणेहि अन्नट्ठो. ॥ २२५ ॥

ता । तरफ चाल्यो एटलामां कवच पहेरी तैयार बनेला दीर्घराजाना माणसोए मने जोयो
। ने पूछ्युं के, अरे वरधनु ! बोल के, ते ब्रह्मदत्त क्यां छे ? २१८–२१९–२२० में कह्युं के, मने तेनी
नथी, त्यारे तेमणे मने वधारे मार्यो, अति मार खातां में कह्युं के, तेने सिंह खाइ गयो. २२१ बाद कपटथी आम-
तेम फरतां हुं तुं जोइ शके त्यां आव्यो अने तने में संज्ञा करी के, नाशी जा. बाद में परिव्राजके आपेली वेदनाने हरनारी
गोळी मोढामां घाली एटले हुं अचेतन जेवो थइ पड्यो त्यारे मने मरेलो जोइ तेओए मेली दीधो. २२२–२२३ तेओ
गया पछी त्यांज वखते में मोढामांथी ते गोळी कहाडी. बाद तने शोधवा लाग्यो, पण तुं तो क्यां स्वप्नामां पण न देखायो.
२२४ बाद हुं एक गाममां गयो. त्यां में एक परिव्राजक जोयो. तेने प्रीतिथी वळीने हुं नरम वचनोथी पूछवा लाग्यो.
२२५ तेणे कह्युं के, तारा बापनो हुं वसुभाग नामे परम मित्र छुं, अने ते साथे वळी तेणे कह्युं के, तारो बाप नाशीने

तेणुत्तं तुह पिउणो—वसुभागो नाम परममित्तमहं, कहियं च तुज्झ जणओ—प-लायमाणो वणंमि गओ. ॥ २२६ ॥ माया ते चंडालाण पाडगे दीहराइणा, ठविया तद्दुक्खगहिल्लो चोल्लिओ य कंपिल्लणगरमहं. ॥ २२७ ॥ काउं कावालियवेस—मित्थ सत्तो तओ पवंचेण, केणवि असुणिज्जंतेणे पाडगाओ तओ जणणी.—॥ २२८ ॥ अवहरिया पिउमित्तस्स—देवसम्मस्स माहणस्स गिहे, मुक्का गामे एगंमि—तुम्ह अणेसणपरो हं.—॥ २२९ ॥ इह मागओ भिह चिट्ठंति जाव सुहदुक्खपुच्छणपयट्टा, ते दोवि ताव एक्को—आगम्म नरो इय भणेइ. ॥ २३० ॥ भोभो महाणुभावा—न किंचि तुम्हाण हिंडियव्वेण, जम्हा दीहनिउत्ता—पत्ता जमसन्निभा पुरिसा. ॥ २३१ ॥ ते दोवि वहुं ताओ वणगहणाओ कहिंचि निग्गंतुं, महिमंडलं भमंता—

जंगलमां जतो रह्यो छे.॥२२६॥तारी माने दीर्घराजाए चंडाळोना पाडामां राखी. तेना दुःखथी हुं घेलो थइ कांपिल्यपुर तरफ चाल्यो.२२७बाद कापालिकनो वेष करी इहां आवी कोइ पण न जाणी शके एवा प्रपंचथी ते पाडागांथी तारी माने हरीने एक गाममां तारा बापना मित्र देवशर्मा ब्राह्मणना घरे मेली छे, अने हवे तने शोधतो हुं इहां आव्यो छुं. एम ते बे जण सुखदुःख पूछता बेठा हता. तेवामां एक माणस त्यां आवीने आ रीते कहेवा लाग्यो. २२८–२२९–२३० हे महानुभावो! तमारे आघुंपाछुं जवुं नहि, केमके दीर्घराजाए मोकलेला यम जेवा माणसो आवी पहोंच्या छे. २३१ त्यारे ते बे जण जेमतेम करीने ते जंगलमांथी नीकळी भूमंडळ फरता कौशांबीनगरीमां आव्या. २३२ त्यां बाहेरना

पत्ता कोसंबिनामपुरिं. ॥ २३२ ॥ वहिरुज्जाणे दिट्ठुं—सिट्ठिसुयाणं महल्ल विहवाण, सागरदत्तो अह बुद्धिलो य इह वूढनामाणं.—२३३ ॥ लग्गं कुक्कुडजुज्झं—सयसाहस्सो पणो कओ तत्थ, निहओ सागरदत्तस्स—कुक्कुडेणं पयंडेणं.—॥ २३४ ॥ सेट्ठिसुयबुद्धिलकुक्कुडो तओ तेण इयरओ निहओ, रणलग्गलग्गचित्तो—सागरदत्तस्स कुक्कुडओ. ॥ २३५ ॥ किज्जंतोवि अभिमुहं—सो बुद्धिलकुक्कुडस्स नेच्छेइ, जुज्झं कहंचि लग्गं—सागरदत्तो जिओ तेण. ॥ २३६ ॥ एत्थंतरंमि भणिया—वरधणुणा सेट्ठिनंदणा दोवि, एसो किं उत्तमजाइओवि इय कुक्कुडो भग्गो. ॥ २३७ ॥ ता पेच्छामि न कुप्पह—जइ तुब्भे, भासियं पहिट्ठेण, सागरदत्तेण न मे—लोभो एत्थत्थि दव्वकओ. ॥ २३८ ॥ किंतु अभिमाणसिद्धीइ कज्ज मज्झं तओय मंतिसुओ, पेच्छइ बु-

उद्याननां तेमणे सागरदत्त अने बुद्धिल नामना वे मोटा पैसादार शेठना पुत्रोना कूकडाओनी लडाइ चालती जोइ. त्यां एक लाखनो पण करेल हतो. हवे त्यां सागरदत्तना प्रचंड कूकडाए बुद्धिलना कूकडापर धसारो कर्यो एटले ते कूकडाए तेने एवा पंजा मार्या के, सागरदत्तनो कूकडो लडाइथी पाछो हठी गयो. २३३-२३४-२३५ ते कूकडो बुद्धिलना कूकडानी सामे करतां पण लडतां अचकातो हतो, छतां जेमतेम करीने लडाइ शरु थइ, तेमां ते सागरदत्तनो कूकडो हार्यो. २३६ एवामां वरधनुए ते बन्ने शेठि पुत्रोने कह्युं के आ आवो उंची जातनो कूकडो होइ केम भाग्यो छे? २३७ माटे जो गुस्से नहि थाओ तो हुं तपासी जोउं. त्यारे सागरदत्त खुश थइने बोल्यो के, मारे कंइ द्रव्यनो लोभ नथी, पण अमारे अभिमान कायम रहेवानुंज काम छे. त्यारे मंत्रिकुमार बुद्धिलना कूकडाने जोवा लाग्यो एटले तेना पगे मां तेणे लोढानी झीणी सोयो तेना नखोमां बांधेली जोइ,

ज्ञिलकुक्कुम—मह तच्चलणेसु दिट्ठाओ.— ॥ २३९ ॥ सएहाउ लोहमइयाउ—सूइ-
आओ नहेसु वद्धाओ, तो बुद्धिलेण णायं—जह विन्नाओ वइयरो मे. ॥ २४० ॥
सणियं समीवदेसं—तस्सा गंतूण भासियं तेण, मा पयडसु वइयर मेय—मद्धगं ते
पयच्छामि. ॥ २४१ ॥ पणलक्खस्स, वरधणू—जणाइ मेत्था न किंचि पेच्छामि, तह
बुद्धिलो न याणइ—जह्ना तहा सन्निओ इयरो. ॥ २४२ ॥ तेणावि कड्ढियाओ सू-
ईओ तह नहग्गलग्गाओ, आलेविओ तओ पुण—स तंवचूलो, पराजिणिओ—
॥ २४३ ॥ पच्छिकुक्कुमो स बुद्धिललक्खोविय हारि मागओ ताहे, जाया दोवि स-
रिसया—सागरदत्तो य वहुतुट्ठो.—॥ २४४ ॥ ते दोवि नेइ नियमंदिरंमि आरोविउं
रहं रम्मं, विहिओ चियपमिवत्ती—ते तत्थ नयंति केवि दिणे. ॥ २४५ ॥ तन्नेहनि-

त्यारे बुद्धिल जाणी गयो के मारो प्रपंच एणे जाणी लीधो छे. २३८–२३९–२४० त्यारे बुद्धिले हळवे रहीने मंत्रि-कुमार पासे आवीने कह्युं के, आ वात तुं पाधरी नहि करे तो एक लाखनो जे पण छे, तेमांथी अर्धुं तने आपुं. त्यारे वरधनु जणाववा लाग्यो के, अहीं कंइ मने देखवामां आवतुं नथी, अने ते साथे बुद्धिल न जाणे तेम सागरदत्तने संज्ञा करी खरी वात पण जणावी दीधी. २४१–२४२ बाद सागरदत्ते बुद्धिलना कूकडाना नखोमां बांधेली सोयो खेंची लीधी अने फरीने लडाइ शरु करावी, तेमां तेना कूकडाए बुद्धिलना कूकडाने हार खवरावी, एथी बुद्धिल पण एक लाख हार्यो. एटले बन्ने जण सरखा थया. आथी सागरदत्त घणो खुश थइने ते बन्नेने सुंदर रथपर चडावीने पोताने घेर तेडी गयो. त्यां तेओ यथायोग्य आदरमान पामी केटलाक दिवस रह्या. २४३–२४४–२४५ तेओ तेना स्नेहना लीधे त्यां

गन्नियाः आगओ य अह अन्नया नरा एगो, नीओ एगंते तेण—वरधणू जासिओ एवं. ॥ २४६ ॥ जो सूज्ञइयरे जं पणामितुह वुम्जिलेण पन्निवन्नो, दीणारअछलक्खो—तस्स निमित्तं तुहं पन्निओ—॥ २४७ ॥ हारो चालीससहस्समोल्लओ वोत्तु सिय समप्पेउं. हारकरंमग मह सो—गओ तओ कहुढिओ हारो.॥२४८॥सारयससहरकिरणुक्करो व्व परिपंफुरीकयदिसोहो, आमलगथूलनित्तुल निम्मलमुत्ताफलधरो सो. ॥ २४९ ॥ सो दंसिओ कुमारस्स—तेण निउणं निज्ञायंतेण, दिट्ठो नियनामंको—तद्देगदेसट्ठिओ लेहो. ॥ २५० ॥ आपुच्छिओ वरधणू—कस्से स वयंस संतिओ लेहो, सो जाणइ कुमर को मुणाइ—एयवुत्तंतपरमत्थं. ॥ २५१ ॥ जं तुम्हसरिसनामा—संति अणेगे नरा महीवलए, एवं पन्निहयवयणो—कुमरो तो मोण मल्लीणो. ॥ २५२ ॥ व-

ग्ना एवामां एक वेळा एक माणस आवीने वरधनुने एकांतमां तेनी आ रीते कहेवा लाग्यो. २४६ सोयोनी वावनमां बुद्धिले तमने अर्धो लाख सोनाम्होर आपवा कबूलात आपेल तेना पेटे तमोने आ चालीश हजारनो हार मोकलाव्यो छे, एम कही हारनो करंडीयो सोंपी ते चालतो थयो. बाद मंत्रिकुमारे ते हार कहाडी जोयो. २४७–२४८ ते आमळा जेवा मोटा अनुपम अने निर्मळ मोतीओना हार शरदऋतुना चंद्रना किरणोनी माफक सघळी दिशाओने उजळी करवा लाग्यो. २४९ ते हार ते मंत्रिकुमारे राजकुमारने बताव्यो, त्यारे तेणे तेने बरोबर जोतां थका तेना एक भागमां तेना नाम साथे कोतरेलो एक लेख जोयो. २५० कुमारे वरधनुने पूछ्युं के, हे मित्र ! आ कोनो लेख छे ? वरधनु बोल्यो के हे कुमार ! ए बाबतनो परमार्थ कोण जाणी शके ? २५१ केमके तारा सरखा नामवाळा भूमंडळमां अनेक माणसो रहेला छे. आ रीते वरधनुए कुमारनो प्रश्न उडावी दीधाथी ते मौन धरी रह्यो. २५२ हवे वरधनुए ते लेख उकेल्यो तो तेमां अति तीव्र

रधणुणावि स लेहो—विहाडिओ पेहिया तहिं गाहा, अइतिव्ववम्महुस्साहकारिया ग्ययत्थ त्ति. ॥ २५३ ॥—जहा—पत्थिज्जइ जइ हियए—जणेण संजोय जणियजत्तेण, तहवि तुमंचिय धणियं—रयणवई महइ माणेउं. ॥ २५४ ॥ वरधणुणो चिंतासंगयस्स कह मेयलेहभावत्थो, णायव्वो, बीयदिणे—पव्वइगा आगया एगा. ॥ २५५ ॥ कुमरस्स सिरे कुसुमे—तह क्खए निक्खिवेइ भणई य, पुत्तय वाससहस्सं—जीवसु तो वरधणुं नेइ,— ॥ २५६ ॥ एगंते तेण समं—किंचिवि सा मंतिउं झत्ति गया, तो पुच्छइ कुमारो—वरधणु मेयाइ किं कहियं? ॥ २५७ ॥ ईसीसि हसिरवयणो—तो साहइ वरधणू जहा एसा, पव्वइया पडिलेहं—मं मग्गइ तस्स लेहस्स. ॥ २५८ ॥ भणियं मए जहेसो—लेहो निवबंभदत्तनामंकी, दीसइ ता कहसु तुमं—को एसो बंभद-

कामने जगाडनारी आवी रीतनी एक गाथा होती. २५३

ते गाथा आ रीते हती.

जो के जेत्नाने प्रयत्न करतो बीजो माणस पोताना मनमां बहुए प्रार्थना करे छे, छतां रत्नवतीने खरेखर तारेज परणवी जोइए. २५४ त्यारे वरधनु विचारमां पड्यो के आ लेखनो भावार्थ शी रीते मालम पडशे ? एवामां बीजा दिवसे एक प्रव्राजिका त्यां आवी. २५५ तेणी कुमारना माथापर फूल तथा अक्षत नाखीने बोली के हे पुत्र, हजारवर्ष जीवतो रहे. एम कही वरधनुने एकांतमां तेडी तेना साथे कंइ छानी वातकरी झट स्थाने पडी.त्यारे वरधनुने कुमार पूछवा लाग्यो के एणीए शुं कह्युं ? २५६—२५७ त्यारे वरधनु जरा हसतामुखे बोल्यो के ए प्रव्राजिकाए मारी पासेथी ते लेखनो प्रतिलेख (उत्तर) माग्यो. २५८ में कह्युं के ए लेखमां ब्रह्मदत्तराजानुं नाम छे, माटे कहे के ए ब्रह्मदत्त ते कोण ? २५९ ते

नो त्ति. ॥२५९॥ नणियं तीए सुण सोम—किंतु न तए पयासियव्व मिमं, अत्थि इहेव पुरवरे—रयणवई सेट्ठिणो धूया. ॥२६०॥ सा बालकालओ निअ—मइ निव्वा जोव्वणं समणुपत्ता, तिजगजज्जयमम्महज्जिल्लस्स महल्लजल्लिसमं. ॥ २६१ ॥ दिट्ठा दिणंमि अन्नंमि—सा मए किंचि किंचि झायंती, पल्हत्थियगंडयला—वामे करपल्लवे विमणा—॥ २६२ ॥ तीइ समीवं गंतुं—पभणिता सा मए जहा पुत्ति, चिंतासायरल-हरीहि–हीरमाणव्व तं नासि. ॥२६३॥ तो परियणेण नणियं—बहूणि दिवसाणि एव मेईए, विमणुम्मणा य पुट्ठा—पुणो पुणो जाव न कहेइ,—॥ २६४ ॥ नणियं तस्स सहीए—पियंगुलइयाइ नगवइ जहेसा, वज्जंती तुज्फ न किंपि—अक्खिउं सक्कइ इया-णिं. ॥ २६५ ॥ ता साहेमि अहं ते—परमत्थं बोलियंमि, एक्कंमि, दिवसे कीलाहेउं—

बोली के हे सौम्य, सांभळ, पण तारे ए वात खुल्ली न करवी. आज नगरमां एक शेठनी रत्नवती नामे पुत्री छे. २६० ते नानपणथी ज मारीसाथे प्रीति राखेछे. अने हाल ते त्रण जगत्ने जीतवा तत्पर मन्मथरूप नोलना मोटा नालासमान यौवनवयने पामीछे. २६१ तेणी एक दिवसे अवळा हाथे लमणो धरी उदास थइ कंइ ध्यान करती मे जोइ. २६२ तेथी तेनीपासे जइ मे कह्युं के हे पुत्रि, तुं चिंतासागरमां डूबेली देखायछे. २६३ त्यारे तेना परिजने कह्युं के आ रीते रहेतां घणा दिन थया छे. आम उदास रहेती तेणी पूछया छतां पण कंइ बोली नहि, तेवामां तेनी प्रियंगुळतिका नामनी सखी बोली के हे नगवती, ए शरमना लीधे हमणा तमने कंइ कही शकती नथी. २६४—२६५ माटे हुंज तने परमार्थ कहुं के थोडा दिवसपर चंद्रावतार वनमां रमवामाटे पोताना बुद्धिल नामना दाससाथे ए गइ हती. त्यां कूकडानी लागे-

वणंमि चंदावयारंमि. —॥ २६६ ॥ नियजाउगेण बुद्धिलनामेण समं गयाइ एयाए, लग्गंमि कुक्कुमाणं—जुज्झंमि कओवि तत्थगओ.—॥ २६७ ॥ दिट्ठो अपुव्वरूवो—कोवि कुमारो तया इओ चेव, झीणसरीरसिरीया—विन्नायमुहा इमा जाया. ॥ २६८ ॥ तं च मए सोऊणं—विन्नायं वम्महो इमीइ मणे, चंदोदए व्व जलही—उल्लसिओ लोलकल्लोलो. ॥ २६९ ॥ दाविथसिणेहवयणा—पत्तासिया सा मए जहा वच्छे, नियसब्भावं सब्भूयकव मक्खाहि तो भणियं.—॥ २७० ॥ तीए भगवइ जणणी—तुमं ममं नत्थि किंचिवि रहस्सं, जं तुज्झ नो कहिज्जइ—ता सुण एगग्गचित्ता तं. ॥२७१॥ एयाइ पियंगुलयाइ—जाणिओ एस बंभदत्तो त्ति, पंचालाहिवपुत्तो—कहिओ य सगउरवं मज्झ. ॥ २७२ ॥ तप्पभिई मे हिययं—तत्तो नोसरइ सुविणकालेवि, ता ज-

ली लमाइमां वयांकथी आवेलो कोइ अपूर्व रूपवाळो कुमार एणीए जोयो, त्यारथी ए निस्तेज अने झांखी थएली छे. २६६—६७—६८ ते सांभळी हुं समजीगइ के एणीना मनमां चंद्रनो उदय यतां जेम दरियो उंचा तरंगो वाळो थइ उछळे तेम काम उल्लसित थयो छे. २६९ बाद मे तेने स्नेहना बोल संभळावीने कह्युं के हे पुत्रि, तुं खरी वात होय ते मने कही दे. त्यारे ते बोली के.—२७० हे भगवती, तुं मारी मा छे, तेथी एवुं रहस्य कोइ नथी के जे तने नहि कहाय, माटे तुं एकाग्र थइ सांभळ. २७१ आ प्रियंगुलताए तेने ओळख्यो के ते पंचाल देशना राजानो ब्रह्मदत्त नामनो पुत्र छे, अने ते वात तेणीए तेना वखाण करता साथे मने कही. २७२ त्यारथी मारुं वचन स्वप्नमां पण तेनाथी

इ पइ न एसो—मरणं सरणं परं मज्झ. ॥ २७३ ॥ तो पुणरवि सा जणिया—मए जहा धीरिमं कुणसु वच्छे, तह काह सुजमं जह—संपज्जइ चिंतिय मिमं ते. ॥२७४॥ जाया सत्थतणू सा—हियया सासणकए मए जणिया, कह्ले मए स दिट्ठो—कुमरो नयरीइ मज्झंमि. ॥ २७५ ॥ सोउ मिमं सा हरिसियहियया वयणं जणेइ जह तुम्ह, ज-यवइ पसायओ मज्झ—सुंदरं होहिई सव्वं. ॥ २७६ ॥ किंपुण विस्सासकए—तस्स इमं बुद्धिलस्स वत्तएसा, हाररयणं समपसु—लेहं च तदंचले लग्गं. ॥ २७७ ॥ इय एस लेहजुत्तो—हारो घेत्तुं करंमगस्संतो, पुरिसस्स करे दाउं—तव्वपणाओ मए पहिओ. ॥ २७८ ॥ तो लेहवइयरो ते—तीए कहिओ इयाणि पुण देहि, पडिलेहं तो दिन्नो—तुहनामंको मए लेहो. ॥ २७९ ॥—जहा—सिरिबंभरायपुत्तो—वरधणुक-

ओसरतुं नथी, मारे जो ए पति न मळे तो मारे मरवुं ज जलुं छे. २७३ त्यारे फरीने में तेने कह्युं के हे पुत्रि, धीरज राख, हुं एवो उद्यम करीश के तारुं चिंतव्युं पार पडशे. २७४ आथी कंइक स्वस्थ थइ एटले तेना मनने आस्वासन करवा में कह्युं के गइकाले मे ते कुमारने नगरना वच्चे जोयो छे. २७५ ए सांभळी ते खुश थइ बोली के भगवती, तारा पसायथी मारे सघळुं सारुं थशे. २७६ पण तेने विश्वास आववाखातर बुद्धिलना नामे आ हार अने तेना साथे बांधेलो लेख आपो त्यार. २७७ पछी आ लेखवाळो हार करंडयामां घाली माणसना हाथे आपी तेना कहेवा मुजब में तने मोकल्यो छे. २७८ आ रीते तेणीना लेखनी वात तने कही. हवे तुं प्रतिलेख आप. तेथी में तेने तारा नामनो लेख आप्यो. २७९

लिओ विढत्तमाहप्पो, रयणवइं रमिजमणो----कोमुइ मिव पुसाहरिणंको. ॥ २०० ॥ वरधणुणा कहिय मिणं—वुत्तंतं सोउ पुम्मणो कुमरो, जाओ रयणवईए—उवरिं अणिन्नाविणयाएवि. ॥ २०१ ॥ रुज्झइ नलिणीदलसत्थरेवि चंदणरसेण सित्तोवि, सो तिव्वविरहजलणालिद्धो णो णिव्वुइं लहइ.॥ २०२॥ अन्नंमि दिणे पुरवाहिराउ दे-साउ वरधणू कुमरं, आगम्म जणइ णो इह—तुम्ह सुवदुाण सुयियं ति. ॥ २०३ ॥ जम्हा कोसलवइणा—दीहेण गवेसणाकए तुज्झ, इह पुरिसा पेसविया—कओ य पु-रसामिणा जत्तो—॥ २०४ ॥ सव्वत्तो अम्ह गवेसणंमि इय सुम्मए जणे वाओ, तो णायवइयरेणं—सागरदत्तेण ऩूमिहरे.— ॥ २०५ ॥ संगोविया डुवेवी—पत्ता रयणी

ते आ रीते के,

वधता महात्म्यवाळो वरधनुना साथे रहेलो ब्रह्मराजानो पुत्र, पूनमनो चंद्र जेम कौमुदीसाथे रमे तेम रत्नवती-नी साथे रमवा चाहेछे. २०० वरधनुए कहेलो आ वृत्तांत सांजळी कुमार अणजोयली रत्नवती ऊपर पण उत्सुक थइ पड्यो. २०१ ते तीव्र विरहाग्निथी व्याप्त थइ नलिनी दळना साथरामां सूतो थको अने चंदनना रसे सींच्यो थको पण बळवा लाग्यो अने क्यांपण शांति पामतो न हतो. २०२ एवामां एकदिने वरधनु बाहेरथी फरी आवीने कुमारने कहेवा लाग्यो के तारे अहीं रहेवुं ठीक नथी. २०३ केमके कोशळपति दीर्घराजाए तने शोधवा इहां माणसो मोकल्या छे, अने इहांना राजाए पण चोमेरथी आपणने पकडवा यत्न कर्योछे एम लोकमां वात संजळायछे. आ वातनी सागरदत्तने खबर पडतां तेणे तेमने भोंयरामां संताड्या.२०४—२०५ एम तेणे बे जणने छुपावीराख्या बाद रात पडी एटले काजळ अ-

दिसाउ तिमिरेण, आपूरियाउ कज्जल कोइलकुलनीलवणेण. ॥ १७६ ॥ जणिओ य सेट्ठिपुत्तो—कुमरेण जहा तहा कुणसु अम्हं, जह एत्तो निग्गमणं—सिज्झइ लहुमेव एवं च.—॥ १७७ ॥ सोऊण सेट्ठिपुत्तो—सागरदत्तो विणिग्गओ नयरा, तस्सहिओ भूजागं—तिणिवि थेवं गया जाव. ॥ १७८ ॥ सागरदत्तं कहकहवि—उविय ते दोवि गंतु मारद्धा, तीए च्चिय नयरीए—बाहिं जक्खालयसमीवे.—॥ १७९ ॥ घणपायवंतरालट्ठियाइ एयाइ तरुणमहिलाए, णाणाविहपहरणजरियरहवरासन्नपत्ताए. —॥ १९० ॥ दट्ठुं सायर मब्भुट्ठिऊण तणियं चिराउ किं तुब्भे, एत्था गया तओ तं—निसुणेत्ता जणिय मेएहिं. ॥ १९१ ॥ जद्दे के अम्हे सावि—जणइ किल वंजदत्तवरधणुणो, कह मेय पुवगयं ते—सुम्मइ ता तीइ पब्जिणियं. ॥ १९२ ॥ एत्थेव

ने कोगलागिना काला अंधकारथी दिशाओ जराइगइ.१७६ त्यारे कुमारे शेठना पुत्रने कह्युं के अहींथी झट नीकळी जइये तेम करो. ते सांभळी सागरदत्त तेमने लइ नगरथी नीकळी पड्यो ते त्रणे जण थोडाक छेटा लगण साथे चालता रह्या-१७७—१७८ बाद सागरदत्तने समजावी पताची पाछुं वाळीने ते बे जण रवाना थया, तेवामां तेज नगरीना बाहेर रहेला यक्षना मंदिरपासे अनेक प्रकारना हथियारोथी भरेला रथपर चडी नजीक आवेली अने गीच झाडीना वच्चे रहेली एक जुवान स्त्री—१७९—१९० ते तेमने जोइ ऊठीऊभी थइ कहेवा लागी के तमे इहां मोडा केम आव्या. ते सांभळी तेमणे कह्युं के—१९१ हे भद्रे, अमे कोण छीये ? ते बोली के ब्रह्मदत्त अने वरधनु. तेमणे पूछ्युं के ते तने केम मालम पड्युं ? ते बोली के सांभळो. १९२ आ ज नगरमां धनप्रवर नामे शेठ छे, तेनी धनसंचया नामे भार्याछे. ते-

पुरे सेट्ठी—धणपवरा नाम जारिया तस्स, धणसंचयाजिहाणा—जाया कुब्बीइ तीइ अहं. ॥ २९३ अट्ठण्ह मुवरि पुत्ताण—पत्तजोव्वणजराइ नो कोवि, रुच्चइ वरो तयट्ठं—जक्खस्साराहणं विहियं. ॥ २९४ ॥ तेणय मह्जत्तिपरव्वसेण पम्मक्खएण हो-ऊणं, जणियं वच्छे जह तुह जविस्सई चक्कवट्टिपई. ॥ २९५ ॥ नामेण वंजदत्तो—मए कहं सो वियाणियव्वो त्ति, जणिय मणेण पयट्टे—कुक्कुमजुज्झंमि जो दि-ट्ठो. — ॥ २९६ ॥ बुद्धिल सायरदत्ताण — संतिए माणसंमि तुह रमिही, सो वंजदत्तनामा—तह कुक्कुमजुज्झकालाओ. — ॥ २९७ ॥ जं किंचि तुज्झ वित्तं—वरधणुणा संगयस्स तं कहियं, तह हारपेसणाइवि—किच्चं विहियं मए तुम्ह. ॥

नी कूखथी हुं जन्मी बु. २९३ हुं आठ पुत्रोना पछी जन्मीबु. अने यौवन पामतां मने कोइ वर पसंद पड्यो नहि. ते-थी तेना माटे मे यक्षनी आराधना करवा मांडी. २९३—२९४ मारी जक्तिथी खेंचाइने यक्ष प्रत्यक्ष थइ कहेवा लाग्यो के हे पुत्रि, तारो चक्रवर्ती पति थशे. २९५ तेनु ब्रह्मदत्त नाम छे- मे पूछ्युं के हु तेने केम ओळखीश? यक्ष बोल्यो के बुद्धिल अने सागरदत्तना कूकडाना युद्धमां जे तारा मनमां रुची रहेशे ते तारे ब्रह्मदत्त जाणवा. तेमज कूकडाना युद्ध पछी वरधनुसाथे रहेता तमारो जे वृत्तांत छे ते कहीसंजळाव्यो अने कह्युं के तमोने हार पण मेंज मोकलाव्यो हतो २९६—२९७—२९८ आ रीते वृत्तांत सांजळी कुमार विचारवा लाग्यो के मारा बचावमाटे पणी तत्पर लागे छे, नहिंतो हथियारसाथेनो रथ मने कां लावी आप? एम चिंतवी तेणीउपर पूरो

२९८ ॥ इय निसुणियवुत्तंतो—मह रुखाए कयादरा एसा, कह मन्नहा रहवरो—त्पयहरणा मज्झ जवाणीओ. ॥ २९९ ॥ इह परिभाविय तीए—दूरं पत्तो रहं तमारूढो, ताया जह रयणवई—एसा पुट्ठा कओ हुत्तं ॥ ३०० ॥ गंतव्व मिमीए जाणिय मत्थि मगहापुरंमि मह पिउणो, ताया धणाभिहाणो—कणिट्ठगो सेट्ठिपयपत्तो. ॥ ३०१ ॥ विन्नायवइयरो सो—तुम्हं मज्झय परंमि संतोसे, वट्टंतो गउरव मायरेण परमं विहे-हि त्ति. ॥ ३०२ ता तत्थ गमो कीरउ—तदुत्तरं तुम्ह रुचए जं तं, कुणसु त्ति पय-ट्टो तस्स—संमुहो गंतु मह कुमरो. ॥ ३०३ विहिओ सारहिभावो—वरधणुणा तो कमेण गच्छंतो, कोसंबिजणवयाओ—विणिग्गओ णेगदुग्गाओ. ॥ ३०४ ॥ पत्तो गि-रिगहणंतर—भंग तरुसिहररहरियसूरकरं, कंटयसुकंटया नाम—तत्थ चोराण महिव-

अनुरक्त थइने रथपर कुमार चड्यो अने जाणी के आ रत्नवती छे. तेथी मेणे पूछ्युं के हवे आपणे क्यां चालशुं ? २९९—३०० ते बोली के मगधपुरमां मारा बापना धन नामे नाना भाइ शेठनुं पद पामेल छे' ३०१ ते तमारो अने मारो अधिकार जाणीने परम संतोषथी आदरसाथे आपणुं गौरव करशे. ३०२ माटे ते तरफ चालो, त्यारबाद तमने रुचे तेम करजो. त्यारे कुमार ते तरफ चालवा लाग्यो. ३०३ वरधनु सारथि बन्यो. पछी तेओ चालता अनुक्रमे अनेकदुर्गवाळा कोशांबीदेशथी आगळ वध्या ३०४ तेओ झाडोनी घटाथी सूर्यना किरणोने रोकनार एवा एक पहाडी वनमां आव्या. त्यां कंटक सुकंटक नामना बे चोरलोकोना सरदार रहेता. ३०५ ते चोरो जयकादार रथ अने सणगारेली सुंदर स्त्रीने

मिमीए रसो–इमंमि बहुसावयाइसे. ॥ ३१८ ॥ कह मंसपेसिसरिसं–बहुसामसं विमुत्तु जियनाह, इछसि ममं तुमं. तह–नियरूं म्मिय वट्टए वसिमं. ॥ ३२० ॥ जेण कुसकंटयाई–जणचलणविलोलिया इह पएसे, दीसंति तत्थ गम्मउ–तत्तो जुत्तं करेज्ज तुमं. ॥ ३२१ ॥ तत्तो लग्गो गंतुं–मगहाभिमुहं ठियंमि संधीए, विसयस्स गओ गाये– एक्कंमि स, भाविएण तहिं.–॥ ३२२ ॥ गामपहुणा विलोइय–रूवं तस्स परिभावियं मणसा, एस महप्पा दिव्वस–वसगओ कोवि एगागी. ॥ ३२३ पडिवत्तो बहुगउर– माणीओ नियघरे सुहासणो, पुट्ठो जहा महाभाग–-किं समुव्विगचित्तो सि. ॥३२४॥ परिफुसिय नयण सलिलो–-सो भणइ महं सहोयरो लहुओ, चोरेहिं समं भंमण–– माढत्तो काउ मह तत्थ. ॥ ३२५ ॥ पत्तो कि मवत्थंतर–मेत्ता तस्सा गवेसणं काउं,

ए। उतावराथी करेला आ अरण्यमां हे प्राणनाथ, तमे मारुनी पेशी माफक बहुसामान्य मुज अबलाने मेलीजवा केम इ- च्छोछो. अनेवळी वसति वणी नजीकमांज होवी जोइए. ३१८—३१९—३२० जेमाटे आ जगोए दर्भना कांटा मा- णसोना पगोथी देखायछे. माटे त्यां चालो. पछी जे युक्त होय ते तमे करजो. ३२१ त्यारे ते मगधापुरी तरफ चालतां दे- शनी सीमापर रहेला एक गाममां गयो त्यां भलास्वभाववाळा गामधणीए तेनुं रूप जोइ मनमां विचार्युं के आ कोइ दैवने वश पडेलो महापुरुष लागेछे. ३२२—३२३ ते तेने भारे मानपूर्वक पोताने घेर तेडीगयो. त्यां सुखासनपर कुमारने बेसारी पुछवा लाग्यो के हे महाभाग, तमे उदास केम देखाओछो ? ३२४ त्यारे कुमार आंखोना आंसु लुछी बोल्यो के मारो नानो भाइ चोरोनी साथे भमवा लाग्यो हतो. ३२५ ते केवी अवस्था पाम्योछे तेनी शोध करवा मारे जवुंछे. त्यारे गा-

गेनत्थ मत्थि भणियं—तेण तओ गामपहुणे वं. ॥ ३२६ ॥ मा एत्थ कुणसु खेयं—जइ वणगहणे इमंमि सो होही, तं लहिहि धुवं जम्हा—एसा अडवी वसे मज्झ. ॥ ३२७ ॥ तो पेसिया नियनरा—सव्वत्तो आगएहि तेहि इमं, सिटुं जहा न अम्हे- हि—कोइ आलोइओ तत्थ. ॥ ३२८ ॥ केवल मेस कुणंतो—महीयले पाविओ पह- रिऊण, सुहडस्स कस्सइ तणुं—जमजिहासन्निभो बाणो. ॥ ३२९ ॥ तव्वयणायण्ण- जायतिव्वखेओ स सोइउं सुचिरं, कहकहवि दिवससेसं—गमेइ रयणीइ पत्ताए. ॥ ३३० सुत्तो रयणवईए—सम मेसो एक्कजाममित्ताए, रयणीइ तत्थ धाडी—पडिया चोराण कुमरेण.—॥ ३३१ ॥ दूरायड्ढियधणुणा—सरेहि कडुयाविया दढं भग्गा, चोरा पयंडपव- णेण—धूणिया जह घणा गयणे. ॥ ३३२ ॥ गामपहुणा सगामेण—दूर मभिणंदिओ पणयसारं, को नाम तुह सरिच्छो—जयलच्छीमंदिरं पुरिसो. ॥ ३३३ ॥ पत्ते पभाय स-

णगी आ रीते बोल्यो. ३२६ ए बाबत खेद म करो. जो आ वनमां ते हशे तो नक्की ते मळी आवशे, केमके आ अट वी मारा कबजामां छे. ३२७ बाद तेणे चोमेर पोताना माणसो मोकल्या. तेमणे आवीने एम कह्युं के अमे त्यां कोइ- ने जोयो नथी. ३२८ बाकी फकत कोइ सुभटना शरीरने लागीने जमीनपर पडेलो यमनी जीभजेवो आ बाण मळीआ- व्योछे. ३२९ ते वचन सांभळी कुमार भारे खेद पामी घणो वखत शोक करी जेमतेम बाकीनो दिवस पसार करवा लाग्यो. हवे रात पडी. ३३० ते रत्नवतीना साथे सूतो. एवामां एक पहोर रात्रि जतां चोरोनी त्यां धाड पडी. एटले कुमारे ध- नुष्य तेंनी तेमने एवा सख्त बाणो मार्या के तेओ आकरापवनथी आकाशमां जेम वादळा नाशे तेम नाशी गया. ३३१— ३३२ त्यारे गामसहित गामधणी तेने वखाणवा लाग्यो के तमारा जेवो जयशाळी पुरुष कोण छे? ३३३ बाद प्रभात थतां

मए---गामपहुं पुछिऊण परिचलिओ, रायगिहसंमुहं तस्सुएण सहिओ गओ वाहिं. ॥ ३३४ ॥ एगंमि तत्थ परिवायगाण निलए ठवित्तु रयणवइं, नयरब्जंतरदेसं---पविट्ठो दिट्ठ मेगं च. —॥ ३३५॥ अइभूरिखंजसयसन्निविट्ठ मविणट्ठचित्तकम्मजुयं, धवलहर मेग मुत्तुंगसिग सोहंतऊयमालं. ॥ ३३६ ॥ आजोइयाउ नियरूवविजियसुरमहिलिया विसालाओ, दो तत्थ सुंदरीओ—दट्ठुण कुमार मेयाहिं.— ॥ ३३७ ॥ जणियं किं तुम्हाणं—सहावओ परुवयारकारीणं, जत्त मणुरत्त मुज्झिय जणं समुचियं परिजयेउं. ॥ ३३८ ॥ जणिय मिमिणा जणो को—सो जो चत्तो मए जणह तुब्जे, कीरउ आसणगहणं—पसाय मम्हासु काऊण. ॥ ३३९ ॥ इय विसुत्तेण कयं—आसणगहणं कओ य उवयारो, सायर माहारपयाण—माइओ तदवसाणंमि.

कुमार गामधणीनी रजा लइ तेना छोकरा साथे राजगृह सामे चाल्यो. ३३४ त्यां नगरनी बाहेर एक परिव्राजकोना आश्रममां रत्नवतीने मेलीने कुमार नगरनी अंदर पेठो. त्यां तेणे एक महेल जोयो. ३३५ ते महेल सेकडो स्तंजवालो, ताजा रहेला चित्र कर्मथी युक्त, अने उंचा शीखरपर फरकती धजाओथी शोजतो हतो. ३३६ त्यां पोतानारूपथी अप्सराओने जीतनार विशाळ आंखोवाळी बे स्त्रीओ तेणे जोइ. तेमणे कुमारने जोइ कह्युं के, तमारा जेवा स्वजावथी परोपकारी पुरुषने अनुरक्त जक्तजनने मेलीने जटकता रहेवुं ए शुं उचित छे? ३३७—३३८ कुमारे कह्युं के में कया जनने मेली दीधुं छे ते तमे बतावो. तेओ बोली के त्यारे अमारा पर महेरबानी करी आसनपर बेशो. ३३९ आ रीते बोलवाथी कुमार आसनपर बेठो. बाद तेमणे आदरथी आहार वगेरेथी तेनी स्वागत करी. ३४० तेओ बोली

॥ ३४० ॥ जगिजं ताउ पवत्ताउ—अत्थि इत्थेव जरहवासंमि, वेयड्ढो नामगिरि-
झरंननइनिज्झरजलोहो. ॥ ३४१ ॥ निय आयमगुणाओ—पुव्वावरजलहिरुद्धमहिमि-
माणे, जो माणदंमव्वीअं—विलंघए खलियसूरपहो. ॥ ३४२ ॥ णाणामणिणियरपहा-
पक्करपरिज्झिज्जमाणतिमिरत्थरे, जत्थ न सूरो चंदो व्व किंचि परतागमुवलज्झइ. ॥
३४३ ॥ तलवाहिगंगसिंधूपवाहरेहंतपरिसरद्देसो, गाणट्ठाणविलोइज्जमाणमाणोसहिस-
मूहो. ॥ ३४४ ॥ विज्जाहरेहि कीलापरेहि निव्वुइमणे हि सव्वत्तो, परिभुज्जमाणदेसो
—ढीसंनज्जेरयसहस्सो. ॥ ३४५ ॥ जो मणि जासुरकूडो—उच्चसिलो सहइ अंबरत-
लाओ, विज्जुज्जुओ व्व पमिओ—घणनिवहो सोहाघट्टणओ. ॥ ३४६ ॥ अच्चं
तुच्चासु च मेहलासु सोहंति जत्थ ताराओ, पेरंतचरंतीओ—फलिहमणिकिंकिणिउ

के आज जरतक्षेत्रमां वैताढ्यनाम पर्वत छे के जेमांथी अनेक नीझरणाना पाणी झरेछे. ३४१ ते पूर्वो-
त्तांश छे के पूर्व पश्चिम रहेला दरियाना वचे आवेली जमीन मापवामां ते मानदंड तरीके रहेलो छे, अने ऊंचाइमां सू-
र्यना मार्गने अटकावे छे. ३४२ ज्यां अनेक मणिओनी प्रजाना अजवाळाथी अंधारी हठेले एटले सूर्य चंद्र जराए त्यां
शोजता नथी. ३४३ तेनी आजुबाजुनो प्रदेश नीचे वहेता गंगा अने सिंधुना प्रवाहथी शोजेछे. अने त्यां ठेरठेर अनेक
औषधिओ मळी आवेछे. ३४४ तेमां सघळी तरफ शांत मनथी क्रीडा करता विद्याधरो तेनो अमुक जाग वापरे छे, अने
तेमां हजारो आश्रम रहेला छे. ३४५ जेना शिखरो मणिओथी झळकेछे, अने ज्यां ऊंची ऊंची शिलाओ पमेली छे
तेथी जाणे आकाशथी एकबीजामां अथडीने वीजळी साथे नीचे पमेला वादळ होय तेम ते देखाय छे ३४६ जेनी अति

व्व. ॥ ३४७ ॥ जत्थय विज्जाहरकामिणीण मुहमंमणे पसत्ताण, निसि सिहरगयाण ससी–मणिदप्पणच्चीव मुव्वहइ. ॥ ३४८ ॥ तह जत्थ महोसहिगंधरुद्धवीरियफणिंदवं-देसु, चंदणवणेसु निव्वयमणाइं कीलंति मिहुणाइं. ॥ ३४९ ॥ णियमाहप्पोणामिय समत्थसामत्तमत्थयमणीण, वहलकरजालसलिलेण निच्चसिच्चंतकमकमलो ॥ ३५० ॥ जो तत्थ दाहिणाए–सेढीइ सुदिट्ठगामनगाराए, सिवमंदिरे पुरे अत्थि–पत्थिवो जलण-णसिहिनामो. ॥ ३५१ ॥ जोण्ह व्व सिसिरकिरणस्स–तस्स सोहग्गसंपयनिहाणं, विज्जुसिहा नाम पिया–अम्हे तस्से सुया दोवि. ॥३५२॥ अम्हाण नट्ठमत्तो–जेट्ठो जाया अहणाया जणगो, अग्गिसिहिमित्तसहिओ–अत्थइ गोट्ठीइ जा ताव.– ॥३५३

ऊंची मेखलाओमां ताराओ जाणे तेना छेडे चालतो स्फटिकमणिनी किंकिणीओ जेवी लागेछे. ३४७ ज्यां विद्याधरीओ राते वरनी टोंचे रही पोताना मुखने शणगारतां चंद्र तेमनो आरीसो थइ पडेछे. ३४८ ज्यां महौषधिओनी गंधथी नरमा पडेला सर्पोवाला चंदनना वनमां विद्याधरोना जोडला निर्भय मन राखी रमण करे छे. ३४९ तथा जेना क्रमकमल (तळेटी) पोताना माहात्म्यथी समस्त सामंतोना मस्तकने नमावती मणिओना धारा किरणरूप जळथी हमेश सींचायला रहेछे. ३५० ते पर्वतनी रम्यदेखाता गामनगरवाळी दक्षिणश्रेणिमां शिवमंदिर नगरमां ज्वलनशिखी नामे राजा छे. ३५१ तेनी चंद्रनी कौमुदी जेवी सौभाग्यसंपदानी खाण विद्युतशिखा नामे राणी छे अने अमे बे तेनी पुत्रीओ छीये.३५२ नाश्यमंत अमारो मोटो भाइ थाय. हवे एकवेळा अमारो पिता अग्निशिखी पोताना मित्रो साथे गोष्टीमां बेठो हतो, तेवामां तेणे अष्टापदउपर जिनप्रतिमाओने वांदवा जता मोटा परिवारवाळा देवदानवोने जोया. ३५३—३५४ ते जोइ राजानी

पेच्छइ गयणे अट्ठावयंमि जिणबिंबवंदणनिमित्तं, देवासुरसंदोहं—गच्छंत मतुच्छविच्छड्डं. ॥ ३५४ ॥ तं दट्ठुण पवड्डियसड्ढो राया समं मिय पवत्तो, मित्तेहिं अम्हेहि य—कमेण पत्तो य तत्थ नगे ॥ ३५५ ॥ गंधुप्फुरेहिं बंधुरबंधेहि मिळंतभमरभमालेहिं, मंदारपारिजायाइ नियसतरुकुसुमनियरेहिं.—॥ ३५६ ॥ परिपूइय जयवंते—कप्पूरागुरुसुगंधधूवं च, उग्गाहिऊण थुणिऊण निग्गओ चेइयहराओ. ॥ ३५७ ॥ निग्गच्छंतेण पलोइयं च पच्चक्खपसमपुंजसयं, हेट्ठा असोयसालस्स—संनिविट्ठं पणट्ठमयं.— ॥ ३५८ ॥ चारणमुणिजुयलं पणमिऊण भत्तीइ संनिविट्ठो सो, नीरभरभरियजलहरगहिराए भारईइ तओ. — ॥ ३५९ ॥ पारद्धा धम्मकहा—एगेणं तेसि समणसीहेण, तेसिं सुराण असुराण खेयराणं च जह एत्थ. ॥ ३६० ॥ कदलीदलं व पेलव—

अच्छा पण त्यां एटले ते मित्रो अने अमोने साथे तेणे अनुक्रमे ते पर्वतपर आव्यो. ३५५ बाद सुगंधि बहोवर गोठवेला. नमरायी वेरायला, मंदारपारिजातवगेरे देवतरुना फूलोयी नगवानोने पूजी कपूरअगरनोसुगंधी धूप दइ स्तुति करी ते चैत्यमंदिरयी बाहर नीकळतो ३५६—३५७ बाहेरमां तेणे अशोकतरुना नीचे बेठेला मदरहित अने प्रत्यक्ष प्रशमगुणना पुंजसमान बे चारण मुनि जोया. तेमने नक्तिपूर्वक नमीने राजा त्यां बेठो. तेवामां सजळ मेघना जेवी गंनीरवाणीथी—तेमांना एक मुनीश्वरे ते सुर—असुरअने विद्याधरोनी आगळ धर्मकथा करवी शरु करी. ३५८—३५९—३६० आ शरीर केळना गर्जनी माफक कोमळ अने अनेकरोगतुं घर छे. विषयोना सुख वीजळीना झबकानी माफक क्षण नंगुर छे. ३६१ आ जगतमां जीवोनुं आयुष्य शरदऋतुना मेघाडंबरजेवुं छे. व्हाला साथेनी प्रीति ए किंपाकना फळ मा-

मिमं कलेवर मणेगरोयगिहं, तमिदंडाभंवरभंगुराइं ही विसयसोक्खाइं. ॥ ३६१ ॥ सरयसमुब्भवबहलब्भतमं जीवियं जियाण जए, किंपागफलं व विवागदारुणा वल्लहसिणेहा. ॥ ३६२ ॥ उव्वणपवणाओलिय कुसदललवजलचलाउ लच्छीओ, अनिमित्तमेव डुक्खं—पइक्खणं पेक्खइ जणो य. ॥ ३६३ ॥ सयलपुरिसत्थकारण—मइडुलहो माणुसो भवो एसो, निच्चं पच्चासन्नो—परिसक्कइ सव्वओ मच्चू. ॥ ३६४ ॥ संसारपरिच्चायं—काउमणेहि कुसलेहि जिणभणिओ, सव्वायरेण धम्मो—परिसुद्धो सेवणिज्जो त्ति. ॥ ३६५ ॥ इय सुयमुणिंदवयणा—उवलद्धविसुद्धबोहिणो संता, जे आगया जउच्चिय तत्तो च्चिय ते नियत्त त्ति. ॥ ३६६ ॥ अग्गिसिहिणा वयंसेण मम्ह जणगस्स अवसरं लध्धुं, परिपुच्छियं जहा को—भत्ता एयाण बालाणं. —॥ ३६७ ॥ भयवं हो हि, भणियं च—तेण एयाउ भायवहगस्स; भज्जा होहिंति निसामिउण कसिणाणणो राया.—॥ ३६८ ॥ एत्था वसरे वुत्तो—अम्हेहिं ताय एस सं-

फक परिणामे भयंकर छे. ३६२ तोफानी पवनथी मोलती दर्भनी अणीपर रहेला पाणीना बिंदुनी माफक लक्ष्मी चंचळ छे. अने लोको ओचिंतीरीते दरेकपळे दुःखमां जइ पडे छे. ३६३ वळी सघळा पुरुषार्थनो साधक आ मनुष्यनो भव अतिदुर्लभ छे अने मृत्यु हमेश नजीकमां भमेछे ३६४ माटे संसार छोडवा इच्छनार चतुरजनोए पूरता आदरथी जिनभाषित परिशुद्ध धर्म सेववो जोइए. ३६५ ए रीते मुनींद्रना वचन सांभळी निर्मळ सम्यक्त्व पामी जे ज्यांथी आव्या हता ते त्यां चाल्या गया. ३६६ हवे अमारा पिताना मित्र अग्निशिखे अवसर पामी पूछयुं के, हे भगवन् ! आ बाळाओनो भर्त्ता कोण थशे ? मुनिए कह्युं के, एओ एमना भाइने मारनारनी भार्याओ थशे. ते सांभळी राजा

सारो, एयारिसो इहम्मिय—कहिओ अम्ह मित्थ विसएहिं—॥ ३६९ ॥ दारुणपरिणामेहिं—ताएणं भणियं इमं सव्वं, भाउगवच्छलयाए—विमुक्कनियदेहसोक्खाओ. ॥ ३७० ॥ तस्सेव भोयणाई—विचिंतयंतीउ जाव चिट्ठामो, ता वणदिणे पुहविं—गामागरसंकुलं तेण, ॥ ३७१ दिट्ठा भमंतएणं—अम्हाणं भाउगेण पुप्फवई, तुह माउलस्स धूया—कन्ना ता रूवखित्तमणो. ॥ ३७२ ॥ हरिऊण मागओ तीइ दिट्ठिं असहंतओ गओ विज्जं, साहेउं वंसकुडंगयंमि जं पुण इओ उवरिं. —॥ ३७३ ॥ तं भवओ नायं चिय—तुम्ह सयासाउ तंमि कालंमि, आगम्म सामपुव्वं—पुप्फवईए इमं भणियं. ॥ ३७४ ॥ पंचालसामिपुत्तं—पई पवज्जेह तुम्ह जो भाया, सो अक्षियखग्गव्वावारणेण इमिणा खयं नीओ. ॥ ३७५ ॥ ता सोयनिब्भराओ—वहिरीकयअ-

कंदंताणं पमीणयो. ३६७—३६८ ए रीते अम्हे कह्युं के, हे तात! आ संसार एवोज छे माटे एनी भयंकर परिणामवाळी मोहमया गोमटी सारी छे—ए बधी वात पिताए कहेला राखी. अने अमो भाइनी प्रीतिना जोरे पोताना शरीरना सुखनो त्याग करीने रहेवा लागी. ३६९—३७० अमो तेना माटे भोजनादिकनी संभाळ लेती रहेती हती. एवामां एकवेळा गामनगरथी भरपूर पृथ्वीपर फरता अमारा ते भाइए तारा मामानी पुत्री पुष्पवती कन्याने जोइ. तेना रूपथी तेनुं मन खेंचायुं. ३७१—३७२ तथी ते तेने हरी लाव्यो, पण तेनी नजरने नहि सहीशकतो थको ते विद्या साधवा वांसना कुंजमां पेठो. त्यारबादनी हकीकत तो तमने मालमज छे. हवे ते वखते तारी पासेथी अमारी पासे आवी पुष्पवतीए मीठा वचनोथी अमने आ रीते कह्युं. ३७३—३७४ तमो आ पंचालदेशना राजाना कुमारने पति तरीके स्वीकारो. तेणे तमारा भाइने तरवार अजमावतां भूलथी मारेलो छे. ३७५ त्यारे शोकना

म्मि अंतरालाओ, जा रोविउं पवत्ताउ—ताव अइनिउणवयणेहिं.—॥ ३७६ ॥ पुप्फवए संबोहियाउ तह नट्टुमंतवयणाओ, विन्नायवइयराओ—जत्ता एयासि वंभसुओ. —॥ ३७७ ॥ होहि त्ति तहा जणियं—न विगप्पो एत्थ कोवि कायव्वो, सुमरिज्जउ मुणिवयणं—मन्निज्जउ वंभदत्तपई. ॥ ३७८ ॥ तव्वयणायण्णणओ—मसिय मम्हाहि साणुरायाहिं, तो रहसपरवसाए—तीए चलिया सियपडागा. ॥३७९॥ तो रत्तासंकेए—विवरीयत्ताए मुवागए संते, अण्णत्थ कत्थइ तुमं—पउत्थ मन्नेसमाणीओ. ॥ ३८० ॥ भूमीमंडल माहिंडमाणिगाओ वियाउ नय दिट्ठो, कत्थइ तुमं विसण्णाउ—एत्थ अम्हे समायाओ. ॥ ३८१ ॥ अवियक्कियजच्चसुवन्नवुट्ठिविब्भमसमचिंतणिज्ज मओ, जायं तुज्झ निहालण—मज्झ म्हाणं सुहनिहाणं. ॥ ३८२ ॥ ता पत्थियकप्पद्दु-

जोरथी अटवीना अंतकाळने वेहेरुं करती अमे रोवा लागी. एवामां अति शाणपणना वचनोथी पुष्पवतीए अमने समजावी, तेमज नाट्यगित्रना मुखे तेणे अमारो व्यतिकर जाणेलो हतो के, एमनो पति ब्रह्मदत्त थशे. तेथी तेणीए कह्युं के, आ वातमां कांइ विकल्प करो नहि, अने मुनिनुं वचन संभारी ब्रह्मदत्तने पति करो. ३७६-३७७ ३७८ ते वचन सांभळी अमे अनुरागवाळी थइने ते वात मान्य करी. त्यारे तेणीए हर्षवेगी बनीने उतावळमां धोळी धजा फरकावी. ३७९ तेथी रातीनो संकेत फरी जवाथी तमे त्यांथी बीजा स्थळे जता रह्या; तेथी अमे तमने शोधती फरी. ३८० अमे भूमंडळपर फरती रही, छतां तमे क्यांय देखाया नहि. एटले दिलगीर थइ इहां आवी. ३८१ माटे आ अजाणी जातीला सुवर्णनी वृष्टि थइ के, अणचिंतव्युं अमोने तमारुं सुखकारक दर्शन थयुं. ३८२ तेथी मागेलुं पूरवा कल्पवृक्ष समान हे महा भाग ! तमे पुष्पवतीनो व्यतिकर याद करीने अमारुं इच्छित पूरुं करो. ३८३ त्यारे हर्षमां

म—तुमं महाभाग सुमरिऊण तहा ; पुप्फवईए वइयर—मायरसु समीहियं अम्ह. ॥ ३०३ ॥ तो रहसपरवसमणो—ताओ वीवाहिऊण उज्जाणे, रत्तीए ताहि समं—वुत्थो. पत्ते विभायंमि— ॥ ३०४ ॥ वुत्ताउ जह समीवे—पुप्फवईए विणीयरूवाहिं, ता गायव्वं जा अम्ह—रज्जलाभो वियंभेइ. ॥ ३०५ ॥ इय काहामु त्ति पयंपिऊण तासुं गयासु पासाई; जाव पलोयइ नो किंचि ताव तं धवलहरमाई — ॥ ३०६ ॥ पासइ, चिंतिय मेगं णूणं माया इमा कया सव्वा, विज्जाहरीहि कह मण्णहा इमं इंदयालसमं—॥ ३०७ ॥ जायं विल्लसिय मह सुमरिऊण रयणवईए संचलिओ, असमागय आसमसंमुह मालोयए न तयं. ॥ ३०८ ॥ कं पुच्छामि पउत्तिं—एवं चिंतिय पलोइयाउ दिसा, नय कोई सम्मविओ—ठिओ सरंती तयं चेव. ॥ ३०९ ॥ खणमे-

त्यारबाद कुमार तेमने परणी उद्यानमां रात्रे तेमनी साथे रह्यो. प्रभात थतां तेणे तेमने कह्युं के ज्यां लगी पछे नगर मळे त्यां लगण तमे चित्रवाळी बनी पुष्पवतीपासे जइ रहो. ३०४—३०५ ठीक छे, एम ज करीशुं एम कही तेओ स्थाने थइ एटले कुमार आजुबाजु जोवा लाग्यो तो महेलवगेरे कंइ देखायुं नहि. एटले कुमारे विचार्युं के ए विद्याधरीओए आ सघळी माया करेली लागे छे. नहितो आ इंद्रजाळजेवुं केम बने ३०६—३०७ हवे रत्नवतीने याद करी तेने शोधवा आश्रम तरफ चाल्यो तो ते पण न देखायो. ३०८ तेणे विचार्युं के आ हकीकत केम थइ? एम चितवी चारेबाजु नजर करी तो कोइ जवाब देनार जड्यो नहि एटले तेने संभारतोज ते ऊभो रह्यो. ३०९ एटलामां क्षणमात्र पसार थतां एक सुंदरआकारवाळो अने पाकी वयवाळो पुरुष त्यां आवी पहोंच्यो त्यारे कुमार तेने

ताओ एगो–कल्लाणाकारओ परिणओ य, पत्तो पुरिसो परिपुट्ठिओ य जो जो महाभाय ॥३९०॥एवंविहनेवत्था–कत्थ वा अज्जवा न दिट्ठ त्ति? बाला काइ भमंती–इमाइ अडवी-इ मज्झंसि. ॥ ३९१ ॥ तेणुत्तं भत्तारो–किं पुत्तय तीइ होसी, आमं ति, भणिए कु-मरेण भणाइ——सा मए जइ रोयंती,——॥ ३९२ दिट्ठा वरणहसमये–कासि तुमं पु-त्तिया कुओ चेह, किं कारणं इमस्सा, सोयस्स कहिंमि गंतव्वं?॥३९३॥कहिय मिमीए गग्गरगिराइ किंची वियाणिया ताहे, भणिया जण ममच्चिय——तं पुत्ति उहित्तिया होसि. ॥ ३९४ ॥ तीएच्चिय चुल्लपिउस्स साहियं सायरं च सगिहंमि, नीया तेण तु-मं मिय——गवेसिओ नउण दिट्ठोसि. ॥ ३९५ ॥ ता सुंदर मिहजायं——जं मिलि-ओ संपयं ति भणिऊण, सो सत्थवाहगहं——नीओ विहिओ य वीवाहो. ॥ ३९६ ॥

पूछवा लाग्यो के हे महाभाग, ३९० तमे आज के काले आवा दरवेशवाळी कोइ स्त्री आ अटवीमां भमती जोइ छे ? ३९१ ते बोल्यो के पुत्र, शुं तुं तेनो भर्त्ता छे ? कुमारे कह्युं हा. त्यारे ते बोल्यो के हे भद्र, मे तेने रोती थकी वरांगना नजीक जोइ. पछी में पूछयुं के तुं कोण छे ? क्यांथी आवेली छे ? शा माटे आम शोक करे छे ? अने क्यां तारे जवुं छे ? ३९२ ३९३ त्यारे तेणीए तोतला अवाजे कांइक कह्युं, तेथी मे कांइक तेने ओळखी. एटले मे तेने कह्युं के हे पुत्रि, तुं मारीज दोहित्री थाय छे, ३९४ बाद तेणीना काकाने मे ते वात कही. तेथी ते आदरपूर्वक तेने पोताने घेर तेडी लाव्यो अने तारी पण तपास करी, पण तुं त्यां देखायो नहि. ३९५ माटे सारुं थयुं के हमणा तुं मळ्यो, एम कही कुमारने ते सार्थवाहना घेर तेडी गया. त्यां कुमार रत्नवतीने परण्यो. ३९६ हवे रत्नवतीना सोबतमां लागेलु थइ कुमार त्यां केटलाक

यणावइए, तस्संगगाओ जा गमइ दिवसाइं, ता वरधणुमरणदिणो—समागओ कप्पियं जोजं. ॥ ३९७ ॥ जुंजंति बंभणाई—बंभणनेवत्थधारगो ताहे, तत्थागओ वरधणु— जोयणकज्जेण जणियं च. ॥ ३९८ ॥ जो जो साहिज्जइ जोज्जकारिणो इत्थंगओ एगो, चउवेओ चूडारयणसन्निभो सयलविप्पाण. —॥ ३९९ मग्गइ जो-यणं सुयरंमि जस्स जत्तं कहिंचि संपत्तं, उवणमइ जवंतरवत्तिणोवि तुम्हाण पियरस्स. ॥ ४०० ॥ सिट्ठं कुमरस्स तयं—जोयणविणिउत्तएहिं पुरिसेहिं, बाहिं विणिग्गओ जा—ता उसरो वरधणुं नियइ. ॥ ४०१ ॥ किंचि रसंतर मपुव्वमेव सव्वंग पुव्वहं-तेण, आलिंगिओ पविट्ठो य मंदिरे मज्जिओ संतो. ॥ ४०२ ॥ कयजोयणकरणिज्जोय—पुच्छिओ तेण जह वयंस तुहं, वोलीणो कत्थ इमो—कियस्स कालो, जणइ ताहे. ॥ ४०३ ॥ गहणंमि तंमि रयणीइ—तीइ तुम्हाण सुहपसुत्ताण, एगेण पिट्ठओ धा-

डिने पगार करवा वाग्यो, तेवामां वरधनुना मरणनोदिवस आव्यो, एटले तेनामाटे जोजन कराव्युं. ३९७ ते जोजन ब्राह्मणोने खावा लाग्या एवामां ब्राह्मणनो वेश धरी वरधनु त्यां जोजन करवा आवीचड्यो. तेणे कह्युं के—३९८ हे लोगाओ. तमो जमाडनारने कहो के दूरदेशथी एक चतुर्वेदी अने बधा ब्राह्मणोनो मुगटमणि आवेलो छे. त्यानुं मागेछे. तेना पेटमां जो कोइ रीते जोजन जायछे तो ते तमारा जवांतर रहेला पितृओने पण पहोंचेछे. ३९९-४०० जोजन पीरसनाराओए ते वात कुमारने कही एटले कुमारे बाहेरआवीना वरधनुने जोयो. ४०१ त्यारे कुमार कंइ अपूर्वरस पामीने तेने गळेवळगी लइ लेख्यो. बाद तेने मंदिरमां तेडी नवराव्यो. ४०२ ते जमी रह्याबाद कुमारे तेने पूछ्युं के हे मित्र, तुं आटलो वखत क्यां गयो हतो त्यारे ते बोल्यो ४०३ वनमां ते रात्रे तमे सुखेसूता हता तेवामां एक चोरे पाछळथी दोडी वांसना गीच कुंजमां

विऊण निविम्मे कुडंगंमि.—॥ ४०४ ॥ चोरपुरिसेण मज्झ—बाणो गाढं निवेसिओ देहे, तग्घायवेयणाए—अमुणंतो महियले पडियो. ॥४०५ ॥ उवलद्धचेयणो ता—तुम्ह अवाए बहू निरिक्खंतो, गोवियनिययावत्थो—ठिओ तहिंचेव वणगहणे. ॥ ४०६ ॥ वोलीणंमि रक्खरे—त मंतराल मह पायचारेण, सणियं अवक्कमंतो—पत्तो गामंतरे तत्थ—॥ ४०७ ॥ जत्थ निसाइ निवसिया—तुब्भे, गामाहिवेण परिकहिओ, तुह वइयरो विचित्तोसहेहि मह रोहिओ य वणो. ॥ ४०८ ॥ तत्तो ठाणे ठाणे तुमं गवेसंतओ इहायाओ, जोयणववएसेण य—दिट्ठा तुब्भे मए इहइं. ॥ ४०९ ॥ चिट्ठंति जाव निव्वुयमित्ता विरहं खणंपि असहंता, ता वसया परोप्पर—मालावो एरिसो जाओ ॥४१०॥जह कालो केवइओ—गमियव्वो मुकपुरिसगारेहिं, किंचि इओ निग्गमणोवायं अणहं उवलहामो. ॥४११॥ ता महुमासो पत्तो—मम्महपहरिज्जमाणसयलजणो, आय-

रहीने मारा शरीरमां जोसथी बाण मार्यो. ते जखमनी वेदनाथी हुं बेभान थइ जमीनपर पडी गयो. ४०४—४०५ बाद मने चेतना आवतां तमोने घणी हरकतो थइ पडशे एम विचारतो हुं मारी अवस्था छुपावीने ते ज जंगलमां पडी रह्यो. ४०६-तमारोरथ त्यांथी पसार थइ जतां हुं पण चालो धीमे धीमे ते गाममां आव्यो के ज्यां तमे रात रह्या हता. त्यां गाम धणीए तमारी हकीकत कही,अने अनेक औषधोथी मारो जखम रूझव्यो.४०७-४०८ त्यांथी ठेरठेर तने शोधतो शोधतो हुं इहां आव्यो, अने जोजनना मिषे मे तमोने इहां जोया. ४०९ आ रीते भेगा थइ विरहने क्षणभर नहि सही शकता थका तेओ वसता हता, तेवामां तेमणे अरसपरस आ रीते वात चलावी ४१० आपणे अहीं निरुद्यमी थइने केटलो वखत गमाववो ? माटे अहींथी नीकळवानो कोइ सरस उपाय मेळववो. ४११ एवामां सघळाने काम जगाववार अने वसायला

द्दियनंदणपरिमिलेहिं मलयानिलेहिं सुहो. ॥ ४१२ ॥ तत्थ पवत्तासु पुरीजणाण णाणाविहासु कीलासु, धणवित्थरविणिंदियकुबेरनयरीविलासासु — ॥ ४१३ ॥ सुमहल्लकोउहल्ला—तेवि कुमारा गया पुरुज्जाणे, दिट्ठो तत्थ गइंदो—गीयज्झणिकरियदाणजलो. ॥ ४१४ ॥ भूमिनिवाडियमिंठो—निरंकुसो सव्वओ परिब्भमंतो; कयलीथंभसमाओ—जणकीलाओ विलोलंतो. ॥ ४१५ ॥ हल्लोहलए वट्टंतयंमि कुलबालिया भयव्वंता, गहिया एगा तेणं—करिणा करुणं विलवमाणी. ॥४१६ दिट्ठा सा तेण गइंदघोरकरगोचरा कुमारेण, उव्विल्लमाणकोमलबाहुमुणाला कमलिणि व्व. ॥ ४१७ ॥ विक्खुलंतकेसपासा—भयतरलनिक्खित्तसयलदिसिनयणा, नियरक्ख मपेच्छंती—सुमरियमरणंतकरणीया. ॥ ४१८ ॥ हा माइ माइ गहिया—रक्खसु करिरक्खसा इमं तुरियं,

नंदननी सुगंधवाळा मलयानिलथी सुख आपनार चैत्रमास आव्यो. ४१२ तेमां धनना विस्तारथी अलकापुरीनी मोकरी करनारी लोकोनी अनेक जातनी रमतो शरू थइ, एटले त्यारे कुतूहलवाळा ते बन्ने कुमारो नगरना उद्यानमां गया. त्यां तेमणे गीतनी ध्वनिथी दानजळने झरनारो एक हाथी जोयो. ४१३—४१४ ते हाथी मावतने जमीनपर पटकी निरंकुश थइ चारेतरफ रमतो थको केलना थंभा माफक लोकोनी रमतोने भांजवा लाग्यो. ४१५ ते गरबडमां ते हाथीए करुणविलाप करती अने भयभ्रांत बनेली एक कुळबालिका पकडी. ४१६ कुमारे जोयुं तो ते हाथीनी भयंकर सूंढमां तेनी कोमळ बाहुओ कमळिनी माफक धीमाती जोइ. ४१७ तेना केश छूटी गया हता, ते भयथी चारेतरफ नजर करती अने पोतानो कोइ बचाव नहि जोवाथी मरतीवेळानुं कर्त्तव्य संभारती हती. ४१८ हे मा मने हाथीरूप राक्षस पकडी जाय-

च्छइ—को एसो कस्स निवइणो पुत्तो, तत्तो तव्वइयरजाणगेण सचिवेण सो कहिओ ४३३ निहिलाभाओ समहिय—माणद मपुव्व मागओ संतो, नेइ निवो नियभवणं—कारावइ मज्जणाईणि. ४३४ भुत्तुत्तरंमि दिणाउ—अट्ठ कण्णाउ तेण कुमरस्स, सुपसत्थवासरंमि य—विहिओ वारिज्जओ तासिं. ॥ ४३५ ॥ कइवयदिणा जहासुह—मिय चिट्ठंताण अन्नया एगा, महिला आगम्म कुमारअंतियं इय समुल्लवइ. ॥ ४३६ ॥ कुमर त्थि इहेव पुरे—वेसमणो नाम सत्थवाहसुओ, धूया तस्स सिरिमई—सा य मए बालभावाओ—॥ ४३७ ॥ आरब्भ पालिया जा—तुमए करिसंभमा सुहय त-इया, रक्खियपुव्वा सा तुज्झ—घरिणिभावं अभिलसइ. ॥ ४३८ ॥ तइयच्चिय जीवि-

कुमारनो आवो वृत्तांत जोवा लाग्यो. ४३२ ते विस्मय पामी पूछवा लाग्यो, के आ कोण छे अने कया राजाना पुत्र छे ? त्यारे ते हकीकतना जाणनार तेना मंत्रिए ते वात तेने जणावी. ४३३ त्यारे निधान मळे ते करतां अधिक अपूर्व आनंद पामी राजा तेने घरे तेडी गयो. त्यां स्नानादिक कराव्यां. ४३४ जमाड्या बाद तेणे कुमारने आठ कन्याओ आपी, अने अने सारो दिवस आवता तेमनो विवाह कर्यो. ४३५ त्यां तेओ सुख साथे केटलाक दिन रह्या, एवामां एक वेळा एक स्त्री कुमार पासे आवी आ रीते कहेवा लागी. ४३६ हे कुमार ! आ नगरमां वैश्रमण नामे सार्थवाहनो पुत्र छे तेनी श्रीमती नामे पुत्री छे. तेणीने में बाळपणथी मांडीने पाळेली छे. तेने हे सुभग ! ते वखते हाथीना भयथी बचावेली छे, ते तारी स्त्री थवा इच्छे छे. ४३७-४३८ तेणीए तेज वखते तने जीवित देनार गणी प्रीति भरेली नजरे तने जोयो

पडायगो त्ति तं गाढिआनविट्ठीए, अवलोइओ चिरं तीए, किजउ ता मणस्स पियं. ॥
४३९ ॥ बोलीणे हत्थिजण—गीया कहकहवि परियणेण गिहं, तत्थवि न मजणाई—
देहठिइं काउमभिलसइ. ॥ ४४० ॥ कीलियमुहु व्व केवल—मत्थइ परिचत्तवयण-
वावारा, पुत्ति अकंडे तं कीस—गहिरं पाविया वसणं. ॥ ४४१ ॥ इय जणिए, सा
साहइ—तुज्झ सव्वं पयासणिज्जं मे, अज्जा इत्थ वरज्झइ—जइवि तहावि य जणामि
अहं. ॥ ४४२ ॥ रक्खसमयाउ तओ—करिणो नियपाणदाणओ जेण, परिरक्खिया
समं तेण—पाणिगहणं जइ न होही. ॥ ४४३ ॥ ता मे अवस्समरणं—सरणं ति तओ
निमाभिउं कहिओ. पिउणो इमीइ सव्वो—वुत्तंतो तेणवि समीवे.—॥४४४॥ तुम्ह मह
पेसविया—वाल मिमं ता पडिच्छसु तुमं ति, कालोववत्र मेयंति—मन्निया सावि वरधणुणा
॥४४५॥तह मंत्रणावि दिण्णा—कण्णा नंदाभिहाणगा विहियं, वीवाहमंगलं जंति वासरा

३९. माटे तेना मननी अभिलाषा पूरी पाडो. ४३९ एटले हाथीनो भय टळतां तेणीना परिजने तेणीने घेर पोंचाडी, पण तेणी त्यां स्नान वगेरे शरीरनी संभाळ लेती नथी. ४४० तेणीने मुखे खीला जड्या होय तेम बोलती करती नथी, तेथी में तेने पूछ्युं के हे पुत्रि, तुं ओचिंती आवा कष्टने केम पामी छे? ४४१ एम कहेतां ते बोली के तारी आगळ मारे बधी वात कहेवी जोइये. जो के मने शरम लागे छे, त्यां हुं कहुं छुं के राक्षसजेवा हाथीथी पोताना प्राणना जोखमे मने जेणे बचावी छे तेना साथे जो मारुं पाणिग्रहण नहि थाय तो मारे अवश्य मरवुंज शरण छे. ते सांभळी ए सघळी वात में तेना बापने जणावी. ४४२—४४३—४४४ तेणे पण मने तमारी आगळ मोकलावी छे. माटे आ बाळाने तमे स्वीकारो. त्यारे प्रसंग आवेली वात गणीने वरधनुए तेने पण कबूल राखी. ४४५ तेमज त्यांना मंत्रीए पण नंदा नामे कन्या तेने

फुराहवि सुहेण. ॥ ४४६ ॥ सव्वकलंकविमुक्का—उज्जलिया सव्वओविय पउत्ती, जह पंचालनिवसुओ—सव्वत्थ जयं उवलभंतो.—॥ ४४७ ॥ हिमवंतकाणणगओ—जहा गइंदो निरंकुसो भमइ. वरधणुणा धणकुलनंदणेण अणुगम्ममाणपहो. ॥ ४४८ ॥ वाणारसिं गया ते—अहन्नया ताविउं वाहिं कुमरं, कडयाभिहाणपंचालरायमित्तस्स पासंमि. —॥ ४४९ ॥ वरधणुणा गमणं कय—मेसो कमलायरो व्व सूरुदए, जाओ हरिसपरवसो—विन्नोयणो तस्स पुच्छो य. ॥ ४५० ॥ कुमरवत्तं, तेणावि—साहियं जह समागओ इहइं, नियबलवाहणसहिओ—से निग्गओ संमुहो तस्स. ॥४५१॥ दिन्नो कडएण निवाउ—चेतनामाउ निव्विसेसेण, जयकुंजर मारोविय—सियचामरवीइओ संतो. ॥ ४५२ ॥ पडिपुन्नचंदमंडलनिभेण छत्तेण उवरि धरिएण, उग्गिज्जमाणचरिओ—पए पए चारण-

आपी. तेमनुं विवाहमंगल थयुं. एम बन्ने जणा सुखथी दिवसो पसार करवा लाग्या. ४४६ हवे तेमना निष्कलंक समाचार चारेबाजु फेलाया के पंचालना राजानो पुत्र सघळे स्थळे जय मेळवतो थको हिमालयना वनमां फरता गजेंद्रमाफक निरंकुश थइ फरेछे; अने धन मंत्रिनो कुळदीपक पुत्र वरधनु तेनी साथेज रहे छे. ४४७—४४८ बाद एकवेळा तेओ वाराणसी गया. त्यां कुमारने बाहेरमेळीने वरधनु कटक नामना पंचाळरायना मित्रपासे गयो. त्यारे ते सूर्य ऊगतां जेम कमलाकर खीले तेम तेने जोइ हर्षपरवश थयो अने तेने कुमारनी खबर पुछवा लाग्यो. ४४९—४५० तेणे कुमारनी खबर पुछी एटले वरधनुए कह्युं के ते इहां आवेलो छे. त्यारे कटकराजा पोताना लश्कर साथे तेनी सामे गयो. ४५१ (कटकराजा) ए तेने ब्रह्मराजा माफकज गणीने जयकुंजरपर चमाव्यो. श्वेतचामरो तेनापर वींजावा लाग्या, पुनमना चंद्रजेवुं छत्र तेना उपर धरीयुं, अने पगले पगले चारणो तेनुं चरित्र गावा लाग्या. ४५२—४५३ आ रीते तेने नगरमां लावी पोताना घेर

गणोण. ॥ ४९३ ॥ नीओ सो नयरहत्तंतरंमि नियमंदिरंमि ठविओ य. कमगवइ निय-धुया–पणामिया तीइ वीवाहो.–॥ ४९४ ॥ णाणाविहहयगयरहवराइसामग्गियापयाणेण, तुनो पगत्थदियसे–पवत्तिओ तीइ विसयसुहं. –॥ ४९५ ॥ सेवंतो जा चिट्ठइ–ता दूयाकारिओ समणुपत्तो, नग्नाहपुप्फचूलो–धणुमंति कणेरुदत्तो य. –॥ ४९६ ॥ तह सीहो नरनाहो–नवदत्तो सोयचंदमाईया, बहवो नराहिवा, मिलिय–तेहि तो रज्जमणुविहिओ.–॥ ४९७ ॥ अभिसिंचिय सेणावइपयंमि चउरंगविउलबलकलिओ, दीहस्स पेसणकए–कंपीलपुरंमि पेसविओ. ॥ ४९८ ॥ अणवरयं जा गंतुं–स पवत्तो ताव दीहनरवइणा. कडगाइनरवईणं–दूओ संपेसिओ, भणियं.—॥ ४९९ ॥ तेण जह दीहराया–तुम्होवरि आसन्निं परं पत्तो, जं एस बंभदत्तो–तुब्भेहि पुरस्सरो विहि-

सुभाषचारीने राजाए तेने रत्नवती नामनी पोतानी पुत्री पण परणावी. बाद माग दिवसे अनेक हाथी घोडा अने रथनी सामग्री साथे तेनो वीवाह कराव्यो. हवे त्यांजमे कुमार भोगविलास करवा लाग्यो. ४९४—४९५ ते भोगविलास करतां रहो हतो, एवामां त्यां पोतातेल पुष्पचूलराजा, धनुमंत्री, कणेरुदत्त, सिंहराजा, नवदत्त, तथा अशोकचंद्र वगेरे अनेक राजाओ त्यां आवी पहोंच्या. तेमणे एकठा थइ ब्रह्मदत्तने सेनापतिना पदे अभिषेक कर्यो. ४९६—४९७ वरधनुने सेनापति स्थापी चतुरंगी सेना लइकर आपीने दीर्घराजाने दाबवा मोकल्यो. ४९८ ते निरंतरप्रयाणे चालतो गयो एवामां दीर्घराजाए कटक वगेरे राजाओ तरफ पोतानो दूत मोकलाव्यो. ४९९ ते दूते कयुं के, दीर्घराजा तमारापर चार

जदत्तो नरिंदचक्केण, कंपिल्लपुरं कलइ–समेतओ संजमुज्झंतं. ॥ ४६८ ॥ तत्तजगसं-
ठियाणं—खाओचरितखगयाण य जमाणं, आगोगागयछस्सहमन्नरविसवेगविहुराणं–
॥ ४६९ ॥ अइघोरविहियसंहारवाणनीरंध उवन्नवरिसाणं, कयनिद्दयपहयपहाणतूररव-
कायरनराणं. ४७० ॥ जंतविणिक्खित्तसुनत्तनिल्लविद्दरूंतपत्तिवंधाणं, फरगतिरोहियर-
करगामणापागारमूलाणं— ॥ ४७१ ॥ रोसपरव्वसदट्ठोट्ठवंधमुच्चंतनिट्ठुरगिराणं, दित्त-
ताणमूलपक्खेवजलियकरिसारिसूराणं — ॥ ४७२ ॥ निसियकुहाडयताडियवियरूपओ-
लीकवाडवंधाणं, कयरोलजणाओइज्जमाणविहडियकरियमाणं–॥४७३॥ जीमाणि कुक-
हलकारगाणि हालावहाणि जायाणि, आओहणाणि पइदिण–मइदारुणरोसपसराणि
॥४७४॥दीहनरेसुं निव्वेय-मागएसुं पुरस्सरो होउं,अन्नहंतो अन्न मुवाय–मत्तणो जीविय-

ने नगरीना दरवाजानी रक्षा करवा जनता माणसो राखेला हता, तेमां जया आववानुं वंध करेल हतुं, तेनी चारे बा-
जुना छेमापर योद्धाओ फरता राख्या हता, तेना किल्लापर यंत्रो गोठव्या हता. एम दीर्घराजाए सामे आवता लश्करना
आक्रमणनी सामे तेने घेरो रमवा समर्थ बनावी हती. ४६६—४६७ हवे ब्रह्मदत्त ते राजाओने साथे राखी संभ्रमथी
दीपित कांपिल्यपुरने चोर बाजुथी वेगे नाखवा लाग्यो. ४६८ त्यां अंदरना सुजटो नीचे रह्या हता अने आ घेराना
सुजटो किल्लापर चढ्या. तेओ एकबीजापर खूब इर्षानुं विष चढ्यायी विधुर थइ अति भयंकर संहार करना वाणो
अने पथरा फेंकवा लाग्या अने कायर सुजटो खूब वाजाओ वगाडवा लाग्या. ४६९—४७० कोइ यंत्रमां तपावेल
तेल नाखी मरक पदातिओनी हारने तोडवा लाग्या, कोइक एकएकना किल्लाने पाडियावडे हांकी चलावता लाग्या. ४७१

ओ. ॥ ४६० ॥ णूणं तुम्ह न कल्लाण– मत्थि दीहे समोत्थरंतम्मि, पलयानिलल्लोलि-यजलहिसारित्थविउलबले. ॥ ४६१ ॥ ता एत्तो विनियत्तह–खमणिज्जो ज्ञे इमो व-राहो से, सप्पुरिसा विणयपरे–नरंमि निम्मच्छरा जेण. ॥ ४६२ ॥ कयजब्भमज्जिउम्मी-लंगपयम्मअइरुद्दरोसपसरेहिं, निब्भत्थिओ स दूओ–सयंच पंचालविसयंमि.–॥ ४६३ ॥ जा पत्ता ताव पुरीं---पलीवियासन्नगामसंदोहं, बहिनिग्गालियसरजल---मंतो य पवि-छबहुधन्नं. –॥ ४६४॥ संगहियपउरजवसिंधणं च निस्सारनिग्गयजणं च, निप्पंकविहि-यचिरवाविकूवनइदुग्गपागारं.–॥ ४६५ ॥ अपमत्तपुरिसकीरंतपोलिरक्खं निरुद्धसंचारं, सयधन्नमंततुरंगमसेणामुच्चंतपज्जंतं.–॥ ४६६ ॥ ठावियपागारोवरिविचित्तजंतं कयं नरिं-देण, दीहेण रोहसज्जं–असज्झपरबलनयवसेण. ॥ ४६७ ॥ एत्तो अणुगम्मंतो–स बं-

गुस्से थयो छे, केमके तमे आ ब्रह्मदत्तने टेको आपी आगळपडतो कर्यो छे. ४६० माटे प्रलयकालना वायराथी ऊछळता दरि-या जेवा महान् लश्करवाळो दीर्घराजा ऊठी ऊभो थशे तो नक्की तमारुं कल्याण थनार नथी. ४६१ माटे आ बाबतथी अळगा रहो. आ तमारो अपराध तमने माफ छे. केमके सारा माणसो विनय करनार माणसपर मत्सर राखता नथी. ४६२ त्यारे ज्यारे भ्रकुटि चमावीने अति आकरो गुस्सो बतावता ते राजाओए ते दूतने निर्भ्रछी रवाने कर्यो अने पोते पांचाळ देशपर चडी आवी जोवा लाग्यो तो नगरीना आजुबाजुना गामो बाळी नाखवामां आव्या हता, तेने बाहेरना तळावोनुं पाणी गळावी नाख्युं हतुं, अने ते नगरीमां खूब धान्य संघरेलुं हतुं, घणुं घास तथा बळतण संघर्युं हतुं, नका-मा माणसोने बाहेर कहाडेला हता; अने जूनी वावो कूवा अने गढ साफ करेला हता. ४६३—४६४—४६५

म्हदत्तो नरिंदचक्केण, कंपिल्लपुरं रुंभइ-समंतओ संन्नमुच्नंतं. ॥ ४६८ ॥ तनन्नगसंठियाणं--सालोवरितलगयाण य नमाणं, अणोणागयडससहमच्छरविसवेगविहुराणं- ॥ ४६९ ॥ अइघोरविहियसंहारवाणनीरंध जवल्लवरिसाणं, कयनिद्दयपहयपहाणतूररवकायरत्तटाणं. ४७० ॥ जंतविणिक्खित्तसुनत्तनिल्लविहमंतपत्तिवंधाणं, फरगतिरोहियरक्खणमणपागारमूलाणं— ॥ ४७१ ॥ रोसपरव्वसदट्ठोट्ठवंधमुच्चंतनिट्ठुरगिराणं, दित्ततणमूलपक्खेवजलियकरिसारिसूराणं — ॥ ४७२ ॥ निसियकुहाडयताडियवियडपओलीकवाडवंधाणं, कयरोलजणालोइज्जमाणविहडियकरिघमाणं-॥४७३॥ नीमाणि कुकहल्लकारगाणि हासावहाणि जायाणि, आओहणाणि पइदिण-मइदारुणरोसपसराणि ॥४७४॥दीहन्नमेसुं निव्वेय-मागएसुं पुरस्सरो होउं,अन्नहंतो अन्न सुवाय-मत्तणो जीविय-

ने नगरीना दरवाजानी रक्षा करवा जागता माणसो राखेला हता, तेमां जवा आववानुं वंध करेल हतुं, तेनी चारे बाजुना छेडापर यंत्रो फरता राख्या हता, तेना किल्लापर थंभो गोठव्या हता. एम दीर्घराजाए सामे आवता लश्करना मारे जपना लीधे तेने घेरो खमवा समर्थ बनावी हती. ४६६—४६७ हवे ब्रह्मदत्त ते राजाओने साथे राखी लश्करथी ढांपेला कांपिल्यपुरने चारे बाजुथी घेरो नाखवा लाग्यो. ४६८ त्यां अंदरना सुभटो नीचे रह्या हता अने आ घेराना सुभटो किल्लापर चढ्या. तेओ एकबीजापर खूब इर्ष्यानुं विष चढ्याथी विधुर थइ अति भयंकर संहार करता बाणो अने पथरा फेंकवा लाग्या अने कायर सुभटो खूब वाजाओ वगाडवा लाग्या. ४६९—४७० कोइ यंत्रमां तपावेल तेल नाखी तेमके पदातिओनी हारने तोडवा लाग्या, कोइक एकएकना किल्लाने पाटियावडे ढांकी चलाववा लाग्या. ४७१

ळ्वस्स— ॥ ४७५ ॥ दीहो उग्घाडिय पुरकवाडपुडओ झडत्ति नयराओ, निक्खंतो वि-
उलबलो—अवलंबियपोरिसुक्करिसो. ॥ ४७६ ॥ ताण सेणाण संगाम सुमहल्लओ ग-
णणंमि निवडंतसियभल्लओ, लग्गु मग्गेसु उज्जलियरयमंडओ—पोढधाणुक्ककिज्जंत-
धणुकुंडलो. ॥ ४७७ ॥ भेरिझंकाररवभरियभवणोयरो—कुंतसिहासिसरजीरूजुयकायरो, सत्थसंघट्टउज्जलियविज्जुज्झडो—पाणनिरवेक्खपहरंतसंमुहभडो. ॥ ४७८ ॥ बद्ध-
कंधारनच्चंतवेयालओ — साइणीलोयपिज्जंतकीलालओ, सत्थसंपायभिज्जंतभत्तज्झओ

कोइ रोषे भराइ होठ फफडावी कठोर वाक्यो बोलवा लाग्या, तो कोइ वळतुं घास नाखीने दुश्मनोना वळतणने वाळवा लाग्या. ४७२ कोइ तीक्ष्ण कुहाडा मारीने दरवाजाना कमाड तोडवा लाग्या, तो कोइ रास्तो पाडता लोकोनी नज वच्चे हाथीओनी हारोने तोडवा लाग्या. ४७३ आ रीते दररोज तेओनी भयंकर कुतूहळ जगाडनारी, हास्य करावनारी, अने अति दारुण जोरवाळी लडाइओ थती रही. ४७४ हवे दीर्घना सुभटो नाउमेद थया एटले ते पोताना जीववानो बीजो उपाय नहि देखतां पोते आगळ पडी लडवा निकळ्यो. ४७५ दीर्घराजा नगरना दरवाजा उघाडी झट दइ मोटा लश्कर साथे भारे हिम्मत पकडी बाहेर नीकळ्यो. ४७६.

(लडाइनुं वर्णन)

ते बन्ने सेनाओनी ठेर ठेर मोटी लडाइओ थवा लागी अने तेमां झळकता भालाओ वपरावा लाग्या, रस्तामां धूळना कुंडाळा ऊडवा मांड्यां, अने मोटा धनुर्धरो मनुष्योने मरडी वांका करवा लाग्या. ४७७ भेरीना भण-

निन्नगावेगवहमाणनरुरत्तओ. ॥ ७४९ ॥ वियरुविचलंतबहुसूरजणजंडओ—लक्खसंखोवल्लविवज्जन्तरुंसुंरुओ, जाज जमनयरलोयाण परमूसवो—जीसणो ताण डुन्हवि वलाणा हवो. ॥४००॥ तत्तो मुहुत्तमेत्ता—दट्ठुं जंगं बलस्स निययस्स, धिट्टत्तणेण दीहो—पहाविओ बंजदत्तस्स. ॥ ४०१ ॥ तावलज्जल्लसेल्लाइएहि सिरिबंजदत्तदीहाण, वट्टंते समरजरे—अछेरकरे सुरनराणं— ॥ ४०२ ॥ नवरविमंरुलसन्निज—मईवनिसियग्गधारमइघोरं, परचक्कखयकारग—मारुढं करयले चक्कं—॥ ४०३ ॥ जक्खसहस्साहिट्ठिय—मह पंचालाहिवंगजायस्स, तक्खणाखित्तेणं तेण—दीहसीसं तओ छिन्नं. ॥ ४०४ ॥ गंधव्वसिद्धखेयरनरेहि मुक्काज कुसुमवुट्ठीओ, वुत्तं जहेस चक्की—वारसमो इण्हि मुववन्नो. ॥ ४०५ ॥ कंपिल्लपुरस्स बहिं—वारसवासाणि चक्कवट्टिमहो,

काराथी आकाश गाजी रह्युं, जाला, शिलाओ, तरवारो अने बाणोथी बीकण माणसोनी बांहो धूजवा मांडी. वळी अंरसपरसना शस्त्रो अथडातां तेमांथी वीजळी चमकवा लागी, अने प्राणनी दरकार राख्या वगर सामा उभा रही सुजटो एक बीजाने मारवा लाग्या. ४७८ त्यां उंचा स्कंध करी वेताळो नाचवा लाग्या, शाकिणीओ लोही पीवा लागी, शस्त्रोना उपाटा लाग्याथी छत्रो अने निशानो तूटवा लागी, अने नदीना वेगे सुजटोनी लोही वहेवा लागी. ४७९ त्यां खुल्ली रीते घणा शूर लोको हणवा लाग्या अने तेमनी ठेकडीओ थवा लागी, अने लाखोनी संख्यामां सुजटोना मुंरु जमीनपर पडया. आ रीते बन्ने सेनाओनी यमपुरीना लोकोने परमोत्सव समान जयंकर लडाइ थइ. ४८० त्यारे एक मूहूर्त मात्रमांज पोताना लश्करमां जंगाण पडेलुं जोइने धीठाइना लीधे दीर्घराजा एकदम ब्रह्मदत्त तरफ धसीगयो. ४८१

जाओ य अइमहंतो—चोद्दसरयणाहिनाहस्स. ॥ ४७६ ॥ नवनिहिपहुणो तस्सन्नयाउ ज्ञोगे निसेवमाणस्स, देसाहिंरुणदिट्ठो—समागओ माहणो एगो. ॥ ४७७ ॥ सो तस्स अणेगेसुं—ठाणेसु विहियविविहसाहेज्जो, अच्चंतभत्तिमंतो य—आसि परमं पणयठाणं. ॥ ४७८ ॥ रायाभिसेयमहिमाइ—वट्टमाणीइ वासबारसगं, चक्की तेण न दिट्ठो—अलद्धदारप्पवेसेणं. ॥ ४७९ ॥ तप्पज्जंते बाढं—निसेवमाणेण दारपालनरं, तयणुग्गहेण दिट्ठो—बारसमे वासरे राया. ॥ ४८० ॥ अन्ने भणंति जाहे—न लहइ सो दंसणंपि चक्किस्स, तो जिण्णु वाहणाओ—वंसे दीहंमि विलएइ. ॥ ४८१ ॥ बहिनिग्गमसमए सो—रन्नो जे चिंधवाहया तेसिं, मिलिओ नियचिंधकरो—पहाविओ जग्गवेगेण. ॥ ४८२ ॥ निउज्झाइओ य रन्ना—किमियं चिंधं ति चिंतियं तेण, पुट्ठो य, तेण

हवे ब्रह्मदत्त अने दीर्घराजानी तीखा भाला अने शिलाओ वगेरेथी सुरनरने अचंबो पमाडनारी लडाइ शरु थइ. ४८२ एवामां ऊगता सूर्य जेवुं अति तीक्ष्ण धारवाळुं अति बीहामणुं परचक्रनो जय करनार एवुं चक्र के जे हजार यक्षोथी अधिष्ठित हतुं ते पंचाळना राजाना पुत्रना हाथमां प्रगट थयुं, एटले तरत तेणे ते क्षणमांज दीर्घराजानुं माथुं कापी नाख्युं ४८३—४८४ आ वखते गंधर्व, सिद्ध तथा विद्याधर मनुष्योए तेनापर फूलोनी वृष्टि करी, अने कह्युं के हवे आ बारमो चक्रवर्त्ती उत्पन्न थयो छे. ४८५ तेने चौद रत्नो प्रगट थया अने कांपिल्यपुरनी बाहर बार वर्ष लगी तेनो अति महान् चक्रवर्त्तिमहोत्सव चालु रह्यो. ४८६ ते नवनिधाननो धणी थइ भोगविलास माणवा लाग्यो. तेवामां त्यां एक दिवसे तेणे देशाटन करतां दीठेलो एक ब्राह्मण आवी पहोंच्यो. ४८७ ते ब्राह्मणे तेने अनेक ठेकाणे अनेक

भणियं—तुह सेवाकालमाणमिणं. ॥ ४९३ ॥ एत्तिय उवहाणाओ—घट्टाओ तं निसे-
वमाणस्स, नय दंसणमुवलद्धं—कहिंचि तुह देव चलणाणं. ॥ ४९४ ॥ सकयण्णु-
याइ तेणं—पुव्वुवयारे मणे सरंतेणं, भणिओ संतुट्ठमणेणं—भद्द मग्गाहि वर मेगं.
॥ ४९५ ॥ आपुच्छिय नियभज्जं—पच्छा मग्गामि जं पियं तीसे, इय भणिऊण म-
हगओ—नियगेहं. पुच्छिया सा य. ॥ ४९६ ॥ अइनिउणबुद्धिजुत्ता —पाएण ह-
वंति (इत्थ) नारीओ, तो चिंतिय मेईए—बहुविहवो परवसो होही. ॥ ४९७ ॥

प्रकारनी सहायता आपी हती, अने तेनापर ते जारे भक्ति राखतो हतो तेथी तेणे तेनी परम प्रीति मेळवी हती. ४८८ परंतु ते वखते त्यां राज्याभिषेकनो महिमा चालतो हतो एटले तेने दरवाजामां प्रवेश नहि मळवाथी ते बार वर्ष लगी चक्रवर्त्तिने जोवा पाम्यो नहि. ४८९ त्यारबाद तेणे द्वारपाळनी खूब सेवा करवा मांडी, एटले तेनी कृपाथी बारमे वर्षे राजाने जोयो. ४९० बीजा आचार्यो एम कहेछे के ज्यारे ते चक्रवर्त्तिना दर्शनने पण न पामी शक्यो, त्यारे तेणे एक लांबा वांसमां जूना खासडा लटकाव्या. ४९१ पछी राजा बाहेर नीकळ्यो ते समये तेना जे निशानदारो हता तेमां ते खूब जोरथी दोडीने पेशी गयो. ४९२ हवे राजाए ते निशान जोइ विचार्युं के आ ते वळी शुं छे? तेथी तेणे तमने पूछयुं एटले ते बोल्यो के ए तमारी सेवामां जे वखत वीत्यो तेना निशान छे. ४९३ तमने सेवतां आटला खासडा घसाया छे पण हे देव तमारा चरणना दर्शन मळ्या नहिं ४९४ त्यारे राजा कृतज्ञपणाथी तेना पूर्वे करेला उपकार मनमां याद लावी संतुष्ट थइ बोल्यो के हे भद्र तुं एक वर माग. ४९५ ते बोल्यो के हुं मारी स्त्रीने पूछी तेने जे प्रिय हशे ते मागीश, एम कही ते पोताने घेर गयो. पछी तेणे स्त्रीने पूछी जोयुं. ४९६ हवे स्त्रीओ प्राये अति निपुण बुद्धिवाळी होय छे, तेथी तेणीए विचार्युं के एना पासे बहु - विभव थशे तो ए परवश थइ पडशे. ४९७ तेथी तेणीए कह्युं के तुं द-

१२

नारकादिपर्यायभाजि अनर्वाक्पारे संसारेऽनेकधा भ्रांतपूर्वोऽयं जीवः॥ यथा स चक्रवर्त्तिदर्शनदायको द्वारपाल—स्तथा मिथ्यात्वमोहादिघातिकर्मविवरः॥ यथा चासावन्यभार्यासक्तं तमभिलंती भोजनमात्रे एव संतुष्टं चकार ब्राह्मणी — तथामुंजीवमैकांतिकमात्यंतिकं च मुक्तिवधूसुखं प्रति कृतोत्साहं उपस्थितराज्यसमसंयमलाभमपि कर्मप्रकृतिभार्या भोजनमात्रतुल्ये वैषयिकसुखे प्रतिबद्धं करोति यथाच तस्य चक्रवर्त्ति गृहप्रभृतिषु सर्वेषु भरतक्षेत्रगृहेषु कृतभोजनस्य पुनश्चक्रवर्त्तिगृहे भोजनमसंभावनीयं — तथास्य जीवस्याकृतसम्यग्धर्मस्य सम्यग्दर्शनादिमुक्तिबीजलाभफलं मानुषं जन्मेति.

अथ संग्रहगाथाक्षरार्थः

चोल्ल त्ति भोयणमिति — प्रागुक्तदृष्टांतद्वारगाथायां यश्चोल्लक इति पदमुपन्यस्तं तद्देशीवशाद्भोजनस्य वाचकमित्यर्थः :

कांते अति सुख आपनार मुक्ति वधूने पामवा इच्छे अने राज्य समान संयम मेळवे ते वदले कर्म प्रकृतिरूप भार्या तेने भोजन मात्रना जेवा वैषयिक सुखमां ललचावी राखे छे. जेम तेने चक्रवर्त्तिना घरथी मांडीने भरतक्षेत्रना बधा घरोमां भोजन करवानु होवाथी फरीने चक्रवर्त्तिना घरे जमवानुं असंभावनीय छे, तेम आ जीव खरा धर्मने नहि करे तो तेने सम्यग्दर्शन वगेरे मुक्तिना बीज ज्यां मेळवी शकाय ते एवुं मनुष्य जन्म मळवुं दुर्लभ छे.

हवे संग्रह गाथानो अक्षरार्थ करे छे.

चोल्ल एटले भोजन छे अर्थात पूर्वे दृष्टांतनी द्वार गाथामां जे चोल्लक एवुं पद राख्युं छे ते देशी प्राकृतमां भोजनवाचक छे.

तच्च भोजनं—परीवारभारहजणंमित्ति—सूचनात् सूत्र मिति न्यायात् प्रथमं तावद् ब्रह्मदत्तगृहे, ततोंतःपुरादिपरिवारवेश्मसु, ततोपि भारतवासिलोकमंदिरेषु करूपतया प्रागुक्तब्राह्मणस्य निरूपितं राज्ञा तावद्भोजनपर्यंते च—स्वयमेव तस्यैव ब्राह्मणस्य—न पुनः पुत्रपौत्राद्यपेक्षया—पुनर्द्वितीयवारं दुर्लभं दुरापं तन्निरूपितभोजनं यथा येन प्रकारेण तत्र चक्रवर्त्तिगृहे, तथैव प्रस्तुतं मनुजत्वमिति

(७)

ते एटले भोजन परिवार अने भारतना जनमां—एटले टुंकामां सूचवे ते सूत्र कहेवाय ए न्यायथी पहेलां तो ब्रह्मदत्तनाज घेरे, त्यार पछी अंतःपुर वगेरे तेना परिवारना घरोमां अने त्यार पछी भरतमां वसता लोकोना घरोमां लागा तरीके पूर्वे कहेला ब्राह्मणने राजाए ठेरवी आप्युं अने भोजन कराव्या बाद (दीनारनी दक्षिणा ठेरावी) पोताने एटले के तेज ब्राह्मणने—नहिके तेना पुत्र पौत्र वगेरेने.

फरीने एटले बीजीवार तेणे ठेरवी आपेलुं भोजन जेम ते चक्रवर्त्तिना घेरे मळवुं दुर्लभ छे, तेम आ प्रस्तुत मनुष्यपणुं जाणवुं.

अथ द्वितीयदृष्टांतसंग्रहगाथा.

मूलं— जोगियपासिद्धियपाऽरमणदीणारपत्तिजूयंमि,
जहचेव जओ दुलहो—धीरस्स तहेव मणुयत्तं. ॥ ७ ॥

वृत्तिः—चाणक्कस्सु प्पत्ती—वत्तव्वा पढमयाइ जा नंदो, पाडलिपुत्तेनयरे—समूलमुम्मूलिओ ताव. ॥ १ ॥ सयमेव नवरि जणिही—नय तेण पवित्थरो इहं गहिओ, रज्जंमि चंदगुत्ते—ठियंमि त्थंतेइ चाणक्को.— ॥ २ ॥ लद्धा न नंदलच्छी—समुद्धरा काइ तीइ विरहंमि, रज्जं केरिस मेवं—करेसु वायं तदज्जणणे ॥ ३ ॥

हवे बीजा दृष्टांतनी संग्रहगाथा कहे छे.

यौगिक पासाओवडे इच्छा प्रमाणे पाशा पाडीने रमवा मांड्युं. त्यां दीनारनी पालीनो पण कर्यो हतो. तेवा द्यूतमां जय मळवो दुर्लभ छे. बुद्धिमान् पुरुषने तेम मनुष्य पणुं दुर्लभ लागे छे. १

टीका.

अहीं पहेला चाणाक्यनी उत्पत्ति तथा पाटलिपुत्र नगरमां तेणे नंदने मूळथी त्यां उखेड्या लगीनी तेनो वात कहेवी जोइए. १ पण ते वात ग्रंथकार आगळमां पोतेज कहेनार छे तेथी इहां तेनो विस्तार अमे लेता नथी. पण टुंकामां मुद्दानीवात आ छे के चंद्रगुप्त राज्यपर वेसतां चाणाक्य चिंतववा लाग्यो के—नंदनी कांइ मोटी लक्ष्मी पामी नथी. अने तेना वगर राज्य शा कामनुं माटे ते मेळववा कोइ उपाय करीश. २—३

तो जंतपासया तेण—निम्मिया केइ विंति असे उ, देवयपसायलद्धा—तओ सुदक्खो नरो अगो—॥ ४ ॥ भणिओ तेण जहेए—पासे दीणारथालमेगं च, गिण्हित्तु जणाहि तुमं—तियमच्चरचउमुहईसु. ॥ ५ ॥ जो मं जिणाइ जूए—दीणाराणं जिणेइ थालं मिणं, अह कहवि जिणामि अहं—तो दीणारो ममं एगो. ॥ ६ ॥ एवं च सो पयट्टो—निरंकुसो जूय मुक्कुरं रमिउं, न कयाइ सो जिणिज्जइ—जिणइ च्चिय सो परं असे. ॥ ७ ॥ जह तस्स जओ दुलहो—अइदक्खेणावि केणइ नरेण, तह मणुयत्तणजढो—दट्ठव्वो तस्स लंभंमि. ॥ ८ ॥ इति.

बाद तेणे यंत्रवाळा पासा बनाव्या केटलाक आचार्यो कहे छे के ते देवतानी महेरबानीथी मळेला जुदी तरेहनाज पासा हता. पछी एक हुशियार माणस राख्यो. ४ तेने तेणे कह्युं के आ पाशा अने सोनाम्होरोथी भरेलो एक थाळ लइने त्रिवाटा, चोक, तथा चौमुखमां जइने तुं कहेजे के—५ जे मने जुगारमां जीते तेने थाळ मळशे, अने जो कोइ रीते हुं जीतुं तो मने पणे पणे दीनार देवो. ६ आ रीते ते बे दरकार थइ ज्यारे जुगार रमवा लाग्यो, पण ते कोइथी जीती शकातो नहि, किंतु तेज बीजाओने जीततो. ७ हवे जेम तेनो जय अति चालाक माणसथी पण करवो दुर्लभ छे, तेम मनुष्यपणाथी जे पड्यो, तो फरीने तेने ते मळवुं दुर्लभ छे. ८

अथ गाथाक्षरार्थ :

यौगिकौ यंत्रप्रयोगनिष्पन्नौ देवतावितीर्णौ वा पाशकौ अक्षौ—ताभ्यामीप्सितपातेन रमणं क्रीडनं प्रारब्धं, तथा दीनारपात्रीपणः कृतश्चाणक्यनियुक्तपुरुषेण, द्यूते तादृशे यथाचैव जयो दुर्लभोऽन्यस्य पुरुषस्य, धीरस्य बुद्धिमतो मानवस्य तथैव मनुजत्वं दुर्लभं प्रतिभासते इति.

हवे मूळनी गाथानो अक्षरार्थ करे छे.

यौगिक एटले यंत्रप्रयोग साथे बनावेला अथवा देवताए आपेला बे पासा. तेना वडे इच्छित पात पामीने रमत शरु करी अने त्यां सोनामहोरोथी भरेली थाळी आपवानो चाणाक्ये राखेला माणसे पण कर्यो. एज जुगारमां जेम बीजा माणसने जय मळवो दुर्लभ छे तेम धीर एटले बुद्धिमान माणसने मनुष्यपणुं दुर्लभ लागे छे.

अथ तृतीयदृष्टांतसंग्रहगाथा.

धण्णे त्ति भरहधण्णे—सिद्धत्थगपत्थखेव थेरीए, अवगिंचणमेलणओ—अचेव छिओ मणुयलाभो. ॥ ८ ॥

हवे त्रीजा दृष्टांतनी संग्रहगाथा कहे छे.

धान्य एटले भरतक्षेत्रनुं धान्य तेमां कोइ सरसवनी थाळी नाखे, बाद कोइ बुड्ढी स्त्री तेने तेनाथी जुदो पाडीने ते थाळी पाछी मेळवे ए जेम मुश्केल छे तेम मनुष्यपणुं मळवुं दुर्लभ छे. ८

(टीका)

किन्न कप्पणाइ केणवि—सुरेण कोऊहलेण सव्वाइं, धन्नाईं मेलियाइं—भार-हवासस्स तणयाइं. ॥ १ ॥ एगो सरिसवपत्थो—पक्खित्तो ताण मज्झयारंमि, आलो-ड्याइं ताइं—जणिया एगा तओ थेरी. ॥ २ ॥ डुब्बलदेहा दालिद्ददूमिया किंचिरोय-विहुरंगी, तं सुप्पसणाहकरा—विगिंचए ताइं धन्नाइं. ॥ ३ ॥ ता जा सरिसवपत्थो—पुन्नो सोचेव सा तहा काउं, पारद्धा मेलेउं—किं तं पत्थं सरिसवाण ? ॥ ४ ॥ एमेव मणुयजम्मो—अणेगजोणीसु परिब्भमंताणं, पत्तो जड्डो मणुयाण—डुल्लहो मोहमलिणाणं. ॥ ५ ॥

टीका,

मानो क्यो के कोइ देवताए कुतूहलथी भरतक्षेत्रनुं तमाम धान्य अने तृण एकठां कर्यां. १ तेना वचे तेणे सरसवनी एक पाली नाखीने ते भेळवी नाखी. पछी एक स्थविर डोसीने कह्युं के एमांथी तुं सरसव जुदो पाडी दे. २ हवे ते डोसी दूबळां शरीरवाळी, दारिद्रयथी दूणायली, अने कंइक रोगथी विधुर बनेली कोइने हाथे सूपडूं लइ ते धान्यने उंधरूवा लागी. ३ तेणी ज्यां लगण ते सरसवनी पाली पूरी भराय त्यां लगण तेम करवा मांडी, हवे शुं ते डोसी ते सरसवनी पाळी पामी शकशे के ? ४ एज रीते मोहमलिन मनुष्योने अनेक योनियोमां भमतां मळेलुं मनुष्य जन्म एकवार पूरं थइ जतुं रह्युं के ते फरी मळवुं दुर्लभ छे. ५

सच्चेण निवेइयं तओ रन्नो, आहूओ तेण सुओ—नणिओ य कमं परिक्खाहि. ॥७॥
अह तोरसि रज्जकए—दाएणे गेण अट्ठसयवारे, जिणसु निरंतर मंसिस—एक्केक्कं, देमि
तो रज्जं. ॥ ८ ॥ जह तासिं असीणं—तस्स जओ दुल्लहो चिरेणावि, तह मणुयत्तं
जीवाण—जाण नवगहणलीलाणं. ॥ ९ ॥ (इति) (७)

खवी जोइए (तो अनुक्रमे राज्य मळशे.) ७ बतां तुं राज्य माटे उतावळो होय तो दरेक धार दीठ एक एक दावथी एकसो आठवार तुं जीते, तो तने हु राज्य आपुं. ८ जेम ए तमाम असीओ पर तेने लांबा वखत वने पण जय मळवो दुर्लभ छे तेम नवरूप जंगलमां फरनारा जीवोने मनुष्यपणुं जाणवुं. ९

अथाक्षरार्थ :

जूए त्ति द्वारपरामर्शः—स्थविरनृपस्योक्तनामकस्य सुतो नंदनः राज्याकांक्षी संपन्नस्ततोऽसौ पित्रा प्रोक्तः—यथा—सह्छसयसंसि दोयएति इयं सन्ना त्वया तदा जिता नवति यद्यष्टशतं वारान् एकैकाश्रिरेकेन दायेन जीयते ततश्च राज्यं लब्धु मर्हसि नान्यथा—इतो संनावनीयात जयाउ त्ति सन्नाजयात्—अधिकः समधिको दु-र्लनतया—सुहाए त्ति सुधिकया शुध्धधर्माराधनतया महामूल्यत्वि रेहेणत्यर्थः नेयो ज्ञातव्यो मनुजलान्न इति.

हवे संग्रहगाथानो अक्षरार्थ करे छे :—

द्यूतपदे द्वार याद कर्यो छे. ते जितशत्रु नामना स्थविर राजानो पुत्र राज्य मेळववा आतुर थयो, त्यारे तेना बापे तेने कह्युं के आ सन्ना तुं त्यारे जीत्यो गणाय के ज्यारे एकसो आठवार दरेक असी एक एक दावथी जीते अने त्यारेज तने राज्य मळे नहितो नहिं. आ असंनावनीय सनाजयथी पण फोकटमां एटले शुध्धधर्मनी आराधना रूप महामूल्यथी मनुष्य जन्म मळवो अधिक दुर्लभ जाणवो.

अथ पंचमदृष्टांतसंग्रहगाथा.

रयणे त्ति भिन्नपोयस्स—तेसि नासो समुद्दमज्झंमि, अन्नेसणंमि जणियं—तल्ला-हसमं खु मणुयत्तं. ॥ १० ॥

हवे पांचमां दृष्टांतनी संग्रहगाथा कहे छे.

रत्न एटलेके भूकेला वहाणवटीना ते रत्नोनो समुद्रना वच्चे नाश थयो. हवे ते रत्नोनुं अन्वेषण करतां तेओ जेवा मळे तेना माफक मनुष्य जन्म जाणवुं. १०

(टीका)

रयणकयाणगवसउच्छलंतकित्तीइ तामलित्तीए, आसि अमुद्दियचित्तो—समुद्ददत्तो त्ति नाइत्तो. ॥ १ ॥ सो अन्नया कयाई—नाणाविहवत्थतरियवोहित्थो, रयणद्दीव मइगओ—विहिओ रयणाण संजोगो. ॥ २ ॥ पूरियमणोरहो सो—वलिओ जा एइ जलहिमज्झंमि, नयरीइ तामलित्तीइ—संमुहो ताव तं पोयं.—॥ ३ ॥ पुण्णक्खएण भिन्नं

टीका.

रत्नना वेपारना लीधे प्रख्यात थएली ताम्रलिप्ती नगरीमां उदार मनवाळो समुद्रदत्त नामे वहाणवटी हतो. १ ते एक वेळाए अनेक नाना कपडाथी वहाण भरीने रत्नद्वीप आव्यो, त्यां तेणे रत्नो संग्रह्या. २ एम ते पोतानो इरादो पूर्ण करी त्यांथी ताम्रलिप्ती तरफ वळ्यो. हवे ते जेवो दरियाना वच्चे आव्यो के वहाण भांग्युं. ३ कमनशीबे ते वहाण

यस्सुवारिं–सयसंखा ऊसिया पडायाओ, एवं वट्टंताणं–तेसिं ताओ समायाओ ॥ ७ ॥ ज्जणिया तेण, किमेयं—चेट्ठिय मसमंजसं? जओ ताणि, रयणाणि मोल्लरहियाणि—विक्कओ ताण कह विहिओ ? ॥ ८ ॥ मोल्लाणि पज्जिसमप्पिय—तेसिं वणिजारयाण बहुचेव, जह इंति मज्झ गेहं—ताइं तुब्भेहि तह कज्जं. ॥ ९ ॥ ता ते अठ्ठवि अठ्ठसु—दिसासु तेत्थं गवेसणनिमित्तं, पारसकूलाईसुं—पत्ता देसंतरेसु कमा. ॥१०॥ सव्वायरेण ताइं–गवेसियाइं, न सव्वसंजोगो, संजाओ वणियाणं–कहिंपि गमणवसा. ॥ ११ ॥ रयणाण तेसि दूलहो–समागमो जह तहेव जीवाण, मणुयत्ताउ चुयाणं–पुणोवि माणुस्सओ जम्मो. ॥ १२ ॥ इति. ७

७ तेणे कह्युं के अरे आ केवी गरबड करी ? जे माटे ते रत्नो अमूल्य हता ते तमे केम वेंची नाख्या ? ८ माटे ते ते वणजाराओने मूल्य पाछुं आपी, जेम ते रत्नो मारा घेर जलदी पाछां आवे, तेम तमारे करवुं. ९ ते शेठना ते आठ पुत्रो हता. ते आठे जण ते हुकमथी आठे दिशाओमां ते रत्नोनी शोध करवा नीकळी अनुक्रमे पारसकूल (इरान) वगेरे देशांतरोमां पहोच्या. १० तेमणे खूब महेनत लइ ते रत्नोनी शोध करी, पण तेमने ते बधां मळी शक्यां नहि, केमके केटलाक वेपारीओ क्यां अने क्यां जता रह्या हता. ११ माटे ते रत्नो एकठा थवा जेम दुर्लभ छे, तेज रीते जीवो मनुष्य जन्मथी एकवार रवाना थया के फरीने तेमने मनुष्य जन्म मळवुं दुर्लभ छे. १२

अथ षष्ठदृष्टांतसंग्रहगाथा.

सुमिणंमि चंदगिलणे—मंभगरज्जइं दोण्ह वीणणओ, नाए णुताव सुमिणे—
तल्लाहसमं खु मणुयत्तं. ॥ १३ ॥

हवे छठा दृष्टांतनी संग्रहगाथा कहे छे.

स्वप्नमां चंद्र गळतां एकने लाडु मळ्या, बीजाने राजम मळ्युं, बाद स्वप्न पाठ के तेनुं फळ व्यंजित करतां ते जाणी एके पश्चात्ताप कर्यो, अने तेवुं स्वप्न मेळववा सूइ रह्यो. हवे तेने फरीने ते मळवुं जेम दुर्लभ छे तेनी माफकज मनुष्य जन्म छे. १३

टीका.

अत्थि अवंतीविसए—समुज्जया जा जिणेउ ममरपुरिं, अइनिम्मलविजवसा
—उज्जेणी नाम पवरपुरी. ॥ १ ॥ उग्गपरक्कमवसविजियसयलदिसिमंडलो कलानि-
उणो, नामेणं जियसत्तू—नरनाहो तंच पालेइ. ॥ २ ॥ तत्थत्थि सत्थवाहो—समत्थ-
देसेसु पत्तववहारो, अयलो अयलो व्व थिरो—चागी भोगी महाभागो. ॥ ३ ॥

टीका.

अवंती देशमां भारे ऋद्धिना योगे अमरापुरीने पण जीतवा तैयार रहेली उज्जेणी नामे मोटी नगरी छे. १ तेने भारे पराक्रमथी सघळी दिशाओने जीतनार कळावाज जितशत्रुराजा पाळन करतो. २ ज्यां सघळा देशोमां वेपार करनार, त्यागी, भोगी, महाभाग्यवान् अने अचळना माफक धीर अचळ नामे सार्थवाह हतो. ३ वळी त्यां लावण्य

तत्थवि य देवदत्ता—आयसमद्दोयही कमलनयणा, गणिया गणियागयलोयमाणसा निवसइ धणड्ढा. ॥ ४ ॥ तहा,—धुत्ताणं तेणाणं—वसणीणं कोउगीण कुसलाणं; विउसाण धम्मियाणं—जो मूलसलाहणं लहइ— ॥ ५ ॥ रायन्नकुलुप्पन्नो—संपुन्नो रायलक्खणसएहिं, तत्थि मूलदेवो–धुत्तो पत्तो परं कित्तिं. ॥ ६ ॥ सब्भावसार मणहं–विसयसुहं तस्स सेवमाणस्स, गणियाइ देवदत्ताइ–दिन्नतोसस्स जंति दिणा. ॥७॥ अह अन्नया महूसवसमए उज्जाणकीलणनिमित्तं, अयलेण देवदत्ता—दिट्ठा सह मूलदेवेण. ॥ ८ ॥ सिवियारुढा पोढं–पणयं तक्खण मुवागओ तीए, चिंतेइ सत्थवाहो–ता धन्नाणं घरूइ एसा. ॥ ९ ॥ ता केण उवाएणं–मज्झ समीहियकरा नवेज्जेसा ? आढत्तो दाणाई–उवयारो णेगहा तीए. ॥ १० ॥ उवयारमेत्तगज्झा–गणिया-

निधान, कमळ जेवा नेत्रवाळी, आवनारा लोकना मनने वर्त्तनारी धनाढय देवदत्ता नामे गणिका रहेती हती. ४ तेमज ठगाराओ, चोरो, व्यसनी, कौतुकिया, चालाक, विद्वानो, अने धार्मिकोमां जे मूळरूप गणातो एवो राजन्यकुळमां जन्मेलो, सैंकडो राजलक्षणवाळो मूळदेव नामे धूर्त्त त्यां रहेतो अने ते खूब विख्याति पाम्यो हतो. ५–६ ते देवदत्ता गणिका साथे प्रीतिमयपणे विषय सुख भोगवी दिवसो पसार करतो हतो. ७ हवे एक वेळा मधुमासनो उत्सव आवतां अचळ सार्थवाहे देवदत्ताने उद्यानक्रीडा माटे मूळदेवनी साथे जती जोइ. ८ ते पाळखीपर चडी जती हती. तेने जोइ सार्थवाह तेज क्षणे तेना उपर मोहित थइ पडयो, अने विचारवा लाग्यो के आ नशीबदारनेज भेटे. ९ माटे कया उपायथी ए मारी इच्छा पुरशे ? एम चिंतवी तेणे तेने अनेक जातनी भेट सोगाद मोकलवा मांडी. १० हवे गणिकाओ भेटसोगाद-

ओ जेण तेण सो तीए, आणीओ वहुमाणस्स—गोयरं दावियसिणेहो. ॥ ११ ॥
वरचित्तज्जित्तकलिए—निम्मलमणिभूमिए सवल्लोचे, पज्जलियरयणदीवयपहागल-
त्थियतिमिरपूरे.—॥ १२ ॥ कयउज्जलसिंगारो—पओससमए य वासजवणे सो, पत्तो
पच्चिवस्सो—आसणाइदाणेण सो तीए. ॥ १३ ॥ एवं तेण समं सा—गमेइ कालं
विसालजोगपरा, पर मचत्तसिणेहा—णिच्चंचिय मूलदेवंमि. ॥ १४ ॥ अक्काजणएण
एसा—न पवेसइ तं नियंमि गेहंमि, खिज्जेइ किंचि चित्ते—णाओ जणणीइ तन्ना-
वो. ॥ १५ ॥ जणिया पुत्ति पवेससु—जो रुच्चइ तुज्झ झूरसि किमेवं ? समए पवे-
सिओ सो, जणिओ अक्कइ तो एवं. ॥ १६ ॥

थीज वश थनारी होवाथी तेणी तेने स्नेह वताव्या साथे मान आपवा लागी. ११ बाद ते सांजे प्रदोषना वखते फक्कड ठावमाव सजी सरस चित्रामणवाळा, निर्मळ काचथी जडेला भोंयतळवाळा, चंदरवायी सजेला, अने काचना जाज्वला-मान दीवानी प्रभाथी अंधाराने दूर राखता वास भुवनमां आवी पहोंच्या, एटले देवदत्ताए तेने आसन वगेरे आपीने आदर आप्यो. १२—१३ आ रीते ते तेना साथे खुब मोज विलास करती काळक्षेप करवा लागी, छतां तेणी दिलमां हमेशां मूळदेवपरज स्नेह राखती. १४ पण अक्काना जयथी तेणी तेने घरमां आववा देती न हती, तेथी दिलमां कांइक दिलगीर रहेती ते वात तेनी माए जाणी लीधी. १५ त्यारे ते अक्का बोली के हे पुत्रि, तने जे रुचे तेने आववा दे, शामाटे आम दिलगीर रहे छे ? आ परथी तेणीए अवसरे मूळदेवने आववा दीधो. हवे मूळदेवने अक्का आ रीते कहेवा लागी. १६

अपात्रे रमते नारी—गिरौ वर्षति माधवः, नीचमाश्रयते लक्ष्मीः—प्राज्ञः प्रायेण निर्धनः (१)

स्त्री अपात्र साथे रमे छे, वरशाद डूंगरमां वधु वर्षे छे, लक्ष्मी नीच पासे जराय छे, अने चालाक माणस प्राये निर्धन रहे छे (१)

पजणेइ देवदत्ता—नाहं लुद्धा धणंमि किंतु गुणे, सो ज गुणो सव्वो च्चिय—निवसइ इह मूलदेवंमि. ॥ १७ ॥ जणिया जणणीए सा—अणेगगुणगणसमस्सिओ अयलो, तत्तो तुह प्पियाओ—सा पजणइ कीरउ परिक्खा. ॥ १८ ॥ तो अयलस्स समीवे—दासी संमेसिया जहा जणसु, तुह वल्लहाइ जायं—उच्छूणं जक्खणे—चोज्जं ॥ १९ ॥ तप्पत्थणाइ सोहग्गियाण मग्गेसरं मुणंतो सो, अप्पाण मणेगाइं—संपेसइ उच्छुसगमाइं. ॥ २० ॥ जणिया जणणीए सा—अचलस्सो दारयं तुमं पिछ, एक्कवयणेण जेणं—महव्वओ एरिसो विहिओ. ॥ २१ ॥ सविसायं सा जासइ—कि महं क-

आ सांजळी देवदत्ताए जवाब वाळ्यो के हुं कंइ धनमां लोभाती नथी पण गुणोमां लुब्ध छुं. ते सघळा गुणो मूळदेवमां रहेला छे. १७ मा वोली के तारा ते प्रिय करतां अचळज वधता गुणवाळो छे. त्यारे देवदत्ता वोली के एनी परीक्षा करो. १८ वाद तेमणे अचळ पासे दासी मोकली अने तेने जलामण करी के तुं कहे जे के तारी वल्लभाने सेलडी खावानो शोख थयो छे. १९ आ मागणी थतां अचेळ पोताने नशीवदारोनो अग्रेसर जाणी सेलडीना गाडां मोकलावी आप्यां. २० मा तेने कहेवा लागी के अचळनी उदारता तुं जो के जेणे एक वोलमां आवडुं मोटुं खर्च कर्युं छे. २१ देवदत्ता दिलगीरी साथ वोली के हुं शुं हाथणी छुं के जेनी आगळ आवा वगर समारेला अने मूळ तथा

रिणी जमेव मुवणेइ, असमारद्धयाउ इमा—समूलमालाउ लट्ठीओ. ॥ २२ ॥ तो ज्ञ-
णसु मूलदेवं—किं काही सोवि ताव मिल्लामो, पहिया चेमी जाणाविओ य,ʹसो जू-
यखलयंमि. ॥ २३ ॥ तत्तो तेण कवड्डे—घेत्तूणं दसु डुगेण तंमज्झ, गहिया दो लट्ठी-
ओ—डुगेण दो अहिनवसरावे.—॥ २४ ॥ सेसेण चाउजायं—तिक्खेण छुरेण ताउ
घम्मिऊण, तह गंमलीकयाओ—सूलासु पोइयाओ य. ॥ २५ ॥ चाउज्जाएणं वासि-
ऊण ठविउं सरावडुगमज्झे, चेमीकहप्पियाओ—काउं संपेसिया तीसे. ॥ २६ ॥
जणणीइ दंसियाओ—पेछसु विन्नाणअंतरं दोण्हं, अकिलेसेणं जक्खव रिहाउ सं-
पेसिया तेण. ॥ २७ ॥ अयवेण पुण महंतो—अत्थवओ कारिओ, नउण मज्झ,
एक्काविं उच्छुलट्ठी—जहो वजुज्जइ तहा विहिया. ॥ २८ ॥ एगंतेणेव गुणे—एसा पे-

माळी पांदमा सहित सांठा मोकलावी दीधा. २२ माटे हवे मूळदेवने कहेवरावो जोइए ते शुं करे छे ? ते जुगारीओना अखाडामां हतो, तेथी दासीने त्यां मोकलावीने तेने जणाव्युं. २३ त्यारे मूळदेवे दश कोडी लइ तेमांथी बे कोडीनां बे सांठा लीधा, बे कोडीना बे नवा शरावला लीधा अने बाकीनी छ कोडीनो एक रुमाल, बाद तीखा चप्पुथी ते छोडी तेनी गंडेरी करी अने तेमां शूळा परोवी. २४ २५ पछी ते गंडेरीने बे शरावला वच्चे मेळी उपर रुमाल ढांकी दासीना हाथे आपी तेणीने मोकलावी. २६ देवदत्ताए ते माने बतावी कह्युं के बेनी हुशियारीनुं अंतर जुवो. एणे वगर महेनते खवाइ शकाय तेवी गंडेरी मोकलावी छे. २७ अचले जो के मोटुं खरच कर्युं छे, तोपण मने एक पण सांठो खप लागे तेम नथी कर्युं. २८ माटे विचार्युं के देवदत्ता एकांते मूळदेवना गुणो-

छेइ मूलदेवस्स, इय सविसाया जणणी—चिंतेउं एव मारद्धा. ॥ २९ ॥ को नाम सो उवाओ—जेण सो निग्गहं लहेज्जाहि, अयवाउ जेण नपुणो—पविसेज्जा मज्झ गेहंमि. ॥ ३० ॥ अह अन्नयासरे अयलसत्थवाहो जणाविओ तीए, कउमेण गामगमणं—करे-तु एज्जाहि संझाए. ॥ ३१ ॥ तेण तहच्चिय विहिए—गमणे तुट्ठाइ देवदत्ताए, गेहंमि मूलदेवो—पवेसिओ जाव अभिरमइ. ॥ ३२ ॥ विज्जुझम्पो व्व तओ—आवडिओ झत्ति अयलसत्थाहो, गिहमज्झे य अइगओ—इयरो सेज्जायले लीणो. ॥ ३३ ॥ णाओ य तेण, भणिया—गणिया, ण्हायव्व मज्झ इत्थेव, सेज्जाए सा पभणइ—निरत्थं किं विणासेसि. ॥ ३४ ॥ मज्झंचेव विणिस्सइ—णउणो तुह किंपि किं विसूरेसि मारद्धो ण्हाणविही—अब्भंगुव्वट्टणाईओ. ॥ ३५ ॥ कलसप-

तेज जुवे छे, तेथी ते दिलगिर थइ आ रीते चिंतववा लागी. २९ कोइ एवो उपाय छे के जे वडे अचळथी मूलदेव हलको पडे के जेथी ते फरीने मारा घरमां पेसेज नहि. ३० हवे एक दिवसे अक्काए अचळ सार्थवाहने कहेवराव्युं के तारे ग्रामांतरे जवानो ढोंग करी सांजे पाछा वळी आववुं ३१ तेणे तेज रीते ग्रामांतरे जवानो ढोंग कर्यो एटले देवदत्ता खुश थइ मूळदेवने घरे बोलावी तेना साथे रमवा लागी ३२ एवामां वीजळीनी झपे अचळ सार्थवाह आवी पहोंने घरमां दाखल थयो, एटले मूळदेव पलंग नीचे भराइ गयो. ३३ पण तेने अचले जोइ लीधो एटले तेणे गणिकाने कह्युं के मारे आज आ शय्या उपरज न्हावुं छे. ते बोली के शय्याने फोगटनी कां बगाडो छो ? ३४ अचल बोल्यो के ए मारीज बगडे छे, तारे तेमां शुं छे माटे कां चिंता करे छे ? बाद तेणे चोपडी अंग मसळाळा वगेरेथी स्नान करवानुं

ओट्टणसमए—पारद्धो चिंतिउं तओ इयरो, ही ही वसणाण वसा—वसणाइं ज-ओ ञ्चनंतेनं. ॥ ३६ ॥

कोर्थान् प्राप्य न गर्वितो विषयिणः कस्यापदोऽस्तंगताः—स्त्रीभिः कस्य न खंडितं भुवि मनः, को नाम राज्ञां प्रियः; कः कालस्य न गोचरांतरगतः कोर्थी गतो गौरवं—कोवा दुर्जनवागुरासु पतितः क्षेमेण यातः पुमान्. (१)

विमज व्व सलिलभिन्नो—निगच्छइ जीव ताव अयलेण, अयलग्गकरेण सिरे—गिण्हिय केसेसु सो भणिओ. ॥ ३७ ॥ किं ते करेमि इण्हिं—जं रूच्चइ तं करेसु सो भणइ, नियडुच्चरियवसाओ—जमहं तुहगोयरे जाओ. ॥ ३८ ॥ वयणपउत्तिं सो तस्स—सोउं सक्खित्तमाणसो भणइ, ही देवपरिणईए—सुयणावि ज मावइं इंति ॥३९॥

शरू कर्युं. ३५ हवे कळश ढोळवाना वखते मूळदेव विचारवा लाग्यो के हाय हाय ! व्यसनोना लीधे आवा संकट थाय छे. ३६ (जे माटे कह्युं छे के)

पैशो मळतां कोण छकतो नथी ? कया व्यसनीने आपदाओ नथी हती ? स्त्रीओए कोनुं मन आ पृथ्वीमां खंड्युं नथी ? राजाने कोण प्रिय होय ? मोतना हाथे कोण नथी सपडातो ? कयो मागण मान पामे छे ? अने कयो माणस दुर्जननी जाळमां पडी क्षेम कुशळ रहे ? १

ते पाणीथी भीजायो थको विटपना माफक त्यांथी बाहेर नीकळयो एवामां अचळ मजबूत हाथे तेना माथाना वाळ पकडीने कह्युं के ३७ हवे तने शुं करूं ते कहे ? मूळदेव बोल्यो के जे तने रूचे ते कर, केमके मारी भूंडी चालना योगे हुं तारे हाथे सपडायो छुं. ३८ तेनी बोलवानी छटा जोइने अचळ अचंबो पामी बोल्यो के नशीबनो खेल छे सुजनो पण संकटमां पडे

नासियनीसेसतमो—जगच्चूडामणिपयं पवन्नो य, पावइ रवीवि वसणं—गहकल्लोला हि कालवसा. ॥ ४० ॥ मज्ज करेज्ज कयाइवि—साहेज्जं जइ वसणपडियस्स, सक्कारिऊण मुक्को—अयलेणं मूलदेवो त्ति. ॥ ४१ ॥ अपत्तपुव्वनिग्गहकलंकलज्जाविलक्खभावेण, विन्नायरूपुरसंमुह—मारद्धो एस अह गंतुं. ॥ ४२ ॥ संबलमेत्तेणवि वज्जिओ य पत्तो महाऽवीइ मुहे, वायासहायगं किंचि—जाव अवलोयए पहियं. ॥ ४३ ॥ लोभभुयंगमडक्को—ढक्को जा एइ सद्धडो नाम, भग्गो मग्गपयट्टो—ससंबलो तेण तो दिट्ठो. ॥ ४४ ॥ एयस्स संबलबलेण—जामि इणिंहं न वंचणं काही मज्झ इमो ते चलिया—परोप्परं विहियसंभासा. ॥ ४५ ॥ पत्तो दिणपहरतिगे—निग्गामपहाइ तीइ अडवीए, कत्थवि सजलपदेसो—विस्सामं काउ मारद्धा. ॥ ४६ ॥ नीहारिऊण

टे. ३९ जुवो सघळा अंधकारने नशाडनार अने जगतनो चूडामणि सूर्य पण काळना योगे केतुथी कष्ट पामे छे. ४० एम कहीने तेणे कह्युं के हे भला आदमी, हुं जो कोइ वेळा कष्टमां पडुं तो तुं मने मदद करजे, एम बोली तेणे तेने सत्कार आपी जवा दीधो. ४१ आ नवासवा निग्रह अने कलंकनी शरमना लीधे मूळदेव विलखो पडी वेणातट नगर तरफ रवाने थयो पण वगर भाते ते मोटी अटवीना पासे आवी चड्यो, तेथी ते रस्ते वातोवडे टेको आपनार कोइ वटेमार्गुनो राह जोवा लाग्यो. ४२ ४३ एवामां लोभरूप सर्पथी डशायलो सद्धडो नामे भाट भातुं लइने रस्ते दोडतो आवतो तेणे दीठो. ४४ मूळदेवे विचार्युं के एना भाताना लीधे हवे अटवीमां चालतां वांधो आवनार नथी. ए कांइ मने दगो नहि देशे, एम धारी तेओ परस्पर वातो करता चालवा मांड्या. ४५ ते गाम अने समझ विनानी अटवीमां त्रीजे पहोरे तेओने पाणीवाळुं स्थळ मळ्युं, त्यां तेओए वीसामो कर्यो. ४६ हवे ते ठगे खरचपाणी करीने दभपुटमां वांधेल साथवो

वइयाइ—सत्तुया तेण पत्तपुडियाए, आवोलिय सलिलेणं—भुत्ता एगागिणा चेव. ॥ ४७ ॥ वायामेत्तेणं पि य—इयरो न निमंतिओ समीवेवि, वट्टंतो निठुरमाणसेण ही किविणचरियाइं. ॥ ४८ ॥ विस्सरियं मिणं नूणं—एयस्स णिमंतणं न तेण कयं, कल्ले दाहिइ इय चिंतिऊण तेणेव सह चलिओ. ॥ ४९ ॥ एवं बीएवि दिहो—न तेण संलासिओ मणागंपि, तो पत्ते तइयदिणे—ते अरुवि मइत्थिया दोवि. ॥ ५० ॥ पत्ते वसिमसमीवे—आसासंपायणेण मम एसो, दूर मुवयारकारि त्ति—चिंतिउं मूलदेवेण.—॥ ५१ ॥ भणिओ भद्द पयट्टसु—नियकज्जे संभलाहि मं जइया, संपत्तरज्ज मेज्जसु—तइया जं देमि ते गामं. ॥ ५२ ॥ दिणपहरङगे गामं—समागओ, तत्थ भिक्खणट्ठाए, करकलियपत्तपुडओ—अकिलिट्ठमणो पविट्ठो सो. ॥ ५३ ॥ कुम्मा-

पाणीमां पलाळीने एकले खावा मांड्यो. ४७ मूलदेव पासे बेठेलो छतां ते कठोर मनवाळाए तेने वचन मात्रथी पण निमंत्रित न कर्यो. कृपणोना आचारने धिक्कार छे ! ४८ मूळदेवे धार्युं के ए निमंत्रणा करतां भूली गयो लागे छे, तेथी तेणे ते नथी करी, तो खेर, काले आपशे एम धारी ते तेना साथे चालतो थयो. ४९ एम बीजे दिवसे पण तेणे तेने लगारे न कह्युं. हवे त्रीजा दिने ते बन्ने अटवी उतर्या. ५० वस्ती पासे आवतां, मूळदेवे विचार्युं के एणे बीजुं कंइ नहि तो मने आशामां राखीने खेंच्यो ए पण उपकार कर्योज छे तेथी तेणे कह्युं के—५१ हे भद्र, हवे भले तुं तारे कामे जा, पण ज्यारे मने राज्य पमेलो सांभळ त्यारे मारी पासे आवजे के जेथी हुं तने एक गाम आपीश. ५२ बपोर थतां मूळदेव गाम पासे आव्यो. त्यां भीख मागवा माटे ते हाथमां पानपुडो लइने शांत मनथी ते गाममां पेठो. ५३ तेने फकत

तांहिं चिय केवलेहि लद्धेहि पूरिओ पुम्ओ, चलिओ तलागतीरे — अच्चंतम-णुस्सुओ सणियं. ॥ ५४ ॥ एत्थंतरंमि मासोववासतववसविसोसियसरीरो, उज्जा-णाओ एंतो—गामाभिमुहो मुणी एगो—॥ ५५ ॥ पारणगकए दिट्ठो—अणेण पप्फुल्ल-लोयणमणेण, तो चिंतिउं पयट्टो—अव्वो मे पुण्णपरिवाडी. ॥ ५६ ॥ चिंतामणीवि लब्भइ—लब्भइ कइयावि कप्परूक्खोवि, भोयणसमए एसो—न लब्भए भागहीणेहिं. ॥ ५७ ॥ इह जं जंमि खणे संपज्जइ दाउ मइमहग्घं तं, ता कुम्मासच्चिय मज्झ नो अन्नं संपयं दाणं. ॥ ५८ ॥ अइबहलपुलयकलिओ—हरिसंसुजलल्ललोयणजुगल्लो, प-भणइ भयवं गेण्हसु—मम करूणं काउ कुम्मासे. ॥ ५९ ॥ मुणिणावि दव्वक्खित्ता-इएहि परियाणिऊण संसुद्धिं, पज्जत्तं ते पत्ते—गहिया महियाभिहाणेण. ॥ ६० ॥

नाफेला अरूदज मळयां. ते वरूे पानपुरूो भरीने ते उतावळो नहि थतां धीमेथी तळावना किनारा तरफ चाल्यो. ५४ एवामां मासखमण तपथी सूकावेला शरीरवाळो एक मुनि उद्यानथी गाम तरफ पारणा माटे आवतो हतो तेने मूळदेवे प्रफुल्लित आंखो अने मनवरूे जोइने चिंतव्युं के मारां पुण्य मोटां छे ! ५५-५६ जे माटे चिंतामणि तथा कल्पवृक्ष हजु मळी शके पण भोजन वेळाए आवा मुनि भाग्यहीनोने नहि मळे. ५७ वळी जे वखते जे वस्तु दइ शकाय एम होय ते अमूल्य छे तो मारे आ अरूदज देवा जोइए. बीजुं कंइ हाल मारी पासे देवानुं छे नहि. ५८ एम विचारी ते भारे रोमांचित थइ हर्षना आंसुओथी बे नेत्रो भींजवी बोल्यो के हे भगवन् मारापर करुणा करी आ अरूद तमे ल्यो. ५९ पूजनीय ना-मवाळा मुनिए पण द्रव्य क्षेत्रादिकथी ते शुद्ध जाणीने जोइये तेटला पात्रमां लीधा. ६० मूळदेव खुश थइने बोल्यो के

धणाणं खु नराणं—कुम्मासा हुंति साहुपारणाए, इय जणइ मूलदेवो—जा परितुट्ठो तओ गयणे—॥ ६१ ॥ मुणिजत्तदेवयाए—मग्ग वरं जणिओ वरेइ तओ, गणियं च देवदत्तं—दंतिसहस्सं च रज्जं च—॥ ६२ ॥ कुम्मासेहिं अवसेसएहि विहियं च जोयणं तेण, अमयमयजोयणेण व—बाढं संपाविओ तित्तिं. ॥ ६३ ॥ वेन्नायडवरनयरं—पओसकालंमि पाविओ तत्थ, देसियसहाइ सुत्तो—पजायसमयंमि पासेइ.—॥ ६४ ॥ पडिपुन्नचंदमंडल—मइधवलपहापहासियदिसोहं, पिज्जंत मप्पणा देसिओवि तं पेच्छए अन्नो. ॥ ६५ ॥ पडिबुद्धा ते जुगवं—हलबोलं उट्ठिओ तओ काउं, अइमंदजागधेओ—तेसिं सो देसियाण पुरो—॥ ६६ ॥ जा पन्नवेइ सुविणयफलं च पुच्छेइ ताव एक्केण, घयगुलसमग्गमंडयलाभो तुज्झ त्ति वाहरियं. ॥ ६७ ॥ पत्तो य बीयदिवसे—गाइज्जं-

साधुना पारणामां अडदो पण जाग्यशाळी जनोज दइ शके छे. एवामां आकाशमां रहेल मुनिजक्त देवी बोली के हे मूलदेव, वर माग. ते सांजळी तेणे देवदत्ता गणिका, हजार हाथी, अने राज्य माग्युं. ६१—६२ हवे बाकी बचेला अडदोथी तेणे जोजन कर्युं, अने जाणे तेणे अमृतनुं जोजन कर्युं होय तेम ते तृप्ति पाम्यो. ६३ ते सांजनां वखते वेणातट नगरमां आव्यो एटले देशिक सत्रा अर्थात वटेमार्गुओनी धर्मशाळामां सूतो. हवे पजातना समये तेणे अतिशय धोळी पजाथी दिशाओने प्रकाशती करतो पूर्ण चंद्र पोते पी गयो होय एम स्वप्नामां जोयुं, अने बीजा एक वटेमार्गुए पण तेमज जोयुं. ६४—६५ तेओ बे समकाळे जागी उठया. तेवामां अतिमंद जाग्यवाळो वटेमार्गु बीजा वटेमार्गुओना आगळ गडबड करवा मांडीने ते वात कहेवा लाग्यो अने ते स्वप्ननुं शुं फळ थशे ते पुछवा लाग्यो एटले एक जणे कह्युं के तने घी गोळ वाळो लाडु मळशे. ६६—६७ बाद बीजा दिवसे कोइ घरपर छाजुं नखातां तेना धणीए आपेलो ते-

तंमि किंचिवि गिहंमि, गिहपहुणा निद्दिठो–संपत्तो मंफ्ओ तेण. ॥ ६८ ॥ अशनि-जणत्तमणमइणाउ—चिंतियं ताव मूलदेवेण, एत्तियफलो म एसो–सुविणो, अवियाणगा एए. ॥ ६९ ॥ अह उग्गयंमि रविमंडलंमि काउं पञायकिच्चाइं, कुसुमन्नरियंजली सो–पत्तो सुविणन्नुयसयासे. ॥ ७० ॥ परिपूजियतच्चरणो–काउण पयाहिणं पणयमउली, वद्धंजली निवेएइ–चंदपाणं सुविणयंमि. ॥ ७१ ॥ तो सुविणपाढएणं–रज्जफलं निच्छिऊण तं सुविणं, लायन्नामयपुन्नं–कन्नं परिणाविओ पढमं. ॥ ७२ ॥ एसो ते रज्जफलो–सत्तदिणब्भंतरे धुवं सुविणो, एवं ति मउलियंजलिपुडेण पडिवन्नमेएण. ॥ ७३ ॥ पत्तो कमेण विन्नायडंमि परिचिंतियं तओ तेण, अच्चंतनिद्धणो हं न्नमामि कह नयरमज्झंमि.॥७४॥ तो रयणीए ईसरगिहंमि एगंमि खणियखत्तो सो, आ-

वोज लाकु ते वटेमार्गुने मल्यो. ६८ हवे मूळदेव अति निपुण बुद्धिवाळो होवाथी चिंतववा लाग्यो के ए स्वप्न एटलाज फळवाळो न होवो जोइए एओ वेखवरा लागे छे. ६९ वाद सूर्य उगता प्रजातकृत्य करी फुलथी अंजलि न्नरीने स्वप्ना जाणनार पासे ते गयो. ७० ते तेना पग पूजी प्रदक्षिणा दइ माथुं नमावी अंजळी जोडी कहेवा लाग्यो के में स्वप्नमां चंद्रने पीधो एम जोयुं छे. ७१ त्यारे स्वप्नपाठके ते स्वप्नने राज्य फळवाळुं जाणीने पहेलां तेने पोतानी लावण्यरूप अमृतथी परिपूर्ण कन्या परणावी. वाद कह्युं के आ स्वप्न तने सात दिनना अंदर राज्य आपशे. ते वात मूळदेवे वांधी अंजळिए कवूल राखी. ७२ ७३ ते हवे वेणातटमां आव्यो. त्यां तेणे चिंतव्युं के हुं आवो अति निर्धन थइ नगरमां शी रीते न्नमुं. ७४ तेथी रात पडतां तेणे एक पैशादारने घेर खातर पाडवा मांड्युं, तेवामां पहेरगीराए तेने पकड्यो,

रक्खिवएहिं गहिओ—बद्धो य निओ य करणंमि. ॥ ७५ ॥ चोरस्स वहो हंमो त्ति —नीइसत्थं सरंतओ मच्चो, तं वज्झ माणवेई—निज्जइ जा वज्झभूमीए— ॥ ७६ ॥ ता चिंतइ किमेयं—सव्वं पुव्वुत्त मलियगं होही, तस्से दयागयपोढपुण्णवसओ पुरे तत्तो—॥ ७७ ॥ उग्गाढसूलवियणो विहुरसरीरो अपुत्तओ मरइ, नरनाहो दिव्वाइं —अहिवासिज्जंति तो पंच. ॥ ७८ ॥ तंवरमो तुरंगो–छत्तं चामरजुगं च तह कलसो, तो देवयाउ अहु ओयरंति एएसु रज्जस्स. ॥ ७९ ॥ मग्गिज्जइ नररयणं—जोग्गं रज्जस्स चच्चराईसु, दिव्वेहि तेहि नयरीइ सव्वओ हिंडमाणेहिं.— ॥ ८० ॥ दिट्ठो य खरारूढो—छित्तरछत्तो सरावमालगलो, रत्तंदणकयराओ—मसिमुद्दयमुद्दियसरीरो— ॥ ८१ ॥ संमुह मेंतो सो मूलदेवतेणो तओ गईंदेण, पारद्धा गलगज्जी—हएण हे-

अने बांधीने दरबारमां आण्यो. ७५ त्यां अमात्ये हुकम कर्यो के नीतिशास्त्रमां कहेलुं छे के चोरने मारी नाखवो एज दंड छे, माटे एने मारी नाखो तेथी तेओ तेने वधभूमिमां लइ जवा लाग्या. ७६ मूळदेव विचारमां पड्यो के पूर्वे बनेला सघळा बनाव शुं जूठा पडशे ? एवामां तेना मोढ पुण्य उदयमां आववाना लीधे ते नगरमां ते वखते त्यांनो राजा आकरा शूळनी वेदनाथी विधुर थइने अपुत्रिओ मरण पाम्यो, एटले (नवो राजा मेळववा माटे) पांच दिव्य तैयार करवामां आव्यां. ७७ ७८ पांच दिव्य ते ए के हाथी, घोडो, छत्र, चामर अने कळश तेमने अधिवासित कर्या एटले झट तेमां राज्यनी देवताओ दाखल थइ. ७९ ते दिव्यो आखी नगरीमां फरीने चोक चोरामांथी राज्य योग्य नरने शोधे छे. ८० ते दिव्योए गधेडापर चडेला छीतळाना छत्रवाळा सरावडानी माळाने गळामां लटकावनार, राता रोगाणथी रंगेलो, मसीथी चीतरेलो, एवो मूळदेव चोर सामे आवतो जोयो. एटले हाथीए त्यां गर्जना करी, अने घोडाए मोटो खोंखारो कर्यो. ८१

तंमि किंचिवि गिहंमि, गिहपहुणा निद्दिठो—संपत्तो मंभओ तेण. ॥ ६८ ॥ असनिजणत्तसणमइणाउ—चिंतियं ताव मूलदेवेण, एत्तियफलो म एसो—सुविणो, अवियाणगा एए. ॥ ६९ ॥ अह उग्गयंमि रविमंडलंमि काउं पभायकिच्चाइं, कुसुमभरियंजली सो—पत्तो सुविणन्नुयसयासे. ॥ ७० ॥ परिपूजियतच्चरणो—काउण पयाहिणं पणयमउली, बद्धंजली निवेएइ—चंदपाणं सुविणयंमि. ॥ ७१ ॥ तो सुविणपाढएणं—रज्जफलं निच्छिऊण तं सुविणं, लायन्नामयपुन्नं—कन्नं परिणाविओ पढमं. ॥ ७२ ॥ एसो ते रज्जफलो—सत्तदिणब्भंतरे धुवं सुविणो, एवं ति मउलियंजलिपुडेण पडिवन्नमेएण. ॥ ७३ ॥ पत्तो कमेण विन्नायडंमि परिचिंतियं तओ तेण, अच्चंतनिद्धणो हं भमामि कह नयरमज्झंमि.॥७४॥ तो रयणीए ईसरगिहंमि एगंमि खणियखत्तो सो, आ-

वेज लागु ते वटेमार्गुने मळ्यो. ६८ हवे मूळदेव अति निपुण बुद्धिवाळो होवाथी चिंतववा लाग्यो के ए स्वप्न एटलाज फळवाळो न होवो जोइए एओ वेखवरा लागे छे. ६९ बाद सूर्य उगता प्रभातकृत्य करी फुलथी अंजलि भरीने स्वप्न जाणनार पासे ते गयो. ७० ते तेना पग पूजी प्रदक्षिणा दइ माथुं नमावी अंजली जोडी कहेवा लाग्यो के में स्वप्नमां चंद्रने पीधो एम जोयुं छे. ७१ त्यारे स्वप्नपाठके ते स्वप्नने राज्य फळवाळुं जाणीने पहेलां तेने पोतानी लावण्यरूप अमृतथी परिपूर्ण कन्या परणावी. बाद कह्युं के आ स्वप्न तने सात दिनना अंदर राज्य आपशे. ते वात मूळदेवे बांधी अंजलिए कबूल राखी. ७२ ७३ ते हवे वेणातटमां आव्यो. त्यां तेणे चिंतव्युं के हुं आवो अति निर्धन थइ नगरमां शी रीते भमुं. ७४ तेथी रात पडतां तेणे एक पैसादारने घेर खातर पाडवा मांड्युं, तेवामां पहेरगीरोए तेने पकड्यो,

रक्खिएहिं गहिओ—बद्धो य निओ य करणंमि. ॥ ७५ ॥ चोरस्स वहो हंमो त्ति—नीइसत्थं सरंतओ मचो, तं वज्झ माणवेई—निज्जइ जा वज्झभूमीए— ॥ ७६ ॥ ता चिंतेइ किमेयं—सव्वं पुव्वुत्त मलियगं होही, तस्से दयागयपोढपुण्णवसओ पुरे तत्तो— ॥ ७७ ॥ उग्गाढसूलवियणो विहुरसरीरो अपुत्तओ मरइ, नरनाहो दिव्वाइं—अहिवासिज्जंति तो पंच. ॥ ७८ ॥ तंवेरमो तुरंगो—छत्तं चामरजुगं च तह कलसो, तो देवयाउ लहु ओयरंति एएसु रज्जस्स. ॥ ७९ ॥ मग्गिज्जइ नररयणं—जोग्गं रज्जस्स चच्चराईसु, दिव्वेहिं तेहिं नयरीइ सव्वओ हिंममाणेहिं.— ॥ ८० ॥ दिट्ठो य खरारूढो—छित्तरछत्तो सरावमालगलो, रत्तंदणकयराओ—मसिमुद्दयमुद्दियसरीरो— ॥ ८१ ॥ संमुह मेंतो सो मूलदेवतेणो तओ गइंदेण, पारद्धा गलगज्जी—हएण हे-

अने बांधीने दरबारमां आएयो. ७५ त्यां अमात्ये हुकम कर्यो के नीतिशास्त्रमां कहेलुं छे के चोरने मारी नाखवो एज दंड छे, माटे एने मारी नाखो तेथी तेओ तेने वधभूमिमां लइ जवा लाग्या. ७६ मूळदेव विचारमां पड्यो के पूर्वे बनेला सघळा बनाव शुं जूठा पडशे ? एवामां तेना मोढ पुण्य उदयमां आववाना लीधे ते नगरमां ते वखते त्यांनो राजा आकरा शूळनी वेदनाथी विधुर थइने अपुत्रिओ मरण पाम्यो, एटले (नवो राजा मेळववा माटे) पांच दिव्य तैयार करवामां आव्यां. ७७ ७८ पांच दिव्य ते ए के हाथी, घोडो, छत्र, चामर अने कळश तेमने अधिवासित कर्या एटले झट तेमां राज्यनी देवताओ दाखल थइ. ७९ ते दिव्यो आखी नगरीमां फरीने चोक चोरामांथी राज्य योग्य नरने शोधे छे. ८० ते दिव्योए गधेडापर चडेला छीतळाना छत्रवाळो सरावलानी माळाने गळामां लटकावनार, राता रोगाणथी रंगेलो, मसीथी चीतरेलो, एवो मूळदेव चोर सामे आवतो जोयो. एटले हाथीए त्यां गर्जना करी, अने घोडाए मोटो खोंखारो कर्यो. ८१

उज्जेणिसामिणा दाणमाणगहिएण विहियपणएण, अब्भत्थिएण बहुहा—समप्पिया देवदत्ता से. ॥ ९४ ॥ विसुयं सद्धम्मट्टेण—मूलदेवो समज्जिणियरज्जो, विन्नायम्मि नयरे—समागओ तत्थ लहुचेव. ॥ ९५ ॥ दिट्ठो राया, दिन्नो पहाणगामो विसज्जिओ तत्तो, मह नयणगोयरे जह—न एहि तह कुणसु इय भणिओ. ॥ ९६ ॥ अह अन्नया कयाइ—उज्जेणीओ धणज्जणनिमित्तं, देसंतरं पवन्नो—अयलो बहुलोयपरियओ. ॥ ९७ ॥ तत्थो वज्जियबहुविहवन्नरियसगडो य दिव्वजोएण, विन्नायडंमि पत्तो—सुंकं पाडेउ मारद्धो. ॥ ९८ ॥ मंजिट्ठाइकयाणंतरेसु गोवियमहग्घबहुरूवो, णाओ सुंकियलोएण—दंसिओ नरवइस्स तओ. ॥९९॥ तो तेण संभमुब्भंतलोयणेणं पलोइओ अयलो, कह एत्थ सत्थवाहो—अव्वो अच्चब्भुयं एयं. ॥ १०० ॥

बाद उज्जेणीना राजाने दानमानथी वश कर्यो एटले ते प्रीति करवा लाग्यो एटले मूळदेव अतिशय प्रार्थना कर्याथी तेणे देवदत्ता मोकलावी आपी. ९४ आणी मेर सद्धम्माटे सांभळ्युं के मूळदेव राज्य पाम्यो छे एटले ते झटपट वेणातट नगरमां आवी पहोच्यो. ९५ तेणे राजा जोयो एटले राजाए तेने मोटुं गाम आपी रवाने कर्यो अने कह्युं के फरीने मारी नजरे तुं आवे नहि तेम करजे. ९६ हवे कोइ एक वेळाए अचळ सार्थवाह धन उपार्जवा खातर बहु परिवार साथे लइने उज्जेणीथी देशांतर नीकळी पड्यो छे. ९७ त्यां घणुं धन कमावी गामा जरी दैवयोगे वेणातटमां आव्यो त्यां तेणे जकात बचाववानी तजवीज करी. ९८ तेणे मोंघी चीजो मजीठ वगेरे करियाणामां छुपावी ते वातनी दाणिओने खबर पडतां तेओए तेने पकडीने राजा पासे खडो कर्यो. ९९ त्यारे राजाए संभ्रम भरेली आंखे तेने जोइ विचार्यु के आ तो अचंबानी वात लागे छे के इहां आ सार्थवाह ते क्यांथी आवी पडयो छे? १००

परियाणेसि महायस—कोहं पम्जिणइ देव केण तुमं, नो नज्जसि सरयससंककंतकि-त्तीजरियजवणो. ॥ १०१ ॥ साहियनियवुत्तंतो—नरनाहो डक्करं करेऊण, सक्कारमस्स समए—तं तुट्ठमणं विसज्जेइ. ॥ १०२ ॥ पत्तो उज्जेणीए—अयलो मिलिओ य बंधवजणस्स, कहिया य मूलदेवेण जा कया तस्स पमिवत्ती. ॥ १०३ अह विन्नायरुनयरे—चोरेण गेण चउरचरिएण, पइदिवसं ईसरमंदिरेसु पाम्जिए खत्तं. ॥ १०४ ॥ दक्खोविय आरक्खियलोओ पयओवि तं न लक्खेइ, नरवइणो तेण निवेइयं च तो देव दीसइ सो. ॥ १०५ ॥ णूण मदिस्सीकरणं—तेणं विहियं सुरो व खयरो वा, सो होज्ज अन्नहा कह—केणावि कहिंपि नो दिट्ठो. ॥ १०६ ॥ तो नीलपमावरणो—पयंमअसिदंमंडियकरग्गो, सयमेव मूलदेवो—पढमपवेसे विणिक्खंतो.

राजाए तेने कह्युं के हे महायश, हुं कोण छुं ते जाणे छे ? ते बोल्यो के हे देव, शरदऋतुना चंद्र जेवी कीर्त्तिथी जगतने भरनार तमोने कोण नहि ओळखे ? १०१ बाद राजाए तेने पोतानो वृत्तांत कही तेनो खूब सत्कार करी अवसरे तेने खुश करी रवाने कर्यो. १०२ तेणे उज्जेणीमां आवी बंधुजनने मळी मूळदेवे तेनो जे सत्कार कर्यो ते तेमने संभळाव्यो १०३ हवे वेणातटनगरमां एक चतुर चोर दररोज पैसादारोना घरोमां खातर पाडतो. १०४ तेने घणा हुशियार चोकीदारो सावध रहेता पण जोइ शक्या नहि एटले तेमणे राजाने चेताव्युं के हे देव, ते नजरमांज नथी चडतो. १०५ राजाए विचार्युं के खरेखर तेणे अदर्शीकरण करेलुं छे, या तो कोइ देव के विद्याधर ते होवा जोइए, नहि तो कोइने पण क्यां पण देखवामां केम नहि आवे ? १०६ बाद ते पोतेज अंधारपछेडो ओढी, हाथमां तीखी तलवार लइ

॥ १०७ ॥ देवउलपवासहासुन्नगेहउज्जाणमाइठाणेसु, जवलक्खुं पारद्धो—बहुएहिं सो उवाएहिं. ॥ १०८ ॥ अह एगाइ पवाए—रयणीए मज्झभागसमयंमि, निब्भरतिमिरभरवसा—निरूद्धदिठ्ठिप्पयारंमि— ॥ १०९ ॥ सुत्तंमि सहालोए—कइयववसओ य मूलदेवो वि, तत्थेव संपयट्टो—सोउं अह आगओ तत्थ. ॥ ११० ॥ मंडियनामा चोरो—सणियं उट्ठाविओ य सो तेण, भणिओ य भद्द को तं—सो भणइ अणाहप्पःहेओ हं. ॥ १११ ॥ मं अणुगच्छसु जेणं—सिद्धी ते होइ वंछियत्थाण, आमं ति भणिय लग्गो—सो राया तस्स मग्गेण. ॥ ११२ ॥ कत्थइ ईसरगेहे—खणियं खत्तं विणिग्गओ तत्थ, अइपउरो घरसारो—दिन्नो रन्नो य खंधंमि. ॥ ११३ ॥ जिण्णुज्जाणब्भंतरदेउलमढमज्झभूमिहरयंमि, नीओ य तत्थ दिट्ठा—तब्भगिणी रूवरयणखाणी. ॥ ११४ ॥ सा मंडिएण भणिया—सोयं चलणाण कुणसु एयस्स, कूवसमी-

पहेलेज पहोरे तेने शोधवा नीकळी पड्यो. १०७ ते तेने देवळ, मपा, सभा, शून्य घर अने उद्यान वगेरे स्थळे अनेक उपायो वडे शोधवा लाग्यो. १०८ हवे मधरातना समये सख्त अंधाराना लीधे आंखेथी कशुं नहि देखातुं त्यारे एक मपामां मुसाफर लोको सुतेला हता कपट करीने मूळदेव पण सुवा लाग्यो. एवामां त्यां ते चोर आव्यो. १०९ ११० ते मंडित नामे चोर हतो. तेणे हळवे रही राजाने जगाडी कयुं के भद्र आदमी, तुं कोण छे? राजाए जवाब दीधो के हुं रांक वटेमार्गु छुं. १११ चोरे कह्युं के तुं मारी पाछळ चाल के तने वांछित अर्थ मळशे. राजा हा पाडीने तेना पाछळ लाग्यो. ११२ ते चोरे कोइक तालेवरना घरे खातर पाड्युं एटले त्यां खूब धन मळ्युं ते राजाना कांधे आप्युं. ११३ बाद ते तेने जूना उद्यानना वच्चे रहेला देवळना मठनी वच्चेना भोंयरामां लइ गयो. त्यां राजाए तेनी रूपनी खाण बेहेन जोइ. ११४ मंडित चोरे बेनने कह्युं के एना पग पखाळ एटले तेणी तेने कूवा पासे ऊभो राखी पग पखाळवा

ये सा तस्स—जाविज्जं फुसइ जा चरणे. ॥ ११५ ॥ कंसाणुमाणजाणियनिवचरणा पयण मागया तंमि, ता जाणावइ तं तह—जह सो तुरियं विणिक्खंतो. ॥ ११६ ॥ जो उण अन्नो सो पायसोयउज्जसेण तत्थ कूवंमि, अस्संतगहीरतले—खिप्पइ तीए गयदयाए. ॥ ११७ ॥ कोलाहले कए एस जाइ इह निग्गओ ममाहिंतो, तो सो खग्गसहाओ—अणुलग्गो मग्गओ तस्स. ॥ ११८ ॥ नाओ य मूलदेवेण—एस जहा एइ तुरियपयचारो, तो नयरच्चरसिवंतरंमि—परिसंठिओ नीओ. ॥ ११९ ॥ रोसावेसल्लमाओ—खग्गेण सिवं विहाभिय कयत्थं, अप्पाणं मन्नंतो—स नियंतो पिठओ झत्ति. ॥ १२० ॥ गयखंधंमि विलग्गो—बीयदिणे जा पुरे भमइ राया, ता कवडविहियपट्टगसंछइयतणू तओ तेणो—॥ १२१ ॥ दिट्ठो रन्ना कंथाइ सेवणं चच्चरे कुणेमाणो, वि-

लागी. ११५ तेना सुकुमाळ पगने फरस्याथी तेणीए जाणी लीधुं के आ तो राजाना पग छे एटले तेणीए तेनापर मोहित थइ तेने एवुं जणाव्युं के ते त्यांथी जल्दी नासवा मांडशे. बाकी बीजो कोइ होत ता तेने ते दयाहीन स्त्री पग पखाळवाना मिषे अतिऊंडा कूवामां धकेली आपती. ११६—११७ पाछळथी तेणीए बूमो पाडी के आ तो मारी पासेथी नाशीने चाल्यो जाय छे त्यारे ते चोर तरवार लइ तेना पाछळ लाग्यो. ११८ ते दोड्यो आवतो हतो तने मूळदेवे जाणी लीधो एटले ते नगरना चोरामां स्थापेला शिवलिंगना नीचे वीकना लीधे भराइ गयो. तेवामां ते चोर गुस्साना जोरथी तरवारवडे शिवने फोडी पोताने कृतार्थ मानीने झट पाछो वळ्यो. ११९—१२० बीजा दिने राजा हाथीपर चडी नगरमां फरवा लाग्यो के तेणे कपडथी पाटा बांधीने शरीरने ढांकी राखनार ते चोरने चोरापर कंथा सीवता जोयो एटले तरत ओळखी करीने तेने पोताना घेर तेडी आण्यो. १२१ १२२ पछी राते वीतेली वात कही एटले वेना मन मळ्यां. बाद अति

ज्झाओ तक्खणमेव–तो य जवणं लद्धुं नीओ. ॥ १२२ ॥ निसिववहारो पयडीकओ य मिल्लियाइं दोण्हवि मणाइं, ठविओ पयंमि अइनिउणबुद्धिणा मूलदेवेण. ॥१२३॥ जणिओ जइणिं मम देहि–तेण दिन्ना सगउरवं तस्स, एवं वच्चइ कालो–तीइ समं विसयसत्तस्स. ॥ १२४ ॥ विन्नायजवणसारेण–राइणा तेण तेणु वाएण, संपाडिय-विस्सासो–कओ य उवजुत्तसव्वस्सो. ॥ १२५ ॥ सरिउं पुव्ववराहे–तहाविहं पावि-उं छलं किंचि, सूलासिरंमि आरोविऊण पंचत्तणं नीओ. ॥ १२६ ॥ एत्थ विसेसो-वणओ –एसो दंसिज्जए जहा राया, तह एस धम्मियजणो–जह सो चोरो तहय दे-हो. ॥ १२७ ॥ जह तस्स धणुवओगो–विहिओ विविहेहि तेणु वाएहिं, तह देहाउ इमाओ–कज्जो सामत्थउवओगो. ॥ १२८ ॥ जह सो तेणो तेणं–धणरहिओ एस इइ मुणेऊणं, आरोविय सूलाए–पुव्विल्लवराहदोसेण—॥ १२९ ॥ नीओ जीविय-

निपुण बुद्धिवाळा मूळदेवे तेने कोइक हुद्दा उपर स्थाप्यो. १२३ हवे राजाए तेने कह्युं के तारी बेन तुं मने आप, एटले तेणे मान साथे ते तेने परणावी एटले तेणीना साथे मोज करतो रही राजा वखत पसार करवा लाग्यो. १२४ राजाने तेनी मालमिलकतनी खबर होवाथी तेणे ते ते उपायोथी तेने विश्वासमां लइने तेनी तमाम मिल्कत पोताना कबजे करी. १२५ बाद राजाए प्रथमना अपराध याद करी कोइ छल पामीने तेने शूळीपर चडावी मरावी नाख्यो १२६ इहां विशेष उपनय ए बतावानो छे के जेम राजा तेम इहां धर्मी जीव जाणवो अने जेम ते चोर तेम आ शरीर समजवुं. १२७ राजाए जेम ते चोरनुं विविध उपायोथी लइ लीधुं तेम आ शरीरना बळनो उपयोग लेता रहेवुं. १२८ हवे ते चोर धनरहित थयो छे एम जाणी राजाए जेम तेने पूर्वना अपराधना कारणे शूळीपर चडावी मरावी नाख्यो. १२९ तेम आ देहने पण

पज्जंत—मेस देहोवि कीणसामत्थो, सूलासमाणअणसणविहिणा अंतंमि मोत्तव्वो.

॥ १३० ॥ इति.

ज्यारे वळ घटी जाय त्यारे शूळी समान अणसणनी विधिथी अंते छोडी देवुं. १३०

(आ कथामां त्रण प्रस्ताविक श्लोको छे ते संख्यामां साथे लीधा होय तो १३३ गाथाओ थाय छे.)

अथ गाथाक्षरार्थः

स्वप्ने इति द्वारपरामर्शः—चंद्रग्रसने स्वप्ने इव चंद्रपानलक्षणे सति मंडकराज्ये उक्तरूपे संपन्ने द्वयोर्देशिकमूलदेवयोः,—कुत इत्याह—वीणणओ त्ति स्वप्नफलव्यंजनात् कार्पटिकफलस्वप्नपाठककृतात्. ततो देशिकेन ज्ञातव्यंजनप्रस्तुतस्वप्ने राज्यफलेवबुध्वेनुतापः पश्चात्तापः कृतः, सुविणे इति ततः पुनरपि प्रस्तुतस्वप्नलाभाय स्वप्ने शयने प्रक्रांते सति तल्लाभसमं प्रस्तुतस्वप्नलाभसदृशं—खुरवधारणे—मनुजत्वं प्रस्तुतमिति.

हवे संग्रह गाथानो अक्षरार्थ कहे छे.

स्वप्नमां एटले चंद्रपानरूप स्वप्न आवतां देशिक (वटेमार्गु) अने मुळदेवने ए बन्नेने पूर्व बताव्या प्रमाणे लाडु अने राज्य मळयां. शाथी एम थयुं ते कहे छे—स्वप्ननुं फळ प्रकाश करवाथी अर्थात् कापडीए कहेला अने स्वप्न पाठके कहेला तेना फळ प्रमाणे तेम बन्युं. त्यारे वटेमार्गुए आ स्वप्नने शी रीते प्रकाशवुं ते जाणीने तेनाथी राज्यफळ मळे ते समजी पश्चात्ताप कर्यो. बाद फरीने तेवुं स्वप्न मेळववा तेणे शयन करवा मांड्यु तेमां तेने ते स्वप्न मळे तेना जेवुंज आ मनुष्यपणुं छे.

अथ सप्तमदृष्टांतसंग्रहगाथा.

चक्केणवि कन्नाहरण—अफिट्टियमत्थिगहचक्कनालाहे, अन्नत्थ णट्टतब्भेदणोवमो मणुयलंभो त्ति. ॥ १२ ॥

हवे सातमा दृष्टांतनी संग्रहगाथा कहे छे.

चक्रवेधवमे कन्या हरतां अरूग आंखे चक्रनाळ नीचे रहीने लक्ष्यनुं ग्रहण कर्युं (तेणे राधावेध कर्यो) पण बीजाओना बाण अन्य बाजु गया माटे ओ पुतळीनी आंख छेदवा सरखुं मनुष्यपणुं छे. १२

टीका.

इंदपुरे इव रम्मे—इंदपुरवरंमि आसि नरनाहो, नामेण इंददत्तो—इंदो इव विबुहमहणिज्जो. ॥ १ ॥ सिरिमालिपमुहपुत्ता—बावीस मणंमाचंगरूवधरा, बावीसाए देवीण—मत्तया तस्सय अहेसि. ॥ २ ॥ एगंमिय पत्थावे—अमच्चधूया रइव्व पचक्खा, दिट्ठा तेणं—कीलंती विविहकीलाहिं. ॥ ३ ॥ ता पुच्छिओ परियणो—कस्सेसा तेण जंमियं देव, मंतिसुया अह रण्णा—तडुवरिसंजायरागेण—॥ ४ ॥ विवि-

टीका.

इंद्रपुरी जेवा रम्य इंदोरनगरमां इंद्र माफक विबुध लोकोने पूजनीय इंद्रदत्त-नामे राजा हतो. १ तेनी बावीस राणीओना श्रीमाळि वगेरे कामदेव जेवा रूपवंत बावीश पुत्रो हता. २ ते राजाए एकवेळा पोताना घेर आंवली प्रत्यक्ष रति जेवी अमात्यनी पुत्री अनेक रमतोथी रमती जोइ. ३ तेणे परिजनने पूछयुं के आ कोन। पुत्री छे ? तेमणे कह्युं के हजूर, ओ आपणा मंत्रिनी पुत्री छे. हवे राजाओ तेनापर मोहित थइने मंत्रि पासेथी अनेक प्रकारे मागणी करी पोते

रूपयारेहिं मग्गिऊण मंति सयं समुव्वूढा, परिणयणाणंतरमवि—खित्ता अंतेउरे सा उ. ॥ ५ ॥ अन्नन्नयवररामापसंगवासंगओ य नरवइणा, विस्सुमरिया चिरेणय—दट्ठुं ओलोयणगयं तं—॥ ६ ॥ जंपिय मणेण ससहरसरिच्छपसरंतकंतिपब्भारा, का एसा कमलच्छी—लच्छी विव सुंदरा जुवई. ॥ ७ ॥ कंचुइणा संलत्तं—सा एसा देव मंतिणो धूया, जा परिणिऊण मुक्का—तुम्मेहिं पुव्वकालंमि. ॥ ८ ॥ एवं जणिए राया—तीइसमं तं निसीहिणिं वुत्थो, तउ एहाय त्ति तहच्चिय—पाउब्भूओ य से गब्भो. ॥ ९ ॥ अह सा पुव्व ममच्चेण—आसि जणिया जया तुहं पुत्ति, पाउब्भवेज्ज गब्भो—जंय नरिंदो समुल्लवइ—॥ १० ॥ तं साहेज्जमु तइया—तहत्ति तीएवि सव्ववुत्तंतो, सिट्ठी पिउणो, तेणावि—भुजखंमंमि लिहिओ सो. ॥ ११ ॥ पच्चयक-

परणीने तरतज तेने अंतःपुरमां मोकलावी दीधी. ४ ५ बाद ते राजाए जूदी जूदी राणीओनी सोबतमां गुंथायलो रहीने तेने वीसारी मेली. हवे लांबा वखते ते तेनी नजर पडतां तेणे पूछा करी के आ चंद्र सरखी कांतिवाळी कमळ जेवी आंखवाळी, अने लक्ष्मीना जेवी सुंदर कोण स्त्री छे? ६ ७ त्यारे कंचुकिए कह्युं के हजूर ए तमे पूर्वे परणीने मोकलावेली मंत्रिपुत्री छे. ८ एम सांभळी राजा ते रात तेनी साथे रह्यो, अने ते न्हाएली होवाथी तरतज तेने गर्भ रह्यो. ९ हवे तेणीने अमात्ये प्रथम कहेलुं हतुं के पुत्रि ज्यारे गर्भ रहे त्यारे राजा जे कंइ बोल्यो होय ते तेज वखते मने कहेजे. ते रीते तेणीए सघळी हकीकत पिताने कही [illegible] पण ते भोजपत्रमां लखी राखी. १०—११

उब्भवियविचित्तधयनिवहा. ॥ २६ ॥ अह आगयाइ तीए—दवाविओ सोहणो य आवासो, भोयणदाणप्पमुहा—विहिया गुरु उचियपडिवत्ती. ॥ २७ ॥ विन्नत्तो तीइ निवो—राहं जो विंधिही सुओ तुज्झ, सोच्चिय मं परिणेहि—एत्तोच्चिय आगयाह मि-ह. ॥ २८ ॥ रन्ना भणियं, मा सुयणु—एत्तिएणावि तं किलिस्सिहसि, एक्केक्कपहाण-गुणा—सव्वेवि सुया जओ मज्झ. ॥ २९ ॥ उचियपएसे य तओ—सव्वेयरभमिरचक्क-पंतिल्लो, सिरिरइयपुत्तिगो लहु—महं पइट्ठाविओ थंभो. ॥३०॥ अक्खाडओ य रइ-ओ—बद्धा मंचा कया य उल्लोया, हरिसुल्लसंतगत्तो—आसीणो तत्थ नरनाहो. ॥ ३१ ॥ उवविट्ठो नयरिजणो—आहूया राइणा निययपुत्ता, वरमालं घेत्तूणं—समागया सावि रायसुया. ॥ ३२ ॥ अह सव्वपुत्तजेट्ठो—सिरिमाली राइणा इमं वुत्तो, हे वच्छ, मणो-

तेणीने आवती सांभळी इंद्रराजाए खुश थइने पोतानी नगरीने अनेक धजाओथी सणगारी दीधी. २६ तेणी त्यां आवी के तेने सुंदर उतारो अपाव्यो अने खानपान वगेरेनी भारे सरस गोठवण करी. २७ तेणीए राजाने जणाव्युं के तमारोज पुत्र राधावेध करशे तेनेज हुं परणीश ते खातरज हुं इंहां आवी छुं. २८ राजाए कह्युं—हे सुतनु, शामाटे तुं एटली तस्ती ले छे ? केमके मारा सर्व पुत्रो एकएकथी अधिक गुणवान् छे. २९ बाद तरतमां योग्य स्थळे सवळा अवळा भमता चक्रोवाळु अने शोभिती पूतळीवाळु महोटुं स्तंभ उभुं करवामां आव्युं. ३० तेने फरतो अखाडो बंधाव्यो तेमां खुरसीओ गोठवी उपर छत्र बांधवामां आव्युं. त्यां हर्षथी उल्लसित थइ राजा आवीने बेठो. ३१ तेना आसपास नगरजनो बेठा राजाए पोताना पुत्रोने त्यां बोलाव्या, अने ते राजकुवरी पण वरमाळा लइ त्यां आवी पहोंची. ३२

वंत्रिय–मवंझ मेत्तो कुणसु मज्झ. ॥ ३३ ॥ धवणेसु नियकुलं परम–मुन्नइं नेसु रज्ज, मणवज्जे, जिएहहि जयपडागं–सत्तूणं विप्पियं कुणसु. ॥ ३४ ॥ एवं रायसिरिंपिव–पच्चक्खं निव्वुइं नरिंदसुयं, परिणेसु कुसलयाए–राहावेहं लहुं काउं. ॥ ३५ ॥ एवंच वोत्तुसो रायपुत्त–संजायओहु निन्नट्ठसोहु, पस्सेयकिम्नु अइचित्तसुन्नु–दीणाणणच्छु पगलंतकच्छु,–॥ ३६ ॥ विन्नायगत्तु नयलच्छिय-तु–अन्नायमाणु विहलाभिमाणु, हेट्ठउ नियंतु पोरिसु मुयंतु–थिउ थंभिउव्व दढजंतिउ व्व. ॥ ३७ ॥ पुणरवि भणिओ रन्ना–संपोहं वज्जिऊण हे पुत्त, कुणसु समीहिय मत्थं–कित्तियमेत्तं इमं तुज्झ. ॥ ३८ ॥ संखोहं पुत्त कुणंति–ते परं जे कलासु न वियड्ढा, तुम्हारिसाण स कहं–अकलंककलागुणनिहाण. ॥ ३९ ॥ इय संलत्तो धिट्ठिम—मवलंबिय सो मणाग म-

हवे सौथी मोटा पुत्र श्रीमालिने राजाए कह्युं के हे वत्स, अहीं तुं मारुं मनवंछित सफळ करजे. ३३ आपणा कुळने अजवाळ, आ नला राज्यनी पूरी उन्नति कर, जयपताका उपाड, अने शत्रुओने नाराज कर. ३४ अने एम करीने राज्यश्रीनी साथे प्रत्यक्ष आनंदनी मूर्त्ति जेवी आ राजपुत्रीने चालाकीथी झट वारमां राधावेध करीने परण. ३५ आम कहेतां ते राजकुमार गभराटमां पड्यो, तेनी छटा उतरी गइ, ते पसीनाथी भींजाइ गया, तेनुं मन शून्युं थइ गयुं, तेनुं मुख अने आंखो झांखा पडी गयां, तेनी वगडो झरवा मांडी, तेना शरीरनी कांति जतो रही, ते न्याय नीतिनी हठा नृत्ती जवा लाग्यो, ते लजामणो थइ पड्यो, तेनुं अभिमान ऊतरी गयुं, ते नीचे जोवा लाग्यो, ते हिम्मत हारी गयो, अने ते थंभायो होय के खूब जकडी लीधो होय तेम ऊभो रही गयो. ३६ ३७ त्यारे राजाए फरीने तेने कह्युं के हे पुत्र, तुं गभराट मेलीने धारेलुं पार पाड, तने आ ते शा हिसाबमां छे? वत्स, गभराय तो ते के जे कळाओमां काचा होय, माटे हे कळानिधान, तारा जेवाने गभराट शानो? ३८ ३९ एम कह्याथी ते अजाए छतां जराक धीठाइ पकडीने,

वियड्ढो, कहकहवि धणुं गेह्णइ—पकंपिरेणं करग्गेणं. ॥ ४० ॥ सव्वसरीरायासेण —कहवि आसेविऊण कोदंडं, जत्थव तत्थव वच्चउ—मुक्को सिरिमालिणा बाणो. ॥ ४१ ॥ थंभे आभिट्टित्ता—झत्ति सो भंग सुवगओ, तयणु लोगो कयतुमुलरवो—निहुयं हसिउं समाढत्तो. ॥ ४२ ॥ एवं सेसेहिवि नरवइस्स पुत्तेहि कज्जविउत्तेहिं, जहतह मुक्का बाणा—न कज्जसिद्धी परं जाया. ॥ ४३ ॥ लज्जामिलंतनयणो—वज्जासणिताडिउव्व नरनाहो, विछायमुहो विमणो—सोगं काउं समाढत्तो. ॥ ४४ ॥ भणिओ य अमच्चेणं—देव विमुंचसु विसाय मन्नोवि—अत्थि सुओ तुम्हाणं—ता तंपि परिक्खह इयाणिं. ॥ ४५ ॥ रण्णा भणियं को पुण—समप्पियं मंतिणा तओ भुज्जं, तं वाइऊण रण्णा—पयंपियं होउ तेणावि. ॥ ४६ ॥ अच्चंतपाढिएहि—इमेहि

धूजते हाथे जेम तेम करी धनुष्य ऊंचकवा लाग्यो. ४० तेणे सघळा जोरथी तेनापर बाण चमाव्युं (अने धार्युं के) हवे ए गमे त्यां जाओ, एम धारीने श्रीमाळिए त्यां बाण फेंक्यो. ४१ ते बाण स्तंभमां अथडाइने तरतइने भांगी गयो. ते जोइ लोको घोंघाट मचावी खूब हसवा लाग्या. ४२ एम ते राजाना कळाहीन बीजा पुत्रोए पण जेम तेम करी बाणो मूक्या, पण कार्य सिद्धि न थइ. ४३ त्यारे राजा लाजथी आंखो मींचवा लाग्यो अने जाणे तेनापर वीजळी पडी होय तेम ते झांखो अने उदास थइ शोक करवा लाग्यो. ४४ एवामां अमात्ये तेने कह्युं के महाराज, दिलगीरी मेलो, हजु बीजो एक तमारो पुत्र छे, माटे तेनी पण हवे परीक्षा करो. ४५ राजा बोल्यो के ते वळी कोण? त्यारे मंत्रिए तेने भोजपत्र सोंप्युं, तेने वांचीने राजाए कह्युं के तेने पण लावो. ४६ पण आ खूब भणावेला कुंमारोए जे कर्युं छे तेज ते करशे. मा

पावेहि जं समायरियं, सोविहु त मायरिस्सइ——धी धी एवंविहसुएहि ! ॥ ४७ ॥ जइपुग तुइ निब्बंधो——विन्नासिज्जउ तया सुओ सोवि, तो मंतिणो वणीओ——सुरिंददत्तो सउज्झाओ. ॥ ४८ ॥ अह तं नूमीवइणा——विचित्तपहरणपरिस्समकिणंकं, उच्छंगे विणिवेसिय——मयंपियं जायतोसेण. ॥ ४९ ॥ पूरेसु तुमं मम वछ——वंछियं विंधिऊण राहं च, परिणेसु निव्वुइं रायकण्णगं अज्जिणसु रज्जं. ॥ ५० ॥ ताहे सुरेंददत्तो——नरनाहं नियगुरुं च नमिऊण, आलीढठाण ठिओ——धीरो धणुदंड मादाय——॥ ५१ ॥ निम्मलतेल्लाऊरियकुंडयसंकंतचक्कगणछिद्दं, पेहंतो अवरेहिं——हीलिज्जंतोवि कुमरेहिं. ॥ ५२ ॥ अग्गियपमुहेहिं——रोज्झिज्जंतोवि तेहि चेडेहिं, गुरुणा निरूविएहिं——पासठिएहिं च पुरिसेहिं.——॥ ५३ ॥ आयट्टियखग्गेहिं——जइ चुक्कसि ताव

एवा पुत्रोवडे धिक्कार छे. ४७ पण तारो आग्रह छे तो ते पुत्रनो पारखो ल्यो. त्यारे मंत्रिए उपाध्याय सहित सुरेंद्रदत्तने त्यां आण्यो. ४८ हवे अनेक हथियार वापरवाथी पडेली गांसोटवाळा ते कुमारने राजाए खोळामां बेसारीने खुशी थइने कहुं के:——४९ दीकरा, तुं मारुं वंछित पूरुं पाड, अने राधावेध करीने आ निर्वृति नामनी कन्याने परण एटले राज्य तने मळशे. ५० त्यारे सुरेंद्रदत्त राजाने तथा गुरुने नमीने आळीढासने रही हिम्मत साथे धनुष्य उपाडी निर्मळ तेलथी भरेला कुंडमां प्रतिबिंबित थएला चक्रोना छिद्रने जोतो रही, बीजा कुमारोना मश्करी करतां वच्चे बाण फेंकवा लाग्यो. ५१ ५२ तेने अग्गिक वगेरे गोळा हेरान करता रह्या, अने गुरुए तेना पडखे नागी तरवारवाळा बे माणसो उभा राख्या. तेओ वारंवार तर्जना करवा लाग्या के जो तुं चूकशो तो तने मारी नाखशुं, ते छतां तेणे लक्ष्य तरफ नजर राखी महामुनिनी माफक एकाग्र मन धरी चक्रोनुं छिद्र जोइ झट दइने ते बाणवडे राधाने वींधी. ५३ ५४ ५५ राधा वींधाइ के निर्वृतिए तेना ग

तं हणिस्सामो, इइ जंमिरेहि दोहिं—तज्जिंतोवि पुणरुत्तं—॥ ५४ ॥ लक्खुम्मुहकयचक्खू—एगग्गमणो महामुणिंदो व्व, उवलद्धचक्कविवरो—राहं विंधइ सरेण लहुं. ॥ ५५ ॥ विद्धाइ तीइ खित्ता—वरमाला निव्वुईइ से कंठे, आणंदिओ नरिंदो—जयजयसद्दो समुच्छलिओ. ॥५६॥ विहिओ वीवाहमहो—दिन्नं रज्जं च से महीवइणा, जह तेण चक्कछिद्दं—लद्धं, णहु सेसकुमरेहिं.—॥ ५७ ॥ तह कोइ पुन्नपब्भारभारिओ माणुसत्तणं लहइ, एयं अणोरपारं—भवकंतारं परिब्भमंतो. ॥ ५८ ॥

ठे वरमाळा नाखी. राजा खुश खुश थयो, अने लोकोमां जयजय शब्द ऊछळी रह्यो. ५६ तेनो विवाह महोत्सव करीने राजाए तेने राज्य दीधुं. हवे जेम तेणे चक्रोनुं छिद्र मेळव्युं पण बीजाओने ते नहि जड्युं, तेम कोइ पुण्यना भारभारवाळो आ अपार भवकांतारमां भटकतां मनुष्यपणुं पामे छे. ५७ ५८

अथ गाथाक्षरार्थः

चक्रेणाप्युपलक्षिते कन्याहरणे निर्वृतिसंज्ञराजकन्यकादृष्टांते—राधावेधे प्रक्रांते सतीत्यर्थः, अफिम्मियमच्छि त्ति—अस्फिटितेन लक्ष्यादन्यत्राव्याक्षिप्तेन अक्ष्णा दृष्ट्या ग्रहोवधारणं चक्राष्टकोपरिव्यवस्थितराधासंज्ञयंत्रपुत्रिकावामाक्षिलक्षणस्य लक्ष्यस्येति गम्यते, चक्रनालाहिं ति चक्रनालस्य चक्राधारस्तंभस्याधःस्थितेन सुरेन्द्रदत्तेन कृतः—तदनु सज्जितशरेण तत्क्षणमेव राधा विद्धेति सामर्थ्यात् गम्यते.

हवे संग्रहगाथानो अक्षरार्थ करे छे:—

चक्रथी जाणीता कन्याहरणमां एटले के निर्वृत्ति नामनी राजकन्याना दृष्टांतमां राधावेध करतां, अणफोटेली आंख एटले के लक्ष्यथी बीजे नहि खचेली नजरे आठ चक्रोना उपर रहेली राधा नामनी कळवाळी पूतळीनी डावी आंख रूप लक्ष्यनुं ग्रहण, चक्रोना नीचे रहेला स्तंभना नीचे रहेला सुरेंद्रदत्ते कर्युं. अने त्यारकेडे बाण सज्ज करीने तरतज ते णे राधा वींधी एटली विना तो सामर्थ्य परथीज जणाइ रहे छे.

अन्येषां तु द्वाविंशतेः श्रीमालिप्रभृतीनामशिक्षितहस्तत्वेनालब्धराधावेधच्छिद्राणां—अन्नत्थनट्टत्तिअन्यत्र लक्ष्याद्बहिस्तान्नष्टाः ततःप्रस्तुते किमायातमित्याह—तच्छेदनोपमो राधावेधाक्षिच्छेदोपमानो दुराप इत्यर्थः—मनुजलंभो मानुष्यप्राप्तिः, इतिशब्दो गाथापरिसमाप्त्यर्थः

पण बीजा श्रीमालि वगेरे बावीश राजकुमारो अणकेळवायला हाथवाळा होवाथी राधावेध करवानुं छिद्र मेळवी शक्या नहि. तेथी तेमना बाणो लक्ष्यथी जना रह्या. वारु एथी प्रस्तुत वातमां शुं आव्युं ते कहे छे:— ते राधानी आंख वींधवा सरखी मनुष्य जन्मनी प्राप्ति थवी दुर्लभ छे. इति शब्द गाथानी परिसमाप्ति माटे छे.

अथाष्टमदृष्टांतसंग्रहगाथा.—

चम्मावणद्धदहमज्झछिड्डुडलिगीवचंदपासणया, अन्नत्थवुड्डणगवेसणोवमोमणुयलंभो उ. ॥ १३ ॥

हवे आठमा दृष्टांतनी संग्रहगाथा कहे छे:—

चामडा जेवा सेवाळथी ढंकायला द्रह वच्चे रहेला छिद्रमांथी काचबीए पोतानी डोक बहार कहाडीने चंद्र दीठा बाद बीजा स्थळे डूबीने ते ते छिद्रने शोधवा मांड्यो, तेना सरखो आ मनुष्य जन्मनी प्राप्ति छे. तुं शब्द गाथा पूरवा अर्थे छे. १३

(टीका)

किल कत्थइ वणगहणो—अणेगजोयणसहस्सवित्थिन्नो, आसि दहो अइग-
हिरो—अणेगजलधरकुलाइन्नो—॥ १ ॥ अइबहलनिविमसेवालपडलसंछाइउवरिमज्ञागो,
माहिसचम्मेण व सो—अवणद्धो जाइ सव्वत्तो. ॥२॥ केणवि कालवसेणं—चलुलग्गी
वो कुवी—परिज्ञमंतो, संपत्तो उवरितले—गीवा य पसारिया तेण. ॥ ३ ॥ सेवालपमल
छिद्दं—अह समए तंमि तत्थ संजायं, दिट्ठो जेणमयंको—पमिपुणो कोमुइनिसाए. ॥४॥
जोइसचक्काणुगओ—निरब्जगयणस्स मज्जज्ञागंमि, खीरमहोयहिलहरीसमजोण्हा-
ण्हावियदिसोहो. ॥ ५ ॥ आणंदपूरियद्धो—तो चिंतइ कच्चवो किमेयं ति, किं नाम
एस सग्गो—किंवा अच्चब्जुयं किंचि. ॥ ६ ॥ किं सम एगस्स पलोइएण दंसेमि स-

टीका.

धारो के कोइ गीच वनमां अनेक हजार योजन लांबो पहोळो अने अनेक जळचरोथी ज्ञरेलो अति ऊंमो द्रह हतो. १ ते उपरथी अति घणा घाटा सेवाळना पमथी ढंकायलो होवाथी जाणे चामरथी जेशना चामडे ढांक्यो होय तेम लागतो हतो. २ त्यां एक चंचळ मोकवाळो काचवो फरतो फरतो काळयोगे उपर आवी मोक पसारवा लाग्यो. ३ हवे ते वखते त्यां सेवाळना पममां एक छिद्र पाम्युं, तेथी ते काचवाए अजवाळी रात होवाथी पूनमनो चंद्र जोयो. ४ ते चंद्र ज्योतिषचक्रथी वींटायलो हतो अने चोखा आकाशना मध्यज्ञागमां रहेलो हतो ते क्षीर समुद्रना लेहेरो जेवी चंद्रिकावमे सघळी दिशाओने जाणे न्हवरावतो होय तेवो लागतो हतो. ५ त्यारे काचवो आनंदथी आंखो ज्ञरीने चिंतववां लाग्यो के आ शुं छे? शुं वारु ए स्वर्ग छे के बीजुं कंइ अद्भुत छे? ६ पण हुं एकलो जोउं ते शा कामनुं माटे स

यणलोगस्स, इय चिंतिय निब्बुड्डो—तेसिं अन्नेसणनिमित्तं. ॥ ७ ॥ आणीयसयलस-यणो—जाव पलोएइ तं किल पएसं, नो पासइ वाउवसेण—पूरियं तत्थ तं छिद्दं ॥ ८ ॥ पत्तेवि कोमुई तंमि—दुल्लहा ससहरो व नहमज्झे, अन्नकओवद्दववज्जिओ य जह दुल्लहं एयं.—॥ ए ॥ तह संसारमहद्दहमज्झे वुड्डाण सयलजंतूण, पुणरवि माणुसजम्मो—अइदुल्लहो पुण्णहीणाण. ॥ १० ॥ ७,

गाथाओने बतावुं एम चिंतवी तेमने शोधी आणवा तेणे डुबकी मारी. ७ हवे ते जेवो सघळा सगाओने तेडीने त्यां जोवा आव्यो. तेवामां वायराथी ते छिद्र ढंकाइ जवाथी ते क्यां पण देखायुं नहि. ८ कदि छिद्र कोइ वेळा मळे तो अजवाळी रात मळवी दुर्लभ, तेमज वादळनी नडतर विनानो चंद्र मळवो दुर्लभ ए रीतेज आ संसाररूप द्रहमां बूडेला सघळा पुण्यहीन जीवोने फरीने मनुष्य जन्म मळवुं अति दुर्लभ छे. ए १० ॥

अथ गाथाक्षरार्थः

अतिबहलत्वनिबिडत्वाभ्यां चर्मेव चर्म सेवालसंचयः—तेनावनद्धः सर्वथाछादितो यो ह्रदस्तस्यमध्ये यत् कथंचित् तुछप्रमाणं छिद्रं संजातं—तेन विनिर्गतया कुलेःकछपस्य ग्रीवया गलदेशेन—चंद्रस्य नभोमध्यभागभाजो मृगांकस्य—पासणय त्ति—लोचनाभ्यां कदाचिद्विलोकनमभूत्. ततस्तेन स्वकुटुंबप्रतिबद्धविमंबितेन ग्रीवामवकृष्य—अन्नत्थवुड्डणत्ति अन्यत्र तत्स्थानपरिहारात् स्थानांतरे ब्रुडनेन निमज्ज-

नेन कथंचित् कुटुंबस्य मीलने कृते—गवेसणोवमित्ति या गवेषणा प्रागुपलब्धरंध्रस्य—तदुपमस्तत्तुल्यो दुर्लभतया मनुष्यलाभो मनुष्यजन्मप्राप्तिः, तुः पूरणार्थः

हवे संग्रह गाथानो अक्षरार्थ कहे छेः—

अति घणुं अने अति घट्ट होवाथी सेवाळनुं पण ते चामडा जेवुं होवाथी चामडुं गणवुं तेवडे बधी बाजु ढंकायलो जे द्रह तेमां कोइक रीते जराक छिद्र पड्युं तेमांथी काचबाए डोक बहार कहाडीने आकाश वच्चे रहेला चंद्रने आंखोथी एक वेळा जोयो. त्यारे ते काचबो कुटुंबनी पंचातमां पडी डोक खेंची ते स्थान छोडी बीजा स्थाने डूबीने कोइक रीते कुटुंबने त्यां लावी ते छिद्र शोधवा लाग्यो, ते समान मनुष्य जन्मनी प्राप्ति दुर्लभ छे. तु शब्द पूरणार्थ छे.

अथ नवमदृष्टांतसंग्रहगाथा.

जदहिजुगे पुव्वावरसमिलाछिद्दप्पवेसदिट्ठंता, अणुवायं मणुयत्तमिह दुल्लहं भवसमुद्दंमि. ॥ १४ ॥

हवे नवमा दृष्टांतनी संग्रहगाथा कहे छे.—

पूर्व समुद्रमां धूसरी नाखी अने पश्चिम समुद्रमां समेल नाखी. त्यां ते समेळनो ते धूसरीना छिद्रमां प्रवेश थाय ते दृष्टांते वगर उपाये आ भवसमुद्रमां मनुष्यपणुं पामवुं दुर्लभ छे. १४

(टीका)

जह केइ दुन्निदेवा—अच्चब्भुयचरियकोउहल्लेण, जुगछिद्दाओ समिलं—विजोजइत्ता लहुंचेव—॥ १ ॥ कह एसा जुगछिड्ं—पुणोवि पाविज्ज इयमणे धरिउं,

पत्ता सुमेरुसिहरे—एक्को जूयं करे काउं— ॥ २ ॥ अवरो जण तं समिलं—पक्खि- त्विया पुव्वअवरजलहीसु, खित्तं जुगं च समिला य—पेक्खिउं ते तओ लग्गा. ॥ ३ ॥ सायरजले अपारे—सा समिला तं च जुग महोगाढं, अइचंडचडुलपवणप्पणोल्लिया- इं नमंताइं—॥ ४ ॥ थकाइं तत्थ बहुकाल मागओ नजण तेसि संजोगो, संजोगेवि न जाओ—छिड्डपवेसो उ समिलाए. ॥ ५ ॥ जह तीए समिलाए—छिड्डपवेसो अ- ईव दुल्लंभो, तह मोहमूढचित्ताण—माणुसत्तंपि मणुयाण. ॥ ६ ॥

टीका

दृष्टांत तरीके कोइक बे देवो ज्यारे कुतूहलना लीधे धूसरीना छिद्रमांथी समेळने तरत छूटी पाडीने, फरीने आ समेळ धूसरीना छिद्रमां शी रीते पेसे छे ते आपणे जोवुं एम मनमां ताकीने मेरु पर्वतनी टोचे आव्या. बाद एकदेवे हाथमां धूसरी लइने पूर्व समुद्र तरफ दोडी ते त्यां नाखी अने बीजा देवे समेळ लइने पश्चिम समुद्र तरफ दोडी जइ ते त्यां नाखी अने पछी तेओ (तमाशो) जोवा लाग्या. १–२–३ हवे दरियाना अपार पाणीमां ते समेळ अने धूसरी बूडयां, तेओ ज्यारे प्रचंड तोफानी पवनथी धकेलाया थका घणा वखतसूधी रखडता रही थाकी गया, पण तेमनो संयोग ज न थयो, अने छेवटे संयोग थतां पण समेळनो छिद्रमां प्रवेश न थयो. ४—५ माटे जेम ए समेळनो छिद्रमां प्रवेश थवो अतिशय दुर्लभ छे, तेम मोहमां मूंझायला जीवोने मनुष्यपणुं मळवुं पण अति दुर्लभ छे. ६

अथ गाथाक्षरार्थः

उदहित्ति उदधौउद—जुगे त्ति युगं यूपं—पुव्वत्ति पूर्वस्मिन् छिसं—अवरत्ति अप- रस्मिन् जलधावेव—समिला प्रतीतरूपा छिसा काभ्यांचित् कौतुकिकाभ्यां देवाभ्यां,

ततस्तस्याःसमिलायाः — छिद्दप्पवेसदिठ्ठंता इति तत्र युगछिद्रे यः प्रवेशः स एव दृ-ष्टांतस्तस्मात् — अनुपायं तनुकषायत्वादिमनुष्यजन्महेतुलाभविकलं मनुजत्वमिह दुर्लभं भवसमुद्रे भवभाजामिति. (ए)

हवे संग्रह गाथानो अक्षरार्थ कहे छेः—

पूर्वना दरियामां धसरी, अने पश्चिमना दरियामां समेळ कोइक कौतुकी देवोए नाखी. त्यां ए समेळना छिद्रमां प्रवेश थाय ते दृष्टांते अल्प कषायपणा वगेरे मनुष्य जन्म मळवाना उपायो मळ्या वगर आ भवसमुद्रमां जीवोने मनुष्य पणुं मळवुं दुर्लभ छे.

अथ दशमदृष्टांतसंग्रहगाथा.

परमाणुखंभपीसणसुरनलियामेरुखेवदिठ्ठंता, तग्घडणेवा णुचया—मणुयत्तं भ-वसमुद्दंमि. ॥ १५ ॥

हवे दशमा दृष्टांतनी संग्रहगाथा कहे छे.

परमाणु शब्दथी धार संभार्यो. स्तंभने कोइक देवे पीसीने नळीमां नाखी मेरुना उपरथी चोमेर फेंकवुं ते दृष्टांते ते एटले के ते परमाणुओ एकठा करी करीने ते स्तंभ तैयार करवा माफक आ भवसमुद्रमां मनुष्यपणुं दुर्लभ छे. १५

(टीका)

इह केणं तियसेणं—एगो·खंभो अणेगखंमाइं, काऊण चुन्निओ ताव—जाव अविभागियो जाओ. ॥ १ ॥ भरिया महापमाणा—नलिया (एगा) करेण सा तेण,

पत्तो सुमेरुचूलासिहरे सा फूमिया तत्तो. ॥ २ ॥ उद्दंमपवणवसओ—महापयासत्तओ य तियसस्स, अविभागिमत्तणेण य—दिसोदिसिं ते गया अणवो. ॥ ३ ॥ पिण्डामि, कयावि पुणो—मिलिज्ज ते एू हवेज्ज सो थंभो, इय पेच्छंतस्सवि से—वाससहस्साइं णगाइं—॥ ४ ॥ वोलीणाणि, ण तेसिं—अणूण जोगो, णयावि सो थंभो, संजाओ, तह एसो—मणुयाण चुओ मणुयभावो. ॥ ५ ॥

टीका

इहां कोइक देवे एक थांभलो कटके कटका करीने एवो चूरो कर्यो के तेना अविभाज्य परमाणु करी नाख्या. १ बाद ते परमाणुओ वडे पोताने हाथे एक मोटी नळी भरी मेरुनी टोचे जइने ते फूंकवा मांडी. २ हवे आकरा पवनना योगे, देवना भारे प्रयासना योगे तथा अति सूक्ष्मपणाना योगे ते परमाणुओ सघळी दिशाओमां विखराइ गया. ३ [बाद ते देवे विचार्युं के] जोउं, हवे फरीने क्यारे ते परमाणुओ एकठा मळे छे अने ते स्तंभ तैयार थाय छे? एम जोतां थकां तेने अनेक हजार वर्षो वीती गया, पण ते परमाणुओ भेगा न थया अने ते स्तंभ तैयार न थयो. तेम जीवोने मळीने जतुं रहेलुं आ मनुष्यपणु फरी मळवुं दुर्लभ छे. ४ ५

अथ गाथाक्षरार्थः

परमाणुत्ति परमाणव इतिद्वारपरामर्शः—थंभपीसण त्ति स्तंभस्य काष्टादिमयस्य पेषणं चूर्णनं केनचित् कौतकिना सुरेण कृतं ततश्च—नलियामेरुखेवदिट्टंता इति—तस्य पिष्टस्तंभस्य नलिकायां प्रवेशितस्य मेरौ मेरुशिरसि क्षेपो दशसु दिक्षु

यद् विकिरणं देवेन कृतं, तदेव दृष्टांतस्तस्माद् दुर्लभं मनुजत्वमिति गम्यते कि-मुक्तं भवतीति ? आह—भग्घटणेवाणुचयत्ति—तस्य पिष्टस्तंभस्य :घटना इव निर्वर्त्त-नावत् अणुचयात् तस्मादेव नलिकाप्रक्षिप्तपिंमात् सकाशात्—मनुजत्वं भवसमुद्रे दुर्लभ मिति.

हवे संग्रहगाथानो अक्षरार्थ कहे छे.

परमाणु शब्दथी द्वार सूचार्यो छे. काष्ट वगेरेना स्तंभनो कोइ कौतुकी देवे चूरो कर्यो. पछी ते चूराने नळिकामां नाखी मेरुना मथाळापर दशे दिशाओमां ते देवे उमाम्युं. ते दृष्टांते मनुष्यपणुं दुर्लभ छे एटलुं उपरथी लइ लेवुं. शी वात थइ ते कहे छे के ते नळिकामां नाखेला परमाणुओ वमे ज ते चूरेलो स्तंभ तैयार थाय ते माफक आ भवसमुद्रमां मनुष्यपणुं दुर्लभ छे.

अयमपि परमाणुदृष्टांत आवश्यकचूर्णावन्यथापि व्याख्यातो दृश्यते यथा—इह काइ सहा महई—अणेगखंभसयसंनिविसिल्ला, कालेण जलणजालाकरालिया पाविया पलयं १ किंसो होज्ज कयाइवि—इंदो चंदो हवा मणुस्सिंदो, जो तं तेहि अणूहिं—पुणोवि अइदुग्धमं घमिही.॥२॥ जह तेहिंच्चिय अणुएहि—सा सभा दुकरा इह घमेउं, तह जीवाणं विहमिय—मित्तो मणुयत्तणं जाण. ॥ ३ ॥ इति.

आ परमाणुनो दृष्टांत आवश्यकचूर्णिमां बीजी रीते पण वर्णवेलो देखाय छे, जेमकेः—

इहां कोइएक सेंकमो थांभलाथी बांधेली महोटी सभा हती, ते एक वखते आगना सपाटामां आव्याथी नाश पामी. १ हवे एवो कोइ इंद्र, चंद्र, के राजेंद्र छे के जे तेज परमाणुओ वमे ते अति दुर्घट [नहिज बनी शके तेवी] सभाने फरीने ऊभी करी शके? २ जेम तेज परमाणुओथी ए सभा फरीने तैयार करवी दुष्कर छे, तेम जीवोने मळेलुं मनुष्यजन्म जतुं रह्युं ते फरीने मळवुं दुर्लभ छे एम तमारे जाणवुं.

दिट्ठंतन्नावपत्ता—अवि ते होज्ज दसावि पुण अन्नहा, दट्ठंतियन्नावगयं—न जणो मणुयत्तणं सोम॥१॥ इयदुल्लहं माणूसत्तणं पाविऊण जो जीवो, न कुणइ पारत्तहियं सो सोयइ संकमणकाले. ॥ २ ॥ जह वारिमज्झछूढोव्वगयवरो, मच्छउ व्व गलगहिओ, वग्गुर पडिउ व्व मओ—संवट्टइओ जहव पक्खी. ॥३॥ सो सोयइ मच्चुजरासमत्थओ तुरियनिद्दापक्खित्तो, ता पासइ विंदंतो—कम्मभरपणोल्लिओ जीवो. ॥ ४ ॥ काऊण मणेगाइं—जम्मण मरण परियट्टण सयाइं, दुक्खेण माणुसत्तं—जइ लहइ जहिच्छियं जीवो. ॥ ५ ॥ तं तह दुल्लहलंभं—विज्जुलयाचंचलं च मणुयत्तं, लध्धुण जो पमायइ—सो कापुरिसो न सप्पुरिसो. ॥ ६ ॥ (ग)

इहां दृष्टांतरूपे आपेली ए दशे वावतो हजु कदाच बने, पण दार्ष्टांतिकरूप मनुष्यपणुं फरीने हे सौम्य, नहि मळशे. १ आ रीते मनुष्यपणुं दुर्लभ जाणीने जे जीव परभवनुं हित नहि करे ते नवा जन्ममां जतीवेळा शोक करशे. २ जेम पाणी वच्चे सपडाइ रहेलो हाथी कांटामां पकडायलो मत्स्य, जाळमां फसेलो मृग, अने तोफानमां सपडाये लो पक्षी शोच करे, तेम ते मृत्यु अने जरा आगळ लाचार थइ चोथी निद्रामां अर्थात् मरण दशामां पडशे त्यारे ते शोच करशे. अने त्यारे कर्मना भारथी पीडातो जीव पोताने जाणीतो थएलो जोशे. ३ ४ ज्यारे जीव सेंकडो जन्म मरणना चकरावा करीने इच्छित मनुष्यपणाने दुःखे करी मेळवे छे, त्यारे तेवा दुर्लभ अने वीजळी जेवा चंचळ मनुष्यपणाने पामीने जे गाफळ रहे छे ते कापुरुष छे नहि के सत्पुरुष. ५ ६

अथ यदुक्तभावार्थसारयुक्तान्युपदेशपदानि वक्ष्ये इति, तत्प्रस्तु तमनुजत्वदुर्लभत्वमधिकृत्यागमसिद्धोपपत्त्या दर्शयन्नाह—एयं पुण एवं खलु—अन्नाणपमादोसओ नेयं, जं दीहा कायठिई—भणिया एगिंदियाईणं. ॥ १६ ॥

हवे पूर्वे जे कह्युं हतुं के भावार्थना सार रहित उपदेशना पदो कहीश, त्यां आ मनुष्यपणानी दूर्लभता वावत आगममां कहेली उपपत्ति वतावे छे.

ए वावत पण एम ज छे, अने ते अज्ञान अने प्रमाद दोपथी छे. जे माटे ते दोपे करी एकेंद्रिय वगेरेनी लांवी कायस्थिति कहेली छे. १६

टीका.

एतन्मानुजत्वं—पुनःशब्दो विशेषणार्थः ततश्चायमर्थः—प्राक् सामान्येन मनुजत्वदुर्लभत्वमुक्तं, सांप्रतं तदेवोपपत्तिभिः साध्यत इति. एव खलुत्ति—एवमेव दुर्लभमेव—कुतइत्याह—अज्ञानप्रमाददोषतः अज्ञानदोषात् सदसद्विवेचनविरहापराधात् प्रमाददोषाच्च विषयासेवनादिरूपात् ज्ञेयमवगंतव्यं.

टीका

ए एटले मनुष्यपणुं पुनः शब्द विशेषणार्थ छे—तेथी आ अर्थ थाय छे के—पूर्वे सामान्यपणे मनुष्यपणानी दूर्लभता कही, पण हवे तेज वावत उपपत्तिओवडे साधीये छीये. एमज छे एटले के दुर्लभज छे. शाथी ते कहे छे—अज्ञान अने प्रमाद दोपथी—त्यां अज्ञान दोपथी एटले खरा खोटाना विवेचनना अभावरूप अपराधथी अने प्रमाददोपथी एटले विपयसेवन वगेरेथी (आ वावत वने छे एम) समजवुं.

एतदाविष्टो हि जीव एकेंद्रियादिजातिषु दूरं मनुजत्वविलक्षणासु अरघट्टघटीयंत्र क्रमेण पुनःपुनरावर्त्तते एतदपि कथं सिद्धमित्याह—यत्कारणाद्दीर्घाद्राघीयसी कायस्थितिः पुनःपुनः मृत्वा तत्रैव काये उत्पादलक्षणा जणिता प्रतिपादिता सिद्धांते एकेंद्रियादीनां एकेंद्रियद्वींद्रियादिलक्षणानां जीवानामिति. तामेवैकेंद्रियभेदान् पृथिवीकायिकादीन् पंचैव प्रतीत्य दर्शयन्नाह;—असंखो सप्पिणि सप्पिणीउ एगिंदियाण-उ चउण्हं, ता चेवउ अणंता—वणस्सईए उ बोधव्वा. ॥ १७ ॥

अज्ञान अने मर्मादिथी घेरायलो जीव मनुष्यपणाथी तदन विलक्षण एकेंद्रिय वगेरेनी जातिओमां अरहटनी घटमाळ माफक फरी फरीने जन्म्या करे छे. ए पण केम सिद्ध थयुं ते कहे छे. जे कारणे सिद्धांतमां एकेंद्रिय बेइंद्रिय वगेरे जीवोनी कायस्थिति एटले वारंवार मरीने तेज कायमां उत्पत्ति दीर्घ एटले घणी लांबी कहेली छे.

हवे एकेंद्रियना पृथिविकाय विगेरे पांचे भेदना संबंधे ते कायस्थिति बतावे छे.

चारे एकेंद्रियोनी असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणीओ कायस्थिति छे. अने वनस्पतिनी तो तेवी अनंत उत्सर्पिणी अवसर्पिणीओ कायस्थिति जाणवी. १७

(टीका)

असंखोसप्पिणिसप्पिणी उ त्ति—प्राकृतत्वादविभक्तिको निर्देशस्तेनासंख्याता उत्सर्पिण्यवसर्पिण्यः—

टीका

असंख्य उत्सर्पिणी अवसर्पिणी—इहां प्राकृतना लीधे विभक्ति वगर चलाव्युं छे. तेथी असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणीओ एम अर्थ करवो.

तत्रोत्सर्पयति प्रथमसमयादारज्य निरंतरं वृद्धिं नयति तैस्तैः पर्यायैर्भावानित्युत्सर्पिणी,—तथाच पंचकल्पन्नाष्यं. समए समए णंता—परिवट्टंतोउ वन्नमाईया, दव्वाणं पज्जाया—होरत्तं तत्तिया चेव. (१)

त्यां पहेला समयथी मांमीने पदार्थोने ते ते पर्यायोवमे निरंतर वधार्या करे ते उत्सर्पिणी. जे माटे पंचकल्पना जाष्यमां कहेलुं छे के—द्रव्योना वर्णगंध वगेरे अनंत पर्यायो समय समय दीठ बदल्याज करे छे, अने रात दिवसमां पण ते प्रमाणे तेटलाज बदले छे. [१]

तद्विपरीतात्ववसर्पिणी. तुरेवकारार्थो जिन्नक्रमस्ततो संख्याता एवै केंड्रियाणां, तुरप्यर्थे जिन्नक्रमः—चतुर्णामपि पृथिव्यप्तेजोवायुकायिकानां कायस्थितिर्बोद्धव्येति संबंधः ताचेउ इति— ता एवचोत्सर्पिण्यवसर्पिण्योऽनंताः वनस्पतौ तु वनस्पतिकाये तु पुनर्वोद्धव्या कायस्थितिरुत्कृष्टेति.

उत्सर्पिणीथी उलटी ते अवसर्पिणी—तु शब्द एवकारार्थे छे ते असंख्यातना साथे जोमतां असंख्यातीज एम अर्थ थाय. एकेंद्रिय शब्द अपि शब्दना अर्थमां छे ते चार साथे लगामवानो छे एटले के चारे पृथिवी-अप्-तेजस् अने वायुकायिक एकेंद्रियोनी कायस्थिति जाणवी.

किमुक्तं जवति ?—पृथिव्यप्तेजोवायुकायिकेषु जीवो मृत्वा पुनःपुन उत्पद्यमान एकैककाये असंख्याता उत्सर्पिण्यवसर्पिणीर्यावदास्ते, वनस्पतिकायिकेषु तु प्राणिषूत्पद्यमानस्त एवोत्सर्पिण्यवसर्पिणीरनंता गमयत्युत्कृष्टतः.—जघन्यतस्त्वंतर्मुहूर्त्तमेवेति.

तेज अनंत उत्सर्पिणी अवसर्पिणीओ वनस्पतिकायमां पण उत्कृष्टी कायस्थिति जाणवी.

मतलब ए के पृथिवीकाय वगेरे चारमां जीव मरीने फरी फरी उपजतां दरेक कायमां असंख्यात उत्सा पणी अवसर्पिणीओ सुधी रहे. पण वनस्पति कायना प्राणीओमां उपजतां तेवी अनंत उत्सर्पिणी अवसर्पिणी उत्कृष्टपणे गमावे-जघन्यथी तो बधामां अंतर्मुहूर्तज रहे.

अथोत्सर्पिण्यवसर्पिण्योः किं प्रमाणमुच्यते? द्वादशारकालचक्रमुत्सर्पिण्यवसर्पिण्यो. तत्स्वरूपं.

उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीनुं काळमान शुं छे? बार आरावाळुं काळचक्र ते उत्सर्पिणी अवसर्पिणी छे, तेनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे.

यथा—दस कोडाकोडीओ—सागरनामाण हुंति पुन्नाओ, उस्सप्पिणीपमाणी—तंचेवोसप्पिणीए वि. ॥ १ ॥ छच्चेव कालसमया—हवंति ओसप्पिणीइ जरहंमि, तासिं नामविहत्तिं—अहक्कमं कित्तइस्सामि.—॥ २ ॥ सुसमसुसमा य सुसमा—तइया पुण सुसमदुस्समा होइ, दुसमसुसमा चउत्थी—दूसय अइदूसमा छठी. ॥ ३ ॥ एएचेव विजागा—हवंति उस्सप्पिणीइ छच्चेव, पमिलोमा परिवाडी—नवरि विजागेसु नायव्वा. ॥ ४ ॥ सुसमसुसमाइ कालो—चत्तारि हवंति कोडिकोडीओ, तिन्नि सुसमाइकालो—दुन्नि जवे सुसमदुसमाए. ॥ ५ ॥ एक्का कोडाकोडी—बायालीसाइ जा सहस्सेहिं, वासाण होइ ऊणा—दूसमसुसमाइ. सो कालो ॥ ६ ॥ अह दूसमाई कालो—वाससहस्साइं एक्कवीसं तु, तावइओ चेव जवे—कालो अइदूसमाए वि ॥ ७ ॥ इत्यादि.

दश कोमाकोमी सागरोपम पूरा थाय ते उत्सर्पिणी अने तेटलाज काळनी अवसर्पिणी पण छे. १ जरतक्षेत्र मां अवसर्पिणीना छ काळसमय थाय छे. तेमना अनुक्रमे नामो कहीये छीये. २ पहेली सुषमसुषमा, बीजी सुषमा, त्रीजी सुषमदुःषमा, चोथी दुःषमसुषमा, पांचमी दुःषमा, अने छठी अतिदुषमा. ३ अवसर्पिणीना पण एज छ विभागो छे, पण ते उलटा क्रमे लेवाना छे. ४ सुषमसुषमा चार कोमाकोम सागरोपमनी छे, सुषमा त्रणनी अने सुषमदुःषमा बेनी छे. ५ बेताळीश हजार वर्ष उणा एक कोमाकोम सागरोपम ए दुःषम सुषमानो काळ छे. ६ एकवीश हजार वर्षनी दुःषमा छे. अने अतिदुःषमानो काळ पण तेटलोज छे ७ इत्यादि.

एवं द्वाभ्यामुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभ्यां कालचक्रं द्वादशारं विंशतिसागरोपमकोटाकोटिप्रमाणं. तत्रच यथोत्तरं कालानुभावस्वरूपं ग्रंथांतरादवसेयं.

एम उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी ए बे मळीने बार आरानुं वीश कोमाकोमि सागरोपमनुं कालचक्र थाय छे. त्यां चमता पमता काळानुभावनुं स्वरूप ग्रंथांतरथी जाणी लेवुं.

विकलेंद्रियाणां पंचेंद्रियतिरश्चां मनुष्याणां च कायस्थितिरनया गाथयाज्ञेया यथा—

वाससहस्सासंखा—विगलाण ठिई उ होइ बोधव्वा, सतट्ठ भवा उ भवे—पणिंदितिरिमणुय उक्कोसा. (१) इति.

विकलेंद्रिय, पंचेंद्री तिर्यंच अने मनुष्योनी कायस्थिति आ गाथावमे जाणवी जेमके—विकलेंद्रियनी स्थिति संख्याता हजार वर्षनी छे, अने पंचेंद्रिय तिर्यंच तथा मनुष्यना उत्कृष्ट सात आठ भव थाय छे. १

भवतु नामैकेंद्रियादीनां दीर्घा कायस्थितिस्तथापि किंनिमित्तासाविति वक्तव्यमित्याशंक्याह एसा य असइदोसासेवणओ धम्मवज्झचित्ताणं, ता धम्मे जइयव्वं—सम्मं सइ धीरपुरिसेहिं. ॥ १८ ॥

नले एकेंद्रिय वगेरेनी लांबी कायस्थिति छे, पण ते शा कारणे थाय छे ते कहेवुं जोइए तो ते कहे छे. एवी स्थिति जेओ धर्मथी बाहेर मन राखीने वारंवार दोषो सेवे छे तेमने थाय छे, माटे बुद्धिमान् पुरुषोए वारंवार सम्यक्‌रीते धर्ममां यत्न करवो. १८

(टीका)

एषा चेयं पुनर्द्राघीयसी स्थितिः असकृदनेकवारान् अनेकेषु नवेष्वित्यर्थः दोषासेवनतः दोषाणां राहुमंमलवत् शशधरकरनिकरव्रातस्पर्द्धिस्वनावस्य जीवस्य मालिन्याधायकतया दूषकाणां निविमवेदोदयाज्ञानजयमोहादीनां—यदासेवनं मनोवाक्कायैः कृतकारितानुमतिसद्दायैराचरणं—तस्मात्—केषामित्याह—धर्मबाह्यचित्तानां श्रुतधर्माच्चारित्रधर्माच्च सर्वथा बाह्यचित्तानां स्वप्नायमानावस्थायामपि तत्रावतीर्णमानसानामित्यर्थः.

टीका

ए लांबी कायस्थिति अनेकवार एटले के अनेक नवोमां दोषो सेववाथी थाय छे. दोषो एटले चंद्रना किरणोनी रुरीफाइ करनार मलिनकरी राहुना माफक दूषित करनार तीव्र वेदोदय—अज्ञान—नय—मोह वगेरे दोषो, तेमनु मनवचन कायाथके करण कारापण अनुमोदननथीजे सेववुं तेनाथी ते थाय छे कोने थाय ते कहे छे. धर्म बाह्यचित्तवाळाने एटले के श्रुतधर्म अने चारित्र धर्मथी सर्वथा बाहेर मन राखनाराओने अर्थात् स्वप्नमां पण त्यां मनने नहि उतारनार जीवोने तेवी लांबी स्थिति थाय छे.

यत -एवं ता इति तस्माद्धर्मे उक्तलक्षणे एव एकांतेनैवैकेंद्रियादिजातिप्रवेशनिवारणकारिणि भवोद्भवभूरिदुःखज्वलनविध्यापनवारिणि यतितव्यं सर्वप्रमादस्थापनपरिहारेणोद्यमः कार्यः—सम्यग् मार्गानुसारिण्या प्रवृत्त्या स्वसामर्थ्यालोचनसारं—सदा सर्वास्ववस्थासु धीरपुरुषैर्बुद्धिमद्भिःपुंभिः (७)

जे माटे एम छे ते माटे एकांते एकेंद्रियादि जातिमां जतां अटकावनार अने आ संसारना अनेक दुःखरूप आगने होलववा पाणी समान धर्ममांज सघळा प्रमादस्थान छोडीने सम्यक् रीते एटले के मार्गानुसारि प्रवृत्तिवडे पोतानुं बळ जोइने सघळी अवस्थाओमां बुद्धिमान् पुरुषोए उद्यम करवो.

सम्यग् धर्मे यतितव्यमित्युक्तमथ सम्यग्भावमेव भावयन्नाह.—सम्मत्तं पुण इत्थं—सुत्तणुसारेण जा पवित्ती उ, सुत्तगहणंमि तम्हा—पवत्तियव्वं इहं पढमं. ॥ १९ ॥

सम्यक् रीते धर्ममां उद्यम करवो एम कह्युं, हवे सम्यक्पणुं ते शुं ते जणाववा कहे छे. अही सम्यक्पणुं ते सूत्रानुसारे जे प्रवर्त्तवुं ते छे. माटे इहां पहेलां सूत्र शीखवां जोइए. ॥ १९ ॥

टीका.

सम्यक्त्वमवितथरूपता पुनरत्र धर्मप्रयत्ने का इत्याह—सूत्रानुसारेण या प्रवृत्ति—स्तुशब्दोवधारणार्थो भिन्नक्रमश्चेति—ततः सूत्रानुसारेणैव सर्वज्ञागमानुसारेणैव या चैत्यवंदनादिरूपा प्रवृत्तिश्चेष्टा सम्यक्त्वं.

टीका

सम्यक्त्व एटले खरापणुं अहीं एटले धर्म प्रयत्नमां शुं छे ते कहे छे—सूत्रानुसारे जे प्रवृत्ति ते इहां तु शब्द अवधारणार्थ छे अने ते अनुसारपद पछी लगाडवानो छे. तेथी सूत्रानुसारेज एटले सर्वज्ञप्रणीत आगमना अनुसारेज जे चैत्यवंदन वगेरे प्रवृत्ति ते सम्यक्त्व जाणवुं.

एवंसति यद् विधेयं तदाह—

सूत्रस्य परमपुरुषार्थानुकूलभावकलापसूचकस्य असारसंसारचारकावासनिर्वासनकालघंटाकल्पस्य आवश्यकप्रविष्टादिभेदभाजः श्रुतस्य ग्रहणे नष्टदृष्टेस्तल्लाभतुष्टिदृष्टांतेनांगीकरणे तस्मात् कारणात्प्रवर्त्तितव्यं—इह यत्ने विधेयतया उपदिष्टे—प्रथममादौ.

एम छे त्यारे शुं करवुं जोइए ते कहे छे.

ते माटे इहां एटले यत्न करवो कह्यो ते बाबतमां पहेला प्रथम परम पुरुषार्थने अनुकूळ रहेला भावो न जणावनार अने संसाररूप केदखानाथी छूटी पामवाना घर समान आवश्यक तथा अंग प्रविष्ट वगेरे भेदवाळा श्रुतना ग्रहणमां एटले आंधळाने नजर मळतां जे आनंद थाय तेवा आनंदथी अंगीकार करवामां प्रवर्त्तवुं जोइए. जे माटे कहेलुं छे के—

यतः

पढमं णाणं तओ दया—एवं चिट्ठइ सव्वसंजए, अण्णाणी किं काही—किंवा णाही छेयपावगं. (१) सोच्चा जाणइ कल्लाणं—सोच्चा जाणइ पावगं, उभयंपि जाणई सोच्चा—जं छेयं तं समाचरे. (२)

पहेलुं ज्ञान छे अने पछी दया छे एम सवळा साधुओ प्रवर्त्ते छे केमके अज्ञानी शुं करशे अने शुं नलुं छे शुं नरुं छे ते शुं जाणशे ? ॥ १ ॥

सांजळीने कल्याणने जाणे अने सांजळीने पापने जाणे—ए बंनेने सांजळीने जाण्या बाद जे सारुं होय ते आचरवुं. ॥ २ ॥

तच्च सूत्रग्रहणं विनयादिगुणवतैव शिष्येण क्रियमाणमन्नीप्सितफलं स्यान्नान्यथेति समयसिद्धदृष्टांतेन स्पष्टयन्नाह.—

देवीदोहल एगत्थंजप्पासाय अजयवणगमणं; रुक्खुवलद्धहिवासण—वंतरतोसे सुपासाओ. ॥ २० ॥

ते सूत्रग्रहण विनयादि गुणवाळा थइने ज जोशिष्य करे तोज ते अन्नीप्सित फळ आपे बीजी रीते करतां नहि आपे—ए वात सूत्रमां आपेला दृष्टांतवरु स्पष्ट करे छेः—

देवीने दोहळो थयो के एक थंन्नी मेहेल जोइए, ते माटे अजयकुमारे वनमां जइ तेवुं झाम मेळवी तेनुं अधिवासन कर्युं, एटले व्यंतर खुशी थइ एक थंन्नो मेहेल करी आपेज. ॥ २० ॥

कथानकसंग्रहगाथासप्तकं.

आ गाथाथी मांमीने सात गाथाओ कथानकनी संग्रहगाथारूप छे.

(टीका)

रायगिहंमिय नयरे—राया नामेण सेणिओ आसि, संमत्तथिरत्तपहिष्ठसक्कवि-

क्खाइयपसंसो. ॥ १ ॥ सयलंतउरपवरा—देवी नामेण चेल्लणा तस्स, चउविहबुद्धि-समेओ—मंती पुत्तो य अभओ त्ति. ॥ २ ॥ एगंमिय पत्थावे—देवीए जायदोह-लाइ निवो, भणिओ पासायंम—एगक्खंभं करावेह. ॥ ३ ॥ दुन्निग्गाहेण इत्थी-गहेण संताविएण नरवइणा, पभिवणं तव्वयणं—अभयकुमारो य आइट्ठो. ॥ ४ ॥ तो वड्ढइणा समगं—थंभनिमित्तं महाअडवीइ गओ, दिट्ठो तेहि च रुक्खो—सुस-णिद्धो अइमहासाहो. ॥ ५ ॥ साहिट्ठिओ सुरेणं—होहि त्ति विचित्तकुसुमधूवेहिं, अहिवासिओ स साही—कओववासेण अभएण. ॥ ६ ॥ अह बुद्धिरंजिएणं—त-रुवासिसुरेण निसि पसुत्तस्स, सिट्ठं अभयस्स महाणुभाव मा छिंदिहिसि एयं. ॥७॥

टीका.

राजगृहनगरमां सम्यक्त्वनी स्थिरता जोइ हर्षथी इंद्रे वखाणायलो श्रेणिक नामे राजा हतो. ॥ १ ॥ तेनी आखा अंतःपुरमां श्रेष्ठ चेल्लणा नामे राणी हती अने चार बुद्धिवालो अभयकुमार पुत्र मंत्री हतो. ॥ २ ॥ एक वखते देवीने दोहलो थतां तेणीए राजाने कह्युं के मारा माटे एक थंभो मेहेल करावी आपो. ॥ ३ ॥ नहि अटकावी शकाय एवा स्त्रीहठथी मुंझाइने राजाए तेणीने हा पाडीने अभयकुमारने ते बाबत हुकम कर्यो. ॥ ४ ॥ त्यारे सुथार साथे थंभ मेळववा अभयकुमार अटवीमां गयो. तेमणे त्यां जळकदार अने मोटी शाखावालुं झाड जोयुं. ॥ ५ ॥ ए झाड देवताथी अधिष्ठित होवुं जोइए एम धारी अभयकुमार उपवास करी फूल अने धूपथी तेनी पूजा करी. ॥ ६ ॥ त्यारे तेनी बुद्धिथी खुश थएला तरुवासि देवे राते अभयकुमारने स्वप्नमां कह्युं के महानुभाव, आ झाडने नहि काप

वच्चसु सगिहंमि तुमं—काहं मह मेगखंभपासायं, सव्वोउयतरुफलफुल्लमणहरारामपरिकलियं. ॥ ८ ॥ इय पडिसिद्धो अन्नओ—वड्ढइणा सह गओ सगेहंमि, देवेण-वि णिम्मविओ—आरामसमेयपासाओ. ॥ ९ ॥ तंमिय देवीइ समं—विचित्तकीलाहिं कीलमाणस्स, रइसागरावगाढस्स—राइणो जंति दिवहाइं. ॥ १० ॥ अह तन्नयरनिवासिस्स पाणवइणो कयाइ गब्भवसा, जज्जाइ समुप्पन्नो—दोहलओ अंवयफलस्स. ॥ ११ ॥ तो तंमि अपुज्जंते—पइदियहं खिज्जमाणसव्वंगिं, तं दठ्ठूणं पुट्ठं—तेण, पिए, कारणं किमिह ? ॥ १२ ॥ परिपक्कंवयफलदोहलो य तीए विवेइओ, ताहे—पाणाहिवेण भणियं—चूयफलाणं अकालो यं.—॥ १३ ॥ जइविहु, तहावि कत्तोवि—सुयणु. संपाडिमो थिरा होसु, निसुओ य तेण रव्वो—सव्वोउयफलडुमारामो. ॥ १४ ॥ तंचारामं बाहिं ठिएण पेहंतएण पक्कफलो, दिट्ठो अंवयसाही—

तां—तुं तारे घेर चाल्यो जा हुं सर्व ऋतुमां फळफूल आपनार मनोहर वगीचावाळो एकथंभो महेल त्यां करी आपीश ७—८ एम ना थवाथी अन्नय सुथार साथे घेर आव्यो के देवे वगीचासहित मेहेल बनावी आप्यो. ९ ते मेहेलमां राणी साथे अनेक क्रीडाओ करी रतिसागरमां डूबेलो राजा दिवसो पसार करवा लाग्यो' १० हवे ते नगरमां रहेता मातंगना मुखीनी भार्याने गर्भना योगे आंबानुं फळ खावानो दोहलो थयो. ११ पण ते पूरो न पड्याथी प्रतिदिन घसावा लागेली तेणीने जोइने मातंगना मुखीए तेने पूछ्युं के हे प्रिये, आम थवानुं कारण शुं छे ? १२ तेणीए कह्युं केमने पाकेल केरी खावानो दोहलो थयो छे त्यारे मातंगना मुखीए कह्युं, आंबाना फळ मळवानो आ वखत नथी.-१३ जो के एम छे, तोपण हे सुतनु धीरी रहे, हुं क्यांथी पण ते लावी आपीश. बाद तेणे सांभळ्युं के राजानो बगीचो सर्वऋतुमां फळता झाडोवाळो छे. १४ त्यारे ते ते वगीचा पासे जइ बाहेरथी जोवालाग्यो तो

ताहे जायाइ रयणीए—॥ १५ ॥ ओणामणीइ विज्जाइ—साहि मोणामिऊण ग-
हियाइं, अंबयफलाइं पुणरवि—पच्चोणामिणिसुविज्जाए—॥ १६ ॥ ताहं विसजि-
ऊणं—समप्पियाइं पियाइ हिट्ठेण, पडिपुन्नदोहला सा—गब्भं वोढुं समाढत्ता. ॥१७॥
अह अवरावरतरुवरपलोयणं राइणा कुणंतेणं, पुव्वदिणदिट्ठफलपडलवियल मवलो इ-
यं मृयं. ॥ १८ ॥ भणिया रक्खगपुरिसा—रे केणा सो विलुत्तफलभारो—विहिओ
त्ति तेहिं भणियं—देव, न तावेत्थ परपुरिसो—॥ १९ ॥ नूण पविट्ठो, नय नीहरं-
तपविसंतयस्सय पयाणि—कस्सवि दीसंति महीयलंमि, देव चोज्ज मिणं. ॥ २० ॥ ज-
स्सा माणुससामत्थ—मेरिसं तस्स किं पकराणिज्जं—नत्थि त्तिय चिंततेण राइणा
सिट्ठ मभयस्स. ॥ २१ ॥ एवंविहरयकरणक्खमं लहुं लहसु पुत्त चोरं ति, जह ह-

तेणे दोहलो फळ्यो आवो जोयो. बाद रात पडतां अवनामिनी विद्याथी तेणे डाळ नमावीने केरीओ उतारीने फरी प्रत्यवनामिनी विद्याथी डाळ ज्यां हती त्यां करीने हर्षित थइ ते फळो पोतानी प्रियाने सोंप्या, आ रीते दोहलो पूराया थी ते सुखे गर्भ धरवा लागी. १५—१६—१७— हवे (वळतादिने) जूदा जूदा झाडोनुं अवलोकन करता राजाए आगला दिवसे जोयेला फळना जथ्थावगरनो ते आंबो जोयो. १८ राजाए रखेवाळने कह्युं के अरे! आनां फळ कोणे उतारी लीधां छे? तेओए जवाब वाळयो के हजुर, इहां बीजो माणस तो बीलकुल पेठो नथी अने जमीनपर नीकळवा-के पेसवानां कोइनां पगलां पण जणातां नथी माटे हजूर, आ अचंबानी ज वात छे. १९—२० राजाए विचार्युं के जेनापासे आवुं अमानुषी (दिव्य) सामर्थ्य छे, ते बीजुं शुं न करी शके, एम धारी तेणे अभयकुमारने कह्युं केः—२१

रियाइं फल्लाइं—तह सया दारुमवि हरिही. ॥ २२ ॥ भूमीयलनिहियसिरो,—महापसाउ त्ति जंपिउं अभयो, तियचम्मरेसु चोरं—निरूविउं वाढ माढत्तो. ॥ २३ ॥ वोलीणाइं कइवयदिणाइ पत्ता न तप्पउत्तीवि, चिंतावाउलचित्तो—ताहे अभओ दढं जाओ. ॥ २४ ॥ पारद्धमहिंदमहे—नमेण नयरीइ बाहि पेछणयं, मिलिओ पउरनरगणो—अभएणवि तत्थ गंतूणं,—॥ २५ ॥ भावोवलक्खणट्ठं—पयंपियं, भोजणा, निसामेह, जाव नमो नागच्छइ—ताव मम कहाणगं एगं. ॥ २६ ॥ तेहिं पयंपियं नाह—कहह कहंतो कहेउ मारद्धो, नयरंमि वसंतपुरे—आसि सुया जुन्नसेट्ठिस्स. ॥ २७ ॥ दारिद्दविद्दुयत्तेण—नेव परिणाविया य सा पिउणा, वड्ढकुमारी जाया—वरत्थिणी पूयए मयणं. ॥ २८ ॥ आरामाओ सा चोरिऊण कुसुमुच्चयं करेमाणी

हे पुत्र, आवो वात करवा समर्थ चोरने जलदी पकडीपाड,नहीतो हमणा जेम एणे फळो हर्यां छे, तेम वीजीवेळा स्त्रीओने पण हरीजशे. २२ अभयकुमार जमीनपर माथुं धरी वोल्यो के मोटी महेरवानी थइ एम कही आज्ञा जणावीने ते त्रिवाटा तथा चोवाटाओमां चोरने खूव शोधवा लाग्यो. २३ एम करतां घणा दिवस नीकळी गया छतां तेनो कशो पत्तो लाग्यो नहि, त्यारे अभयकुमार भारे चिंतामां पड्यो. २४ एवामां इंद्रमहोत्सव शरु थतां नगरीना वाहेर एक नटे तमासो करवो शरु कर्यो, एटले त्यां घणा लोक एकठा थया, तथी अभयकुमार त्यां दिल तपासवा खातर कहेवा लाग्यो के हे लोको, ज्यां लगी नट नथी आव्यो त्यांलगी मारी एक वार्त्ता सांभळो. २५—२६ लोको वोल्या के खुशीथी कथा चलावो, त्यारे ते कहेवा लाग्यो के वसंतपुरनगरमां जूनाशेठनी एक दीकरी हती. २७ तेने तेना पिताए निर्धनपणाना लीधे परणावीजनहि एटले ते वृध्द कुमारी थइ तेथी वरना माटे तेणी कामदेवने पूजवा लागी. २८ तेणीने वगीचामांथी

—पत्ता मायायारेण—जंपियं किंमि सविचारं. ॥ २९ ॥ तीए वुत्तं किं तुज्झ—ज-
णिणिधूयाउ महसरित्थाओ—नेवत्थि जं कुमारिंपि—मं तुमं एव मुल्लवसि ? ॥ ३०
॥ संपत्तं तेण, तुमं–उव्वूढा जत्तुणा अजुत्ताय— एसि समीवे जइ मे—मुंचामी अ-
न्नहा नेव. ॥ ३१ ॥ एवं ति पडिसुणित्ता—गया गिहं सा, कयाइ तुट्ठेण—मयणेणं
से दिण्णो—मंतिस्स सुओ वरो पवरो. ॥ ३२ ॥ सुपसत्थे हत्थग्गहजोग्गे लग्गंमि
तेण उव्वूढा, एत्थंतरंमि—अत्थगिरि—मुवगयं जाणुणो विंबं. ॥ ३३ ॥ कज्जलज-
सन्नछाया—वियंभिया दिसिसु तिमिररिंछोली, हयकुमुयसंडजड्डं—समुग्गयं मंडलं स-
सिणो. ॥ ३४ ॥ अह सा विचित्तमणिमयभूसणसोहंतकंतसव्वंगी—वासजवणंमि प-
त्ता—जत्ता एवंय विण्णत्तो. ॥ ३५ ॥ त व्वेलुव्वूढाए—आगंतव्वं ति मालियस्स मए

धारीलुपीथी फूलो वीणती मालिए पकडीने तेने कंइक फुसलावना मांडी. २९ ते बोलीके अरे तारे शुं माराजेवी व्हेन-
दीकरीओ नथी के जेथी तुं हुं कुंवारी छुं तेनातरफ आवुं बके छे ? ३० तेणे कह्युं के ठीक के, तुं परण्याबाद तारा भर्त्तारे
भोगव्याबेहेली छतां मारीपासे जो आवे तो तो तने जती मेलुं, नहितो नहिज मेलुं. ३१ ते वातने कबूल राखी तेणी घेर गइ.
बाद कोइवेळाए कामदेवे तुष्ट थइ तेने मंत्रिनो पुत्र वरतरीके आप्यो. ३२ हवे हथुरो मेळववामाटे सारो ग्रहयोगलागतां
ते तेने परण्यो एवामां सूर्यनुं बिंब अस्ताचळे जवामांड्युं. ३३ त्यारे काजळ अने जमराजेवी अंधारानी टोळ दिशाओमां
फेलावालागी एटलामां कुमुदोनी जडता हणनार चंद्रनुं मंडळ ऊगवा मांड्युं. ३४ हवे विचित्र मणिमय भूषणोथी सघळा
अंग शोभती थकी ते स्त्री वासभवनमां आवी अने तेणीए भर्त्तारने आ रीते विनंति करी. ३५ हे प्रियतम, मालि-

—पमिवन्न मासि पिययम—ता जामि तहिं विसज्जेसु. ॥ ३६ ॥ सच्चपइएणा एस त्ति—मणमाणेण तेण णुन्नाया, वच्चंती परिहिमपवरभूसणा सा पुरीउ बहिं.—॥ ३७ ॥ दिट्ठा चोरेहि, तओ—महानिही सो इमो त्ति नणिरेहिं—गहिया नवरंतीए—निवेइओ नियसब्नावो.—॥ ३८ ॥ चोरेहि जंपियं सुयणु—जाहि सिग्घं परं वलिज्जाहि, मुसिऊणं जेण तुमं—जहागयं पमिनियत्तामो. ॥ ३९ ॥ एवं काहंति पयंपिऊण संपट्ठिया, अहऋपहे, तरलतरतारयाजलसमुब्लसंतन्निविब्नोहो—॥ ४० ॥ रणऊणिरदीहदंतो—दूर पसारियरउद्दमुहकुहरो—चिरछुहिएणं लद्धासि—एहि एहि त्ति जंपंतो—॥ ४१ ॥ अच्चंतन्नीसणंगो—सुमुट्ठिओ रक्खसो सुडुप्पेछो, तेणावि करे धरिया—कहिओ तीएय सब्नावो. ॥ ४२ ॥ पम्मुक्का, आरामे गंतूणं बोहिओ सु-

ना आगळ में एवी प्रतिज्ञा करेल छे के परण्या पछी तरतज तेनापासे आववुं, माटे जो तमे रजा आपो तो त्यां जइ आवुं ३६ तेना नर्त्तारे विचार्युं के आ सत्यप्रतिज्ञावाळी लागे छे एम धारी तेणे तेणीने रजा आपी एटले पहेरेला सरस नूषणोसाथे नगरीथी बाहेर जती थकी चोरोए जाइ, त्यारे आ मोटो खजानो छे एम बोलता तेमणे. तेने पकमी. त्यारे तेणीए पोतानी खरी हकीकत जणावी. ३७—३८ चोरो बोल्या के नलीवाइ. जलदी जा, पण पाछी आ रस्तेज वळजे के जेथी तु जेवी आवशे के तने लूंटीने अमे नाशता थइशुं. ३९ एम करीश एम कही ते आगळ चाली एवामां अर्धे रस्ते चंचल कीकीयी उछळती आंखोवाळो, रणऊणता लांबा दांतवाळो, उघामा राखेला नयंकर मुखविवरवाळो, अने लांबा वखतथी नूखेलो रयोछुं माटे आव आव एम बोलतो अत्यंत बीहामणा अंगवाळो नजरे न जोइ शकाय एवो नयंकर एक राक्षस तेने सामे मळयो. तेणे पण तेने हाथमां पकमी त्यारे तेणीए तेने खरी हकीकत कही.४०—४१—४२—

हपनुत्तो,—मालागारो जणिओ य—सुयणु सा हं इहं पत्ता. ॥ ४३ ॥ एवंविहर-
यणीए—सभूसणा कह समागया तं सि, इय तेणं सा पुट्ठा—सिट्ठं तीएय जहवि-
त्तं. ॥ ४४ ॥ अव्वो सच्चपइण्णा—महासई म त्ति जावमाणेण—चलणेसु निवडिऊ-
णं—मालागारेण तो मुक्का. ॥ ४५ ॥ पत्ता रक्खसपासे—सिट्ठो से मालियस्स वुत्तंतो,
अव्वो महप्पभावा—एसा, जा उज्झिया तेण.—॥ ४६ ॥ इइ भावितेणं निवडिऊ-
ण पाएसु तेणवि विमुक्का, चोरसमीवं च गया—सिट्ठो तह पुव्ववुत्तंतो. ॥ ४७ ॥
तेहिंवि अणप्पमाहप्पदंसणुप्पन्नपक्खवाएहिं—सालंकारच्चियवंदिऊण सगिहंमी पट्ठ-
विया. ॥ ४८ ॥ अह आभरणसमेया—अक्खयदेहा अभग्गसीला य, पत्ता पइस्स

ते सांजळी तेणे तेने छोडी एटले बगीचामां जइ तेणीए सुखेसूतेला माळीने जगाड्यो अने कह्युं के हुं ते सुंदरी इहां आवी छुं. ४३ तेणे पूछ्युं के आवी रीते तुं घरेणासाथे केम आवी शकी? त्यारे तेणीए बनेली वात कही. ४४ माळिए विचार्युं के अहो आ तो सत्यप्रतिज्ञावाळी होवाथी महासती देखाय छे एम विचारी तेणे पगेपडीने तेने रवाने करी. ४५ त्यांथी तेणीए राक्षसपासे आवी माळीनो वृत्तांत कह्यो एटले तेणे चिंतव्युं के अहो, आ कोइ महाप्रभावनावाळी लागे छे के जेने तेणे जतीकीधी एम धारी तेणे पण पगेपडीने तेने मूकीदीधी एटले ते चोरोपासे आवी अने तेमने तेणीए पूर्वनो वृत्तांत कहीसंभळाव्यो. ४६—४७ त्यारे तेमणे तेनुं भारे माहात्म्य जोइ तेणीना पक्षपाती थइने तेने पगेपडीने घरेणासाथे ज तेना घरे मोकलावी. ४८ हवे ते घरेणा साथे अक्षत शरीर अने अखंडित शीळवाळी रहीने पतिपासे आवी

पासे—कहियं सव्वं जहावित्तं. ॥ ४९ ॥ परितुट्ठमणेण समं–तेण पसुत्ता समत्थर-
यणिंपि, जाए पन्नायसमए–चिंतिय मिय मंति पुत्तेण—॥ ५० ॥ छंदट्ठियं सुरूवं—
समसुहदुक्खं अणिग्गयरहस्सं—धन्ना सुत्तविबुद्धा—मित्तं महिलं चपेछंति. ॥ ५१ ॥
इय भावेंतेण कया—घरस्स सा सामिणी समग्गस्स, किंव न कीरइ निक्कवडपेम्मपडि-
बद्धहिययंमि ? ॥ ५२ ॥ इय पइतक्कररक्खसमालागाराण मज्झओ केणं—तच्चागेणं
कय दुक्करं ति भो मज्झ साहेह. ॥ ५३ ॥ ईसालुएहि भणियं—सामी, पइणा सु-
दुक्करं विहियं, परपुरिससमीये जेण—पेसिया सव्वरीइ पिया. ॥ ५४ ॥ भणियं
बुहाणुएहिं—सुदुक्करंचेव रक्खसेण कयं, जेहा चिरं बुहिएणवि—न भक्खिया भक्ख-
णिज्जावि. ॥ ५५ ॥ अह पारदारिएहिं—पयंपियं, देव मालिओ एक्को—दुक्करकारी

सघळी बनेली हकीकत कहेवा लागी. ४९ ते सांभळी ते खुश थतां तेनासाथे ते आखीरातसूती. प्रभात थतां मांत्रिपुत्र आ रीते विचारवा लाग्यो. ५० मरजीमुजब चालनार, रूपवंत, सुखःदुखमां साथे रहेनार, रहस्यने छुपावी राखनार एवा मित्र अने एवी स्त्रीने जागी उठेला भाग्यशाळिओज जुवेछे. ५१ एम विचारीने तेणे तेणीने घरनी धणिआणी करी. केमके निष्कपट प्रेममां मन राखनारना प्रत्ये शुं नहिकराय ? ५२ आ बाबतमां पति, चोर, राक्षस, अने माळी ए चारमां कोणे तेणीने जतीमेली ने दुष्कर काम कर्युं ते मने कहो. ५३ त्यारे जेओ ईर्ष्यालु हता तेओ बोल्या के स्वामि, पतिए दुष्कर कर्युं के जेणे परपुरुषनापासे राते तेने जवा दीधी. ५४ क्षुधातुरो बोल्या के राक्षसे दुष्कर कर्युं के जेणे खूब भूखेलो होवाछतां पोतानुं खाज नहि खाधुं. ५५ पारदारिको बोल्या के माळीज दुष्करकारी गणाय के जेणे राते पोते

जणं—चत्ता सा निसि सयं पत्ता. ॥ ५६ ॥ पाणेण जंपियं होउ ताव चोरेहि डुक्करं विहियं—पइरिक्केवि विमुक्का—समुवन्ना जेहि सा तइया. ॥ ५७ ॥ एवंवुत्ते चोरो त्ति निच्छिओ सो जणेण मायंगो, गिण्हाविऊण पुट्ठो—कह मारामो विलुत्तोत्ति. ॥५८॥ तेणं पयंपियं नाह—नवरविज्जाबलेण नियएण, कहिओ य वइयरो सेणियस्स एसो स-मग्गोवि. ॥ ५९ ॥ रणावि संसियं देइ—मज्झ जइ कहवि नियविज्जाओ—सो पाणो तो मुंचइ—इहरा से हरइ जीयं ति. ॥ ६० ॥ पडिवन्नं पाणेणं—विज्जादा-णंपि, अह महीनाहो—सीहासणे निसन्नो—विज्जाए पढिउ माढत्तो. ॥ ६१ ॥ पु-णरुत्तपयत्तुक्कित्तियावि रणो न ठंति जा विज्जा, सो ता तज्जइ रुट्ठो—न रे तुमं दे-सि सम्मं ति. ॥ ६२ ॥ अभयेण जणिय मिहदेव—नत्थि एयस्स थेवमवि दोसो,

चाली आरोहीने जती मेली. ५६ मातंग बोल्यो के चोरोए दुष्कर कर्युं छे के जमणे एकांत छतां तेने घरेणा साथे जवा दीधी. ५७ मातंग आम बोल्यो ते परथी अभयकुमारे धार्युं के ए चोर छे एटले पकडावीने पूछ्युं के तें बगीचो केम बगाड्यो. ५८ तेणे कह्युं के मारा विद्यानां बळथी में तेम कर्युं छे. त्यारे आ सघळी हकीकत अभये श्रेणिकने कही. ५९ राजाए फरमाव्युं के जो ए मातंग कोइ रीते मने पोतानी विद्याओ आपे तो तेने मूको, नहितो मारी नाखो. ६० त्यारे मातंगविद्या आपवा कबूल थयो. हवे राजा सिंहासनपर बेठो रही विद्याओ भणवा लाग्यो. ६१ हवे फरीफरीने बोलतां पण ते राजाने चढे नहि एटले ते गुस्से थइ तेने तरछोडवा लाग्यो के तुं बरोबर रीते शीखवतो नथी. ६२ त्यारे अभयकुमारे कह्युं के हे देव, इहां एनो लगार वांक नथी, केमके विद्याओने विनयथी ग्रहण करतां ते आवडे छे अने फळदायक

विणयगहियाउ विज्जाउ—ढंति फलदाय जायंति. ॥ ६३ ॥ ता पाण मिमं सीहासणंमि ठविऊण सयमवि महीए—होऊण विणयसारं—पढसु जहा ठंति हियंहमि. ॥ ६४ ॥ तहचेव कयं रण्णा—संकंताओ लहुं च विज्जाओ, सक्कारिऊण मुक्को—पाणो अच्चंतपणइ व्व. ॥ ६५ ॥ इय जइ इहलोइयतुच्छकज्जविज्जावि भावसारेण—पाविज्जइ हीणस्सवि— गुरुणो अच्चंतविणएण—॥ ६६ ॥ ता कह समत्थमणवंछियत्थदाणक्खमाइ विज्जाए—जिणभणियाए दाईण—विणयविमुहो बुहो होज्जा ? ॥ ६७ ॥ इति.

याय छे. ६३ माटे आ मातंगने सिंहासनपर बेशाडी तमे जमीनपर बेशी विनयपूर्वक भणो के ते हजुपण आवडे. ६४ राजाए तेमज कर्युं एटले झटदइ विद्याओ आवडवा लागी त्यारे मातंगने अत्यंत स्नेहि सगानी माफक सत्कार करीने रवाने कर्यो. ६५ आ रीते ज्यारे आ लोकना तुच्छ कामनी साधनार विद्या पण भाव राखीने हीनजातिना गुरुनो पण अत्यंत विनय करतांज आवडे छे—तो त्यारे समस्त मनवांछित देवा समर्थ जिनभाषित विद्याना देनार गुरुनो विनय साचववामां समजु माणस शी रीते विमुख रहे ? ६६—६७

अथसंग्रहगाथाक्षरार्थः—

देवीदोहलत्ति देव्याश्चेल्लनाभिधानायाः कश्चित् समये दोहदः समपादि, एगथंभप्पासायत्ति एकस्तंभप्रासादक्रीडनाभिलाषरूपः, ततो राजादिष्टस्य—अभयत्ति अभयकुमारस्य—वनगमनं महाटवीप्रवेशः समजायत. तत्रच—रुक्खुवलक्खहिवासण त्ति विशिष्टवृक्षोपलक्षिधरधिवासना च वृक्षस्यैव, ततो वंतरतोसोत्ति तदधिष्टायकव्यंतरेण तोषे समुत्पन्ने सति सुप्रासादो व्यधीयत.

हवे संग्रहगाथानो अक्षरार्थ कहेछे:—

देवीदोहळ एटले के चेल्लणा नामनी राणीने कोइक समये दोहलो उपन्यो—एक स्थंभ प्रासाद एटले एकथंभा महेलमां रमवान्य दोहलो—बाद राजाए फरमावेला अभयकुमारनुं वनमां गमन थयुं. त्यां वृक्षनी उपलब्धि एटले विशिष्ट वृक्ष मळीआव्यो, तेनी तेणे अधिवासना करी, एटले तेना अधिष्टायक व्यंतरने तोष थतां तेणे सुंदर महेल बनावी आप्यो.

उउसमवाए अंबग—अकालदोहलग पाणपत्तीए विज्जाहरणं रण्णादिट्ठो कोवो भयाणत्ती. ॥ २१ ॥

त्यां ऋतुओनो समवाय थतो, मातंगनी स्त्रीने अकाळे आम्र फळ खावानो दोहद थयो. तेणे विद्यावी (फळ) हर्या. राजाए ते जोइ कोप कर्यो अने अभयने हुकम कर्यो. २१

(टीका)

तस्यच प्रासादस्य चतसृष्वपि दिक्ष्वारामे षण्णामृतूनां वसंतग्रीष्मप्रावृट्शरद्धेमंतशिशिरलक्षणानां समवायो मीलनं नित्यमेवाभवद् व्यंतरानुभावादेव. एवंच प्रयाति काले कदाचित् अंबगत्ति आम्रफलेष्वकाले आम्रफलोत्पत्त्यनवसरे दोहदकः पाणपत्न्याश्चंडालकलत्रस्य समुद्भूत. ततो विद्यया आहरणमादानमक्रियत चूतफलानां चंडालेन तत्रारामे. तदनु राज्ञा श्रेणिकेन दृष्टे फलविकलैकशाखे चूतशाखिनि विलोकिते सति कोपः कृतः, अथाभयस्याज्ञप्तिः चोरगवेषणगोचरा आज्ञा वितीर्णा. (७)

टीका

ते महेलनी चारे बाजुना वगीचामां वसंत-ग्रीष्म-प्रावृट्-शरद-हेमंत-शिशिररूप छ ऋतुओनो समवाय एटले व्यंतरना अनुभावथीज नित्य मेळ हतो. एम वखत जतां कोइ वेळाए आंबाना फळनी उत्पत्तिना अकाळमां चंडाळनी स्त्रीने दोहळो थयो. त्यारे चंडाळे ते वगीचामांथी विद्यावडे आंबानां फळ हरी लीधां. ते बाद श्रेणिके फळरहित माळी वाळा आंबाने जोइ कोप कर्यो. बाद अभयने आज्ञप्ति एटले चोर शोधवा बाबतनी आज्ञा आपी.

चोरनिरूवण इंदमह लोगनियरंमि अप्पणा ठिअओ, चोरस्स कए नट्टिय वड्ढ-
कुमारिं परिकहिंसु. ॥ २१ ॥

चोरनिरूपण करतां इंद्रमहआवतां लोकना समूहवचे पोते ऊभो रही चोरने पकडवा माटे नाट्य चालनार हतुं त्यां वृद्धकुमारीनी कथा ते कहेवा लाग्यो. २१

(टीका)

ततश्चोरनिरूपणे प्रक्रांते सति—इंद्रमहे समायाते—लोकनिकरे जनसमूहमध्ये—आत्मना स्वयं—स्थितक ऊर्ध्वस्थितएव—चोरस्य कृते चोरोपलंभनिमित्तं, नट्टिय त्ति नाट्येन नटने प्रस्तुते सति—वड्ढकुमारिंत्ति वृद्धकुमारिकाख्यायिकां—पर्यकथयत् निवेदितवानभयकुमारः

टीका.

त्यारे चोरनी शोध चालु करतां इंद्रमहोत्सव आवतां जनसमूहना वचे पोते जाते ऊभो रहीने ज चोरने पकडी पाडवा माटे, नाट्य चालु थनार हतुं त्यां अभयकुमार वृद्धकुमारीनी आख्यायिका कहेवा लाग्यो.

कथ मित्याह.

काइ कुमारी पइदेवयत्थ मारामकुसुमगहमोक्खो, नवपरिणीयब्भुवगम—पइक-हण विसज्जणा गमणं. ॥ २३ ॥

शी रीते कथा कही ते कहेछे.

कोइ कुमारी पति देवता माटे बगीचामांथी फूल लावतां पकडाइ. नवी परणेल आवुं एम कबूल करतां छूटकी थयो. तेणीए पतिने कह्याथी तेणे रजा आपतां ते त्यां जवा लागी. २३

(टीका)

काचित् कुमारी स्त्री—पइदेवयत्थमिति पत्युःकृते देवतापूजानिमित्तं— आरामकुसुमत्ति आरामे मालाकारस्य संबंधिनि कुसुमान्यवचिन्वाना—गहमोक्खोत्ति मालाकारेण कदाचित् गृहीता ततो मोक्षो मोचनं कृतं तस्या एव—नवपरिणीयब्भुयवगम त्ति नवपरिणीतया त्वया प्रथमतएव मत्समीपे समागंतव्यमित्यभ्युपगमे कृते सति वृद्धकुमार्या, पइकहणविसज्जणागमणंति ततःकायेन तया परिणीतया पत्युर्यथावस्थित-वस्तुकथनमकारि, तेनापि विसर्जनं व्यधायि तस्याः, तदनु गमनं मालाकारसमीपे तया आरब्धं, ७.

टीका

कोइ कुंवारी स्त्री पतिना माटे देवतानी पूजासारुं माळीना बगीचामांथी फूल तोडतां माळीए पकडी बाद नवी परणेली तुं पहेलां मारी पासे आवजे एम कबूल करावीने तेने जती मेली बाद अवसरे ते परणी एटले तेणीए

पतिने खरेखरी हकीकत कही. तेणे पण तेने जवानी रजा आपी. त्यार केमे ते माळी पासे जवा लागी.

तेणगरक्खसदंसण—कहण मुयण मेव मालगारेण, अक्खयपम्मागय दुक्करं-
मि पुच्छाइ नियजावो. २४

चोरो अने राक्षसनुं दर्शन थतां खरं कहेवाथी बूटको थयो एम माळिए पण कर्युं. अक्षत रही ते पाछी आवी. दुष्करपणा माटे पूछतां सौए पोतानो अभिप्राय जणाव्यो. २४

(टीका)

मार्गे च गच्छंत्यास्तस्याः स्तेनानां चौराणां राक्षसस्य च दर्शनं संजातं. कहणत्ति तयापि तेषां तस्यच यथावद्वस्तुतत्वकथनं कृतं ततो मुयणमिति चौरै राक्षसेन च तस्या मोचनमधिष्टितं. एवमालगारेणत्ति मालाकारेणापि निवेदिते प्राच्यवृत्तांते मुक्ता इत्यर्थः तत अक्षता मालाकारेणाप्रतिस्खलिता स्फटिकोपलोज्वलशीला राक्षसेनाभक्षिता चौरै रविलुप्ता च सती प्रत्यागता भर्तुः पार्श्वे. ततः- दुक्करंमि पुच्छाइ निगजावोत्ति केन तेषां मध्ये दुःकरमाचरितमिति पृच्छायां कृतायामजयकुमारेण, सर्वैः सामाजिकजनैर्निजभावः स्वाभिप्रायः प्रकाशितः

टीका

रस्ते चालतां तेणीने चोरो तथा राक्षसनुं दर्शन थयुं तेणीए तेमने खरीवात कही, तेथी तेमणे तेने छोडी दीधी. माळिए पण पूर्वनो वृत्तांत जणावतां छोडी. त्यारे ते माळिए नहि अडकेली होइ स्फटिकजेवुं निर्मळ शील

गर्भने माहंने अणखावी तथा चोराए अणकुंपनी छती पति पासे पाछी आवी. बाद, अभयकुमारे पुछ्युं के एवी मोडे दुष्कर कर्यु त्यारे सर्व सज्जनोए पोतानो अभिप्राय प्रकाशित कर्यो.

ईसालुगाईणाणं—चोरग्गह पुच्छ विज्जकहणाओ, दंमो तद्दाणासणभूमी पाण-

स्स परिणामो. ॥ २५ ॥

ईर्ष्यालु वगेरेनुं ज्ञान थयुं. चोर पकडायो. पूछतां विद्यानी वात कही. ते विद्या आपवानो दंभ थयो. मातंगने अर्धासनपर बेसाड्यो. तेथी विद्या नहि परणमी. २५

(टीका)

ईर्ष्यालुकादीनां ईर्ष्यालुकनक्कचोराणां ज्ञानं संपन्नमभयकुमारमहामंत्रिणः. ततश्चौरस्य ग्रहः. पुच्छत्ति पृष्टश्चासावभयकुमारेण यथा भो त्वया कथं बहिरवस्थितेनैव गृहीतान्याम्रफलानि ? तदनु—विज्जत्ति विद्याप्रसादत इति निवेदितं पाणेन. अथ —कहणाओ अभयकुमारेण श्रेणिकाग्रतः पुनः कथना अस्य वृत्तांतस्य विहिता, ततः दंभश्चंडालस्य तद्दाणत्ति तस्याएव विद्याया दानलक्षणः कृतः, प्रतिपन्नं च त तेन. प्रारब्धं च श्रेणिकाय विद्याप्रदानं आसणभूमी पाणस्सत्ति आसनं भूमी पाणस्य दत्तं, आत्मना तु सिंहासने निषण्णः श्रेणिक,—स्ततश्चापरिणामः सम्यगपरिणमनं विद्यायाः श्रेणिकस्य.

टीका.

अभयकुमारने ईर्ष्यालुक, नक्कक तथा चोरोनी माहिती मळी, एटले चोरने पकडयो. तेने अभयकुमारे पुछ्युं के अरे तें बाहेर रहीनज शी रीते आंबानाफळ तोड्यां ? ते मातंगे जणाव्युं के विद्याना पसायथी आ वात अभयकु

गारे श्रेणिक आगळ कही त्यारे चंमालने ते विद्या आपी देवा रूप दंम कर्यो. ते वात तेणे कबूल करीने श्रेणिकने विद्या आपवा मांमी. त्यां मातंगने जमीनपर वेशामवामां आव्यो, अने श्रेणिक पोते सिंहासने बेठो. तेथी तेने बरोबर रीते विद्या आवमी नहि.

रत्तो कोवो एयं वितहं अन्नयविणउ त्ति पाणस्स, आसण नूमी राया—परिणामो एव मत्तत्थ. ॥ २६ ॥

राजाने कोप थयो मातंगे कह्युं आ कंइ खोटुं नथी अन्नय बोल्यो अविनय थाय छे तेथी मातंगने आसन आप्यु, राजा जमीनपर बेठो, एटले विद्या आवमी एम बीजा स्थळे जाणवुं. २६

(टीका)

ततः राज्ञः कोपः प्रोद्भूतः यथा न त्वं करोषि मम सम्यग् विद्याप्रदानं. ततः प्राह पाणः—नेदं वितथं विधीयते मया विद्यादानं. तदनु नणितवानन्नयकुमारः—अविणउत्ति अविनय इत्येवमात्मनातु सिंहासनाध्यासनलक्षणस्त्वया राजन् क्रियते इत्यपरिणामो विद्यायाः. ततश्च पाणस्स—आसणत्ति सिंहासनं वितीर्णं, नूमी राया इति राजा स्वयं वसुंधरायामुपविष्टः. तदनंतरं यथावत्परिणामो विद्यायाः संपन्न इति. एवमन्यत्रापि विद्याग्रहणे विनयः कार्य इति.

टीका.

बाद राजाने कोप थयो के तुं बरोबर रीते विद्या आपतो नथी. त्यारे मातंग बोल्यो के हुं कंइ जूठी रीते आपतो नथी. त्यारे अन्नयकुमार बोल्यो के हे राजन् तुं पोते सिंहासने बेशवारूप अविनय करे छे एटले विद्या नथी आवमती. बाद मातंगने सिंहासन आप्युं अने राजा पोते जमीनपर बेठो त्यारे तरतमां बरोबर विद्या आवमवा लागी. एम बीजा स्थळे पण विद्याग्रहण करतां विनय करवो जोइए.

यतः पठ्यते—

विणएण सुय महीयं–कहवि पमाया विसुमरियं संतं–त मुवट्टाइ परभवे–केव-
लणाणं च आवहइ. ॥ १ ॥ विज्जावि होइ बलिया–गहिया पुरिसेण विणयमंतेण,
सुकुलपसूया कुलबालियव्व पवरं पइं पत्ता. ॥ २ ॥ (७)

जे माटे कहेवायछे के

विनयथी शीखेलुं शास्त्र पछाथ प्रमादना लीधे भूली जवाय तो ते परभवे तरत उपस्थित थाय छे अने छेवटे के-
वळज्ञान पमाडे छे. (१)

रुडा कुळमां जन्मेली कुलीन बाळा रुडा पतिने पामीने बलवान् थाय तेम विनयवंत पुरुषे ग्रहण करेली वि-
द्या बळवान रहे छे. (२)

अमुमेवार्थमन्वयव्यतिरेकाभ्यां भावयन्नाह ;—विहिणा गुरुविणएणं—एवं-
चिय सुत्तपरिणती होइ, इहरा उ सुत्तगहणं विवज्जयफलं मुणेयव्वं. ९७

आ ज वातने अन्वय अने व्यतिरेकथी बतावे छे.

विधिपूर्वक गुरुनो विनय करवाथी ए रीते सूत्रनी परिणति थाय छे. पण बीजी रीते सूत्रग्रहण करतां विपरीत
फळ थाय छे. ९७

(टीका)

विधिना संहृतीप्रमार्जननिषद्याप्रदानकृतिकर्मकायोत्सर्गकरणादिना सिद्धांत-
प्रसिद्धेन, तथा गुरोः सूत्रार्थोभयप्रदातुः सूरेर्विनयोऽभ्युत्थानासनप्रदानपादपरिधावन-

विश्रामणाकरणोचितान्नपानौषधादिसंपादनलक्षणश्चितानुवृत्तिरूपश्च गृह्यते—अतस्तेन गुरुविनयेन, एवंचियत्ति एवमेव श्रेणिकमहाराजन्यायेनैव सूत्रपरिणतिर्गृह्यमाणागमग्रंथानामात्मना सहैकीभावः भवति संपद्यते. नहि सम्यगुपायः प्रयुक्तः स्वसाध्यमसाध्यैवोपरमं प्रतिपद्यते.—इतरथात्वन्यथा पुनरविधिना गुरोरविनयेनचेत्यर्थः सूत्रग्रहणं प्रस्तुतमेव विपर्ययफलं विपरीतसाध्यसाधकं मुणितव्यं विज्ञेयं.

टीका

विधिवडे एटले के मंडळी योजी, वेडक गोठवी वंदन दइ, कायोत्सर्ग करी—तथा सूत्रार्थ शीखवनार गुरुनो विनय एटले के अभ्युत्थान, आसनदान, पादपरिधावन, विश्रामणा अने उचित अन्नपानौषध संपादन रूप अने चित्तानुवृत्ति रूप, ते वडे—एज रीते एटले श्रेणिक राजाना दृष्टांत माफक भणवामां आवता आगम ग्रंथो दिलमां चोटे बाकी अविधि अने अविनयथी सूत्र शीखतां धारवाथी विपरीतफळ थाय छे, एम जाणवुं.

सूत्रग्रहणफलं हि यथावस्थितोत्सर्गापवादशुद्धहेयोपादेयपदार्थसार्थपरिज्ञानंतदनुसारेण चरणकरणप्रवृत्तिश्च. अविधिना गुरुविनयविरहेण च दूपितस्य पुनः प्राणिनः सूत्रग्रहणप्रवृत्तावप्येतद्द्वितयमपि विपरीतं प्रजायत इति. (७)

केमके सूत्र शीखवानुं फळ ए छे के खरेखरा उत्सर्गापवाद साथे हेयोपादेय पदार्थो ओलखी अने ते प्रमाणे चालवुं हालवुं.परंतु अविधि अने गुरुविनयना अभावथी दूषित प्राणी सूत्र शीखे तोपण ए बे फळ उलटी रीतना थशे.

समणीयंपि जरुदये–दोसफलंचेव हंत सिद्धमिणं, एवंचिय सुत्तंपिहु–मिच्छत्तज-रोदए णेयं. ॥ २८ ॥

उलटुं फळ दृष्टांत आपीने जणावे छेः—

तावना जोरमां शमनीय पण दोष वधारे छे ए जाणीती वात छे. तेम मिथ्यात्वरूप ज्वरना जोरमां सूत्र पण जाणवुं. २८

(टीका)

शमय–त्युपशमयति शमनीयं पर्पटकादि तदपि–किंपुनरन्यत्तत्प्रकोपहेतुर्घृता-दि–ज्वरोदये पित्तादि प्रकोपजन्यज्वरोदये–किमित्याह–दोपफलं चैव सन्निपातादिमहा-रोगविकारहेतुरेव हंतत्ति सन्निहितजनव्यसन्यामंत्रणं–सिद्धं प्रत्यक्षादिप्रमाणप्रतिष्ठितं इदं पूर्वोक्तं वस्तु. दृष्टांतमुपदर्श्य दार्ष्टांतिकयोजनामाह.

टीका

दरदने शमावे ते शमनीय पापड वगेरे ते पण— तो पछी तेना प्रकोपना हेतु घी वगेरानी शी वात करवी— पित्तादिकना प्रकोपथी प्रगटेला तावमां दोषने वधारे छे एटले के सन्निपात वगेरे महारोग विकारनो हेतु थइ पडे छे. हे लोको, ए वात प्रत्यक्षादि प्रमाण सिद्ध छे. आ दृष्टांत आपी दार्ष्टांतिकनी योजना करे छेः-एज रीते मिथ्यात्वरूप ज्वरना उदयमां सूत्र पण जाणवुं.

एवंचियत्ति एवमेव—सुत्तपिहुत्ति सूत्रमप्युक्तलक्षणं मिथ्यात्वज्वरोदये. मिथ्यात्वं नाम सर्वज्ञप्रज्ञप्तेषु जीवाजीवादितत्त्वेषु नित्यानित्यादिविचित्रपर्यायपरंपरापरिगतेषु विपरीततया श्रद्धानं.

त्यां मिथ्यात्व एटले सर्वज्ञे कहेला नित्यानित्यादि विचित्र पर्यायवाळा जीवाजीवादि पदार्थोमां उलटुं श्रद्धान करवुं ते.

तच्च सप्तधा ;—

ऐकांतिकसांशयिकवैनयिकपूर्वव्युद्ग्राहविपरीतरुचिनिसर्गमूढदृष्टिभेदात्.

ते मिथ्यात्व सात प्रकारे छेः—

ऐकांतिक, सांशयिक, वैनयिक, पूर्वव्युद्ग्राह, विपरीतरुचि, निसर्ग, अने मूढदृष्टि.

यथोक्तं.

पदार्थानां जिनोक्तानां—तदश्रद्धानलक्षणं, ऐकांतिकादिभेदेन—सप्त ... हतं. ॥ १ ॥ क्षणिकोऽक्षणिको जीवः—सर्वथा सगुणोऽगुणः, इत्यादिभाष... तद्भेदमुदा- दैकांतिकमुच्यते. ॥ २ ॥ सर्वज्ञेन विरागेण—जीवाजीवादि भाषितं, तथ... माणस्य—त कल्प—दृष्टिः सांशयिकी मता. ... गिनो देवा—धर्म्म... यं नवे ति सं- ... : सर्वे सदास-

जिनभाषित पदार्थोनुं अश्रद्धान ... कहेल छे. (१) जी-

छे के खरेखरा उत्सर्गापवाद ... गुरुविनयना अभावथी दूषित प्राणी सूंझा ...

पर्ययफलमेव दृष्टांतद्वारेण ज्ञापयति

मा:, इत्येपा कथ्यते बुद्धिः—सफलांचेव हंत सिद्धमिणं, ग्रहैः कुहेतुदृष्टांतै—र्न तत्वं प्रतिपद्यते, मेडलश्चर्मकारस्य— ॥ ५ ॥ अतथ्यं मन्यते तथ्यं—विपरीतरुचिर्जनः, दोपातुरमनास्तिक्तं—ज्वरीव मधुरं रसं. ॥ ६ ॥ दीनो निसर्गमिथ्या-त्व—स्तत्वातत्वं न बुध्यते, सुंदरासुंदरं रूपं—जात्यंध इव सर्वथा. ॥ ७ ॥ देवो रागी, यतिः संगी—धर्मः प्राणिनिशुंभनः, मूढदृष्टिरिति ब्रूते—युक्तायुक्तविवेचकः ॥ ८ ॥

न पर्याया क्षणिक के अक्षणिकज छे, सगुण के निर्गुण ज छे एम बोलवुं ते ऐकांतिक छे. (२) वीतराग सर्वज्ञे कहेला जीवाजीवादि खरा छे के नहि एम संकल्प करवो ते सांशयिक छे(३) सर्व आगमो, सर्व लिंगवाळा सर्व देवो, अने सर्व धर्मो हमेश सरखाज छे एम जे पुरुषनी बुद्धि छे तेने जिनभगवानोए वैनयिक मिथ्यात्व कहेलुं छे. (४) चमारोना टोळाए चामडाना टुकडाना भजीया खाता मेल्या नहि तेम जे कुहेतु अने दृष्टांतोथी जकडायलो रही तत्वने कबूल नहि करे तेने ग्रहव्युद्ग्राह मिथ्यात्व छे. (५) सन्निपातमां चकेला ज्वरी जेम तीखाने मीठुं रस माने तेम खोटाने खरुं माने ते विपरीत रुचि जाणवी (६) जन्मांध पुरुष जेम सुंदर के असुंदर रूपने कोइ रीते ओळखी शके नहि तेम जे विचारो अज्ञानने मूळथी ज नहि समजे तेने निसर्गमिथ्यात्व जाणवुं. (७) मूढदृष्टि मिथ्यात्ववाळो पुरुष युक्तायुक्तनो विवेक नहि करतां रागीने देव कहे छे. संगमां फसेलाने यति मानी बेशे छे, अने प्राणिनी हिंसाने धर्म कथा करे छे, माटे ए मूढ दृष्टि जाणवी. (८)

तदेव दुर्निवारवैधुर्याधायकतया ज्वरो रोगविशेपस्तस्योदय उद्भवस्तत्र ज्ञेयं.

ए मिथ्यात्व ज्यारे वैधर्य करनार होवाथी ज्वर तुल्य छे तेनो उदय होतां तेम थाय छे एम जाणवुं.

एवंचियत्ति एवमेव—सुत्तंपिहुत्ति सूत्रमप्युक्तलक्षणं मिथ्यात्वज्वरोदये. मिथ्यात्वं नाम सर्वज्ञप्रज्ञप्तेसु जीवाजीवादिभावेपु नित्यानित्यादिविचित्रपर्यायपरंपरापरिगतेषु विपरीततया श्रद्धानं.

त्यां मिथ्यात्व एटले सर्वज्ञे कहेला नित्यानित्यादि विचित्र पर्यायवाळा जीवाजीवादि पदार्थोमां उलटुं श्रद्धान करवुं ते.

तच्च सप्तधा ;—

ऐकांतिकसांशयिकवैनयिकपूर्वव्युद्ग्राहविपरीतरुचिनिसर्गमूढदृष्टिभेदात्.

ते मिथ्यात्व सात प्रकारे छेः—

ऐकांतिक, सांशयिक, वैनयिक, पूर्वव्युद्ग्राह, विपरीतरुचि, निसर्ग, अने मूढदृष्टि.

यथोक्तं.

पदार्थानां जिनोक्तानां—तदश्रद्धानलक्षणं, ऐकांतिकादिभेदेन—सप्तभेदमुदाहृतं. ॥ १ ॥ क्षणिकोऽक्षणिको जीवः—सर्वथा सगुणोऽगुणः , इत्यादिभाषमाणस्य—तदैकांतिकमुच्यते. ॥ २ ॥ सर्वज्ञेन विरागेण—जीवाजीवादि भाषितं, तथ्यं नवे ति संकल्प—दृष्टिः सांशयिकी मता. ॥ ३ ॥ खरेखरा उत्सर्गापवर्गिणो देवा—धर्म्माः सर्वे सदास-

जिनभाषित पदार्थोनुं अश्रद्धान ... गुरुविनयना अभावथी दूषित प्राणी ... कहेल छे. (१) जी-

पर्यंतफलमेव दृष्टांतद्वारेण भावयति

मा:, इत्येषा कथ्यते बुद्धिः— सफलांचेव हंत सिद्धमिणं, एवं दुः कुहेतुदृष्टांतै—र्न तत्वं प्रतिपद्यते, मंडलश्चर्मकारस्य— ॥ ५ ॥ अतथ्यं मन्यते तथ्यं—विपरीतरुचिर्जनः, दोषातुरमनास्तिक्तं—ज्वरीव मधुरं रसं. ॥ ६ ॥ दीनो निसर्गमिथ्यात्व—स्तत्वातत्वं न बुध्यते, सुंदरासुंदरं रूपं—जात्यंध इव सर्वथा. ॥ ७ ॥ देवो रागी, यतिः संगी—धर्मः प्राणिनिशुंभनः, मूढदृष्टिरिति ब्रूते—युक्तायुक्तविवेचकः ॥ ८ ॥

थ सर्वथा क्षणिक के अक्षणिकज छे, सगुण के निर्गुण ज छे एम बोलवुं ते ऐकांतिक छे. (२) वीतराग सर्वज्ञे कहेला जीवाजीवादि खरा छे के नहि एम संकल्प करवो ते सांशयिक छे(३) सर्व आगमो, सर्व लिंगवाळा सर्व देवो, अने सर्व धर्मो सर्वे सरखाज छे एम जे पुरुषनी बुद्धि छे तेने जिनभगवानोए वैनयिक मिथ्यात्व कहेलुं छे. (४) चमारोना टोळाए चामडाना कडाना जेवीपा ग्यानां मळ्या नहि तेम जे कुहेतु अने दृष्टांतोथी जरुकायलो रही तत्वने कबूल नहि करे तेने पूर्वव्युद्ग्राह मिथ्यात्व छे. (५) सन्निपातमां चकेलो ज्वरी जेम तीखाने मीठुं रस माने तेम खोटाने खरुं माने ते विपरीत रुचि जाणवी (६) जन्मांध पुरुष जेम सुंदर के असुंदर रूपने कोइ रीते ओळखी शके नहि तेम जे विचारो तत्वातत्वने मूळथी ज नहि समजे तेने निसर्गमिथ्यात्व जाणवुं. (७) मूढदृष्टि मिथ्यात्ववाळो पुरुष युक्तायुक्तनो विवेक नहि करतां रागीने देव कहे छे. संगमां फसेलाने यति मानी बेठे छे, अने प्राणिनी हिंसाने धर्म कथा करे छे, माटे ए मूढ दृष्टि जाणवी. (८)

तवेव दुर्निवारवैधुर्याधायकतया ज्वरो रोगविशेषस्तस्योदय उद्भवस्तत्र ज्ञेयं.

[redacted] आरे भैर्य करनार होवाथी ज्वर तुल्य छे तेनो उदय होतां तेम थाय छे एम जाणवुं.

वहुविहं लहुं देइ. ॥ १ ॥

जे माटे कह्युं छे के विनयनम्र रही अंजलिबद्ध रही अने मरजी साचवीने आराधेल गुरु जूदा जूदा श्रुतशास्त्रो तरतमां शीखवे छे. (१)

तथा—उवहियजोगदव्वो—देसे काले परेण विणएण, चित्तण्णू अणकूलो—सीसोसम्मं सुयं लहइ ॥ २ ॥

वळी कह्युं छे के देशकालने योग्य चीजो पूरा विनयथी लावी आपनार, चित्तने पारखनार, अने अनुकूळपणे वर्त्तनार शिष्य रूडीरीते श्रुत पामी शके छे. (२)

कथमित्याह—सूत्रानुसारतः सूत्रस्य व्यवहारभाष्यस्यानुसारोऽनुवर्त्तनं तस्मात् —खल्वरवधारणे—ततः सूत्रानुसारादेव तदतिक्रमेण सूत्रदाने तद्वेषित्वमेव कृतं स्यात्.

गुरुए शिष्यने केवी रीते श्रुत आपवुं ते कहे छे—सूत्र एटले व्यवहारभाष्य तेना अनुसारेज तेने उल्लंघीने सूत्र शीखवे तो तेनो दुश्मनाइ करतोज गणाय. जे माटे कहेलुं छे के:—

यथोक्तं—तत्कारी स्यात्सनियमा—त्तद्वेषी चेति यो जडः, आगमार्थे तमुल्लंघ्य—ततएव प्रवर्त्तते ॥ १ ॥ आगमात्सर्वएवायं—व्यवहारो व्यवस्थितः, तत्रापि हाठिको यस्तु—हंताज्ञानां स शेखरः ॥ २ ॥

जे जड होय ते तेने करतो थको तेनो दुश्मन थाय छे. ते आगमार्थमां तेने उल्लंघीने ते वडे ज प्रवर्त्ते छे. (१) आगमथीज आ सघळो व्यव्हार चाले छे, माटे त्यां पण जे हठ करे ते अज्ञाननो सरदार जाणवो (२)

सूत्रानुसारश्चायं.

तिवरिसपरियागस्स उ—आचारपकप्पनाम अज्झयणं, चउवरिसस्स उ सम्मं—सूयगडं नाम अंगं ति. ॥ १ ॥ दसकप्पव्ववहारा—संवच्छरपणगदिक्खियस्सेव, ठाणं समवाओ चिय—दो अंग अठवासस्स. ॥ २ ॥ दसवासस्स विवाहो—एकारसवासयस्स उ इमे उ—खुड्डियविमाणमाई—अज्झयणा पंच नायव्वा. ॥ ३ ॥ बारसवासस्स तहा—अरुणुववायाइ पंच अज्झयणा, तेरसवासस्स तहा—उट्ठाणसुयाइया चउरो. ॥ ४ ॥ चोदसवासस्स तहा—आसीविसभावणा जिणा विंति, पन्नरसवासगस्स य—दिट्ठीविसभावणं तहय. ॥५॥ सोलसवासाईसु य—एगुत्तरवड्ढिएसु जहसंखं, चारण-

सूत्रोनु अनुसरण आ रीते छेः—

त्रण वर्षना दीक्षितने आचारांग अने प्रकल्प नामे अध्ययन शीखाववुं. चार वर्षना दीक्षितने सूयगडांग शीखाववुं. ? पांच वर्षना दीक्षितने दशाश्रुतस्कंध बृहत्कल्प अने व्यवहार सूत्र शीखववा. आठ वर्षना दीक्षितने स्थानांग अने समवायांग शीखववा. (२) दश वर्षना दीक्षितने भगवती सूत्र शीखववुं. अग्यार वर्षना दीक्षितने क्षुल्लकविमान वगेरे पांच सूत्र शीखववां. (३) बार वर्षना दीक्षितने अरुणोपपात वगेरे पांच सूत्र शीखववां. तेर वर्षना दीक्षितने उत्थानश्रुत वगेरे चार सूत्र शीखववा. (४) चौद वर्षना दीक्षितने आशीविषभावना शीखाववी एम जिनेश्वरो कहे छे. पंदर वर्षना दीक्षितने दृष्टिविष भावना शीखाववी. (५) सोळ सत्तर अने अढार वर्षना दीक्षितने अनुक्रमे चार

वहुविहं लहुं देइ. ॥ १ ॥

जे माटे कह्युं छे के विनयनम्र रही अंजलिबद्ध रही अने मरजी साचवीने आराधेल गुरु जूदा जूदा श्रुत-शास्त्रो तरतमां शीखवे छे. (१)

तथा—उवहियजोगद्दव्वो—देसे काले परेण विणएण, चित्तणू अणकूलो—सीसो-सम्मं सुयं लहइ ॥ २ ॥

वळी कह्युं छे के देशकालने योग्य चीजो पूरा विनयथी लावी आपनार, चित्तने पारखनार, अने अनुकूळपणे वर्त्तनार शिष्य रुडीरीते श्रुत पामी शके छे. (२)

कथमित्याह—सूत्रानुसारतः सूत्रस्य व्यवहारभाष्यस्यानुसारोऽनुवर्त्तनं तस्मात् —खलुरवधारणे—ततः सूत्रानुसारादेव तदतिक्रमेण सूत्रदाने तद्वेषित्वमेव कृतं स्यात्.

गुरुए शिष्यने केवी रीते श्रुत आपवुं ते कहे छे—सूत्र एटले व्यवहारभाष्य तेना अनुसारेज तेने उल्लंघीने सूत्र शीखवे तो तेनो दुश्मनाइ करतोज गणाय. जे माटे कहेलुं छे केः—

यथोक्तं—तत्कारी स्यात्सनियमा—त्तद्वेषी चेति यो जडः, आगमार्थे तमुल्लंघ्य —ततएव प्रवर्त्तते ॥ १ ॥ आगमात्सर्वएवायं—व्यवहारो व्यवस्थितः, तत्रापि हाठिको यस्तु—हंताज्ञानां स शेखरः ॥ २ ॥

जे जड होय ते तेने करतो थको तेनो दुश्मन थाय छे. ते आगमार्थमां तेने उल्लंघीने ते वडे ज प्रवर्त्ते छे. (१) आगमथीज आ सघळो व्यव्हार चाले छे, माटे त्यां पण जे हठ करे ते अजाणनो सरदार जाणवो (२)

सूत्रानुसारध्यायं.

तिवरिसपरियागस्स उ-आचारयकप्पनाम अज्झयणं, चउवरिसस्स उ सम्मं —सूयगडं नाम अंगं ति. ॥ १ ॥ दसकप्पव्ववहारा—संवच्छरपणगदिक्खियस्सेव, —ठाणं समवाओ च्चिय—दो अंगे अट्ठवासस्स. ॥ २ ॥ दसवासस्स विवाहो—एक्कारसवासयस्स उ इमे उ—खुड्डियविमाणमाई—अज्झयणा पंच नायव्वा. ॥ ३ ॥ बारसवासस्स तहा-अरुणुववायाइ पंच अज्झयणा, तेरसवासस्स तहा--उट्ठाणसुयाइया चउरो. ॥ ४ ॥ चोद्दसवासस्स तहा-आसीविसभावणा जिणा बिंति, पन्नरसवासगस्स य-दिट्ठीविसभावणं तहय. ॥५॥ सोलसवासाईसु य-एगुत्तरवड्ढिएसु जहसंखं, चारण-

सूत्रोनु अनुसरण आ रीत छेः—

त्रण वर्षना दीक्षितने आचारांग अने प्रकल्प नामे अध्ययन शीखावबुं. चार वर्षना दीक्षितने सूयगडांग शीखाववुं. (१) पांच वर्षना दीक्षितने दशाश्रुतस्कंध बृहत्कल्प अने व्यवहार सूत्र शीखववा. आठ वर्षना दीक्षितने स्थानांग अने समवायांग शीखववा. (२) दश वर्षना दीक्षितने भगवती सूत्र शीखववुं. अग्यार वर्षना दीक्षितने क्षुल्लकविमान वगेरे पांच सूत्र शीखववां. (३) बार वर्षना दीक्षितने अरुणोपपात वगेरे पांच सूत्र शीखववां. तेर वर्षना दीक्षितने उत्थानश्रुत वगेरे चार सूत्र शीखववा. (४) चौद वर्षना दीक्षितने आशीविषभावना शीखाववी एम जिनेश्वरो कहे छे. पंनर वर्षना दीक्षितने दृष्टिविष भावना शीखाववी. (५) सोळ सत्तर अने अढार वर्षना दीक्षितने अनुक्रमे चार

लच्छीइ सोहिया चक्कपाणिमुत्ति व्व जयपयगा—॥ २ ॥ चंपा णामेण पुरी—आसी, परिहविययधणवइधणोहो—वत्थव्वो तत्थ धणो—अहेसि सिट्ठी गुणविसिट्ठो. ॥ ३ ॥ तस्सय वसुनामेणं—निवासिणा तामलित्तिनयरीए, वणिएण समं मित्ती—संजाया निरुवचरियत्ति.॥ ४॥ जिणधम्मपालणपरायणाण सुस्समणचलणभत्ताण, तेसिं वच्चंतेसुं—दिणेसु एगंमि पत्थावे—॥ ५ ॥ अव्वोच्छिन्नं पीइं—पवंछमाणेण निच्चकालंपि, सुंदरिनामा धूया—नियगा धणसेट्ठिणा दिन्ना—॥ ६॥ नंदस्स वसुसुयस्सा—कओ विवाहो य सोहणमुहुत्ते, दावियभुवणच्छरिओ—महया रिद्धी समुदएणं. ॥ ७ ॥ अह सुंदरीइ सद्धिं—पुव्वज्जियपुन्नपायवस्सु चियं, नंदस्स विसयसुहफल—मुवभुंजंतस्स जंति दिणा. ॥ ८ ॥ अच्चंतविमलबुद्धित्तणेण विन्नायजिणमयस्सावि, तस्से

वासुपूज्य भगवानना मुखचंद्रवडे भव्यजन रूप कुमुदवनने विकशित करनार, विष्णुनी मूर्ति माफक लक्ष्मीथी शोभती अने जयपताकावाळी चंपा नामे नगरी हती. त्यां कुबेरना धनसंग्रहने हलावनार गुणवान् धन नामे शेठ रहेतो हतो. १—२—३ तेने ताम्रलिप्तीना रहेवासी वसु नामना वाणिया साथे खरेखरी दोस्ती बंधाइ. ४ तेओ बन्ने जैन धर्म पाळता अने सुसाधुना चरणना भक्त रहेता. एम दिवसो जतां एक वेळाए—(५) धन शेठे ते प्रीति हमेश कायम राखवा माटे पोतानी पुत्री सुंदरी वसुशेठना पुत्र नंदने आपी, अने सारा मुहूर्त्ते तेनो भारे ठाठमाठथी जगतने अजायबी पमाडनार विवाह कर्यो. ६—७ हवे नंद पूर्वोपार्जित पुण्यतरुना प्रमाणे सुंदरी साथे विषय सुख भोगवतो रही दिवसो पसार करवा लाग्यो ८ ते अति निर्मळ बुद्धिवाळो होवाथी जिनधर्मनो जाण हतो छतां तेने एक वेळाए आ रीते विचार आव्यो. ९ जे पुरुष

गंमि अवसरे—जाया चिंता इय सल्वा. ॥ ९ ॥ ववसायविक्कमविगलो—पुरिसो ओ-गंमि होइ अवगीओ, काउरिसो त्ति विमुचइ—पुव्वसिरीएवि अचिरेण. ॥ १० ॥ ता पुव्वपुरिससंतइसमागयं जाणवत्तवाणिज्जं—पकरेमि पुव्वधणविणासणेण का चंगिमा मज्झ. ॥ ११ ॥ किं सोवि जीवइ्ज्जए—नियभुयजुयज्जिएणदव्वेण, जो वंछियं पयच्छइ—न मग्गणाणं पइदिणंपि. ॥ १२ ॥ विज्जाविक्कमगुणसलहणिज्जवित्तीइ जो धरइ जीयं—तस्सेव जीवियं वंदणिज्ज, मियरस्स किं तेण? ॥ १३ ॥ उप्पज्जंति विणस्संति—गागम्मो के जयंमि नो पुरिसा, जलबुब्बुउ व्व परमत्थरहियसोहेहि किं तेहिं? ॥ १४ ॥ कह सोवि पसंसिज्जति—न जस्स सप्पुरिसकित्तणावसरे, चागाइगुणगणेणं—पढम च्चिय जायए रेहा. ॥ १५ ॥ इय चिंतिऊण तेणं—परतीरक्खुलंतजंमपडहत्थं, पारे पागावारस्स—झत्ति पगुणीकयं पोयं. ॥ १६ ॥ गमणुम्मणं च तं पेच्छिऊण

काम धंधा वगर बेठो रहे ते आ लोकमां निंदाय छे अने ते कापुरुष छे एम मानी तेनी पासे रहेली लक्ष्मी पण तेने थोडाज वखतमां छोडी जती रहे. १० माटे हुं बापदादानी परंपराए आवेलो वहाणोनो वेपार करुं तो ठीक. बेठो रही पूर्वनुं धन ख्वाना मारी शी शोभा गणाय? ११ जे पोतानी बांहोथी धन कमावी मागणोने दररोज दान नथी आपतो ते आ जगतमां जीवे शा कामनुं छे? १२ जे विद्या अने पराक्रमथी वखाणती वर्त्तणुकवडे जीवे छे तेनुं जीवित वखाणवा योग्य छे, बाकी बीजानुं ते शा कामनुं छे? १३ आ जगतमां पाणीना परपोटा माफक कया अनेक पुरुषो जनमता मरता नथी? पण तेवा परमार्थ रहित जनोथी शुं वळ्युं? १४ सज्जनोमां जे दानादिगुणे करे पहेलो पंकातो नहि होय तेना पण शुं वखाण थाय.? १५ एम चिंतवीने तेणे बीजा कांठे नहि मळे तेवा मालथी वहाण भरीने दरिया पार जवा झट तैयार कर्युं. १६ तेने जरा व्याकुळ थएलो जोइ अति विरहकातरपणाथी अत्यंत शोक करती सुंदरी कहेवा लागी के हे आर्य पुत्र,

अइविरहकायरत्तेण, अच्चंतसोगविहुराइ सुंदरीए इमं भणिओ. ॥ १७ ॥ हे अज्जउत्त अहमवि—तुमए सह नूण मागमिस्सामि, पेमपरायत्त—मिमं चित्तं न तरामि संठविउं. ॥ १८ ॥ इय भणिए दढतरपणयभाववक्खित्तचित्तपसरेणं—पडिवन्नमिणं नंदेण—तयणु जायंमि पत्थावे—॥ १९ ॥ आरूढाइं दोन्निवि. ताणि विसिट्ठंमि जाणवत्तंमि, पत्ताणि च परतीरं—खेमेणा णाउलमणाणि. ॥ २० ॥ विणिवढियं च भंडं—उवज्जिओ भूरिकणयसंभारो, पडिभंडं घेत्तूण य—इंताण समुद्दमज्झंमि—॥२१॥ पुव्वकयकम्मपरिणइवसेण अच्चंतपवलपवणेण—विखुभिज्जंती नावा—खणेण सयसिक्करा जाया. ॥ २२ अह कहमि तहाभवियव्वाइ उवलद्धफलगखंमाणि, एक्कंमिमेव वेलाउलंमि लग्गाणि लहु ताणि. ॥ २३ ॥ अघडंतघडणसुघडियविहडणवावडविहिस्स जोगेण—जायं परोप्परं दंसणं च गुरुविरहविहुराणं. ॥ २४ ॥ ता हरिसविसायवसु-

हुं पण नक्की तमारी साथेज चालीश. केमके प्रेमने वश पडेलुं आ मन हुं ठेरवी शकती नथी. १७—१८ एम सांभळी मजबूत प्रेम भावथी खेंचाइने तेणे ते वात कबूल राखी. बाद समय आवतां ते बन्ने जण मोटा वहाणपर चडीने आनंदना साथे खेमकुशळे बीजा कांठे पहोच्या. १९—२० ते माल वेंची घणो पैसो कमावी बीजो माल लइ तेओ पाछा वळ्या एवामां समुद्र वच्चे पूर्वकृतकर्मना परिणामना लीधे सख्त तोफानमां झोला खातुं ने वहाण सेकडो ककडा थइ गयुं. २१—२२ छतां तथा प्रकारनी भवितव्यताथी ते बन्ने पाटियां मेळवी एकज किनारे आवी पड्यां. २३ नशीब नवनवानुं बनावे छे अने बनेलुं बगाडी दे छे तेना योगे ते विरहपीडित बन्ने जण एक बीजाने जोया.२४ त्यारे हर्ष अने शो-

अच्चंतदुक्खमणुपुणागलसरणी—सहसत्ति सुंदरी नंदकंठ मवलंबिउं दीणा—॥ २५ ॥ रोविउं मारद्धा निच्चिरामानिवरंतनयणसलिलजरा, जलनिहिसंगुवलग्गंबुबिंदुनिवहं मुयंति व्व. ॥ २६ ॥ कहकहवि धीरिमं धारिऊहा नंदण जंपियं ताहे—सुयणु किमेयं लोगं—करेसि अच्चंतकसिणमुही ? ॥ २७ ॥ को नाम मयच्छि, जए—जो जस्स नेव वल्लणाई—पाउब्भूयाणि, नवा—जायाणियजम्ममरणाणि ? ॥ २८ ॥ कमलमुहि, पेच्छगयणंगणेक्कचूडामाणिस्सवि रविस्स—उदयपयावविणासा—पइदियसं चिय विसंवंति. ॥ २९ ॥ किंवा न सुयं तुमए—जिणिंदवयणंमि जं सुरिंदावि—पुव्वसुकयक्खयंमी—दुत्थावत्थं उवलहंति. ॥ ३० ॥ कम्मवसवत्तिजंतूण—सुयणु किं एत्तिएवि परितावो ? जेसिं गायव्वसरं—नमरुइ दुक्खाण दंदोली. ॥ ३१ ॥ इय एवमाइवय-

[illegible] पुण्यना भारे नमस्तर्यो गळे वळगीने दीन थएली सुंदरी कष्ट दइ नंदना कंठे वळगी.—२५ ते कंठे वळगी ने [illegible] नयन पडना आंसुओथी जाणे दरियाना संगथी लागेला पाणीना बिंदुओ धरती होय तेम रोवा लागी. २६ त्यारे [illegible] धीरज धरी नंदे कह्युं के हे सुतनु. अति कालुं मुख धरी आम कां शोक करे छे. ? २७ हे मृगाक्षि, जगतमां एवो कोण जन्म्यो छे के जेने संयोग के जन्म मरण नथी थता. २८ हे कमलमुखी, जो आकाशना चूडामणि समान सूर्यने पण हमेश उदय, प्रताप अने विनाश ए त्रण अवस्थाओ वळगी रही छे. २९ अथवा ते जिनप्रवचनमां शुं नथी सांभळ्युं के इंद्रो पण पूर्वकृतकर्मना क्षये दुःखी अवस्था पामे छे ३० हे सुतनु, कर्मवशवर्ती जंतुओने शो शोक करवानो छे ? केमके तेमनी साथे छायाना माफक दुःखनी पंक्ति तो फरती ज रहे छे. ३१ आवा आवा वचनोथी सुंद-

णेहि—सुंदरिं सासिउं, वसिमहुत्तं—तीइ समंचिय मल्लिओ—नंदो तएहालुहकिलं-तो. ॥ ३२ ॥ अह सुंदरीइ भणियं—पियथम, एत्तो परिस्समकिलंता—अच्चंततिसा-भिहया—पयमवि न तरामि गंतु महं. ॥ ३३ ॥ नंदेण जंपियं सुयणु—एत्थ वीसमसु तं खणं एक्कं, जेणाहं तुज्झकए—सलिलं कत्तोवि आणेमि. ॥ ३४ ॥ पडिसुय भणाइ, ताहे—नंदो आसन्नकाणणुद्देसे—सलिलावलोयणत्थं—तं मोत्तूणं गओ सहसा. ॥ ३५ ॥ दिट्ठो य कयंतेण व—विगिंचिउब्भडमुहेण सीहेण, तिव्वछुहाभिहएणं—अइचवलल-ल्लंतजीहेणं. ॥ ३६ ॥ तत्तो भयसंभंतो—विस्सुमरियअणसणाइकायव्वो—अट्टज्झाणो-वगओ—निहओ सो सरणओ तेण. ॥ ३७ ॥ एत्तो य सुंदरीए—परिपालंतीइ अइगयं दिवसं, तहविहु न जावनंदो—समागओ ताव संबुद्धा. ३८ णिच्छइयतव्विणासा—

रीने समजावीने तेनी सायेज भूख्यो नंद वस्ति तरफ वळ्यो. ३२ एवामां सुंदरी बोली के हे प्रियतम परिश्रमथी थाके-ली होइ भारे तरसथी हुं पीडाउं छुं तेथी इहांथी आगळ एक डगलुं देवा समर्थ नथी. ३३ नंदे कह्युं के हे सुतनु, तुं इहां थोडी वार वीसामो ले के जेथी तारा माटे क्यांथी पण पाणी लावुं. ३४ तेणीए ते कबूल राखी एटले नंद तेणीने त्यां मेली जंगलमां पाणी शोधवा खातर उतावळो थइ पेठो. ३५ तेने मोतनी माफक मुख उघाडता, अति चपळ पणे चालती जीभवाळा, अति भूख्या रहेला सिंहे जोयो. ३६ त्यारे ते भयमां पडी अणसण वगेरे करवा भूली जइ आर्त्तध्यानमां रह्यो एटलामां ज ते विचाराने सिंहे मारी नांख्यो. ३७ आणीमेर सुंदरीने वाट जोतां दिवस पूरो थयो, छतां नंद नहि आव्यो एटले ते गभराटमां पडी. ३८ तेणे धार्युं के खचित तेनो नाश थयो हशे तेथी ते घव दइने जमी-

पडति सा निवडिया धरणिवट्टे, मुच्छानिमीलियच्छी—मयव्व ठाऊण खणमेगं— —३९ घणकुसुमसुगंधिसारयमणागउयअडचेयणा दीणा—रोविउ मारद्धा निविड-दुक्खपसुप्पोकारा. ॥ ४० ॥ हा अज्जउत्त, हा जिणवरिंदपयपउमपूयणासत्त, हा सच्चसमग्गानिहि—कत्थगओ देहि पडिवयणं. ॥ ४१ ॥ हा पाव दइव, धणरयण-मोहणगेणवि किं न तुट्ठोसि? ज मणाज अज्जउत्तोवि निद्दय मिगिह समुवणीओ. ॥ ४२ ॥ हे नाय सुयावच्छल—हा हा देजणणि निक्कमपेम्मे. दुहजलहिनिवडियं की-स—नियधूयं उवेहेह? ॥ ४३ ॥ इय सुचिरं विलवित्ता—निविडपरिस्समकिलामि-यसरीरा—कमलनिहित्तवयणा—सुत्तिसवच्छुच्चयं अणुहवंती.—॥ ४४ ॥ तुरगरविवाह-पत्थं नत्थो बलाएण निसि उरनिवेणा—दिट्ठा कहवि पियंकरनामेणं. चिंतियं च इमं. ॥४५॥

[illegible] पडी अने मूर्छाथी तेनी आंखो मींचाइ, पण मनोनी माफक थोडी वार रही. ३९ त्यां वनना फूलनी सुगंधि [illegible] आ [illegible] भरी [illegible] आवी के दीन थइ मोटे दुःखथी पोक मूकी रडवा लागी. ४० हे आर्यपुत्र, हे जिनेश्वरना चरणकमलनी पूजामां आसक्त, हे सत्यना महानिधि, तुं क्यां गयो छे? तुं उत्तर दे. ४१ अरे पापी दैव, धनरत्नना अने [illegible] पण तुं धरायो नहि के जेथी हे अनार्य, तें आ रीते आर्यपुत्रने पण मारी नांख्यो. ४२ हे पुत्रीवत्सल पि-ता, हे नि[illegible] माता, दुःखना दरियामां पडेली तमारी पुत्रीने केम उवेखो छो? ४३ एम घणो वखत वि-लाप करी [illegible] हाथ [illegible] करीने [illegible] मूकी [illegible] त्यां [illegible] भरी रही. ४४—४५ ते [illegible] के आ

॥ सावन्नटा कि मिमा–तियसवहू, मयणविरहिया व रई, वणदेवया व विज्जाहर-राण रमणि व्व होज्ज त्ति. ॥ ४६ ॥ विम्हियमणेण पुट्टा–सुयणू, का तं सि किमिह-आवससि ? कत्तोय आगया, कीस–वहसि संताव मेवं ति ? ॥ ४७ ॥ अह सुंदरीइ दीहुण्हसुक्कनीसासतरमियगिराए–सोगवसमउलियच्छीइ–जंपियं भो महासत्त,–॥ ४८ ॥ वसणपरंपरनिव्वत्तणेक्कपरु विहिविहाणवसगाए–मज्झ पउत्तीए अल–मिमाइ इह-निघट्टहेकए.– ॥ ४९ ॥ आवइगयावि उत्तमकुलप्पसूयत्तणेण णो एसा–साहिस्सइ नियवत्तं–विचिंतिऊणं महीवइणा–॥ ५० ॥ अणुणाइऊणं मंजुलगिराहि नीया कहिं-पि नियगेहे–कारविया य गाढोवरोहओ भोयणाइविहिं. ॥ ५१ ॥ अणवंछियं च सव्वं–संपीरुइ तीइ मेइणीनाहो–अणुराएणं सप्पुरिसवित्तिभावेणवि सयावि. ॥ ५२

शुं शापथी पनी गयेली अप्सरा हशे ? अथवा कामथी छूटी पडेली रति हशे ? अथवा वनदेवता हशे के विद्याधरनी रमणी हशे ? ४६ एम अचंबो पामी तेणे पुछ्युं के हे सुतनु, तुं कोण छे? केम इहां रहे छे? क्यांथी आवेली छे?अने केम आवो संताप करे छे. ४७ त्यारे सुंदरीए लांबा नीसासा भरेली वाणीथी शोकना वशे मीचेली आंखोवडे कह्युं के हे महासत्व, एक पछी एक संकट पाडवामां हुशियार एवा नशीवना खेलमां सपडायेली मुजनी दुःखदायक हकीकत तमोने संभळाववानी कंइ जरूर नथी. ४८—४९ राजाए विचार्युं के दुःखमां पडेली छतां पण उत्तम कुलमां जन्मेली होवाथी पोतानी वात कहेनार नथी. ५० बाद राजा तेने मीठां वचनोथी जेम तेम करीने समजावी पोताने घेर तेडी गयो, अने त्यां तेणे बहु आग्रहथी तेने भोजन वगेरे कराव्यां. ५१ हवे राजा कंइक अनुरागना लीधे अने कंइक सज्जनपणाना लीधे हमेशां तेना इच्छा प्रमाणे सघळुं पूरुं पाडतो. ५२ तेणे धार्युं के आटलुं में एने सन्मान आप्युं छे अने प्रीति साथे आदरी. वातो

मणमाणसरायमणसयमलंकहारंजिवत्ति सुणमाणो—महुरगिराइ नरिंदो—पभणेइ सुंदरि न-
णाइ.—॥ ५३ ॥ नरिंदुजि ऊवीमाणनिवुईहरं पुव्वकालवुत्तंतं—सोऊण मए सुंदरि—जं-
पियमिणं तुमं चिंतनउ. ॥ ५४ ॥ पदंसिणलोयवहया—सुकुमारा सुयणु, तुज्झ काय-
लया—दूसियनिद्दंसनतणा—मालइमाल व्व पमिलाइ. ॥ ५५ ॥ सा सुयणु तुज्झवणं पच्च-
क्खिंदुसियं व आणंदजणयं—संयविक्कनुवपोनिय सुयचिणइ मोहमं. ॥ ५६ ॥
अच्चंतसुंदरंपि हु—मणोभिरामंपि दुल्लहंपि—वत्थं नहं वा—सत्थं सोयंति नो कु-
सला. ॥ ५७ ॥ ता होउ सुरिक्खणिएण—कुणसु मह पत्थणं तुमं सहलं, पत्थावुचिय-
पवित्तीइ च्चेय सुहं कुणंति बुहा. ॥ ५८ ॥ अच्चंतकालकडुयं—असुयपुव्वं च तीइ सो-
ऊं सं—सवणंगनयनमइाइ— माह हुवनागलनणाए—॥ ५९ ॥ जणियं जो नरपुंगव

राजा के छे नेदी ने मारुं मुख पद हुवे पण मानीने मधुरवाणीथी एकांते सुंदरीने ते आ प्रमाणे वयुं. हे चंद्रमुखी, पहेलांना मनने संताप करनार मारो पूर्व वृत्तांत सांभळी दइने मारी साथे इच्छा प्रमाणे तुं भोग विलास कर. केमके हे सु-तनु, मारी आ मुखुमार काया दर्गंधना शोकथी मैयाना शिशायी जेम मालतीनी माळा करमाय तेम करमाइ जाय छे ५४—५५ हे सुतनु पूनमना चंद्र मासाक शोकना मनने आनंद दायक यौवनने शोक रूप तीव्र तापथी कापनां युक्त लागतुं नथी. ५६ मनुष्यनो संयागथी के नाश पामेली अत्यंत सुंदर मनोहर अने दुर्लभ चीजनो पण शोक करता नथी. ५७ माटे हवे कहेवानी जरूर नथी, तुं मारी प्रार्थना सफळ कर, समजु माणसो वखतने अनुसरनी प्रवृत्ति करीने ज सुखी होय छे. ५८ आ रीतनुं अत्यंत रीते कानमां कड़वुं लागतुं पूर्वे कदापि नहि सांभळेलुं सांभळीने सुंदरी अत्यंत खाती थीरथी तीर हृदयमां धरीने कहेवा लागी के हे नरेश्वर तारा कुळमां जन्मेला जगतमां प्रसिद्ध न्यायमार्गना प्र-मावनार नृपना जेवा पुरुषने आवुं बोलवुं घटतुं नथी. ५९—६० परस्त्री साथे रमवुं ए अत्यंत अनुचित, उभयलोकने

---कुलप्पसूयाण जयपसिद्धाण---नयमग्गदेसगाणं---तुम्हारिसपवरपुरिसाणं---॥ ६० ॥
अच्चंत मणुचियं उभयलोग विद्धंसणेक्कगुरुं च; पररमणिरमण मेयं---अवजसपडहो
तिहुयणेवि. ॥ ६१ ॥ रण्णा पयंपियं कमलवयणि चिरपुण्णविढ्वज्जणीयं, रयणनिहि
मणुसरंतस्स---होज्ज किं दूसणं मज्झ ? ॥ ६२ ॥ तो वरवइनिब्बंधनिव्वंधं मुणिय
तीइ पभिणियं, जइ एवं ता नरवर---चिरगहियाभिग्गहो जाव---॥ ६३ ॥ पुज्जइ
ता पडिवालेनु---मज्झ तं केत्तियंपि नणु कालं, पच्छा य तुज्झ वंछाणुरूव मह मायरि-
स्सामि. ॥ ६४ ॥ एवं सोच्चा तुट्ठो---भूमिवई नट्टपडुमाईणि, चित्तविणोयत्थं से---
दरिसावंतो गमइ कालं. ॥ ६५ ॥ अह पुव्वभणियनंदो---वानरभावेण वट्टमाणो सो
---गहिओ मक्कडखेलावगेहिं उचिओ त्ति काऊण.---॥ ६६ ॥ नट्टवइ बहुकलाओ
---सिक्खविओ पइपुरं च देसत्ता---ते पुरिसा तं घेत्तुं---समागया तप्पुरे कहवि. ॥ ६७

वगाडनार अने त्रण भुवनोमां अपजशनो पडो वगाडवा सरखुं छे. ६१ राजाए कह्युं हे कमळमुखी, लांबा वखतमां पुण्यथी मळेलुं रत्नतुं निधान भोगवतां मने शुं दूषण छे? ६२ त्यारे राजानो नहि टळे तेवो आग्रह जाणीने तेणीए कह्युं के हे नरेश्वर, जो एम छे तो मारो लांबा वखतथी लीधेलो अभिग्रह पूरो थाय त्यां सुधी मारी वाट जुवो, केमके हवे ते कांइ लांबा वखत-नो नथी बाद हुं तमारी इच्छा प्रमाणे वर्तीश. ६३—६४ एम सांभळी राजा खुस थइ तेणीनुं चित्त विनोदमां नाखवा माटे तेणीने नाट्य, खेल वगेरे बतावतो रही वखत पसार करवा लाग्यो. ६५ हवे पूर्वे कहेलो नंद वांदरो थयो हतो, ते योग्य जाणीने मांकडाना खेलाडीओए पकड्यो. ६६ तेने शीखवेलो करवाथी ते बहु कळाओ करी नाचतो तेथी ते खेलाडीओ तेने लइने दरेक शहेरमां तेने फेरवता रही एक वेळा ते शहेरमां आव्या. ६७ तेओ दरेक घेर तेने खेलावी

॥ सिक्खविता पट्टमंदिरं च ते रायसंदिरंमि गया,—पारद्धो य तहिं नो — पणच्चि-
उं नच्चजत्तेण. ॥ ६८ ॥ अह नच्चंतेण कहिंपि—सुंदरी रायसन्निहिनिसन्ना—दिट्ठा
णेणं निरुवणयजायविम्हयसंतत्तयणेण. ॥ ६९ ॥ कत्थ मए दिट्ठ यं विचिंतयंतेण तेण
पुणरुत्तं—जाई सरिया नाओ—सव्वोविय पुव्ववुत्तंतो. ॥ ७० ॥ तो परमं निव्वेयं
—समुव्वहंतेण चिंतियं तेणः हा हा अणत्थनिहिणो—धिरत्थु संसारवासस्स. ॥
७१ ॥ जाण तहाविहनिम्मलविवेगजुत्तोवि धम्मरागी वि—अणुसमयसमयसंसियवि-
हियाणुट्ठाणकारी वि—॥ ७२ ॥ तह बालमरण वसओ—विसमस्सं एरिसं समणु-
पत्तो, निव्विसे वट्टंतो य—संपयं किं करेमि अहं ? ॥ ७३ ॥ अहवा किं मणेण वि-
चिंतिएण इय अवसराणुरूवंपि—पकरेमि धम्मकम्मं—पज्जंते जीवियव्वेण. ॥ ७४ ॥

राजमंदिरमां आव्या. त्यां ते चांडाल पुत्र पवर्धी नाचवा लाग्यो. ६८ हवे नाचतां नाचतां तेणे राजा पासे बेठेली सुंदरी ने आंखो पलकती मांजिना पोगे विस्मय आंखोथी वेग रीते सुंदरीने जोइ. ६९ ते विचारवा लाग्यो के में एने क्यां दी-ठी छे एम वारंवार चिंतवतां ते जातिस्मरण पाम्यो. अने तेणे सघळो पूर्व वृत्तांत जाण्यो. ७० त्यारे ते चांडाळ परम नि-र्वेद पामीने चिंतववा लाग्यो के आ अनर्थना निधानसमान संसार वासने धिक्कार छे के जेना लीधे हुं तेवा निर्मळ विवेकवाळो छतां धर्मनो रागी छतां अने प्रतिसमय सिद्धांतमां कहेल क्रियां करतो थको पण बालमरणना वशे आवी विषमदशा पाम्यो छुं. हवे हुं निर्विषपणामां रहेतो हुं माटे शुं करी शकुं ? ७१—७२—७३ अथवा आम चिंतववाथी शुं वळे ? हवे अवसरयो-ग्य धर्म करुं अने अणसण करी जीवितनो अंत लावुं तो ठीक छे. ७४ एम ते विचारतो रह्यो. त्यारे तेने गजरायलो

इय सो परिभूवंतो–सुढिओत्ति मुणिनु तेहिं पुरिसेहिं–नीओ सट्ठाणंमी–तो तेणं अणसणं गहियं. ॥७५॥ पंचपरमेट्ठिमंतं–अणुसमरंतो य शुद्धनावेण–मरिऊणं उववन्नो–दिव्वो देवो महिड्ढीओ. ॥७६॥ तक्खणमेव पउत्तो–ओही अवलोइया सिरिपुरंमि–अविचलिवसालिसीलालंकारा सुंदरी तेण. ॥ ७७ ॥ सीलामलत्तगुणरंजिएण अप्पा पयासिओ तीसे, कहिओ य वइयरो पुव्वजम्मविसओ नरवइस्स. ॥ ७८ ॥ परिचिंतियं च रन्ना –जइ जिणधम्मप्पनावओ एवं–पसुणोवि होंति देवा–ता किं अम्हारिसा पुरिसा–॥ ७९ ॥ धम्मत्थकामसाहणसजा मज्जायवज्जिया होउं–विबुहजणनिंदणिज्जे विसयसुहे गाढ मणुरत्ता. ॥ ८० ॥ पविसंति दुग्गईसुं ? ता वसरो एस धम्मकरणस्स, दूरं विरत्तचित्तेण—तेण देवो इमं नणिओ. ॥ ८१ ॥ किं कायव्व मओ मे ? एक्को चि-

जाणी ते खेलाडीओ तेने पोताने मुकामे लइ गया. त्यां तेणे अणसण लीधुं. ७५ ते वांदरो पंचपरमेष्ठिमंत्रने शुद्ध नावथी संभारतोथको मरण पामीने महर्द्धिक दिव्य देव थयो. ७६ तेणे नरतज अवधिथी जोयुं तो श्रीपुरमां अखंडशीळालंकारवाळी सुंदरी जोइ. ७७ निर्मळ शीळ गुणथी रंजित थइने तेणी आगळ प्रगट थयो, अने तेणे राजाने पोताना पूर्वजन्मनी हकीकत कही संजळावी. ७८ त्यारे राजाए विचार्युं के जो जिनधर्मना नावथी आरीते पशुओ पण देव थाय छे, तो त्यारे अमारा जेवा पुरुषो के जे धर्म अर्थ अने कामए त्रणे साधी शके छे तेओ मर्यादा रहित थइ समजुजनोने निंदवा योग्य विषयसुखमांज खूब खूच्या रहे ए योग्य छे के? ७९-८० अने तेम करीने दुर्गतिमां पेशे एकेटलुं शोचनीय छे ? माटे आ धर्म करवानो अवसर छे, एम चिंतवी नारे वैराग्य पामी राजाए देवने आ रीते कह्युं ८१ मारे हवे शुं करवुं? देवे कह्युं के एकलो जिनजापित धर्मज तारे

य जिणवइट्ठओ धम्मो—संजायपच्चएणं—सत्तणुरुवं पवन्नो तो. ॥ ७२ ॥ भणिया देवेणं सा—अह सुंदरि केरिसं तुमं काही ? सव्वंधयारपडिबंधकारए उग्गए सूरे—॥ ७३ ॥ किं दीवेण पओयणं—मज्झो तुमंचिय ममं पमाणं ति—इय निच्छियतच्चित्तो—देवो सावत्थिनयरीए.—॥ ७४ ॥ तक्कालमुणिपहाणा—सिद्धायरिया गुरू पविहरंति, तेसिं सीलपरिक्खणनिमित्त मह कवडदिक्खाए—॥ ७५ ॥ दिक्खित्ता नेइ तयं—तेसि समीवे तहाविहअकाले, एगागिणं च सामइयसुत्तआलावगनिमित्तं. ॥ ७६ ॥ भणिओ य तीइ सूरी—वंदिय भालयलमेलियकराए—भयवं रोगवसाओ—सामइयसुयं विपल्लियं मे. ॥ ७७ ॥ होउं दयावरा मे—देहा लावग मिमं खणं एगं, गुरुणा दिन्नुवओगेण चिंतियं नोचिओ समओ. ॥ ७८ ॥ एगागिणी ज मेसा—तहा अकाले महं

करवो. त्यारे खातरी मळेली होवाथी तेणे पोताना सत्य प्रमाणे ते स्वीकार्यो. ७२ हवे देवे सुंदरिने कह्युं के सुंदरि, तुं शुं करीश ? ते बोली के सघळा अंधकारने दूर करनार सूर्य उगे छते दीवानुं शुं काम पडे, माटे मने तमे जे कहो तेज प्रमाण छे. आ रीते तेना चित्तनो निश्चय जाणीने ते देव श्रावस्ती नगरीमां विचरता ते काळना मुनिओमां प्रधान सूत सिद्धाचार्यना शीळनी परीक्षा करवा माटे सुंदरीने कपटदीक्षाथी दिक्षित करी. ७३—७४—७५ एम तेने दीक्षित करीने तथाविध अकाळवेळाए ते एकलीने सामायिकसूत्रनो आलावो लेवा तेमना पासे ते देव लइ गयो. ७६ तेणीए सूरिने कपाळे हाथ धरी वांदीने कह्युं के भगवन्, रोगना लीधे हुं सामायिकसूत्र भूली गइ छुं—माटे मारापर दया करी एक क्षणान्तर ते आलावो आपो. त्यारे गुरुए उपयोग दइ जोतां जणायुं के आ उचित समय नथी. ७७—७८ तेमज आ एकली

तओ अविही, तो कह सामइयसुयस्स—देमि आलावग मिमीए ? ॥ ૮૯ ॥ पन्निसिद्धा सा तेणं— अज्जे नेवोचियं तुहं एयं, दावियकोववियारा—सहसत्ति अदंसणीहूया. ॥ ૯૦ ॥ विहिपक्खबद्धलक्खं—निउणं जाणित्तु सूरि मह देवो—अइभत्तीए संतोस—मुवगओ तम्मि सूरिम्मि. ॥ ૯૧ ॥ तो नियरूवं दंसिय—वंदिय विणएण धरणिनिहियसिरो—कहिउं सव्वं नियपुव्वजम्मवुत्तंत मप्पेइ—॥ ૯૨ ॥ तं सुंदरिं गुरूणं—तेवि तहाविहपवित्तिणीइ तओ, सामन्नसमासन्नं—काउं सा सग्ग मणुपत्ता. ॥ ૯૩ ॥ णाओ इमो वइयरो—लोएणं अविहिणा न सुयदाणं—गुरुणा कयं ति अव्वो—समुज्जला जिणमए नीई. ॥ ૯૪ ॥ संपत्तबोहिबीओ—कोई अन्नो पवन्नसम्मत्तो, देसेणं सव्वेण य—चरणस्साराहओ जाओ. ॥ ૯૫ ॥ एवं अन्नेणवि सुय-

छे अने अकाळे आवीछे, माटे ए मोटी अविधि छे, माटे एणीने शी रीते सामायिकसूत्रनो आलावो आपुं ? ૮૯ तेथी तेणे तेने निषेध पाडीने कह्युं के हे आर्या, आम करवुं तने उचित नथी. त्यारे ते जरा कोप बतावीने तरतज त्यांथी अदृश्य थइ. ૯૦ त्यारे देवता सूरिने विधिपक्षमां लक्षवाळा जोइने तेमना विषे भारे भक्तिवंत बनी संतोष पाम्यो. ૯૧ बाद तेणे पोतानुं रूप प्रगटावी विनयथी पृथ्वीमां माथुं अडावी वांदीने पोताना पूर्व जन्मनो सघळो वृत्तांत कहीने सुंदरी तेमने सोंपन करी. त्यारे गुरुए ते तथाविध प्रवर्तिनीने सोंपी. बाद तेणी श्रमणपणाथी स्वर्गने नजीक करी त्यां पहोची. ૯૨—૯૩ आणी मेर लोकने खबर पडी के गुरुए अविधिथी श्रुतदान न कर्युं, माटे जिनमतनी जुवो, केवी नीति चोखी छे ૯૪ आ वखते कोइ बोधिबीज पाम्यो तो कोइ सम्यकत्व पाम्यो अने कोइए देशचारित्र लीधुं तो कोइए सर्व चारित्र स्वीकार्युं. ૯૫ आ रीते बीजा श्रुतधरे पण स्वपरना उपर अनुग्रह बुध्दि राखीने विधिमां तत्पर थइ

हरेण सह अप्पणो परेसिं च बाढमणुग्गहमइणा---पयट्टियव्वं विहिपरेण. ॥ए६॥ इति.

अत्राक्षरार्थः

चंपाधणसुंदरित्ति चंपानगर्यां धनोनाम श्रेष्ठी अभूत्, तस्यसुंदरी तनया. तामलित्तिवसुनंदत्ति ताम्रलिप्त्यां पूर्वपारावारतीरवर्त्तिन्यां पुरि वसुश्रेष्ठी, तस्यच नंदो नंदनः समुत्पन्नः .—सहृढसंबंधोत्ति तौ द्वावपि श्रेष्ठिनौ श्राद्धौ श्रावकाविति. संबंधः स्वापत्यैवैवाह्यलक्षणः कृतस्ताभ्यां. ततः—सुंदरिनंदेपीइ इति नंदसुंदर्योः .परस्परं प्रीतिः प्रकर्षवती संपन्ना. समये क्वापि प्रस्तावे परतीरं जलधिपरकूलं नंदः ससुंदरीको ययौ. तदन्वागमने प्रत्यावर्त्तने परतीरात्. ॥ १ ॥ यानस्य प्रवहणस्य विपत्ति र्विनाशः संपन्नस्ततः फलकं काष्टशकलमासाद्य तीरे एकस्मिन्नेव वेलाकूले द्वे अप्युत्तीर्णे. तत उदकार्थी परिभ्राम्यन्नंदः सिंहेन हतः सन् वानरः संजातः . इतश्च श्रीमयत्तेवुं. ए६

इहां संग्रहगाथानो अक्षरार्थ करिये छीये.

चंपा नगरीमां धननामे शेठ हतो, तेनी सुंदरी नामे पुत्री हती. पूर्व समुद्रना कांठे आवेली ताम्रलिप्ती नगरीमां वसुशेठ हतो, तेनो नंदनामे पुत्र हतो. ते बे शेठ श्रावक हता. तेमणे पोताना दीकरी दीकरानी सगाइ करी. हवे नंद अने सुंदरीने परस्पर मजबूत प्रीति बंधाइ. एक वखते सुंदरीने साथे लइ नंद दरियाना पहेले पार गयो, त्यांथी पाछा वळतां (१) वहाण नाश पाम्युं. त्यारे पाटियुं मेळवी ते बे जण एकज किनारे उतर्या. बाद पाणी माटे फरता नंदने

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सद्दि सूत्रानुसारेण प्रवर्त्तमानो—"भगवतेदमिदमित्यमित्थं चोक्त" मिति नित्यं मनसानुस्मरन् भगवंतमेव बहुमन्यते. संजातभगवद्बहुमानश्च पुमानविलंवितमेव भगवद्भावभाक् संपद्यते.

यथोक्तं.

अक्खयभावे मिलिओ—भावो तब्भावसाहगो नियमा, नहु तंबं रसविद्धं—पुणोवि तंबत्तणं मुवेइ. ॥ १ ॥

इति सर्वत्रौचित्यप्रवृत्तिरासन्नसिद्धेर्जीवस्य लिंगमुक्तमिति. ७

एतद्विपर्यये दोषमाह.

आयपरपरिच्चाओ—आणाकोवेण इहरहा णियमा, एवं विचिंतियव्वं—सम्मं अइणिउणवुद्धिए. ॥ ३६ ॥

जे माटे ते पुरुष सूत्रानुसारे प्रवर्त्ततो थको "भगवाने आ आ आवी आवी रीते कहेल छे" एम हमेशां मनवडे संभारतो थको भगवाननुंज बहुमान करे छे. अने जेने भगवानमां बहुमान रहे ते पुरुष तो वगर विलंबे भगवानपणाने पामे.

जे माटे कहेलुं छे के.

अक्षय भावमां जो भाव मळयो तो ते भावनो नियमा साधक थाय छे. जे माटे रसथी भरायलुं तांबु फरीने तांबापणामां नहि रहेशे. (१)

एटला माटे सघळी बावतोमां औचित्यपणे प्रवृत्ति करवी ते आसन्नसिद्धिगामी जीवनुं लिंग कह्युं.

एथी उलटी रीते चालतां दोष बतावे छे.

बीजी रीते वर्त्ततां आज्ञाकोप थतो होवाथी नियम स्वपरना उद्धारनो परित्याग थाय छे, एम अति निपुण बुद्धिथी बरोबर विचारवुं. ३६

जिणंमि बहुमाणा. ॥ ३५ ॥

(टीका)

आसन्ना तद्भवादिभावित्वेन समीपोपस्थायिनी सिद्धिर्मुक्तिर्येषां ते तथा—तेषां भव्यविशेषाणां लिंगं चिह्नं व्यंजकमित्यर्थः धूम इव गिरिकुहरादिवर्त्तिनो वन्हेः ,—कासावित्याह—सूत्रानुसारादेवागमार्थानुवृत्तेरेव उचितत्वेन तत्तद्द्रव्यक्षेत्र-कालभावानुरूपेण या प्रवृत्तिः स्वकुटुंबचिंतनरूपा द्रव्यस्तवभावस्तवरूपा च.

कुत एतदेवमित्याह.

सर्वत्र कृत्ये इत्थं प्रवृत्तौ धार्मिकस्य जिने भगवति सर्वत्रौचित्यप्रतिपादयित-रि बहुमानात् गौरवात्.

हवे सूत्रानुसारि प्रवृत्तिने उद्देशीने कहेछे.

आसन्नसिद्धिवाळाओनुं ए लिंग छे के सूत्रानुसारेज उचितपणामां तेमनी प्रवृत्ति होय केमके सघळी बाबतोमां तेमने जिनमां बहुमान होय छे. ३५

टीका

आसन्न एटले तेज के बीजा भवे मळनार होवाथी समीपे रहेछे सिद्धि जेमने तेवा भव्योनुं पर्वतमां रहेला अग्निना लिंग धूमनी माफक ए लिंग छे के आगमना अर्थने अनुसरीनेज ते ते द्रव्य क्षेत्र काळ भावना प्रमाणे उचितपणे पोताना कुटुंबनी संभाळ रूप तथा द्रव्यस्तव अने भावस्तवरूप प्रवृत्ति होय छे.

एम शाथी होयछे ते कहे छे.

केमके तेमने सघळा कामोमां एम प्रवर्त्ततां सघळा स्थळे औचित्य बतावनार जिनभगवानमां बहु मान होय छे.

सहि सूत्रानुसारेण प्रवर्त्तमानो—" भगवतेदमिदमित्थमित्थं चोक्त " मिति नित्यं मनसानुस्मरन् भगवंतमेव बहुमन्यते. संजातभगवद्बहुमानश्च पुमानविलंबितमेव भगवद्भावभाक् संपद्यते.

यथोक्तं.

अक्खयभावे मिलिओ—भावो तब्भावसाहगो नियमा, नहु तंबं रसविद्धं — पुणोवि तंबत्तण मुवेइ. ॥ १ ॥

इति सर्वत्रौचित्यप्रवृत्तिरासन्नसिद्धेर्जीवस्य लिंगमुक्तमिति. ७

एतद्विपर्यये दोषमाह.

आयपरपरिच्चाओ—आणाकोवेण इहरहा णियमा, एवं विचिंतियव्वं—सम्मं अइणिउणबुद्धिए. ॥ ३६ ॥

जे माटे ते पुरुष सूत्रानुसारे प्रवर्त्ततो थको "भगवाने आ आ आवी आवी रीते कहेल छे " एम हमेशां मनवडे संभारतो थको भगवाननुंज बहुमान करे छे. अने जेने भगवानमां बहुमान रहे ते पुरुष तो वगर विलंबे भगवानपणाने पामे.

जे माटे कहेलुं छे के.

अक्षय भावमां जो भाव मळयो तो ते भावनो नियमा साधक थाय छे. जे माटे रसथी भरायलुं तांबु फरीने तांबापणामां नहि रहेशे. (१)

एटला माटे सघळी बाबतोमां औचित्यपणे प्रवृत्ति करवी ते आसन्नसिद्धिगामी जीवनुं लिंग कह्युं.

एथी उलटी रीते चालतां दोष बतावे छे.

बीजी रीते वर्त्ततां आज्ञाकोप थतो होवाथी नियम स्वपरना उद्धारनो परित्याग थाय छे, एम अति निपुण बुद्धिथी बरोबर विचारवुं. ३६

तडुक्तं.

महतां न बुद्धिविभवः—कृतप्रयत्नैरपीतरैर्लभ्यः, यत्नशतैरपि ताम्य—
यदि शूची भवति पाराची. ॥ १ ॥

यत एवं तत्तस्मात्तस्या बुद्धेर्भेदज्ञातानि भेदानौत्पत्तिक्यादीन् ज्ञातानि च
रोहकादिदृष्टांतान् वक्ष्ये भणिष्यामि, — किमर्थमित्याह —तव्वुड्ढिहेउत्ति —
तद्बुद्धिहेतोर्बुद्धिप्रकर्षनिमित्तं—इतिर्वाक्यपरिसमाप्त्यर्थः बुद्धिप्रकर्षयोग्या हि पुरुषा
बुद्धेर्भेदांस्तज्ज्ञातानि च धीमत्पुरुषाभ्यर्णे सम्यक् समाकर्णयंतो निश्चयेन तथाविधबु-
द्धिधननिधानभूताः संपद्यंते. यदवाचि,—

विमलस्वभावात्मानः—सांगत्यात्परगुणानुपाददते, उपनिहितपद्मरागः—स्फटि-
कोरुणिमानमातनुते. ॥ १ ॥

जे माटे कहेलुं छे के इतरजनो गमे तेटलो प्रयत्न करे तोपण तेओ कंइ मोटाओना बुद्धि धनने पामी शके न-
हि. सेंकडो यत्नथी कूटो तोपण सोय कंइ पाराइ बने नहि. (१)

जे माटे एम छे ते माटे ते बुद्धिना औत्पत्तिकी वगेरे भेद तथा रोहकादिना ज्ञात एटले दृष्टांतो कहीश,—शा
माटे ते कहे छे के ते बुद्धिना वधारवाना माटे. इति शब्द वाक्य समाप्ति माटे छे,

कारण के बुद्धिना वधारवाने योग्य पुरुषो बुद्धिना भेदो अने तेना उदाहरणो बुद्धिमान् पुरुष पासेथी बरोबर
सांभळता थका नक्की पणे तेवा प्रकारना बुद्धिधनना निधानरूप बने छे. जे माटे कहेलुं छे के

निर्मळ अने खुल्ला स्वभाववाळा सोबतना योगे पराया गुणो ग्रहण करीले छे. दाखलातरीके पद्मराग (माणे
क) पासे स्फटिकने धर्यो होय तो ते तेना रताशने पकडी ले छे. (१)

यथोद्देशं निर्देश इतिन्यायात् बुद्धिभेदानाह.

उप्पत्तिय वेणइया—कम्मय तह पारिणामिया चेव, बुद्धी चउव्विहा खलु—निद्दिट्ठा समयकेऊहिं. ॥ ३८ ॥

(टीका)

उत्पत्तिः प्रयोजनं कारणं यस्याः सा औत्पत्तिकी. आह.—क्षयोपशमः प्रयोजनमस्याः.—सत्यं, किंतु स खल्वंतरंगत्वात् सर्वबुद्धिसाधारण इति न विवक्ष्यते. नचान्यच्छास्त्रधर्मादिकमपेक्ष्यते उत्पत्तिं विहाय. यदत्र, उप्पत्तिगीति निर्देष्टव्ये उप्पत्तिय इति निर्देशः स प्राकृतत्वात्. एवमन्यत्राप्यन्यथानिर्देशहेतुर्वाच्यः . ॥ १ ॥

जेम उद्देश कर्यो होय तेम निर्देश करवो ए न्यायथी बुद्धिना भेद कहे छे.

औत्पत्तिकी, वैनयिकी, कर्मजा, अने पारिणामिकी एम चार प्रकार समयना जाण पुरुषोए बुद्धि बतावी छे. ३८

टीका.

उत्पत्ति छे प्रयोजन एटले कारण जेनुं ते औत्पत्तिकी. शिष्य कहे छे के एनुं कारण तो क्षयोपशम छे. गुरु कहे छे—साची वात पण ते तो अंतरंग छे माटे सर्व बुद्धिमां साधारण कारण रूप छे एटले तेनीविवक्षा नथी. इहां उत्पत्ति शिवाय बीजा शास्त्र के कर्म वगेरेनी अपेक्षा होती नथी.

इहां उप्पत्तिगी एवुं रूप वापरवुं जोइये तेने बदले उप्पत्तिय एम निर्देश कर्यो छे ते प्राकृतपणाना लीधे छे. एम बीजा रूपोमां पण बीजी रीते निर्देश छे तेनुं कारण तेज जणाववुं. (१) विनय एटले गुरुनी शुश्रूषा ते छे

वेणइया इति विनयो गुरुशुश्रूषा सच कारणमस्यास्तत्प्रधाना वा वैनयिकी ॥ २ ॥ कम्मयत्ति इहकर्मशब्देन शिल्पमपि गृह्यते. तत्र अनाचार्यकं कर्म, साचार्यकं शिल्पं—कादाचित्कं वा कर्म, शिल्पं नित्यव्यापारः. ततः कर्मणो जाता कर्मजा. ॥ ३ ॥ तथा-शब्दः समुच्चये—पारिणामिया इति परि समंतात् नमनं परिणामः—सुदीर्घकालं पूर्वापरार्थावलोकनादिजन्य आत्मधर्म इत्यर्थः, स कारणमस्यास्तत्प्रधाना वा पारिणामिकी. ॥ ४ ॥

चैवशब्दस्तथाशब्दवत्. बुध्यतेऽनयेति बुद्धिर्मतिः—सा च चतुर्विधैव—खलुशब्दस्य निर्धारणार्थत्वात् निर्दिष्टोक्ता—समयकेतुभिः सिद्धांतप्रसादचिह्नभूतै स्तीर्थकरगणधरादिभिरित्यर्थः ७

कारण जेनुं ते अथवा विनयप्रधान ते वैनयिकी. (२) कर्मथी थाय ते कर्मजा. इहां कर्म शब्दे शिल्प पण लेवुं. त्यां पोतानी मेळे कराय ते कर्म आचार्य पासे शीखीने कराय ते शिल्प. अथवा कोइ वेळाए कराय ते कर्म अने दररोज कराय ते शिल्प छे. ३ तेमज परिणाम छे कारण जेनुं अथवा परिणामप्रधान ते पारिणामिकी. त्यां परि एटले सघळी तरफथी नमवुं ते परिणाम अर्थात् लांबो वखत पूर्वापरना बनाव जोवाथी थती जीवनी खुलावट. ४

चैव शब्द तथा शब्द जेवो छे. जेनाथी बोध ते बुद्धि ते चार प्रकारनीज समयकेतु एटले सिद्धांतरूप महेलना धजा समान तीर्थकरगणधर वगेराए कहेली छे.

औत्पत्तिक्या लक्षणं प्रतिपादयन्नाह.

पुव्वमदिट्ठमसुयमवेइयतक्खणविसुद्धगहियत्था, अव्वाहयफलजोगी—बुद्धी उप्पत्तिया नाम. ॥ ३९ ॥

(टीका)

पूर्वं बुध्युत्पादात् प्राक् अदृष्टः स्वयमनवलोकितः—असूय इति मकारस्यालाक्षणिकत्वादश्रुतोऽन्यतोपि नाकर्णितः—मवेइयत्ति अत्रापि मकारः प्राग्वत् तवोऽवेदितां मनसाप्यनालोचित—स्तस्मिन्नेव क्षणे विशुद्धो यथावस्थितो गृहीतोऽवधारितोऽर्थोऽभिप्रेतः पदार्थो यया सा तथाऽदृष्टाश्रुतावेदिततत्क्षणविशुद्धगृहीतार्था, अव्वाहयफलजोगी इति इहैकांतिकमिहपरलोकाविरुद्धं फलांतराबाधितं वाऽव्याहतमुच्यते—

औत्पत्तिकी बुद्धिनुं लक्षण कहेछे:—

पूर्वे अणदीठा आणसांभळ्या अणविचारेला अर्थने तेज क्षणे खरेखर रीते पकडनार अव्याहतफळवाळी बुद्धि ते औत्पत्तिकी जाणवी. ३९

टीका.

बुद्धि उपजवानी अगाउ पोते न जोयेलो, बीजा पासेथी नहि सांभळेलो, मनथी अणविचारेलो छतां ते ज क्षणे यथावस्थितपणे अभिमत पदार्थ जेना वडे ग्रहण करी शकाय तेवी अने एकांतिक, इहपरलोकथी अविरुद्ध फलांतरथी अबाधित एवा अव्याहत फळ साथे जोडायली बुद्धि ते औत्पत्तिकी बुद्धि जाणवी. इहां मदिट्ठ मसूय

फलं प्रयोजनं—अव्याहतं च तत् फलंच अव्याहतफलं योगोऽस्या अस्तीति योगिनी—अव्याहतफलेन योगिनी, योगिणिति पाठे प्राप्ते योगीति निर्देशः प्राकृतत्वात्, अन्येतु अव्वाहयफलजोगा इति पठंति—अव्याहतफलेन योगो यस्याःसाऽव्याहतफलयोगा बुद्धिः औत्पत्तिकीनाम औत्पत्तिक्यभिधाना बोद्धव्या.

सांप्रतमेतद्ज्ञातान्याह.

भरहसिल–पणिय–रुक्खे–खडुग–पम–सरम–काय–उच्चारे, गय–घयण–गोल–खंभे–खुड्डुग–मग्गि–त्थि–पइ–पुत्ते. ॥ ४० ॥

टीका–द्वारगाथा. अस्यां सप्तदशोदाहरणानि–तद्यथा–भरहसिलत्ति भरतशिला (१), पणियत्ति पणितं (२), वृक्षः (३), खड्डुगत्ति मुद्रारत्नं (४) पमसरमका-

मवेदिय ए पदमां वधा मकार अलाक्षणिक (उपरटपेकाना) छे. जोगिणीना बदले जे जोगी एवुं रूप वापर्युं छे ते प्राकृतना लीधे छे, कोइ ए स्थळे अव्वाहयफलजोगा एम पण वांचे छे.

हवे एना उदाहरण कहेछेः—

भरतशिला, पणित, वृक्षक्षुद्रक, पट शरम, काक, उच्चार, गज वयण, गोळ, स्तंभ, क्षुल्लक, मार्ग, स्त्री, पति, अने पुत्र. ४०

टीका.

आ द्वारगाथा छे एमां सतर उदाहरण छे, ते आ रीते भरतशिला, (१) पणित, (२) वृक्ष, (३) क्षुद्रक एटले मुद्रारत्न, (४) पट, (५) सरम, (६) कागडा (७) उच्चार, (८) गज, (९) घयण एटले भांड, (

यजच्चारे इति पटः (५), सरकः (६) काकाः (७), उच्चारः (८),—गयघल-णगोलखंभे इति गजः (९), घयणत्ति नांकः (१०), गोलः (११), स्तंभः (१२), —खुड्डुगमग्गित्थियपइपुत्ते इति क्षुल्लकः (१३), मार्गः (१४), स्त्री (१५), द्वौपती (१६) पुत्रः (१७) इति—एतानि सप्तदशपदानि तत्रज्ञातसूचामात्रफलान्येवेति न सूक्ष्मेक्षिका कार्या.

तत्राद्यज्ञातसंग्रहगाथा.

भरहसिल मिंढ कुक्कुड–तिलवालुगहत्थि अगड वणसंडे, पायस अइया पत्ते —खाडहिला पंच पियरो य. ॥ ४१ ॥—टीका.—भरतो नटस्तद्वृत्तांतगता शिला भरतशिला मेंढो मेषः १, कुक्कुटस्ताम्रचूडः २, तिलत्ति तिलाः ३, वाणुगत्ति वालु-

१०) गोळ. (११) स्तंभ, १२ क्षुल्लक, १३ मार्ग (१४) स्त्री, १५ बे पति, (१६) अने पुत्र १७.—एम ए सतर पदो ते ते उदाहरणनी सूचना मात्र करे छे, माटे इहां बारीक नजरे अर्थ करवानी जरुर नथी.

त्यां पहेला उदाहरणनी संग्रहगाथा कहे छे.

भरतशिला, मेंढ, कुक्कुट, तिल, वालुका, अवट, वनखंड, पायस, अजिका, पत्र, खिल्लहडिका, अने पांच बाप.

टीका.

भरत नामनो नट तेनी वातमां आवती शिला ते भरत शिला, मेंढ एटले मेष, कुक्कुट एटले कूकडो, तिलो, वालुका एटले वालुकानी दोरडी, हाथी, अवट एटले कूवो, वनखंड, पायस अजिका एटले बकरीना ढाणनी गोळी, प-

कायाः संबंधिनी वरत्रा ४, हस्ती, ५, अगमत्ति, अवटं कूपः ६, वरखंभः ७ पायसं, ८ अइया इति अजिकाया बगलिकाया:पुरोषगोलिका, ए पत्ते इति पिप्पलपत्रं, १० खा-महिलत्ति खिल्लाहमिका, ११ पंचपितरश्च तव राजन् पंच जनकाः १२ इयंच संग्रह गाथा स्वयमेव सूत्रकृता व्याख्यास्यते इति न विस्तार्यते.

तथा

महुसित्थ—मुद्दियं—के,—णाहाए—भिक्खु—चेडगानिहाणे, सिक्खा य—अत्थ स-त्थे—इच्छाय महं—सयसहस्से. ॥ ४२ ॥

(टीका)

महुसित्थत्ति मधुसिक्थकं मदनं १, मुद्रिका २, अंकश्च ३, ज्ञानकं व्यवहारा-र्हरूपकअक्षणं ४, भिक्खुचेमगनिहाणे इति भिक्षुः ५, चेटकनिधानं ६, शिक्षाच ७,

त्र एटले पीपळनुं पान, खिल्लहमिका (खिलोमी), अने पंच पितर एटले हे राजन् तारा पांच बाप छे ते.

आ संग्रहगाथाने सूत्रकार पोतेज वर्णवनार छे एटले इहां अमे एनी विस्तारथी व्याख्या नथी करता.

वळी

मधुसिक्थ, मुद्रिका, अंक, ज्ञानक, भिक्षु, चेटकनिधान, शिक्षा, अर्थ, शस्त्र, मारी इच्छा अने शतसहस्र. ४२

टीका

मधुसिक्थक एटले मीण, मुद्रिका, अंक, ज्ञानक एटले व्यवहारमां चालतो रूपियो, भिक्षु, चेटकनिधान, शि-

अर्थः ८, शास्त्रं ९, इच्छायमहंति इच्छा च मम १०, शतसहस्त्रं ११.—एतान्यपि स्वयमेव सूत्रकृता व्याख्यास्यंते. एवंचाद्यसंग्रहगाथायाः संबंधीनि शासदशएतानि चैकादश—मीलितानि अष्टाविंशतिर्मूलज्ञातानि औत्पत्तिक्यां बुद्धाविति. (१) ७

अथ वैनयिकीस्वरूपमाह.

भरनित्थरणसमत्था—तिवग्गसुत्तत्थगहियपेयाला. उभओलोगफलवई—विणयसमुत्था हवइ बुद्धी. ॥ ४३ ॥

(टीका)

इहातिगुरुकार्यं दुर्निर्वहत्वाद्भरइव भरकस्तस्य निस्तरणे पारप्रापणे समर्था भरनिस्तरणसमर्थाः त्रयो वर्गा स्त्रिवर्गं लोकरूढेर्धर्मार्थकामाः—तदर्जनपरोपायप्रतिपा-

द्यां, अर्थ, शस्त्र, मारी इच्छा अने सो हजार.—एम पण सूत्रकार पोतेज व्याख्या करशे. एम पहेली गाथाना सत्तर अने आ गाथाना अग्यार मळी अठावीश मूळ उदाहरणो औत्पत्तिकी बुद्धि पेटे छे.

हवे वैनयिकीनुं स्वरूप कहे छे.

भारने उपाडवा समर्थ, त्रण वर्गना सूत्रार्थना सारने लेनारी, उभयलोकमां फळ आपनारी विनयथी उपजती बुद्धि होय छे. ४३

टीका.

इहां अति मोटुं कार्य दुःखे टकावा शकाय एवुं होवाथी भार रूप गणाय छे तेने पार पोहोचाडवा समर्थ, त्रण वर्ग ते त्रिवर्ग अर्थात् लोकरूढिथी धर्म अर्थ अने काम जाणवा तेना अर्जनना उपाय बतावनार ते सूत्र अने तेनो व्या-

दनमेव सूत्रं—तदन्वाख्यानं तदर्थपेयालो विचारः सार इत्येकोर्थः—ततस्त्रिवर्गसूत्रार्थयोर्गृहीतं पेयालं यया सा त्रिवर्गसूत्रार्थगृहीतपेयाला, उभयलोकफलवइत्ति. उभयलोकफलवती ऐहिकामुष्मिकफलप्राप्तिप्रगुणा, विनयसमुत्था विनयोद्भवा वैनयिकी इत्यर्थः भवति बुद्धिः

अथैतद्ज्ञातानि.

णिमित्ते अत्थसत्थे य—लेहे गणिए य कूव आसे य, गद्दभलक्खणगंठी—अगए गणिया य रहिए य. ॥ ४४ ॥ सीआ साडी दीहं च तणं अवसव्वयं च कुंचस्स, निव्वोदए य गोणे—घोडगपडणं च रुक्खाओ. ॥ ४५ ॥

(टीका)

निमित्तं १, अर्थशास्त्रं च २. लेहे इति लेखनं ३, गणितं च ४, कूपः ५, अश्व-

ल्या ते अर्थ तेनो पेयाळ एटले विचार के सार तेने लेनारी अने उभयलोक फळवती एटले आभव परभवना फळने पमाडनारी विनयथी उपजती अर्थात् वैनयिकी बुद्धि छे.

हवे एना उदाहरण कहे छेः—

निमित्त, अर्थ शास्त्र, लेखन, गणित, कूप, अश्व, गर्दभ, लक्षण, ग्रंथि, अगद, गणिका अने रथिक. ४४ शीत साडी लांबु तृण—अने क्रौंचनुं अपसव्यक, नीव्रोदक तथा गोण—घोडक—अने वृक्षथी पतन. —४५

टीका.

निमत्त अर्थशास्त्र, लेखन, गणित, कूवा, घोडो, गधेडो, लक्षण, गांठ, दवा, गणिका अने रथिक, शीत साडी

श्व ६, गर्दभः ७, लक्षणं ८, ग्रंथिः ९, अगदः १०, गणिका च रथिकश्चेति ११, शी-तमाटी दीर्घं च तृणं—अपसव्यकं च क्रौंचस्य इत्येकमेव १२, नीव्रोदकंच १३, गौः—घोटकः—पतनं च वृक्षादित्येकमेव १४.—एवं वैनयिक्यां सर्वाग्रेण चतुर्दश ज्ञातानि, एतान्यपि स्वयमेव शास्त्रकृता व्याख्यास्यंत इति नेह प्रयत्नः . (२)

अथ कर्मजायाः स्वरूपमाह.

उवओगदिट्ठसारा—कम्मपसंगपरिघोलणविसाला, साहुक्कारफलवई—कम्मसमुत्था हवइ बुद्धि. ॥ ४६ ॥

(टीका)

उपयोजनमुपयोगो विवक्षितकर्मणि मनसोऽभिनिवेशः—सारस्तस्यैव कर्मणः

ग्रांबुं घास--अने कूंजनुं माबी तरफ जवुं एम एक उदाहरण नेवानुं पाणी, तथा बळद-घोडो—अने कामथी ए पडवुं पण एक उदाहरण.—एम वैनयिकी पेटे कुले चौद उदाहरण छे. एनी पण शास्त्रकार पोतेज व्याख्या करनार छे, माटे इहां अमे ए संबंधी तस्दी नथी लेता.

हवे कर्मजानुं स्वरूप कहे छेः—

उपयोगथी सारने जोनारी, कर्मना अभ्यास अने विचारथी विशाळ, अने शाबासीवडे सफळ कर्मजा बुद्धि होय छे. ४६

टीका

उपयोग एटले अमुक काममां मननुं खेंचाण—ते वडे सार एटले ते ज कामनो परमार्थ जेनाथी जणाय एवी

परमार्थः—उपयोगेन दृष्टः सारो यया सा उपयोगदृष्टसारा अभिनिवेशोपलब्धकर्मसामर्थ्येत्यर्थः, कर्मणि प्रसंगोऽभ्यासः—परिघोलनं विचारः—आभ्यां विशाला कर्मप्रसंगपरिघोलनविशाला अभ्यासविचारविस्तीर्णा इति यावत्, साधुकृतं सुष्ठु कृतमिति विद्वद्भ्यः प्रशंसा साधुकारस्तेन फलवतीति समासः—साधुकारेण वा शेषमपि फलं यस्याः सा तथा, कर्मसमुत्था कर्मजा भवति बुद्धिः. ७९

अथतदुज्ञातानि.

हेरण्णिए करिसए–कोलिय–डोवेय–मुत्ति–घय–पवए, तुण्णाय–वड्ढई–पूइएय घडचित्तकारे य. ॥ ४७ ॥

(टीका)

हैरण्यिकः सौवर्णिकः (१) कर्षकः कृषीवलः (२), कोलियत्ति कोलिक

अर्थात् खेंचाणथी कामनुं मर्म ग्रहण करनारी, कर्मनो प्रसंग एटले अभ्यास अने परिघोलन एटले विचार ते बे वडे विशाळ थती अर्थात् अभ्यास अने विचारथी वधती, अने साधुकार ठीक कर्युं एवी विद्वानो तरफथी थती प्रशंसा तेणे करीने सफळ अथवा साबासी शिवाय बीजी पण फळवाळी कर्मथी ऊपजती बुद्धि अर्थात् कर्मजा बुद्धि होय छे.

हवे कर्मजाना उदाहरण कहे छेः—

हैरण्यक, कर्षक, कोलिक, दर्वीकर, मौक्तिक, घृतप्रक्षेपक, प्लवक, तुन्नवाय, वर्द्धकि, पूतिक, घटकार अने चित्रकार.४७

टीका.

हैरण्यिक एटले सोनारो, कर्षक एटले खेडुत, कोलिक एटले, वणकर, दर्वीकर एटले पीरसनार, मौक्तिक एटले

स्तंतुवायः (३), कोचयत्ति दर्वीकरश्च परिवेषक इत्यर्थः (४) मुत्तित्ति मौक्तिकप्रोता (५). घयत्ति घृतप्रक्षेपकः (६) प्लवकः (७) तुन्नायत्ति तुन्नवायः तुन्नं त्रुटितं वयति सीव्यति यः स तथा (८), वर्द्धकिः (९), पूइए य इति पूतिकः कांदविकः [१०], घडचित्तगारे य त्ति घटकारः कुंभकारः [११], चित्रकारश्चित्रकर्मविधाता [१२].—एवं द्वादश दृष्टांताःकर्मजायां मतौ एतानपि स्वयं सूत्रकृद्व्याख्यास्यतीति नेह कृतो विस्तरः [३]

अथ पारिणामिकीस्वरूपमाह.

अणु माणहेउदिठ्ठंतसाहिया वयविवक्कपरिणामा, हियनिस्सेसफलवई—बुद्धी परिणामिया णाम. ४८

मोती परोवनार, घृतप्रक्षेपक—(घी नाखनार) प्लवक (तारु) तुन्नवाय एटले तूटेलाने शीवनार, वर्धकि (सुथार) पूतिक एटले कंदोइ, घटकार एटले कुंभार अने चित्रकार एटले चितारो—एम कर्मजा बुद्धिपेटे बार उदाहरण छे. एमनी पण सूत्रकार पोतेज व्याख्या करनार छे तेथी अमे एनो विस्तार करता नथी.

हवे परिणामिकी बुद्धिनुं स्वरूप कहे छे.

अनुमान हेतु दृष्टांतवडे साधनारी वयोविपक्व परिणामवाळी अने हितनिःश्रेयस फळवाळी बुद्धि ते परिणामिकी जाणवी. ४८

[टीका]

अनुमानहेतुदृष्टांतैः साध्यमर्थं साधयतीत्यनुमानहेतुदृष्टांतसाधिका—इह लिंगिज्ञानमनुमानं स्वार्थमित्यर्थः तत्प्रतिपादकं वचो हेतुः परार्थमित्यर्थः—अथवा ज्ञापकमनुमानं, कारको हेतुः;—साध्यव्याप्तिप्रदर्शनविषयो दृष्टांतः—अनुमानग्रहणादेवास्य गतत्वाद्व्यर्थमुपादानमितिचेत्—न—अनुमानस्य तत्त्वतोन्यथानुपपन्नत्वेलक्षणैकरूपत्वान्न गतार्थत्वं दृष्टांतस्य,—कालकृतो देहावस्थाविशेषो वय इत्युच्यते ततस्तेन विपक्वः पुष्टिमानीतः परिणामोऽवस्थाविशेषो यस्याःसा वयोविपक्वपरिणामा; तथा हियनिस्सेसफलवई इति हितमभ्युदयस्तत्कारणं वा पुण्यं—निःश्रेयसो मोक्षस्तन्निबंधनं वा सम्यग्दर्शनादि—ततस्ताभ्यां फलवती बुद्धिः पारिणामिकी नाम.

टीका.

अनुमान, हेतु, तथा दृष्टांतवडे साध्य अर्थने साधनारी.—[इहां लिंगनुं पोतें जाणवुं ते अनुमान, ते अने बीजाने ते जणावनार वचन ते हेतु—अथवा जणावनार ते अनुमान अने करावनार ते हेतु, साध्यनी व्याप्ति ज्यां जणाय ते दृष्टांत;—कोइ कहेशे के अनुमान लेतां दृष्टांत आवीज जाय छे माटे तेने फोकट जूदो लीधो छे, तो तेम नथी, केमके अनुमान तो परमार्थे अन्यथानुपपन्नपणा रूप छे माटे तेमां कंइ दृष्टांत गतार्थ गणाय नहि;—] वयोविपक्व परिणामवाळी एटले के काळकृत देहावस्था विशेष ते वय तेणे करीने परिपक्व थाय छे परिणाम एटले अवस्था जेनी एवी तथा हितनिःश्रेय सफळवाळी एटले हित कहेतां स्वर्ग अथवा तेनुं कारण पुण्य अने निःश्रेयस कहेतां मोक्ष अथवा तेना कारण सम्यग्दर्शनादिक ते वडे फळवाळी गणाती बुद्धि ते पारिणामिकी जाणवी.

अथैतद्ज्ञातानि गाथात्रयेणाह.—

अजए—सेट्ठिकुमारे—देवी उदिओदओ हवइ राया, साहू य णंदिसेणे—धणदत्ते—सावग—अमच्चे. ४९ खमए—अमच्चपुत्ते—चाणक्के चेव थूलभद्दे य, नासिक्क सुंदरी णंद—वइर—परिणामिया बुद्धि' ५०

[टीका]

अजए इति अजयकुमारः [१], सिट्ठित्ति काष्ठश्रेष्ठी [२], कुमारे इति-क्षुल्लककुमारः [३], देवी पुष्पवत्यभिधाना [४] उदितोदयो जवति राजा [५], साधुश्च नंदिषेणः श्रेणिकपुत्रः [६], धनदत्तःसुंसुमापिता [७], श्रावकः [८], अमात्यः [९], शपकः [१०], अमात्यपुत्रः [११], चाणक्यश्चैव [१२], स्थूलजद्रश्च [१३], नासिकसुंदरीनंदत्ति नासिक्यनाम्नि नगरे सुंदरीनंदो वणिक्

हवे त्रण गाथावडे परिणामिकी बुद्धिना उदाहरण बतावे छेः—

अजय, शेठ, कुमार, देवी, उदितोदय राजा, नंदिषेण साधु, धनदत्त, श्रावक, अमात्य,—शमक, अमात्यपुत्र, चाणक्य, स्थूलभद्र, नासिकनो सुंदरीनंद वेर, अने परिणामिकी बुद्धिवाळो. ४९—५०

टीका.

अजयकुमार, काष्टशेठ, क्षुल्लककुमार पुष्पवती देवी, उदितोदय राजा, श्रेणिकनो पुत्र नंदिषेणसाधु, सुंसमानो पिता धनदत्त' श्रावक, अमात्य, शमक, अमात्यपुत्र, चाणक्य, स्थूलभद्र, नाशिक्यनगरनो सुंदरीनंद नामे वाणिओ, वेर-

[१४], वइर इति वैरस्वामी [१५] परिणामिकी बुद्धिरित्यनेन वाक्येनात्र परिणामिकीबुद्धियुक्ता ब्राह्मणी देवदत्ता च गणिका गृह्यते [१६].

चलणाहण—आमंडे—मणी य—सप्पे य—खग्ग—थूभिंदे, परिणामिएबुद्धिए—एमाई होंतु दाहरणा. ॥ ५१ ॥

[टीका]

चरणाहननं १७, आमंड इति कृत्रिमामलकं १८, मणिश्च १९, सर्पश्च २०, खग्गत्ति खड्गः २१, स्तूपेंद्रः २२—पारिणामिक्यां बुद्धौ एवमाइयत्ति एवमादीनि नवंत्युदाहरणानि. एवं च पारिणामिक्यां बुद्धौ सूत्रोपात्तानि द्वाविंशतिज्ञातानि एतान्यपि स्वयमेव सूत्रकृता नणिष्यंते इति नेहाश्रितो विस्तरः . [३] ७

रोहानी कथा

सांप्रतमुद्दिष्टज्ञातानां स्वरूपं विन्नाणिपुरादावेव नरहसिलेतिज्ञातसंग्रहगाथां

स्वामी, अने परिणामिकी बुद्धिवाळी ए शब्दे करीने इहां ब्राह्मणी तथा देवदत्ता गणिका लेवी.

चरणाहनन, आमंड, मणि, सर्प, खड्ग, अने स्तूपेंद्र—ए वगेरे परिणामिकी बुद्धिना उदाहरण छे. ५१

टीका.

चरणाघात, आमंड एटले बनावटी आमलकफळ, मणि, सर्प, खड्ग, अने स्तूपनो इंद्र—ए वगेरे परिणामिकी बुद्धिना उदाहरणो छे. आ रीते परिणामिकी बुद्धि पेटे सूत्रमां बावीश उदाहरण लीधां छे. एमनी पण सूत्रकार पोतेज व्याख्या करशे एटले इहां अमे तेनो विस्तार नथी करता.

अरहसिद्ध–मेंद–कुरुकुरेत्यादिकां अष्टाविंशतिगाथाभिर्व्याचष्टे :–

उज्जेणिसिलागामे–गोयर रोह–गामाउवसणंमि, पितिकोवेतर–गोहे–गायाक-
...नन्दुदद्यो. ॥ ५२ ॥

(टीका)

मालवमंगलमंमणभूया नयर समुच्छुरयणो हा, नामेणं उज्जणी–समत्थि वित्थि-
ण्णसुरभवणा. ॥ १ ॥ तत्थ रिउपक्खविक्खोहकारओ सइगुणी सुदढपणओ; आसी
जियसत्तुनामा–नरनाहो नयगुणसणाहो. ॥ २ ॥ सो भुंजइ निरवज्जं—नियरज्जं चो-
ज्जकारगं भुवणे. धम्मत्थकामपुरिसत्थसुंदराराहणपहाणो—॥ ३ ॥ नाडयनट्टकहाणय-
गीयाइसु कोसल्लं परं पत्तो—कोऊहल्लतरलमणो—सविज्जजणजोग्गकज्जेसु. ॥ ४ ॥

हवे कहेला उदाहरणोनुं स्वरूप बताववा खातर शरुआतमां अरहसिद्धमंडकुरुकु ए आदि पदवाळी संग्रहगा-
थाने अठावीश गाथाओवडे वर्णवी बतावेछे:—

उज्जेणी पासेना सिलागाममां रोहो नामे छोकरो हतो. तेनी ओरमा तेने दुःख आपती तेथी तेणे बापने पर
पुरुष आवेलो कही कोपमां पमयो बाद छाया बतावीने तेणीने मानीती करवी. ५२

मालव देशनी शणगार रूप, सारे धनवाळी अने मोटा देवमंदिरवाळी उज्जेणी नामे नगरी छे. १ त्यां दुश्म-
नोना पक्षने तोडी नाखनार 'सदा गुणवान्' दृढ प्रेमी अने न्याये वर्त्तनार जितशत्रु नामे राजा हतो. २

ते राजा धर्म अर्थ अने काम ए त्रणे पुरुषार्थने बरोबर सेवतो थको पोताना चोखा अने अचंबा करेला राज्य-
ने भोगवतो हतो. ३ वळी ते नाटक, नृत्य, कथानक तथा गीत वगेरे विद्यावानजनने योग्य कार्योमां कुतुहळना लीधे मन ग

अह उज्जेणिसमीवे अत्थि सिलासंगओ सिलागामो, गुणनिप्फाइयनामो–गामो, नरहो च तत्थ नमो. ॥ ५ ॥ सो नाम्यविजाए–अइपसंसो वहूय तग्गामे, णामेण रोहओ सोहओ य गामस्स सुओ. ॥ ६ ॥ अह अन्नया कयाइवि–रोहयमाया मया, तओ नरहो–असं तज्जणणिं संठवेइ घरकज्जकरकए. ॥ ७ ॥ वालो य रोहओ साय –तस्स हीलापरायणा हवइ, उप्पत्तियबुद्धिसमन्निएण तो तेण सा नणिया.–॥ ८ ॥ अम्मा ममं न वट्टसि–जं सम्मं, सुंदरं न तं होरी, तह काह महं एत्तो–जह तं माएसु मे पडसि. ॥ ए ॥ एवं वच्चइ कालो–अहन्नया सन्निपयासधवळाए––रयणीइ जणगसहिओ––पासुत्तो एगसिज्जाए. १० तो रयणिमज्झन्नागे––उट्ठित्ता उन्नएण होऊण, दहूण नियं गायं––काउं परपुरिससंकप्पं–––११ उच्चसरेणं जणओ––– उट्ठ-

खो तेमां खरी कुशळता पाम्यो हतो. ४ हवे उज्जेणीना पासे शिलाओथी नरायलो शिलागाम नामे गुणनिष्पन्न नामवाळो एक गाम हतो. त्यां नरत नामे नट रहेतो. ५ ते नाट्य विद्याना लीधे ते गाममां वहु वखणातो हतो. तेनो रोहिक नामे पुत्र हतो जे गामनी शोन्ना वधारनार हतो. ६ हवे एक वखते रोहनी मा मरी गइ, त्यारे नरते घरनुं कामकाज करवा तेनी बीजी मा आणी. ७ रोहो हजु नानो हतो तेथी ते ओरमा तेनी हीला करवा लागी. त्यारे औत्पत्तिकी बुद्धिवाळा रोहाए तेणीने कह्युं के––८ मा, तुं मारी साथे ठीक नथी वर्तती ते सारुं नहि थशे हुं एवुं करीश के जेथी तुं मारे पगे पडशे. ए आ रीते वखत जातां एक वेळा अजवाळी राते रोहो पोताना वाप साथे शय्यामां सूतो हतो तेवामां मधराते उठी नयनीत थइ पोतानी छाया जोइ परपुरुषनो संकल्प धरी तेणे ऊंचा स्वरथी वापने जगाडी कह्युं के पिताजी, जुवो आ ओंचितो उठीने कोइक परायो माणस जाय छे. १०––११––१२ तेनो पिता निद्रा दूर क-

विय भासिओ जहा ताय, पेक्खसु नरपुरिसो एस जाइ सहसुट्ठिओ कोइ. ॥ १२ ॥ जाव स निद्दामोक्खं—काऊणं लोयणेहिं जोएइ, ताव न दिट्ठो, पुट्ठो य—वच्छ, सो कत्थ परपुरिसो? ॥ १३ ॥ भणिओ तेण इमेणं—दिसाविभागेण तुरियतुरियं सो—गच्छंतो मे दिट्ठो—मा मणसु अणहा ताय. ॥ १४ ॥ परिकलिय नट्ठसीलं—महिलं लिढिला यरो तओ तीए—भरहो सब्भावपयंपणाइरहिओ तओ जाओ. ॥ १५ ॥ पच्छायावपरिगया—सा भासइ कुणसु वच्छ मा एवं, सो भणइ न मम लट्ठं—वट्टसि, ता वेइ वट्टिस्सं.—॥ १६ ॥ तह कुणसु जहाएसो—तुह जणओ मज्झ आयरं कुणइ, पच्चिवन्न मिमं रोहेण—सावि तह वट्टिउं लग्गा. ॥ १७ ॥ तहच्चेव रयणिमज्झे—कयावि सुत्तुट्ठिओ भणइ जणगं, सो एस एस पुरिसो—कहिंति पुट्ठो य पिउणावि. ॥ १८ ॥ तो निययं चिय छायं—दंसित्ता भणइ पेच्छह इमं ति, स विल-

री आंखोथी जोवा लाग्यो के कोइ देखायो नहि' त्यारे तेणे पूछ्युं के दीकरा, ते परायो माणस क्यां छे? १३ रोहाए कह्युं के आ दिशा तरफ ते उतावळो थइने जतो में जोयो. हे पिता ए वात खोटी जाणोमा. त्यारे भरत पोतानी नवी स्त्री भगभ्रेली धारीने तेनापर प्रीत ओछी करीने तेनी साथे खरेखरी वातचीतो नहि करतां वेगळो रहेवा लाग्यो १४ —१५ आथी ते ओरमां पश्चात्ताप करी रोहने कहेवा लागी के दीकरा आवुं म कर. ते बोल्यो के तुं मारी साथे सीधी वर्त्तती नथी ते बोली के हवेथी सीधी वर्त्तीश, पण एवुं कर के जेथी ए तारो बाप मारो आदर करे रोहाए तेम करवा कबूल्युं अने ते पण तेना साथे सीधी वर्त्तवा लागी. १६—१७ बाद एक वखते मधराते तेज रीते सूतो उठीने ते बापने कहेवा लाग्यो के आ रह्यो पुरुष. बापे पूछ्युं के ते क्यां छे? १८ त्यारे तेणे पोतानीज छाया बतावी कह्युं के आ जुवोने. आथी

क्खमणो जाओ—पुव्वउ किं एरिसो सोवि ? ॥ १९ ॥ आमंति तेण ज्ञणिए—अव्वो वालाण केरिसु ल्लावा; इय चिंतिऊण ज्ञरहो घणराओ तीइ संजाओ.॥२०॥तो विसपपाणज्ञीओ—पिउणो सह रोहए सया जिमइ, अह उज्जेणि मइगओ—कयाइ जणएण सद्धिं सो. ॥ २१ दिट्ठा नयरी तियचच्चराइदेसोवसोहिया सव्वा, दिवसावसाणसमए—गामाज्ञिमुहं पम्नियत्ता. ॥ २२ ॥ सिप्पानईइ पत्ता—वालुयपुलिणंमि तो सुयं ठविउं, पम्हुट्ठगहणहेउं—पुणोवि नयरिं गओ जणओ. ॥ २३ ॥ तो रोहेण अइनिउणवुद्धिणा तंमि वालुयापुलिणे, तियचच्चराइकलिया—लिहिया नयरी सपायारा. ॥ २४ ॥ अह जियसत्तू राया—नयरीवाहिं गओ पम्नियत्तो, पंसुज्ञए णेगागी—तुरयारूढो तहिं देसे—॥ २५ ॥ जा वेइ तुरियवेगो—ज्ञणिओ ता रोह-

वापे विल्लखा पम्नी पूछ्युं के शुं ते वखते पण आवोज पुरुष हतो के ? १९ रोहाए हा पाम्नी एटले वाप विचारवा लाग्यो के वाळकोना वोल ते केवा होय ! एम चिंतवी ते पोतानी स्त्रीपर घणो राग धरवा लाग्यो. २० त्यारे रखेने तेणी विष आपे तेथी म्नरीने रोहो वापना साथेज हमेशां जमतो, वाद वापने साथे एक वेळा ते उज्जेणीमां गयो. २१ तेणे त्रिकच त्वरना ठाठथी शोज्ञती सघळी नगरी जोइ. वाद सांजे तेओ गाम तरफ पाछा वळ्या. २२ तेओ शिप्रानदीना रेताळ कांठापर आव्या. आ स्थळे रोहाने वेशाम्नी तेनो वाप वीसरेली चीज लेवा पाछो नगरी तरफ गयो. २३ दरम्यान अतिनिपुण वुद्धिवाळा रोहाए त्यां रेतीमां त्रिकचोक वगेरेनी साथे कोट किल्लावाळी नगरीनो नकशो चीतर्यो. २४ एवामा जितशत्रु राजा नगरीथी वाहेर गएलो हतो ते धूळना ज्ञयथी एकलो घोडे स्वार थइ पाछो वळतां त्यां आव्यो. २५ ते जेवो उ-

णेण मा वच्च, पुरओ किं न नियच्छसि—रायउलं तुंगपासायं. ॥ २६ ॥ कत्तो राय-उलं इह—जा जणइ नराहिवो तओ जाओ—सउणो अइरूरिगुणो—सवियको तो निवो जाओ. ॥ २७ ॥ तो रोहएण नयरी—सवित्थरं तं च रायउलं कहियं, पुच्छं-तो निवो जाओ. ॥ २७ ॥ इत्थेव सिलागामे—भरहस्स पत्थ निवासो—भणिओ रन्ना, तओ जणइ—॥ २८ ॥ इत्थेव सिलागामे—भरहस्स सुओ वसामि कज्जेण—पिउणा सद्धिं इह आगओम्हि, संपइ तहिं जामि. ॥ २९॥ रण्णो पंचसयाइं—मंती एगूणगाइं अह संति, जो चूडामणिसरिसो—तेसिं तं मग्गए पभू. ॥ ३० ॥ तत्तो खणमेत्ताओ—काउं कज्जाइं आगओ भरहो, तेण समं संपत्तो —स रोहओ नियगामंमि. ॥ ३१ ॥ आरद्धं नरवइणा—बुद्धीइ परिक्खणं तओ, तस्स, भणिओ गामो वाहिं—सिला विसाला त्थिजा तीए—॥ ३२ ॥ मंडियपरिख-

तावळी चाली त्यांथी पसार थवा लाग्यो के रोहाए तेने त्यांथी चालवा ना पाडी अने कह्युं के आ उंचा महेलवाळा दर वारने केम तुं नथी जोतो. २६ राजाए कह्युं के इहां ते दरवार क्यांथी ? एवामां घणो सरस शकुन थयो तेथी राजा वि-चारमां पड्यो. २७ त्यारे रोहाए त्यां चीतरेली नगरी तथा विस्तारवाळो दरवार बताव्यो. राजाए पूछ्युं के तुं क्यां रहेछे? रोहो बोल्यो के—२८ पासेना शिलागाममां हुं भरतनटनो दीकरो रहुंछुं. कामना माटे बाप साथे इहां आवेलो छुं, अने हवे पाछो त्यां जाउं छुं. २९ हवे राजाने एक उणा पांचसो मंत्रि हता तेथी ते बधाना सरदार जेवा एक मंत्रिने ते शोध-तो हतो, ३० एवामां तरतमांज भरत काम पतावी आव्यो एटले तेना साथे रोहो पोताने गाम आव्यो. ३१ बाद राजाए तेनी बुद्धिनी परीक्षा करवी शरु करी. तेणे गामना लोकोने फरमाव्युं के बाहेर जे मोटी शिला छे तेनो ३२ आजुबाजु

रदेसं—मंडव मुद्दंडथंभपब्भारं, कुणहत्ति एव भणिए—गामो सो आउली हूओ. ॥ ३३ ॥ पडिया भोयणवेला—स रोहगो नो जिमेइ पियरहिओ, मा मे विससंजोगं—विराहिया दाहिही जणणी. ॥ ३४ ॥ अह सो पसन्नवयणो—उस्सूरसमागयं भणइ पियरं, मज्झ महल्लवेला—छुहापिवासापरद्धस्स. ॥ ३५ ॥ सुहिओ सि पुत्त, अइदारुणे त्थ आणा समागया रन्नो, तो तीए वाउलमाणसाण संजाय मुस्सूरं. ॥ ३६ ॥ सुणियाए आणाए—लद्धरहस्सेण तेण संलत्तं—भुंजह ताव जहिच्छं—पच्छा जुत्तं करिस्सामि. ॥ ३७ ॥ भुत्तुत्तरेण भणिओ—सो गामो रोहएण जह खणह—हेट्ठा सिलातलं तह—थंभे उत्थंभए देह. ॥ ३८ ॥ एवं विहिए संते—स मंडवो तेसि तक्खणं जाओ, आवेइओ य रन्नो—कह केण कओ? निवो भणइ. ॥ ३९ ॥

भजको करीने ऊंचा थांभलावाळो मांडवो बनावो. आ रीते राजाए फरमाव्याथी ते गाम मुंझाइने आकुळ थइ पड्यो. ३३ हवे जमवानो वखत थयो, पण बाप वगर रोहो जम्यो नहि केमके ते डरतो हतो के रखेने तेनी ओरमान मा खीजेली थइने तेने विष आपी देशे. ३४ बाद असूरे तेनो बाप आव्यो एटले ते हसते चहेरे कहेवा लाग्यो के हुं घणो वखत थयो भूख तरसथी हेरान छुं. ३५ बापे कह्युं के दीकरा तुं सुखी छे, बाकी अमने तो इहां राजानी बहु मुश्केल आज्ञा आवी छे तेथी तेमां मुंझाइ पड्या छीए तेथी असूरुं थयुं छे. ३६ ते आज्ञा सांभळतां रोहो तेनुं रहस्य समजी बोल्यो के पहेला खूब जमी ल्यो पछी ठीक हशे ते करीशुं. ३७ जम्या पछी तेणे गामना लोकोने कह्युं के शिलानी नीचे खोदीने थांभलाना टेका देता आवो. ३८ तेम करवाथी तेओए तरतमां ते मांडवो तैयार करी राजाने जणाव्युं. राजाए कह्युं के ए शी रीते अने कोणे तैयार कर्यो ? ३९ तेओ बोल्या के भरतना पुत्र रोहानी बुद्धिना प्रतापे अमे नी-

तत्तभूमीखणणेणं—धंन्नयजरवन्नणेण य कओ सो, नरहतणयस्स रोहगनामस्स मइप्पनावेण. ॥ ४० ॥ त्रिहिओ संवाओ से—अन्नं आपुच्छिऊण संनिहियं, इय रोहगस्स बुद्धि—न्नणिया उप्पत्तिया नाम. ॥ ४१ ॥ एवं अन्नेसुवि मेंढगाइ नाएसु जोयणा कज्जा, उप्पत्तियबुद्धिए—जा एयकहापरिसमत्ती. ॥ ४२ ॥

अथ पूर्वोक्तसंग्रहगाथाचतुष्टयस्याक्षरार्थः—उज्जेणिसिलागामे—रोयररोहए माउवसणंमि—पितिकोवेतर गोहे—गयाकहणेण मच्छुदओ. ॥ ५२ ॥ पितिसम मुजेणीगमणिग्गस पच्छुच्छणदिणियत्तणया, सइदिट्ठनयरिलिहणं—रायणिसेहो णियवरंमि. ॥ ५३ ॥ पुच्छा साहु निमित्तं—मंतिपरिच्छा सिलाइसंरुवए, आदणेसुं

मेनो जमीन खोदी पांजलाना टेका दइ तैयार कर्युं छे. ४० त्यारे बीजा पासे कजेलाने पूछी राजाए ते वात नक्की करी. एम रोहानी बुद्धि ते औत्पत्तिकी जाणवी. ४१ एम ए रोहनी कथा पूरी थाय त्यां लगण मेंढा वगेरे दृष्टांतोमां औत्पत्तिकी बुद्धिनी योजना करी लेवी. ४२

हवे पूर्वे कहेली चार संग्रहगाथानो अक्षरार्थ करीये छीये.

उज्जेणी पासेना शिलागाममां रोहो नामे छोकरो हतो तेने तेनी ओरमा दुःख आपती तेथी तेणे तेना बापने परपुरुष आवेलो कही कोपमां पाड्यो बाद ओया बतावी तेने संतुष्ट करी माने मानीती करावी. ५२ ते बाप साथे उज्जेणी जइ पाछो वळ्यो. कंइ काम वीसर्याथी तेने नदीपर मेली बाप पाछो गयो. तेणे एक वार दीठेली नगरी आलखी, त्यां आळखेला राजकुळमांथी पसार थता राजाने अटकाव्यो. ५३ राजाए पृछ्युं एवामां सारो शकुन थयो. मंत्री

पितिचुंज गमणखणणेगथंनो ज. ॥ ५४ ॥ कहणे चालण संबद्धन्नासगो तंसि अखु-हा णेयं, माणुसमेत्तस्सुचियं—तयपुछ्रण पुछ रोहेणं. ॥ ५५ ॥

(टीका)—उज्जयिन्याः समीपे शिलाग्रामे—छेयररोहत्ति छेकरो मृतस्वमातृकः रोहकनामा नरतसुतः समभूत्. तस्यच अन्यमात्रा व्यसनेऽसम्यगुपचाररूपे क्रियमाणे सति पितुः कोप इतरश्च संतोषोऽन्यमातृगोचर एव तेन संपादितः कथमित्याह—गोहस्य परपुरुषस्य प्रथमं, पश्चात्स्वदेहछायाया गोहत्वेन परिकल्पितायाः कथनेन पितुर्निवेदनेन ततोऽभ्युदयः सम्यगुपचाररूपोऽन्यमात्रासंपादितोस्य.(७) ॥ १ ॥

पित्रा सममुज्जयिनीगमो रोहकस्य कदाचिदभूत्. तदनु दृष्टोज्जयिनीवृत्तांतस्य

करवा माटे राजाए तेनी परीक्षा करवा शिलानो मांडवो करवा हुकम कर्यो. लोको आकुळ थतां रोहनो वाप असूरो जमवा आव्यो. वाद खोदीने थांभला लगाडवानी रोहाए सलाह आपी. ते प्रमाणे मांडवो तैयार थतां राजाने ते वात कोइए कही एटले राजाए तेमां शक दर्शाव्यो के तुं असंबद्ध बोलनार छे. तेणे कह्युं के नहि, ए वात एमज छे. राजाए कह्युं शुं मनुष्य एवुं काम करी शके ? वाद तेने नहि पूछतां बीजाने पूछी जोयुं तो तेणे पण कह्युं के ए काम रोहाए कर्युं छे. ५४—५५

टीका—उजेणी पासेना शिलागाममां छेकरो एटले मरेली मावाळो रोहो नामे नरतनो दीकरो हतो. तेने ओरमाए दुःख आपतां तेणे वापने मा तरफ कोप तथा संतोष कराव्या. ते शी रीते ते कहे छेः— पहेलां गोह एटले परपुरुष आव्यो कह्यो वाद गोहरूप कल्पेली पोताना शरीरनी छाया बतावीने तेम करता तेनी मा तेनी रूडी रीते चाकरी करवा लागी. १

वाप साथे रोहो एकवेळा उज्जेणी गयो. वाद त्यांनो दृत्तांत जोइ ते वाप साथेज पाछो वळ्यो. तेवामां

निर्गमः पित्रैव सह. ततः पम्हुट्टत्ति विस्मृतस्य कस्यचिदर्थस्य निमित्तं—णइनियत्त-
णया इति नदीपुलिनात् पित्रा निवर्त्तनं कृतं. तत्रच सकृद्दृष्टनगरीलेखनं रोहकेण—
तदनु तद्देशागतस्य राज्ञो निषेधो निजगृहे आलिखितराजकुलमध्ये प्रविशतः सतः
कृतः . (५) ॥ २ ॥

ततो राज्ञा पृच्छा कृता. अत्रांतरे साधु निमित्तं शोभनशकुनफलं संजातं. तदनु
—मंतिपरिक्खा इति मंत्रिपदनिमित्तं तस्य परीक्षा प्रारब्धा यथा शिलाया मंरूपः कार्यः
ततः—आदाणेसुत्ति आकुलेषु ग्रामवृद्धेषु सत्सु—पिउणुंजगमणत्ति रोहकपितुर्भोज-
नार्थमुत्सूरे गृहगमनं संपन्नं. ततो रोहकबुद्ध्या खनने संपादिते एकमहामूलस्तंभः शि-
लामंरूपः संपादितः. तुः पादपूरणार्थः (७) ॥ ३ ॥

ततो राज्ञस्तद्ग्रामवासिना केनचित् कथने कृते सति—चालणत्ति चालना

भोः राम पूर्णी जयाथी नदी किनारेथी बाप पाछो वळ्यो. दरम्यान त्यां रोहाए एकवार जोएली नगरी चीतरी. बा-
द ते रस्ताथी राजा आवी तेणे चीतरेला राजमहेलमां पेशवा लाग्यो एटले तेणे तेने अटकाव कर्यो. २

बाद राजाए पृच्छा करी एवामां सारुं शकुन थयुं त्यारे मंत्रिपदना माटे तेनी परीक्षा करवा मांडी. तेणे हुकम
कर्यो के शिलानो मांडवो बनावजो. आथी गामना मुखीओ आकुळ थतां रोहानो बाप मोडो जमवा आव्यो. बाद रो-
हाती अक्कलथी जमीन खोदीने तेमणे एक मोटो मूळथंभवाळो शिलामंडप तैयार कर्यो. तु शब्द पादपूरणार्थ छे. ३

पछी राजाने ते गामना कोइक रहीशे ते वात कही त्यारे तेणे शक लावी कर्युं के तुं जूठुं बोलनार छे. पेला

विहिता· पार्थिवेन यथाऽसंबद्धभाषकस्त्वमसि. तेनाप्युक्तं अन्यथा नेदं. ततो नृ-नुजा काका प्रत्यपादि–माणुसमेत्तस्सुचियंति मानुषमात्रस्योचितं किमेवंविधार्थकरणं? ततः तदपुछ्ञण पुछ्रोहेएांति तस्य प्रथमनिवेदकस्य पुरुषस्यापृछ्नेन तमपृच्छयमानं कृत्वेत्यर्थः अन्यस्य कस्यचिन्मध्यस्थस्य पृच्छा कृता. तेनाप्यावेदितं यथा रोहकेणा यमाश्चर्यभूतो मंरुपः कारित इति. (७) ॥ ४ ॥

अथ मेंढेति द्वारं.—तत्तो मेढ्ढगपेसण—मणणूणाहिय मह द्धमासेण, ज-वसविगसस्निहाणा–संपारूण मोज एयस्स. ॥ ५६ ॥

(टीका)–ततस्तदनंतरं मेढकप्रेषणं मेढकस्य मेषस्य प्रेषणं कृतं राज्ञा ग्रामे, उक्ताश्च ग्रामवृद्धा यथामुं मम मेषमन्यूनाधिकं च धारयध्वं अथार्द्धमासेन समर्पा

माणसे कह्युं के ना ए वात एमज छे. त्यारे राजा काकु करी वोल्यो के शुं मनुष्य माणी आवुं काम करी शके के ? वाद ते माणसने छोमी वीजा कोइ मध्यस्थ माणसने पूछयुं एटले तेणे पण जणाव्युं के रोहाएज आ चमत्कारि मांरुवो कराव्योछे. ४

हवे मेंढानुं द्वार कहेछे.

वाद मेंढो मोकलावी कह्युं के अर्ध मास लगी तेने अन्यूनाधिक राखवो. त्यारे घास अने वरु सामे राखी ते प्रमाणे करवामां आव्युं. ५६—टीका—वाद राजाए मेंढो (वकरो) मोकलावीने गामना मुखीओने कह्युं के आ मारा वकराने वेंजनमां जणो अधको न थाय तेम राखीने पंदरमे दाडे पाछो मोकलावजो त्यारे तेमणे रोहानी सलाह प्रमाणे तेने लीलुं घास खावा आपी तेना सामे वरु नामे जंगली जानवर वांधी राख्यो ए रीते हुकम वजाव्यो. कारण के ते व-

येष्यमिति. ततस्तेन रोहकादिष्टेयवसवृकसन्निधानात् यवसस्य यवहरितकलक्षणस्य वृकस्यचाटव्यजीवविशेषस्य समीपस्थानात्—संपामणत्ति संपादनं—मो उत्ति पादपूरणार्थः—एतस्यादेशस्य कृतं. मेंढो हि यवसं चरन् यावद्बलं लभते, सततं वृकदर्शनोत्पन्नभयात्तावदसौ मुंचतीति अन्यूनाधिकबलता संजातास्येति. (७) ५

अथ कुक्कुटमित्तिद्वारं—जुज्झावेयव्वो कुक्कुडोत्ति पडिकुक्कुडं विणा आणा, आद्दरिसगपडिबिंबप्पओगसंपादणा णवरं. ॥ ५७ ॥

(टीका)—योधयितव्यो युद्धं कारणीयोयं मम कुक्कुटस्ताम्रचूडः,—इतिशब्दो भिन्नक्रम उत्तरत्र योज्यते—प्रतिकुक्कुटं द्वितीयकुक्कुटं विनांतरेण इत्येषा आज्ञा राज्ञा प्रहिता. तत आदर्शके दर्पणे यन्निजमेव प्रतिबिंबं प्रतिकुक्कुटतया सं-

करो घास खाइ जेटलुं बळ मेळवतो तेटलुं हमेशां सामे देखता वरुना भयथी खोइ देतो ए रीते तेनुं बळ वजन वधघट नहि थता सरखुं रह्युं. अहीं मो ए पद पादपूरणार्थ छे. ५

हवे कूकडानुं द्वार कहे छे.—राजाए हुकम कर्यो के सामा कूकडा विना कूकडाने लडाववुं. त्यारे फकत आरीसाना प्रतिबिंब बतावी ते हुकम पूरो पाड्यो. ५७

आ मारा कूकडाने बीजा कूकडा विनाज लडाववुं एवी राजाए आज्ञा मोकलावी. त्यारे रोहाए आरसामां तेनुं जे प्रतिबिंब पडतुं अने तेने ते सामेनो हरीफ धारतो ते ज फकत बतावीने ते आज्ञा पूरी करी, नहिके बीजो कोइ प्रयोग कर्यो. केमके कूकडो भोळो होवाथी पोताना प्रतिबिंबने हरीफ धारी ज्यारे मत्सरथी उत्साह पूर्वक तेना साथे ल-

न्नावितं तेन—तस्य प्रयोगो व्यापारः—तेन संपादना घटना आज्ञायाः कृता रोहकेण—नवरं केवलं नान्यप्रयोगेणेत्यर्थः

स हि मुग्धतया निजप्रतिबिंबमेव प्रतिकुक्कुटतया संज्ञावयन् संपन्नतीव्रमत्सरतया संजातोत्साहो युध्यति नच कथंचिद्भज्यते इति. (७) ॥ ६ ॥

तिल्लसमाणगहणं—तिलाण तत्तो य एस आदेसो, आदरिसगमाणेणं—गहणा संपाडण मिमस्स. ॥ ५७ ॥

(टीका)—तैलसमेन मानेन ग्रहणं तिलानां—इदमुक्तं न्नवति—येन मानेन मदीयानेतांस्तिलान् कश्चिद्गृह्णाति तेनैव तैलमप्यस्य दातव्यं, आत्मवंचना च रक्षणीया.—ततश्च पूर्वोक्तादेशानंतरं पुनरेव आदेशः प्रेषितो महीपालेन. रोहकबुद्ध्या च आदर्शकमानेन दर्पणलक्षणेन प्रमाणेन ग्रहणात्तिलानां, उपलक्षणत्वात्तैलप्रदानाच्च संपादनमस्यादेशस्य कृतं ग्रामवृद्धैः

भतां कोइ रीते जागतोज नथी. इहां इति शब्द भिन्नक्रम तेथी आज्ञा शब्दना पछी ते जोमवो. ६

वाद हुकम कर्यो के तेलना मापे तल ल्यो, त्यारे आरीसाना मापे ते लइ हुकम वजाव्यो. ५७

टीका—तेलना जेवा मान करी तल लेवा एटले के जे मापवमे मारा आ तल कोइ ल्ये तेणे ते ज मापवमे एनुं तेल पण आपवुं अने पोते ठगावुं पण नहि,—एम प्रथमना हुकम बाद आ हुकम राजाए मोकल्यो. त्यारे गामना मुर्खाओए रोहानी सलाहथी दर्पणवमे तलो लइ तेल आपीने हुकम वजाव्यो, केमके दर्पणथी तल लेतां अने तेल दे-

आदर्शकेन हि तिलेषु गृह्यमाणेषु दीयमाने च तैले ग्रामेयकाणां न कदाचिदात्मवंचना संपद्यते, यदि परं निजस्वामिनो राज्ञः (७) ॥ ७ ॥

वालुगवरट्टाणत्ती—अदिट्ठपुव्वोत्ति देहपडिछंदं, किं एस होइ कत्थइ, भण-इ, इमं जाणइ देवो. ॥ ५५ ॥

(टीका)—ततो वालुकावरट्टस्य सिकतामयवरत्रालक्षणस्य आज्ञप्तिराज्ञा, दत्ता राज्ञा—यथा—वालुकावरट्टकः कूपसलिलसमुद्धरणार्थमिह प्रेषणीयाः रोहकव्युत्पादितैश्चतैर्भणितं—यथा—ऽदृष्टपूर्वोऽयमस्माकमीदृशो वरट्टकः इत्यस्मात्कारणात् दत्त समर्पयत देव यूयं प्रतिच्छंदं वालुकावरट्टकप्रतिबिंबकं. एवमुक्तो राजा प्रतिभणति यथा—किमेष प्रतिच्छंदो भवति कुत्रापि इति भणत यूयमेव ग्राम्याः. ततो रोहकशिक्षितैरेव तैरुक्तं—यथेदं वालुकावरट्टकः कुत्रापि भवति नवेत्येवंरूपं वस्तु जानाति देवः (७) ॥ ८ ॥

नां गामडीयाओने कंइ नुकशान थतुं नथी, बाकी तलना मालिक राजाने नुकशान थाय खरो. ७

वालुकानी वाधर मोकलवानो हुकम कर्यो. गामडियाओए कर्युं ए अमे जोइ नथी माटे नमूनो मोकलो. राजाए कर्युं शुं नमुनो थवां पण थाय छे ते जाणोछो के ? तेओ बोल्या के ते तो तमेज जाणोछो. ५५

टीका—बाद रेतीनी वाधरनो हुकम राजाए कर्यो एटले फरमाव्युं के कूवामांथी पाणी काढवा माटे रेतीनी वाधर बनावी अहीं मोकलावो त्यारे रोहाए शीखवेला गामडियाओए कर्युं के एवी वाधर अमे आगाउ जोइ नथी तेथी तमे एनो नमुनो मोकलावो. आम कहेतां राजा बोल्यो के शुं एवो नमूनो कोइ ठेकाणे थाय छे ते तमे जणावो. त्यारे रोहाए शीखवेला तेओ बोल्या के रेतीनी वाधर थाय छे के नहि ते वात आपज जाणो छो ८

अप्पाउहत्थिअप्पाणा—पउत्ति अणिवेयणं च मरणस्स, आहारादिनिरोहा—पउत्तिकहणेण पभिन्नेदो. ॥ ६० ॥

(टीका)—ततः—अप्पाउहत्थिअप्पणत्ति अल्पायुषः पारप्राप्तप्रायप्राणस्य हस्तिनो गजस्यार्पणं ढौकनं तेषां राज्ञा कृतं,—इदं चोक्तं—यथा—प्रयुक्तिर्वार्त्ता प्रतिदिनमस्य देया—अनिवेदनं चाकथनमेव मरणस्य—एष मृतः सन्न कथनीय इत्यर्थः.

तथेति प्रतिपन्नमेतत्तैः. अन्यदा च मृतो हस्ती. व्याकुलीभूतश्च ग्रामः. रोहकादेशेन आहारादिनिरोधात् आहारादिनिरोधमाश्रित्येत्यर्थः प्रयुक्तिकथनेन प्रतिभेदः प्रत्युत्तरं ग्रामेण कृतं.—यथा देव, युष्मदीयो हस्ती—नो जानीमः किं तत्कारणं—मद्य नोत्तिष्ठति, न निषीदति, न समार्पितमपि चरणं चरति, जलंच न पिबति, नो-

अल्प आयुषवाळो हाथी आपी फरमाव्युं के खबर आपो पण मरण न जणावो. त्यारे आहारादिकनी मनाइ जणावी खबर मोकली जवाब वाळ्यो. ६०

टीका—वाद राजाए तेमने मरणतोल हाथी मोकलावीने कह्युं के दररोज एनी खबर देवी पण ए मरे ते न कहेवुं. ए वात तेमणे कबूल राखी. वाद हाथी मर्यो के गाम मुंझायो. त्यारे रोहनी सलाहथी आहारादिक मोकलवानीना जणावीने खबर आप्या साथे उत्तर मोकल्युं के हे देव, तमारो हाथी कोण जाणे शा कारणथी आज ऊठतो नथी, वेशतो नथी, आपेलो चारो खातो नथी पाणी पीतो नथी, उश्वास निःश्वास लेतो नथी, आंखोथी जोतो नथी अने पूछडुं वगेरे हीलवतो नथी. त्यारे राजाए कह्युं के शुं ते मरी गयो छे के? तेओ बोल्या के आवी हकीकत होतां जे थाय छे ते आप

च्छ्वसितीति, न निःश्वसिति नाक्षिण्यां निरीक्षते, नच पुच्छादि चालयतीति. ततो भूमी-भुजोक्तं—किमसौ मृतः? तैरुक्तं–एवंविधव्यतिकरे यद्भवति तद्देवएव जानाति, किं व-यं ग्रामीणा विद्मः . (७) ॥ ए ॥

आणेह सगं अगडं—उदगं मिठंति मीइ आणाए, आरणगोत्ति पेसह—कूविश्र मायरण मित्तीअे. ॥ ६१ ॥

(टीका)—नन आनयत स्वकमवटं कूपं अत्र,—कुतः,–उदकं जलं तत्संबंधि मिष्टं मधुरमित्यस्माद्धेतोः .—अत्रहि नगर्यामतिसंचारजनवासवशेन क्षाक्षादिरससंक्रमाद्विरसानि कूपजलानीति कृत्वा ग्रामावटानयनमादिष्टं जवतामिति.

अस्यामाज्ञायां पतितायां सत्यां तैर्ग्रामेयकैः आरण्यकोऽरण्योद्भवोऽज्ञ इत्यर्थ; इत्यस्माद्धेतोः प्रेषयत एतदाकर्षिकां कूपिकां नगरीसंबंधिनीं सुदक्षामेकां, तेन तदनुमा-

जाणो, अमे गामडीया शुं जाणिये ? ए

मीठुं पाणी होवाथी तमारो कुवो इहां लावो एवो हुकम थतां तेमणे कह्युं के ते जंगली होवाथी तेने खेंचनारी नगरी वारडी मोकलो. ६१

टीका—भाइ तमारो कुवो इहां लावो केमके तेनुं पाणी मीठुं छे, एटले के अहीं नगरीमां गीच वस्तीना कारणे ख्वारर वगेरेनो रस जवाथी कुवाना पाणी बगडी गयां छे तेथी गामडाना कुवा लाववानुं तमने फरमाव्युं छे. आ हुकम थतां ते गामडीआओए ते आज्ञा ए रीते अटकावी के अहींनो कुवो जंगली छे माटे तेने खेंचनारी तमारी नगरीनी एक सारी वाव मोकलावो के तेना मार्गे आवीने अमारो कुवो नगरी तरफ आवे. मतलब के राजा जेम वावडी न

गेऽलग्नोऽसावस्मदीयकूपः—पुरीं समभ्येतीति.—अनेन प्रकारेण निवर्त्तनमस्या आज्ञायाः. यथा न राजा कूपिकां प्रेषयितुं पटुस्तथातेऽपि स्वकमवटमित्यनपराधतैव तेषामितिभावः. (छ) ॥ १० ॥

गामा वर वणसंडं—पुव्वं कुणहत्ति सीयय इमं तु, तत्तो वरेण ठवणं—तेण निवेसेण गामस्स. ॥ ६२ ॥

टीका—ततः ग्रामात् अपरस्यां दिशि यो वनषंडस्तं पूर्वं पूर्वदिग्भागवर्त्तिनं ग्रामात् कुरुत इत्येवंरूपायामस्यां च नृपाज्ञायां पुनः इदं त्विदमेव वक्ष्यमाणलक्षणमुत्तरं तैः कृतं, यथा ततो वनषंडादपरेण पश्चिमायां दिशि स्थापनं कृतं तेन निवशेनैवाकारेणेत्यर्थः ग्रामस्य. एवंहि कृते पूर्वेण वनषंडो ग्रामात्, अपरेण ग्रामश्च वनखंडात् संपन्नः. (छ) ॥ ११ ॥

मोकली शके तेम तेओ पण पोताना कूवाने मोकली शकता नथी माटे तेओनो तेमां वांक नथी. १०

गामनी पश्चिम बाजुना बगीचाने पूर्व बाजुपर करो आम हुकम थतां तेमणे आ ज काम कर्युं के ते बगीचाथी पश्चिम तरफ गामने जे आकारमां ते हतो ते आकारमां वसाव्युं. ६२

टीका.—बाद गामथी पश्चिम दिशामां जे बगीचो छे तेने गामथी पूर्व दिशामां करो ए रीतनी राजानी आज्ञा थतां आ नीचे प्रमाणेज तेओए काम करीने जवाब वाळयो ते ए के जे आकारे गाम हतो तेज आकारे ते बगीचाथी आथमणी बाजुए तेने वसाव्युं. एम कर्याथी गामनी पूर्वे बगीचो थयो अने बगीचाथी पश्चिमे गाम थइ रह्यो. ११

अग्गि सूरं च विणा—चाउलखीरेहि पायसं कुणह, आदेसे संपाडण—मु-
क्कुरुडाइ गयसा. ॥ ६३ ॥

(टीका)—अग्निं वैश्वानरं सूरं चादित्यं विना अंतरेण—चाउलखीरेहिंति
—चाउलक्षीरैः चाउलैस्तंदुलैः क्षीरेण च पयसा पायसं परमान्नं कुरुत. अस्मिन्ना-
देशे राजाज्ञारूपे आपतिते सति संपादनं कृतं, कथमित्याह—उक्कुरुटिकोष्मणा उ-
त्कुरुटिका नाम बहुकालसंमिलितगोमयादिकचवरपुंजस्तस्योष्मा उष्णस्पर्शलक्षण
स्तेन एतस्यादेशस्य.

रोहकादिभिस्तैर्निबिडं मृन्मयभाजनं मध्यनिक्षिप्तसमुचिततंदुलदुग्धं विधाया-
गाधे उत्कुरुटिकाक्षेत्रे निक्षिप्तं. ततः कतिपयप्रहरपर्यंते सुपक्वं पायसं संजातं राज्ञश्च
निवेदितमिति. (७). ॥ १२ ॥

एमाइ रोहगाओ—इमं ति नाऊण आणवे राया, आगच्छउ सो सिग्घं—

आग अने सूर्य वगर चोखा अने दूधथी दूधपाक करो एम हुकम थतां उकरडीनी वाफ वडे ते बनाव्यो. ६३

टीका.—आग अने सूर्य वगर चोखा एम दूधवडे दूधपाक करो. आ हुकम थतां उकरडी एटले घणा काळथी
एकठा करेला छाण वगेरेना कचरानो ढगलो तेनी वाफथी ते हुकम बजाव्यो. एटले के रोहानी सलाहथी तेमणे माटीनुं
मजबूत वासण लइ तेना अंदर दूध चोखा नाखी उकरडामां दाटयुं. बाद केटलाक पहोरे ते बरोबर पचीने दूधपाक
थयुं एटले राजाने खबर आपी. १२

परिवज्जंतो इमे थाने. ॥ ६४ ॥

(टीका)—एवमादि शिलामंरूपसंपादनप्रभृति रोहकात्सकाशादिदं पूर्वोक्तं कार्यं संपन्नमित्येवं ज्ञात्वा आज्ञापयत्यादिशति राजा जितशत्रुः . कथमित्याह. आगच्छतु मम समीपे स रोहकः शीघ्रमविलंबमेव परं परिवर्जयन् परिहरन्निमानि स्थानानि एतानर्थानित्यर्थः. ॥ १३ ॥

तान्येवाह.—पक्खडुगं दिणराई—छायण्हे छत्तणह पहुम्मग्गे, जाणचलणे य तह ह्लाणमइलगो अण्हा गच्छे. ॥ ६५ ॥

(टीका)—पक्षाद्विकं शुक्लकृष्णपक्षद्वयलक्षणं, दिनरात्री प्रतीतरूपे, छायोष्णौ छायामातपाभावरूपामुष्णं च चंद्रकरकिरणलक्षणं, छत्रनभसी छत्रमातपवारणं न-

ए वगेरे सघळां कामो रोहाथी थया जाणी राजाए फरमाव्युं के रोहाए नीचे प्रमाणे स्थानोनो परिहार करीने इहां जलदी आववुं. ६४

टीका.—ए वगेरे एटले के शिलामंरूप बनाववा वगेरे ए पूर्वे कहेलां कामो रोहा मारफत थया छे एम जाणीने जितशत्रु राजाए आ रीते फरमाव्युं के ते रोहाए मारा पासे वगरविलंबे आववुं, पण आ स्थानो एटले वातोने परिहरतां आववुं. १३

ते वातो बतावे छेः—बे पक्ष, दिनरात, छाया तडको, छत्र आकाश, मार्ग उन्मार्ग, यान चलन, तथा स्नान मलिन, एटलाथी अन्यथा थइने आववुं. ६५

टीका—बे पक्ष एटले सुदिवदि, दिनरात छाया एटले तडकानो अभाव अने उष्ण एटले सूर्यना किरण, छ-

नभश्च शुद्धमाकाशं, तथा पंथा मार्ग उन्मार्गश्चोत्पथः मार्गमुन्मार्गं च परिहृत्येत्यर्थः, यानचलनं च यानं गंव्यादि चलनशब्देन चरणचेष्टा परिगृह्यते ततस्ते परिहृत्येत्यर्थः, तथाशब्दः समुच्चये, स्नानमलिनकः स्नाने सत्यपि मलिनको मलिनदेहः स्नातो मलावि-लकलेवरश्च सन्नित्यर्थः ,—अन्यथा पङ्क्त्यादिपरिहारवता प्रकारेणागच्छतु मत्स-मीपमिति. (छ) ॥ १४ ॥

ततोऽसौ रोहक एवमाज्ञापितो नरपतिना तदादेशसंपादनार्थमागंतुं प्रारब्धः—यथा,—

अमवस्मासंधीए—संझाए, चक्कमज्झभूमीए, एडक्कगाइहांगो हाणि च काउ-ण संपत्तो. ॥ ६६ ॥

(टीका)—इह चंद्रमासस्य द्वौ पक्षौ, तत्राद्यः कृष्णो द्वितीयश्च शुक्लः, तत्र च कृष्णपक्षोऽमावास्यापर्यंतः शुक्लश्च पौर्णमासीपरिनिष्ठितः ,—एवंचामावास्या

एटले आतपत्र अने नभस एटले खुल्लो आकाश, मार्ग अने उन्मार्ग तथा यान एटले गाडी वगेरे अने चलन एटले पगे चालवुं ते ए सघळानो परिहार करीने अने स्नान कर्या छतां मेला शरीरवाळो रहीने अन्यथा एटले ए सघळा प्रकार परिहार करीने मारी पासे तेणे आववुं. १४

हवे रोहाने राजाए आ रीते फरमावतां ते तेनो हुकम बजाववा माटे आ रीते आववा लाग्यो:—

अमासनी संधिमां सांजना वखते बे पैडानी वचेनी जमीनमां थइने घेटा वगेरे लइ अंघोळी करीने त्यां आव्यो. ६६

टीका—इहां चंद्रमासना बे पक्ष थाय छेः—त्यां पहेलो कृष्ण अने बीजो शुक्ल. त्यां कृष्णपक्षना छेडे अमा-

पक्षसंधितया व्यवह्रियते, पौर्णमासी च मासंसंधितया,—ततोऽमावास्यैव संधिरमावास्यासंधिरग्रेतनपक्षात्यंतसन्निधानलक्षणस्तस्मिन् संप्राप्त इति योगः,—एवंच किल तेनपक्षद्वयं परिहृतं भवति.

संध्यायासादित्यास्तमयलक्षणायां,—अनेन दिनरात्रिपरिहारः .—चक्रमध्यभूम्या चक्रयोर्गंत्रीसंबंधिनोर्गच्छतोर्या मध्यभूमिःप्रसिद्धरूपा तया,—एतेनापथमार्गपरिवर्जनं—सोहि न पंथा नाप्युत्पथः .—तथा एरुक्कगायणंगोहलिं च काउकत्ति एरुकादिना एरुक्केन आदिशब्दाद्दिनावसानसंभूतातपेन चालनिकाछत्रेण चोपलक्षितः सन्, -अनेन यानचलनयोरछायोष्णयोःछत्रनभसोश्च परिहारो विहितः .—अंगोहलि मंगावक्षालनं— चः समुच्चये—कृत्वा विधाय,—सर्वांगप्रक्षालने हि स्नानमिति लो-

वास्या आवे छे अने शुक्लपक्षना छेडे पूनम आवे छे. एथी अमावास्या ते पक्षनी संधिरूपे गणाय छे, अने पूनम ते मासनी संधि गणाय छे. तेथी अमावास्या संधि एटले के आगला पक्षनी अमोअमनो दिवस आवे. छते ते त्यां आव्या. एम करतां तेणे बे पक्षनो परिहार कर्यो मावित थइ शके छे.

संध्या वखते एटले सूर्य आथमती वेलाए, आथी दिनरातनो परिहार कर्यो. चक्रमध्य भूमिमां चालीने एटले के गाडीना बे पैडा चाले तेनी वच्चे जे जमीन रहे ते रस्ते, एणे करीने मार्ग उन्मार्ग परिहार कर्या गणाय—केमके तेमार्ग पण न गणाय अने उन्मार्ग पण न गणाय.—तथा एरुकक एटले घेटापर चडीने अने आदिशब्दथी दिवसना छेडे रहेला तडकामा तथा चालणीने छत्र तरीके धरीने ते ओळखता लाग्यो.—एणे करीने यानचलन, छाया तडको तथा छत्र अने आकाशनो परिहार कर्यो.—तेमज अंगोली एटले के अंगप्रक्षालन करीने ते आव्यो. केमके लोकमां वधां अं-

कृतः—शिरः प्रक्षालनपरिहारेण चांगप्रक्षालनं. ततो अंगप्रक्षालनमात्रे कृते न

स्नानं नापि मलिनकः—संप्राप्तो राजभवनद्वारे. (७) ॥ १५ ॥

राजभवनद्वारप्राप्तेन च तेन "कथं रिक्तहस्तो राजानं द्रक्ष्यामि यत इत्थं नी-

तिवचनं,—रिक्तहस्तो न पश्येत्—राजानं देवतां गुरुमिति, नच नटानामस्माक-

मन्यत् पुष्पफलादि राजोपनयनयोग्यं मंगलभूतं किंचिदस्ती"ति विचिंत्य—

पुढवीदरिसणविउलंजलीइ घेत्तु नरिंदवंदणया, आसणदाणावसरे—चडुपा-

डो भणइ रम्मंगं. ॥ ६१ ॥

(टीका)—पुढवीदरिसणत्ति पृथिव्याः कुमारमृत्तिकालक्षणाया दर्शने पश्यतः

मनो राज्ञः प्रयोजनं विपुलांजलिस्थितायाः तेन कृतं. घेत्तुं नरिंदवंदणया इति ततो

माथुं नहि पखाळतां बाकीना अंग पखाळ्या ते अंगोनी गणाय छे, तेथी अंगो-

ना पखाळवा ने स्नान गणाय छे अने माथुं नहि पखाळतां बाकीना अंग पखाळ्या ते अंगोनी गणाय छे, तेथी अंगो-

नो धोवां नहि न्हायो नहि मेलो गणाय.—ए रीते थइने ते राजमंदिरना दरवाजे आवी पहोंच्यो. १५

तेणे राजमंदिरना दरवाजे ऊभा रही विचार्युं के खाली हाथे राजाने केम जोउं जे माटे नीतिवाळा एम कहे छे

के राजा, देवता अने गुरुना खाली हाथे दर्शन न करवा. परंतु अमो नटोना पासे कंइ फूल फळ वगेरे राजाने भेट-

णा योग्य मंगलरूप चीज होय नहि एम धारीने तेणे—

पहोळी अंजलिमां पृथ्वी धरावी, तेने लइने राजाए तेने नमस्कार कर्यो. बाद आसन देवा वखते तेणे मनो-

हर स्तवी चडुपाठ कर्यो. ६१

टीका—पृथ्वी एटले कुंवारी माटी पहोळी हथेळीमां धरीने राजाने धरावी. त्यारे राजाए ते हाथमां लइ ने

गृहीत्वा करेण नरेंद्रेण वंदना प्रणामः कृतो मृत्तिकायाः . तदनंतरं च प्रणामादिकाया मुचितप्रतिपत्तौ विहितायां सत्यां रोहकस्यासनदानस्य विष्टरवितरणस्यावसरे प्रस्तावे रोहकेण चटुपाठः प्रियवाक्योच्चारणं मनोहरेण स्वरेण मधुरगंभीरध्वनिना कृत मिति. (छ) ॥ १६ ॥

चटुपाठमेव दर्शयति—गंधव्वमुरवसद्दो—मा सुच्चउ तुह नरिंद भवणम्मि, चंकम्मंतविलासिणिखलंतपयणेउररवेण. ॥ ५७ ॥

(टीका)—गंधर्वस्य गीतस्य मुरवस्य च मृदंगस्य शब्दो ध्वनिर्मा श्रूयतां समाकर्ण्यतां केनापि कृतावधानेनापि तव भवतः हे नरेंद्र राजन् भवने प्रासादे.—एवमुच्चरिते राजा यावत् किंचित् सवितर्कमनाः संजातस्तावदनेन झगित्येव लब्धराजाभिप्रायेण पठितं,—चंक्रमंतीनां कुटिलगत्या भृशं संचरंतीनां विलासिनीनां स्खलंतो विसंस्थूलभावभाजो ये पदाः पादास्तेषु यानि नूपुराणि तेषां यो रवः सिंजितलक्षण-

माटीने नमस्कार कर्यो. त्यारबाद एटले प्रणाम वगेरे उचित प्रतिपत्ति पूरी थतां रोहाने आसन आपती वेळाए तेणे चटुपाठ एटले प्रियवाक्यनुं उच्चारण मनोहर स्वरथी एटले मधुर अने गंभीर ध्वनिथी कर्यो. १६

चटुपाठ केवी रीते कर्यो ते बतावे छे—हे नरेंद्र, तारा महेलमां गवैया अने मृदंगनो अवाज न संभळाओ (केम तो कहे छे के) त्यां फरती विलासिनीओना अथडाता पगोमां रहेली नेवरीओना अवाजने लीधे. ५७

टीका.—गवैयानो एटले के तेना गीतनो तथा मृदंगनो अवाज कोइ सावधान माणसथी पण म संभळाओ, हे राजन् तमारा महेलमां. आम बोलता राजा जराक विचारमां पड्यो के रोहाए झट तेनो अभिप्राय जाणी लइ कर्युं

स्नेन चंक्रमच्छिलासिनीस्खलत्पदनूपुररवेण. व्याजस्तुतिनामकोऽयमलंकारः.(ग)॥१७॥

सक्कारंतियसोवण—विउज्झनिवकंचिपुत्तजग्गामि, किं चिंतिसि अइयालिंम्बि-इयं ता कुत्तो जलणा. ॥ ६९ ॥

(टीका)—एवंच रोहकेण पठिते तुष्टमना नरनाथः—सक्कारंतियसोवणत्ति सत्कारं वस्त्रपुष्पभोजनाच्छादनादिप्रदानरूपं तस्य चकार, रात्रिवृत्तांतोपलंभनिमित्तमंतिके स्वस्यैव समीपे स्वप्नं निद्रालाभरूपमनुज्ञातवान्. ततोऽसौ मार्गखेदपरिश्रांततया प्रथमयामिन्यामेव निर्भरनिद्रालाक् संपन्नः . विउज्झनिवकंबित्ति प्रथमयामिनीयामांते च तदुत्तरदानकृतकौतुकेन विबुद्धेन कृतनिद्रामोक्षेण नृपेणाविबुध्यमानोऽसौ कंबिकया लीलायष्टिरूपया स्पृष्ट—स्तदनु—पुत्तत्ति जागरितश्च सन् पृष्टः “ किं स्वपिसि

ग. थांकी देनी फरती विलासिनीओना अयमता पगोमां रहेली नेपरीओना खणखणाटना लीधे.—आ व्याजस्तुतिनामे अलंकार छे. १७

सत्कार करी पासे सुवाड्युं. जागेला राजाए कंबा अडकावी पूछतां (तेणे कहुं के) जागुं छुं. शुं चिंतवेछे (एम पूछतां तेणे कहुं के) बकरीनी लींडी गोळ केम थाय छे ? ते केम थाय छे ? पेटनी अग्निथी. ६९

टीका.—एम रोहाए चडपाठ करतां राजाए खुश थइ तेने वस्त्र पुष्प भोजन वगेरेथी सत्कार करी रातनी हकीकत जाणवा पोताना पासे सुवाड्यो. हवे रोहो रस्ते चालवाथी थाकेलो होवाथी रातना पेहेला जागमांज जर ऊंघमां पडी गयो. बाद पेहेले पहोरना छेडे जागेला राजाए ते केवुं उत्तर आपे छे तेना कौतुकथी तेने कृम मारी छतां ते न जाग्यो त्या-

एवं पुणोवि पुछा—खाम्हिलाकिण्हसुक्करेहाण, का बहुगा, का, तुल्ला ? पुछ-सरीराण मन्नेज. ॥ ७१ ॥

(टीका)—एवं पुनरपि तृतीयप्रहरांते पृछा पूर्ववत्. रोहकः—खाम्हिलायाः खिल्लहम्फिकेति लोकप्रसिद्धनामकस्य भुजपरिसर्पजीवविशेषस्य शरीरे कृष्णरेखाणां शुक्लरेखाणां च मध्ये का अधिका बह्व्यः राजा.—का इति कास्तत्र बहु का इत्यभिधेहि त्वमेव. रोहकः—तुल्याः समानसंख्याः कृष्णाः शुक्लाश्च रेखाः

अत्रैव मतांतरमाह.—पुछसरीराण मन्नेज इति अन्येपुनराचार्याः पुछशरीरयोः खाम्हिलाया एव संबंधिनोः कतरद्दीर्घमिति चिंतितं रोहकेण.—राज्ञा पृष्टेनच तेनैव द्वे अपि समे इति प्रतिपादितमित्याहुः (७) ॥ २० ॥

चरिमाइ कइ पिया ते—के, पण, के, रायधाणयचंमाला, सोहागविच्चुग जणा-

एम करी पूछतां तेणे कह्युं के खीलोमीनी काळी धोळी रेखाओमां कोण झाझी ? सरखी छे ? बीजा कहे छे के पूछमी अने शरीरमां कोण लांबुं छे. ७१

टीका—एम फरीने त्रीजापहोरना छेडे राजाए पूछ्युं रोहो बोल्योः—खीलोमी नामे लोकमां प्रसिद्ध भुजाचारि जीवना शरीरमां काळी रेखाओ अने धोळी रेखाओ होय छे तेमां कोण अधिक हशे ?

राजा बोल्योः—तुं ज कहे के कोण झाझी छे. रोहो बोल्योः—काळी अने धोळी रेखाओ बन्ने सरखीज होय छे. इहां मतांतर कहेछेः—बीजा आचार्यो एम कहेछे के खीलोमीना पूछ अने शरीरमां कोण लांबुं एम रोहाए चिंतव्युं, अने राजाए पूछतां तेणे बे सरखांज छे एम कह्युं. २०

णी पुच्छा एवंति कहणाय ॥ ९२ ॥

(टीका)—चरिमाइ इत्यादि चरमायां यामिन्यां पश्चिमप्रहरपर्यंतजागरूपायां पूर्वरात्रिबहुजागरणाल्लब्धातिस्वाङुनिद्रो रोहकः कम्बिकास्पर्शनातिरेकवशेन प्रतिबोधितः सन्नवदत् यथा—कइ पिया ते इति कति कियंतः पितरो जनकास्तव हे राजन् वर्त्तंते इति चिंतयामि. राजा.—के इति कति मे जनका इति निवेदयितुमर्हसि त्वमेव. रोहकः—पञ्चत्ति पंच राजा.—के इति किंरूपाः रोहकः .—राजधनदचांडालाः—सोहगविच्छुगत्ति शोधको वस्त्रप्रक्षालको वृश्चिकश्चेति

ततो राज्ञा संदेहापन्नचेतसा जननीपृच्छा कृता यथा किमेवं मे पंच पितरः ? तथापि एवमिति यथा रोहकःप्राह कथनाय तथैव निवेदनं कृतं पुनः (७) ॥२१॥

छेल्ली राते पुछ्युं मारा बाप केटला छे; ते केटला ? पांच, कोण कोण ? राजा, कुबेर, चांडाल, धोबी, अने वींछी. त्यारबाद राजाए जननीने पुछ्युं तेणीए एमज छे एम कह्युं. ९२

टीका—छेल्ली राते एटले छेल्ला पहोरना छेडे आगली राते बहु जागवाथी अति मीठी ऊंघमां पडेलो रोहो आ वखते सांठ अडकवाथी जाग्यो थको बोल्यो के हे राजन, तारा बाप केटला छे ते विचारुं छुं राजाए कह्युं:—केटला छे ते तारेज कहेवुं जोइए. रोहाए कह्युं:—पांच छे. राजाए कह्युं ते कोण कोण ? रोहाए कह्युं:—राजा, कुबेर, चांडाल, धोबी अने वींछी.

त्यार राजाए शंकित थइ माताने पुछ्युं के शुं मारा आ रीते पांच पिता छे ? त्यारे तेणीए पण हा पाडी जेम रोहाए कह्युं तेमज हकीकत जणावी. ९३

तानेव सद्धेतुकान् सा दर्शयति—राया रइबीएणं—धणओ उउण्हायपुज्जफा-सेणं, चंमालरयगदंसण—विच्छुग म रहस्सजक्खणया. ॥ ७३॥

(टीका)—राया इत्यादि राजा तावद्रतिबीजेन सुरतकाले बीजनिक्षेपरूपेण, धनदः कुबेरः उउण्हायपुज्जफासेणं ति ऋतुस्नातया चतुर्थदिवसे तस्य पूजायां कृतायां मनोहरतदाकाराक्षिप्तचित्तया यः स्पर्शस्तस्यैव सर्वांगमालिंगनं तेन (२)

चंमालरयगदंसणत्ति चंमालरजकयोः ऋतुस्नाताएव तथाविधप्रघट्टकवशाद्दर्शन-मवलोकनं मनाक्संयोगाभिलाषश्च मे संपन्न इति तावपि पितरौ. (४)

विच्छुगम रहस्सजक्खणया इति अत्र मकारोऽलाक्षणिकः ततो वृश्चिको रह-स्यलक्षणेन रह एकांतस्तत्रजवं रहस्यं तच्च तल्लक्षणं च तेन जनकः संपन्नः मम हि

ते माता ते पांचने कारण साथे दर्शावे छे. रति बीजथी राजा छे, ऋतुस्नात थइ पूज्य स्पर्श करतां धनद छे, चांमाल अने धोबी दर्शन मात्रथी छे, अने छुपी रीते लक्षणथी वीछी छे. ७३

टीका रतिबीजथी एटले सुरत वखते बीज नाखवाथी तो राजाज तारो पिता छे, (१) अने हुं ऋतुस्नात थइ चोथा दिवस कुबेरनी पूजा करती हती तेवामां तेनो मनोहर आकार जोइ खेंचाइने मे तेनो सर्वांगे आलिंगन करी स्पर्श कर्यो ते रीते ते तारो पिता छे. (२)

वळी हुं ऋतुस्नात थइ एवामां तेवी गमपथलना योगे चांमाल अने धोबी मारा जोवामां आव्या अने जराक संयोगनी इच्छा पण थइ हती तेथी ते बे पण तारा बाप गणाय. (४)

विच्छुगमरहस्सलक्खणया ए पदमां मकार अलाक्षणिक एटले फालतुं होवाथी ते पदनो ए अर्थ छे के एकांतमां

पुत्र त्वय्युदरगते वृश्चिकभक्षणदोहदः समजनि, संपादितश्चासौ रहसि कणिकामयस्य तस्य भक्षणेनेत्यसावपि मनाग् जनकत्वमापन्नः . (७) ॥ ७२ ॥

कारण पुच्छा, रन्नो—णाएणं. दाणरोसदंडेहिं, कंचिविवणा य तहा—रायाही णं सुनो निति. ७४

(टीका)—एवं जनकसंख्यासंवादे संपन्नविस्मयेन राज्ञा कारणगोचरा पृच्छा कृता यथा केन कारणेन त्वयायमर्थोत्यंतनिपुणधियामपि बुद्धेरगोचरो ज्ञात इति ?

रोहकः .–राज्यं प्रतीतरूपमेव न्यायेन नीत्या सामादिप्रयोगरूपया यत् परिपालयसि, तथा दानरोषदंडैः दानेन कृपणादिजनस्य वित्तवितरणरूपेण कुबेरधनत्यागानुकारिणा, रोषेण कश्चिदविनयवर्तिनि जने चंडाज्ञचांक्यिकल्पेनासहिष्णुतालक्षणेन. दं-

[illegible] तकृष कारेल नेथी ते पण बाप थयो गणाय—ते ए रीते के हे पुत्र, ज्यारे तुं मारा पेटे हतो त्यारे मने [illegible] खावानो दोहलो थयो तेथी एकांतमां आटानो बनावेल वींछी खवरावीने मारो दोहलो पूर्ण करवामां आव्यो हतो तेथी ते पण मारा बाप थया गणाय. ७२

कारण पुछतां रोहाए कह्युं के न्याय पूर्वक राज्य पाळवाथी, दानथी, रोषथी, दंडथी, अने कल्पिका लगाडवाथी [illegible] राजा पांचनो पुत्र छे एम मे जाण्युं. ७४

टीका—ए रीते बापनी संख्या मळती आववां विस्मय पामेला राजाए कारण संबंधे पृच्छा करी के शा कारणथी ते आ अत्यंत बुद्धिवानोनी बुद्धिने पण अगोचर वात जाणी ? रोहो बोल्यो:–राज्यने तुं न्यायथी एटले सामादिकप्रयोगरूप नीतिथी पाळे छे तेथी, तथा कृपण वगेरे जनोने कुबेरना दान माफक तुं पोतानुं धन आपे छे तेथी, तथा रोषथी

मेन पूर्वराजनिरूपितनीतिपथप्रमाथिनोजनस्य सर्वस्वापहाररूपेण वस्त्रशोधकविधीयमानवस्त्रक्षालनतुल्येन कम्बिकाभिघातात् कम्बिकाञ्जोपनाच्च कम्बिकया लीलायष्ट्या पुनः पुनर्मम विघट्टनाच्च, तथाशब्द उक्तसमुच्चये, राजादीनां सुतोऽसि त्वं हे राजन्निति.—

नयेनैवंविधप्राज्यराज्यपरिपालनात् ज्ञायसे यथा राजपुत्रस्त्वं. नहि अराजजाता एवंविधानवद्यराज्यभारधुराधरणधौरेया भवितुमर्हंति.—एवं दानेन धनदजातः—रोषेण चंडालपुत्रः.—दंडेन वस्त्रशोधकप्रसूतः.—कम्बिकाघातेन च वृश्चिकापत्यं.—कारणस्वरूपानुकारित्वात् सत्रकार्याणां. ॥ २३ ॥

साहु परिग्गह संधण—कोवो असोण सज्झ पेसणया, धम्मोवायणसाहण—वुग्गह णिवकियगकोवो उ. ॥ ७५ ॥

एटले कोइ अविनयथी चालता माणसपर चंडालनी चंडिमा सरखी असहिष्णुता धरे छे तेथी, तथा दंडथी एटले के पूर्वना राजाओए स्थापेल नीतिमार्गने ओलंघनार माणसनुं धोबी जेम कपडाने नीचोवे तेम सघळुं धन लुंटी ल्ये छे तेथी, तथा कंबिका लगाडवाथी एटलेके मने तुं तारी रमतनी लाकडीथी वारंवार अडकतो तेथी हे राजन्, तुं राजादिकनो पुत्रछे.

न्यायथी आवुं महान् राज्य पाळे छे तेथी जणाय के तुं राजपुत्र छे केमके जे राजबीज न होय ते आवा चोखा राजकारभारनी धुंसरीना धोरी थइ शकता नथी. ए रीते दानथी तुं धनदनो पुत्र छे. रोषथी चंडालनो पुत्र छे, दंडथी धोबीनो पुत्र छे, अने कंबिका मारवाथी वींछीनो पुत्र छे. केमके सघळां कार्य कारणने मळतां होय छे. २३

ठीक जाणी तेने राख्यो संधि इच्छी. ते न थतां कोप थयो. बीजाथी ते असाध्य जाणी रोहाने मोकल्यो. तेण धर्म आपवानी कबूलात आपी तेने पकड्यो. राजाए कत्रिम कोप बताव्यो. ७५

(टीका)—ततस्तदीयबुद्धिकौशलावर्जितेन नृपतिना साहुपरिग्गहत्ति साधुः शोभनोऽयमिति मत्वा परिग्रहः स्वीकारः कृतस्तस्य.

तस्मिंश्च समये केनचिदनंतरभूमिवासिना भूपालेन सह कुतोपि निमित्ताद्वैरं अ-नमासीन्नृपस्य. तत्रच संधणत्ति संधानं कर्तुमभिज्ञपितं राज्ञा. नचासौ तत् प्रतिपद्यत इति तंप्रति—कोवोत्ति—कोपः समजनि जितशत्रोः. ततःअन्नेणसज्झपेसणया इति अन्येन रोहकव्यतिरिक्तेनासावसाध्यः साधयितुमशक्य इति कृत्वा रोहकस्य तत्र प्रेषणं कृतं नृभुजा. प्राप्तश्च तत्र रोहकः. पृष्टश्च स प्रत्यर्थी नृपः. समयेच—धम्मो वायणमाहणत्ति—यश्च तैस्तैरुपायैरुच्यमानोपि अविश्वासान्न संधानमनुमन्यते तदा धर्म एवोपायनं ढौकनीयं तेन साधनं स्ववशीभावकरणं रोहकेण तस्य कृतं

टीका.—त्यां तेनी बुद्धिनी कुशळताथी खुश थएला राजाए आ सारो छे एम जाणी तेने पोतानी नोकरीमां राख्यो.

ते वखते जितशत्रु राजाने तेनी पडोशनी जमीनमां रहेता कोइ राजाना साथे कोइक कारणना योगे वेर जाग्युं हतुं. त्यां राजानी मरजी एम थइके संधि करवी. पण ते सामेनो राजा कबूल करतो न हतो, तेथी तेना उपर जितशत्रुने गुस्सो चडयो. पछी तेणे विचार्युं के रोहाशिवाय बीजाथी ए वश थाय तेम नथी एम धारी तेणे रोहाने त्यां मोकल्यो. हवे रोहो त्यां आवी पहोंच्यो. तेणे दुश्मन राजानी साथे परपृच्छ करी. बाद समय आवतां ज्यारे ते ते उपायोथी समजावतां छतां पण अविश्वासना लीधे संधिने कबूल करवा न लाग्यो त्यारे रोहाए धर्म रूप नेटणुं बच्चे धरीने तेने पोताना वशमां लीधो

अयमत्र भावः

इदमुक्तं रोहकेण तं प्रति—यदि स मदीयो नृपो भवद्भिः सह संधाय पश्चात् किंचिद्व्यभिचरति तदा तेन यस्तीर्थगमनदेवभवनसंपादनद्विजादिप्रदानवापीतडागादिखननादिना विधानेनोपार्जितो धर्मः स सर्वो मया भवते दत्तः,—तद्रहितश्चासाविहलोकपरलोकयोर्न किंचित्कल्याणमवाप्स्यतीति—करोतु भवांस्तेनसह संधानं. नह्येवंविधां प्रतिज्ञां कश्चिद्भनक्ति. एवं विश्वासिते तस्मिन्—वुग्गहत्ति व्युद्ग्रहोऽवस्कंदो धाटिरित्यर्थः छलेन तत्र गत्वा राज्ञा संपादितः स्वहस्तगृहीतश्चासौ कृतो द्विषन्, आनीतश्चोज्जयिन्यां. तत्रच चिंतितं तेन "कथमनेन राज्ञा आत्मीयधर्मस्य मत्प्रदानेन व्ययः कृत इति".—तस्य मिथ्याविकल्पापनोदाय निवकियगकोवोत्ति नृपेण जितशत्रु-

आ वातनो आ खुलासो छे:—

रोहाए तेने आ रीते कह्युं के जो मारो राजा तमारी सल्लाह करी पाछळथी कंइ करे तो तेणे जे तीर्थ यात्राओ करी होय, देव मंदिर बंधाव्यां होय, ब्राह्मणो वगेरे दान आप्युं होय, वावतळाव खोदाव्या होय—एम जे कांइ धर्म कर्यो होय ते सघळो हुं तमोने आपुं छुं. तेथी ते तेनाथी रहित थइ आ लोकमां अने परलोकमां कंइ पण कल्याण पामी शकशे नहि,—वास्ते तमे तेनी साथे सल्लाह करो. केमके आवी प्रतिज्ञाने कोइ भांगे नहि. आम तेने विश्वास पमाड्यो एवामां राजाए गुपचुप त्यां आवी धाड पाडी अने ते दुश्मनने पोताना कबजामां लइ उज्जेणी आण्यो. त्यां तेणे चिंतव्युं के आ राजाए पोतानो धर्म मने दइने केम तेनो नाश कर्यो. आवी रीतना तेना वहेमने टाळववा

...णा रोहकं प्रति कृतवान् अधिमः पुनः कोपः कृतः . ॥ २४ ॥

धम्मो मे हारविओ—काऊण,—अत्तणो नओ दिन्नो, कह होइ मज्झएसो-
...म्मो- -जइ तुहतणओ उ तस्सेव. २६

टीका—ततो रोहकेणऽभ्यधायि—किमर्थमस्मान्निरपराधानपि प्रतीत्य देवेन इ-
यान् कोपः कृत इति. तत्रोक्तं पृथिवीपतिना—धम्मो मेहाविओ काऊणत्ति धर्मो
मम हि यस्त्वया हारित इति कृत्वा. ततो रोहकेणान्यसत्को महर्षेः कस्यचित् संबंधी
धर्मो धर्मो दत्तो राज्ञे. अयमभिप्रायः—देव यदि मया दत्तो धर्मस्त्वदीयोऽन्यत्र प्र-
याति तदानेन महर्षिणा आबालकालाद् यदनुष्ठितो धर्मः स मया तुभ्यं वितीर्ण इति
—नास्ति मयि कोपस्यावकाशः प्रभोः.

मांट जिनशत्रुराजाए रोहा प्रत्ये मोटो कोप कर्यो. २४

मारो धर्म ते गमाव्यो मेथी करीने (गुस्से छुं). त्यारे धर्म (तमने) आप्यो. प. मारो केम ? जेम तारो तेने ध-
र्मो छे.प. २६

टीका—त्यारे रोहाए कह्युं के शामाटे अमो निरपराधी उपर आप साहेब आटलो कोप कर्यो छे ? राजाए
कह्युं के. मारो धर्म तें गमाव्यो तेथी करीने. त्यारे रोहाए बीजा कोइ महर्षिनो धर्म राजाने आप्यो—एटले के तेणे क-
ह्युं के. महाराज जो मे दीधेलो तमारो धर्म बीजाने पहोचतो होय तो आ महर्षिए नानपणथी मांडीने जे धर्म करेलो छे
ते हुं तमोने आपुं छुं—एटले हवे मारापर गुस्सो राखवानु तमोने सबब नथी.

राजा.—कथं जवति मम एष धर्मो महर्षिसत्को यतो मया न कृतो नापि कारित इति ? रोहकः.—यथा तवतनकस्त्वत्संबंधी पुनर्धर्मः तस्यैव विपक्षभूपतेरभून्मया वितीर्णः सन्निति.

जीवण दाणे पेसण—तदण्णवुग्गहगहाण, तेसिं तु; अथुत्तग्गहगोग्गहनिमित्त तित्थं तओ धाम्नी. ७७

टीका—ततः सुप्रसन्नमानसेन जितशत्रुणा रोहकाय जीवनदाने परिपूर्णनिर्वाहस्थानवितरणे कृते सति प्रेसणत्ति प्रेषणं कृतं रोहकस्यैव, किमर्थमित्याह,—तयन्नवुग्गहगहाणत्ति व्युद्ग्रहे विवादे कुतोऽपि हेतोरुत्पन्ने सति ग्रहो लोकप्रसिद्धएव उज्जयिनीविषयमध्यवर्त्तिनो द्विपदचतुष्पदादेरर्थस्य येषां ते व्युद्ग्रहग्रहाः पर्वतवनादिव्यवस्थितपल्लिवासिनो लोका—स्तस्मान्नृपादन्येच तदन्ये ते च व्युद्ग्रहग्रहाश्च तदन्यव्युद्ग्रहग्रहास्तेषां संग्रहनिमित्तमिति गम्यते.

राजा बोल्योः—महर्षिनो धर्म ते मारो केम थाय ? जे माटे ते में कर्यो के कराव्यो छे नहि. रोहो बोल्योः—जेम तारो धर्म मे सामेना राजाने आप्यो एटले ते तेनो थयो तेम. ७५

त्यारे जीवन आपी फरीने तेने बीजा हुल्लड करी धडपकड करनाराओने पकडवा माटे मोकलवामां आव्यो तेणे तेमने समजाव्युं के अपुत्रिया अने गायोने पकडतां अटकाववुं ते तीर्थ छे एम कही त्यां धाड पाडी. ७७

टीका—त्यारे जितशत्रुराजाए खुश थइ रोहाने पूरतो निर्वाह चाले तेवी जागीर आपीने तेने फरीने मोकलाव्यो,—शा माटे ते कहेछे—कोइ कारणथी तकरार उत्पन्न थतां उज्जेणीनी हदमांथी द्विपदचतुष्पद वगेरे मालनी लूट मचावनारा पर्वत अने जंगल वगेरेमां पल्लि बांधीने रहेनार लोकने पकडवा खातर तेने मोकलाव्यो.

यदा च ते सुबेन संग्रहीतुं न शक्यंते तदा तेषां तु संग्रहनिमित्तं पुनरपुत्रम-हर्गोअद्भुनिमित्तमीर्थं प्रशममिति गम्यते-यथा—" अपुत्रस्य गृहीतस्य शत्रुनिर्गवां च प-गोाद्गं तत्तत्तीर्थमिति पूर्वमुनयो व्याहरंति "—इति प्रक्रमे उज्जयिनीराजवचनेन शैलप्रयुक्तेन यत्रघातिना पल्लिसंबंधिनीषु गोषु गृहीतासु तन्मोचनाय पल्लीत्रि-शृंषु निर्गतेषु शून्यासु पल्लीषु ततो धाटी निपातिता,— बहिर्निर्गताश्च ते गृहीता इति. (७) ॥ २६ ॥

ततः—श्रीनालागाण पुत्ता—मिट्ठं हियगाग मप्पमत्तो उ: तह धम्मिगां सपु-गा—ागतथा परन्निसताणीय. ॥ १८ ॥

(टीका)—विश्वासनयने सर्वेषां मासंतमहामात्यादीनामात्मविषये विश्वासे

टी. ज्यारे तेओ मरेंशाहथी पकडी नहि शकाया त्यारे तेमने पकडवा माटे तेमणे एवुं जणाव्युं के अपुत्रियाने ना मागोने ... पकडी जाय तेने छोडाववुं ते मोटुं तीर्थ छे एम पूर्वना ऋषिओ कही गयाछे एम समजावी तेणे उ-ज्ञा ... पल्लिनी गायो पकडावी त्यारे तेमने छोडववा पल्लीना कोळो नीकळी प-... शून्य गयां त्यां तेणे धाड पाडी अने ते बाहेर नीकळेलाओने पकडी पाड्या. २६

भा.—... विश्वासमां आववाथी राजाए पूछी जोतां एवडाए ... के रांडो अप्रमत्त तेमज ... पूछवानां निर्णय अने परचित्तने जाण पारखनार छे. १८

टी.—... ... मांडेल ... महाअमात्योने ... राजाए तेमने पूछी जोयुं के नगरना मनमां रांडो

समुत्पादिते सति रोहकेण, पृष्ठा राज्ञा तेषां कृता—यथा—कीदृशो रोहको भवतां चित्ते वर्त्तत इति ? तैश्च शिष्टं हृदयेन भावसारमित्यर्थः ,—यथा देव, एकांतेनैव देवकार्येष्वप्रमत्तस्त्वप्रमत्तएव, तथाशब्दः समुच्चये धार्मिकः स्वपक्षपरपक्षयोरप्यनुपद्रवकरः , सपुण्यः पुण्यवान्, अभयो निर्भयो निःशंकं विपक्षमध्ये प्रवेशात्, परचित्तज्ञानी च अन्यानध्यवसेयपराभिप्रायपरिज्ञानवांश्च. (७६)

तुट्ठो राया सव्वेसि—मुवरि मंतीण ठाविओ एसो ; परिपालियं च विहिणा—तं बुद्धिगुणेण एएणं. ॥ ७७ ॥

(टीका)—एवं तस्य विचित्रैश्चित्रीयितविद्वज्जनमानसैश्चरितैस्तुष्ट आक्षिप्तचेता राजा जितशत्रुः संपन्नस्ततस्तेन सर्वेषामेकोनपंचशतप्रमाणानामुपरि अग्रेसरतया शिरसि नायकत्वेनेत्यर्थ मंत्रिणाममात्यानां स्थापितः प्रतिष्ठितः एष रोहकः परिपा-

केवो लागे छे ? तेओए खरा दिलथी कह्युं के हे देव! ते एकदम आपना काममां सावधानज छे, तेमज ते धार्मिक एटले स्वपक्ष तथा परपक्षने पण नुकशानमां नहि उतारनार छे, पुण्यवान् छे, वगर बीके विपक्षमां आवजा करतो होवाथी निडर छे अने बीजाने अगम्य एवा परना अभिप्रायने जाणी लेनार छे. राजाए खुशी थइ सघळा मंत्रिओनो तेने उपरी बनाव्यो, अने तेणे बुद्धिना गुणथी ते उपरीपणुं विधि पूर्वक परिपालित कर्युं. ७७

टीका—आ रीते तेना विद्वानोना मनने अचंबो पमाडनार विचित्र चरितोथी जितशत्रु राजाए खेंचाइने तेने चारसे नवाणु मंत्रिनो नायक बनाव्यो. ते नाटकपणाने तेणे विधिथी एटले पोतानी अवस्थाने उचितपणे बुद्धिगुणवडे ए-

लितं च निद्रां नीतं पुनर्विधिना स्वावस्थौचित्यरूपेण नन्मंत्रिनायकत्वं बुद्धिगुणेन श्रौत्पत्तिकीनामकमतिसामर्थ्येन करणभूतेन एतेन रोहकेण,—सर्वगुणेषु बुद्धिगुणाति-शायित्वात्,—यतः पठ्यते,—

श्रियः प्रसूते विपदो रुणद्धि—यशांसि दुग्धे मलिनं प्रमार्ष्टि, संस्कारशौचेन परं पुनीते—शुद्धा हि बुद्धिः कुलकामधेनुः ॥ १ ॥

उदन्वच्छन्नाभूः, स च निधिरपां योजनशतं—सदा पांथः पूषा गगनपरिमाणं क-लयति, इति प्रायो जावाः स्फुरदवधिमुद्रामुकलिताः—सतां प्रज्ञोन्मेषः पुनरसमसी-मा विजयते. ॥ २ ॥ इति. ॥ २० ॥

रहो सं. श्रौत्पत्तिकी नामनी बुद्धिना बळथी पार पहोचाड्युं केमके सघळा गुणोमां बुद्धिगुण चढियातो छे, ओ माटे कहेवाय छे केः

पवित्र बुद्धि स्वेच्छ कामधेनु छे. ते लक्ष्मी वधारे छे, विपदाओने रोके छे, यश पेदा करे छे, अपकीर्ति चूंसे छे, अने संस्कारोथी धीमाने पण पवित्र करे छे. १ पृथ्वी दरियाथी परिछिन्न छे, दरियो सो योजननो गणाय छे, अने आकाशनां पण हमेश फरनार रहेनार सूर्य माप करे छे, ए रीते माये सघळा पदार्थोने हदनी छाप लागेली छे, पण सज्जनो-नी प्रज्ञानो विकाश तो हदविनानोज जणाय छे. २०

रोहानी कथा समाप्त थई.

औत्पत्तिकी बुद्धि द्वार विस्तारथी वर्णव्युं. हवे पणित रूप द्वार कहे छे.

ओौत्पत्तिकी बुद्धि—व्याख्यातं सप्रपंचं नरहसितेत्तिद्वारं—अथ पणियत्ति-द्वारं.—पणिए पजूतलोमसि—नक्खणज्य दारणिष्फिरगमोए, चक्खण खच्छा वि-क्कय—जुयंग दारे अणिष्फेमो. ॥ ८० ॥

(टीका)—पणिए इति द्वारपरामर्शः । कश्चित् ग्रामेयकः स्वभावतएव मुग्ध-बुद्धिः क्वचिन्नगरे धूर्तलोकबहुले—बहूयलोमसित्ति बहुकाः शकटभरमाणा लोमसिकाः कर्कटिकाः समादाय विक्रयार्थं गतवान् तासु च विपणिपथावतारितासु केनचिद्धूर्तेन स उक्तः यथा भक्खणजयत्ति यदि कश्चिदेताः सर्वा भक्षयति तदा त्वं किं तेन जीय-से ? तेन चासंभाव्योयमर्थ इति मनसि मत्वाऽसंभवनीयमेव पणितकं निबद्धं यथा दार-ष्फिरगमोए इति यो नगरद्वारेण मोदको न निर्गच्छति तं तस्य प्रयच्छामि.

पणितमां घणी काकडीओ खावाथी जय मेळव्यो. ते वडा दरवाजामांथी न नीकळे एवो लाडु देवा ठराव्युं. बाद चाखीने सघळी काकडीओ खाधी. वेचवा मांडी तो लोको कहे के खाधेली छे. त्यारे जुगारीओनी सलाहथी दर-वाजाना अमगरापर लाडु राखतां ते नीकळ्यो नहि. ८०

टीका.—पणितना उदाहरणमां ए वात छे के कोइक गामडियो स्वभावथीज भोळो होइ घणा धूर्ताराथी वसेला कोइ नगरमां काकडीओनुं गाडुं भरी वेचवा गयो. ते काकडीओ बजारना रस्तामां उतारी एटले कोइ धूर्त तेने कहेवा लाग्यो के जो कोइ आ बधी खाइ जाय तो तुं जीताय खरो के ? ते गामडियाए आ वात न बनी शके तेवी मानीने न बनी शके एवुं पण बांध्युं के तेवाने हुं नगरना दरवाजामांथी न नीकळी शके तेवो लाडु आपुं.

ततस्तेन तल्लोमासकाशकटमारुह्य चक्खणन्ति दंतनिर्भेदमात्रेण खद्धन्ति सर्वासामपि तासां भक्षणं कृतम्. विक्रयन्ति विक्रेतुमारब्धश्चासौ नाः—नाच लोको गृह्णाति " भक्षिताः केनाप्येता " इति प्रवदन् सन्. ततो धूर्त्तेन लोकप्रवादसहायेन जितो ग्रामयकः . तदनु तं मोदकं याचितुमारब्धः . ग्रामेयकश्च अशक्यदानोयं मोदक इति कृमयकः रूपकं प्रयच्छति, स नेच्छति,—एवं द्वे त्रीणि यावच्छतमपि नेच्छत्यसौ. चिंतित्वा तस्य रूपकं प्रयच्छति, स नेच्छति,—एवं द्वे त्रीणि यावच्छतमपि नेच्छत्यसौ. चिंतितं च ग्रामेयकेण—" नैतस्माध्धूर्त्तान्मम कथंचिन्मुक्तिरस्ति इति निपुणबुद्धिपरिच्छेद्योथं व्यवहारः ,—चतुरबुद्धयश्च प्रायो द्यूतकारा एव भवंतीति तानेवावलगामि " तथैव च कृतं तेन. पृष्टश्चासौ तैः—यथा भद्रक किमर्थमस्मान्निरंतरमासेवसे त्वं ? भणितं च तेन यथा ममैवंविधं व्यसनमायातमिति.—ततो—भुयंग दारे अनिष्फेलो इति भु-

हवे ते धूर्त्त ते काकडीओना गाडापर चडी ते सघळी दांत लगावीने चाखी. बाद तेने वेचवा मांडतां लोको " ए तो कोइकनी खाधेली छे " एम कही लेता अटक्या. त्यारे लोकना मवादनी मददथी ते धूर्त्त गामडीयाने जीतीने ते लाडु मागवा लाग्यो. गामडियाए धार्युं के एवडो लाडु केम दइ शकाय तेथी ते तेने रुपियो आपवा लाग्यो, पण धूर्त्ते न लीधो एम वे त्रणने छेवटे सो रुपिया पण न लीधा. त्यारे गामडियाए विचार्युं के आ धूर्त्त मने छोडनार नथी. आ वातनो खुलासो जेओ निपुणबुद्धि होय ते करी शके अने तेवी बुद्धिवाळा भाये जुगारियो होय छे माटे तेमने सेवुं, एम चितवी तेणे तेमज कर्युं. त्यारे तेमणे पूछ्युं के अमारी तुं हरहमेश शा माटे सेवा करे छे? तेणे कह्युं के मारा पर आवी रीतनी आफत पडी छे. त्यारे तेमणे शीखव्युं के कंदोइने त्यांथी मुठ्ठमां आवे तेवडो एक लाडु लइ ते धूर्त्त तथा नगरना लोकोनी साथे

जंगैर्द्यूतकारैरसावेवं शिक्षितो यथा पूतिकापणे मुष्टिप्रमाणमेकं मोदकं गृहीत्वा तद्धूर्तसहायः शेषनगरलोकसहायश्च प्रतोलीद्वारे गत्वा इंद्रकीलस्थाने तं विमुच्य प्रतिपादय यथा निर्गच्छ न्नो मोदक इति. विहितं च तेनैवं परं द्वारे मोदकस्य अनिष्फेडो निःकाशनाभावः संपन्नः. प्रतिजितश्चासौ तेन. एवं च द्यूतकाराणामौत्पत्तिकीबुद्धिरिति. (५)

अथ रुक्खे इति द्वारं.—रुक्खे फलपडिबंधो वाणरएहिं तु लेठ्ठुफलखेवो, अणे अन्नक्खणिज्जा—इमे फला पंथवहणाओ. ॥ ८१ ॥

(टीका)—रुक्खे इति द्वारपरामर्शः फलानां गृह्यमाणानां प्रतिबंधः प्रतिस्खलना, केभ्य इत्याह—वानरकेभ्यस्तु कपिभ्य एव. इद मुक्तं भवति—कुत्रचित् पथि फ-

पोळना दरवाजे जइ अमगरा पासे तेने मेली बोलजे के अरे लाडु इहांथी नीकळ. तेणे तेम कर्युं पण मोदक कंइ त्यांथी नीकळ्यो नहि. तेथी ते जीत्यो. ए रीते जुगारीओनी औत्पत्तिकी बुद्धि जाणवी.

हवे वृक्ष रूप द्वार कहेछेः—

झाडमां वांदराओए फळ लेता अटकाव कर्यो. तेमने पथर मारतां तेमणे फळ फेंक्यां. बीजा कहे छे के वहेतो मार्ग होवाथी आ फळो अभक्ष्य छे. ८१

टीका.—वांदराओए फळ लेतां अटकाव कर्यो एटले के कोइक रस्तामां फळना भारथी नमेली डाळवाळो कोइ आंबानुं झाड हतुं तेना पासेथी हमेश ते ते कामना लीधे जता आवता वटेमार्गुओ तेना पाकेला फळो जोइने भूखथी गर्ळा कूख होवाथी ते लेवा लाग्या पण ते झाळपर रहेला अतिचपळ वांदराओ सामे थवाथी ते लइ शक्या न-

फलभारनम्रशाखासंभारः कश्चिदाम्रादिमहाद्रुमः समस्ति. तत्समीपेन च निरंतरं तत्तत्प्रयोजनाक्षिप्तः पथिकलोको गच्छन्नागच्छंश्च पक्वान्यवलोक्य तत्फलानि बुभुक्षाक्षामकुक्षितया गृहीतुमारभते, परं तच्छाखासमारूढातिचपलकपिकुलेन प्रतिस्खलितो न तानि गृहीतुं शक्नोति. खेदद्रुमफलेवोत्ति—अन्यदा च केनचिन्निपुणबुद्धिना पथिकेन लेष्टुक्षेपः कृतो मर्कटाभिमुखं तदनु कोपावेगव्याकुलीकृतमानसैस्तैस्तत्प्रतिघाताय तानि फलानि क्षिप्तानि. एवं च परिपूर्णमनोरथः समजनि पथिकः इति तस्यौत्पत्तिकी बुद्धिरिति. (४)

अत्रैव मतांतरमाह—अन्ये आचार्या वृक्षद्वारमित्थं व्याख्यांति—यथा कैश्चित्पथिकैः क्वापि प्रदेशे केनाप्यनुपजीवितफलान् वृक्षानालोक्य चिंतितं यथा अभक्षणीयानि इमानि फलानि वर्त्तंते, कुतः—पंथवहणाओ इति पांथवहनात् पथिकलोकस्यानेन मार्गेण गमनादागमनाच्च. यदि ह्येतानि फलानि भक्षयितुं योग्यान्यभवि-

हि. बाद एक वखते कोइ हुशियार वटेमार्गुए आवी ते वांदराओ सामे पथर फेंक्यो एटले तेओ गुस्से थइ तेने मारवा फलो फेंकवा लाग्या एटले तेना मनोरथ पूरा थया. एनी औत्पत्तिकी बुद्धि जाणवी.

आ जगोए मतांतर बतावे छेः—बीजा आचार्यो वृक्षद्वारनी आ रीते व्याख्या करे छे के केटलाक वटेमार्गुओए कोइक ठेकाणे कोइए पण नहि वापरेला फळवाळा झाडोने जोइने विचार्युं के आ फळो अभक्ष्य लागे छे. केमके आ मार्गे वटेमार्गुओ जाय आवे छे, तेथी जो ए फळो खावा योग्य होत तो कोइ पण तेने अवश्य खात, पण आ तो कोइए

प्यंस्तदा केनाप्यवश्यमत्तक्षयिष्यंत, न च केनापि जक्षितानि. तन्नूनमत्तद्याणीति,— पथिकानामौत्पत्तिकी बुद्धिरिति. (छ)

अथ खड्गत्ति दारं.—खड्गमंतिपरिच्छा— सेणियगम सुमिण सेट्टि णंद ज-ए, मुद्दा कूवतरुग्गह—आणुद जणली पवेसणया. ८२

टीका—रायगिहं इह नयरं—समत्थि नयरम्मपरिसरुद्देसं राया तत्थ पसेणइय-नामगो पालइ य रज्जं. ॥ १ ॥ सेणियनामा पुत्तो—जुत्तो निवलक्खणेहि सव्वेहिं, सयलसुएसु पहाणो—तस्सासि सहावओ गुणवं. ॥ २ ॥ पोरिससज्जं रज्जं—पुन्ने संतेवि एस जणवाओ, तो काहामि परिक्खं—सुयाण इय चिंतिउं रन्ना—॥ ३ ॥ अन्न-दिणे सव्वेविहु—जणिया तणया जहामिलियगेहिं, तुब्भेहिं जोत्तव्वं—एवं पीई क-

खाधेलां नथी,—माटे ते नक्की अजक्ष्य छे. आ रीते वटेमार्गुओनी औत्पत्तिकी बुद्धि जाणवी.

हवेखड्गद्वार कहे छेः—खड्गद्वारमां मंत्रिनी परीक्षामां श्रेणिकनुं नीकळवुं, शेठने स्वप्न, नंदानी कूखे अजय कुमारनो जन्म, तेणे कूवाना कांठे रही छाण अने पाणी जरीने वींटी कहाडी. बाद माताने राजग्रहीमां आणी. ८२

टीका.—आसपासमां पर्वतोथी रमणीय लागतुं राजगृह नामे नगर हतुं. त्यां प्रसेनजित् नामे राजा राज्य करतो. १ तेने सघळा राजलक्षणथी युक्त अने स्वजावथीज गुणवान श्रेणिकनामे पुत्र हतो. ते सघळा पुत्रोमां प्रधान हतो. २ राजाए विचार्युं के लोकमां एवो प्रवाद छे के पुण्य छतां पण पराक्रमथीज राज्य मळे छे माटे हुं मारा पुत्रोनी परीक्षा करी जोउं. ३ तेथी एक दिवसे तेणे सघळा पुत्रोने कह्युं के तमो बधाए साथे मळीने जमवुं केमके एम कर्याथी प्रीति व-

या हवई. ॥ ४ ॥ जं जणइ महाराओ—तं कायव्वं ति सज्जियकरेहिं, पम्भिसुय मि-
मेहि समए—उवविट्टा जोयणस्स कए. ॥ ५ ॥ तत्तो य जायणाइं—पायसजरियाइं
तेसि दिन्नाइं, जाव पवत्ता जोत्तुं—मुक्का पारद्धिसुणगाओ. ॥ ६ ॥ सद्दूलरुद्दचरणा
—आलान्निमुहं समागया जाव, सेणियवज्जकुमारा—ताव जणणं पलाया ते. ॥ ७ ॥
सेणियकुमरेण पुणो—वेत्तूणं तेसि ताइं थालाइं, खित्ताइं अन्निमुहाइं—लग्गा ते
पायसे तम्मि. ॥ ८ ॥ जुत्तं नियथालगयं—पायस मेएण धीरचित्तेण, दिट्ठो एस व-
इयरो—निवेण तो तंमि संतुट्ठो. ॥ ९ ॥ नूणं सुनिउणबुद्धि—एस कुमारो जमेव व-
सणेवि, नो चुक्को नियकज्जा—धरिया सुणगावि संतोसे. ॥ १० ॥ एवं रज्जाउ इमो
—खोहिज्जंतोवि अन्नराईहिं, नो रज्जपरिच्चायं—काही दाणप्पयाणाओ. ॥ ११ ॥

अर्थ. ४ तमणे हाथ जोमी कबूल्युं के तमो कहोगे तेम करशुं बाद समय थतां तेओ जमवा बेठा. ५ त्यारे दूधपाक पी जरेला जाण। तेमने देवामां आव्या. हवे जेवा तेओ जमवा लाग्या के पारधीना कूतरा छूटा मेलववामां आव्या. ६ ते-ओ सिंहजेवा पंजावाळा होइ जेवा थाळो पासे आव्या के श्रेणिक शिवाय बीजा कुमारो मरीने त्यांथी जठी नाठा. ७ पमनु श्रेणिक कुमारे तो तेमना थाळ खेंची कूतराओनी सामे धकेल्या एटले तेओ तेमानुं दूध पाक खावा वळगी गया. ८ एटलामां तेणे धर्मे कलेजे पोताना थाळमां रहेलो दूधपाक खाइ लीधो. आ बनाव जाणी राजा तेनापर खुश थयो. ए राजाए विचार्युं के आ कुमार खरेखर ऊंची बुद्धिवाळो लागे छे केमके आवी आफतमां पण ते पोताना काळथी चूक्यो नहि ते साथे कूतराओने पण संतोषमां राख्या. १० ए रीते राज्यथी पण ए बीजा राजाओए रुंध्यो थको दानप्रदान क-री राज्य छोड नहि बेसशे ११ माटे हाल एने झाझुं मान देवुं नहि केमके नहितो बीजा कुमारो मत्सर धरी एने मारी

ता संपइ नो गोरवजोग्गो एसो जओ इमे कुमरा—उपन्नमच्छरा मारिहिंति एयंति पुणिजण—॥ १२ ॥ दिट्ठो अवभूयगई सिणिओ, तोन जुत्त मिहमज्झ, इय चिंतिय परिचलिओ—कुमरो देसंतराभिमुहो. ॥ १३ ॥ पत्तो विन्नाइ नईइ तीरभागप्पइट्ठियत्तेण—विन्नायमाभिहाणे—पुरंमि परपउरजणकलिए. ॥ १४ ॥ परिनियनिच्चाहिं—पसंगओ संगओ पविठ्ठोय—अब्भितरंमि तत्तो—पत्तो एगस्स सेट्ठिस्स—॥ १५ ॥ खीणविहवस्स हट्टंमि—तत्थ लद्धासणो समुवइट्ठो, दिट्ठो आसि निसाए—जहा गओ मम गिहे जलही. ॥ १६ ॥ सुविणो मणोहरो इय—णूणं तप्फल मिमं ति चित्तेण—संतुट्ठो सो सेट्ठी—तंमि दिणे तस्स पुन्नेहिं—॥ १७ ॥ पट्टणसंखोहकरो—सहो पयट्टो तओ जणो बहुओ—कुंकुमचंदणधूयाइकिणणकज्जेण हट्टंमि—॥ १८ ॥ ओइन्नो अइबहुयं—विढत्त मसढाइ तेण नीईए, पच्छा भोयणकाले—उट्ठिउकामेण

नारशे एम धारीने (राजा चुप रह्यो.) १२ तेणे श्रेणिक तरफ जरा अनादरथी जोयुं एटले श्रेणिके विचार्युं के मारे इहां रहेवुं नहि एम चिंतवी ते देशांतर नीकळी पड्यो. १३ ते वेणा नदीना कांठे रहेला वेणातट नामना घणां पैसादार वसतिवाळा गाममां आव्यो. १४ बाद काम प्रसंगे पोताना थोडा चाकरो साथे दाखल थइ एक क्षीण विभव शेठना हाटे आव्यो एटले तेणे तेने आसन आप्युं ते पर ते बेठो. त्यारे ते शेठे विचार्युं के राते में जे मारा घेर दरियो आव्यो एवुं मनोहर स्वप्न जोयुं तेनुंज आ फळ छे एम धारी ते शेठ मनमां संतुष्ट थयो. हवे ते दिवसे तेना पुण्ययोगे नगरने खळभळाटमां आणनार महोत्सव चालु थयो तेथी घणा लोक केशर चंदन तथा धूप वगेरे लेवा सारुं ते हाटपर आववा लाग्या. १५—१६—१७—१८ घणा लोक उतरी पड्याथी ते शेठे निष्कपटपणे नीतिथी घणुं धन कमाव्युं बाद जम

सो पुट्ठो. ॥ १९ ॥ कस्स इहं पाहुणगा—तुम्हे, तेणावि तुम्ह जणिय मिणं, नीओ घरंमि उचिया—विहिया सव्वत्थपडिवत्ती. ॥ २० ॥ तो तस्स वायणकोसलसुजगत्तण विणयसुताण जावेहिं, अक्खित्तमणो सिट्ठी—धूयं नंदं नियं देइ. ॥ २१ ॥ परिणाविओ पवंधण—भूरिणा जणियजणपमोएणं, तक्कालोचियसंपन्नसव्वकज्जो समं तीए. ॥ २२ ॥ अच्चंतणुरत्ताए—सुविणंमिवि विप्पियं मुणंतीए, एत्तोच्चियविणयपरायणइ मिउमहुरवयणाए—॥ २३ ॥ लग्गो जोगे जोत्तुं—मोत्तुं सव्वाउ सेसचिंताओ, अइजामाउयमब्भसुरजणाणीय सरूपाणो. ॥ ॥ २४ सुहपासुत्ता पेछइ—अहन्नया सुविणयंसि सा नंदा—हरहासकासधवलं—चउदसणं उसियकरं च—॥ २५ ॥ निय-

वाना वखते कळवानी पेंधारी करतां तेणे तेने पूछयुं के. १९ तमे इहां कोना परोणा थइ आव्याछो ? तेणे कह्युं के तमारा. तेथी ते शेठ तेने घेर तेडी गयो त्यां तेनी सघळी वाते योग्य स्वागता करी. २० बाद तेनी बोलवानी चतुराइ, सुजनपणुं, विनय, तथा सौजन्य जावथी खेंचाइने शेठे तेने पोतानी नंदा नामनी पुत्री आपी अने लोकोने आनंददायक मोटे आडंबरथी वखतने अनुसरती सघळी गोठवण करी तेना साथे तेने परणाव्यो. २१—२२ नंदा तेनापर अत्यंत अनुरक्त होइ स्वप्नमां पण तेनो अपराध नहि करती अने एथीज ते विनयमां तत्पर रहेती अने मृदु तथा मधुर वाणी बोलनी हती. २३ तेणी साथे श्रेणिक बीजी सघळी चिंताओ छोडीने जोग विलास जोगवा लाग्यो. केमके जमाइ जार जारे हेत राखता सासरीया तेनुं रुडी रीते सत्कार सन्मान साचवता हता. २४ हवे ते नंदा एकवेळा सुखे सूती थकी स्वप्नमां महादेवना हास्य अने काशना फूल जेवो धोळो चार दंतोसळवाळो, ऊंची सुंढवाळो, एवो हाथीनो बच्चो पोताना मुखमां पेशतो जोइ जागी उठीने तरतज पतिने जणाधा लागी त्यारे तेणे तेने आ प्रमाणे कह्युं. २५ २६ हे प्रि

वयणे पविसंतं—मत्तंगयकलह मेग मह बुद्धा—तक्खणमेव निवेइय पइणो तेणावि सा जणिया. ॥ २६ ॥ उचियसमएण होही—ते पुत्तो पुन्नलक्खणो दइए, सुरवासा चविऊणं—स पुन्नसेसो सुरो एगो. ॥ २७ ॥ तो सुहलग्गे लग्गे—सुपसत्थे वासरंपि संलग्गो—गब्भो तीए अणपोढपुन्नपब्भारलब्भो त्ति. ॥ २८ ॥ एवं वच्चइ कालो—जा ताव पसेणईच नरनाहो, जाओ असमत्थतणू—गवेसणा सेणियस्स कया. ॥ २९ ॥ नाउ जहा बिन्नायरुपुरंमि सो संपयं सुहं वसइ, तो तस्सा णयणकए—विसज्जिया तक्खणं चरया. ॥ ३० ॥ पत्ता तस्स समीवे—निवेइओ वइयरो य रायगओ, गमणुस्सणो य जाओ—तो तक्खणमेव सो कुमरो. ॥ ३१ ॥ अह अपुच्छइ सेट्ठिं—नियजणगगिहं पओयणवसाओ, वच्चामि संपइ अहं—संतुट्ठमणा विसज्जेह. ॥ ३२ ॥ जणिया य तेण नंदा—अम्हे रायग्गिहंमि गोवाला, वाले पंडुरकुड्डा—जइ कज्जं

ये, दयवाकयी कोइ एक पुण्यशाळी देव चवीने उचित समये तारे संपूर्ण लक्षण युक्त पुत्र थशे. २७ हवे ते वखते शुभ लगनमां अने शुभ दिवसमां तेणीने अति जारे पुण्ययोगे मळे एवो गर्भ रह्यो. २८ आ रीते वखत पसार थतो हतो तेवामां प्रसेनजित् राजा मांदो पड्यो एटले तेणे श्रेणिकनी शोध करावी. २९ तेम करतां मालूम थयुं के ते हमणा वेणातट नगरमां सुखे रहेछे तेथी तेने बोलाववा तरत दूतो मोकलाव्या. ३० तेओ तेना पासे आवी राजानी सघळी हकीकत कहेवा लाग्या, तेथी ते तरतज त्यांज जवा उत्सुक थयो. ३१ तेथी तेणे शेठने पूछ्युं के जवरी कामना लीधे हुं हाल बापना घेर जनार छुं, माटे तमो खुशीथी रजा आपो. ३२ वळी तेणे नंदाने कह्युं के अमे राजगृहना गोपाळ छीये

तत्थ णज्जाहि. ॥ ३३ ॥ पत्तो जणयसमीवंमि—सेणिओ पावियं च तं रज्जं, सव्वो आणासज्जो—सज्जो जाओ परियणोवि. ॥ ३४ ॥ नंदाए पुण तइए—मासे गब्भाणुभावओ जाओ—अइविमलो दोहणओ—कहिओ तीए य सेट्ठिस्स. ॥ ३५ ॥ जइ ताय हत्थियखंधारूढा उत्ते धरिज्जमाणं—नयरे सबाहिरब्भंतरंमि हिंडामि अभयं च—॥ ३६ ॥ घोसिज्जंतं महया सरेण निसुणामि तो ममं तोसो, संपज्जइ अहवहुओ —अन्नह मे जीवियच्चाओ. ॥ ३७ ॥ तो सुट्ठुतुट्ठचित्तेण—सेट्ठिणा नरियरयणन्नाणेण, दिट्ठो राया तेणावि—मन्निओ कुणह जहइट्ठं. ॥ ३८ ॥ वरकरिखंधगया सा—सियछत्तच्छन्नहयछायाजोगा, निसुणं अभयउग्घोसणं च परिहिंडिया नयरिं. ॥ ३९ ॥ संमाणियदोहलया—निम्म पणुब्विग्गमाणसा धणियं, सा साहियनवमासावसाणसमयंमि य पसूया. ॥ ४० ॥ देवकुमारागारं—दारग मइरेगलोयणाणंदं, विहि-

अने हे वाळा, अमारा धोळा कुवा (जूंपडा) छे, माटे काम पडे त्यां आवजे. ३३ बाद श्रेणिक पिता पासे आव्यो अने तेने सघळुं राज्य मळ्युं तथा सघळा परिजनो आज्ञावर्त्ती थया. ३४ हवे आणीमेर नंदाने त्रीजे मासे गर्भना अनुभावे अति उत्तम दोहलो थयो ते तेणीए बापने कह्यो. ३५ ते ए रीते के पिताजी, हुं हाथीना खांधे चडुं अने उपर छत्र धराय एम नगरना अंदर तथा वाहेर फरुं. ते साथे मोटा अवाजथी अभय घोषणा थती सांभळुं तो मने खूब आनंद थाय, नहितो हुं मरी जइश. ३६—३७ त्यारे शेठ घणो खुशी थइ रत्नो थाल भरी राजाने भेट्यो एटले तेणे रजा आपी के मरजी मुजब करो. ३८ हवे नंदाने मोटा हाथीना खांधे चडाववामां आवी अने उपर श्वेतछत्र धरवामां आव्युं, अने अभयनी उद्घोषणा कराववामां आवी तेने सांभळी ते नगरीमां फरी. ३९ आरीते दोहलो पूर्ण थयाथी

ओ जम्ममहो सेट्ठिणावि तक्काल जोग्गोजो. ॥ ४१ ॥ पत्तंमि पवित्तदिणे—विहियं नामं सुयस्स अभओ त्ति, संजाओ जणणीए—इमस्स जं अभयमोहलओ. ॥ ४२ ॥ तो सुक्कपक्खससिमंडलं व सो वड्ढिउं समाढत्तो, जाओ य अट्ठवरिसो—बहुबंधुरबुद्धिरिद्धिल्लो. ॥ ४३ ॥ पुच्छइ पत्थावबसा—अम्मो मे कत्थ परिवसइ ताओ ? भणियं रायगिहपुरे—सेणियनामा स नरनाहो. ॥ ४४ ॥ ताहे भणिया जणणी—अम्मो नो एत्थ अत्थिउं जुत्तं, सुपसत्थसत्थसहिओ—पिउगेहं पत्थिओ तत्तो. ॥ ४५ ॥ पत्तो रायगिहबहिं—सिबिरनिवेसेण ठविया जणणी, तत्थ प्पणा पुण गओ—नगरस्स ब्भंतरं अभओ. ॥ ४६ ॥ तंमि समयंमि राया—अच्चब्भुयभूयबुद्धिसंपन्नं, मंतिं मग्गइ सव्वायरेण तो तस्स लाभकए—॥ ४७ ॥ निययं अंगुलिमुद्दारय-

तेणीए निरंतर आनंदमां रही कांइक अधिक नवमासनी आखरे देवकुमारना जेवो आंखोने आनंद आपनार पुत्र जण्यो त्यारे शेठे वखतने अनुसरतो तेनो जन्मोत्सव कर्यो. ४०—४१ बाद पवित्र दिवसे एनुं अभय एवुं नाम पाड्युं केमके तेनी माने अभयनो दोहलो थयो हतो. ४२ हवे ते शुक्ल पक्षमां चंद्रमंडळना माफक वधतो थको आठ वर्षनो थयो, अने ते भारे सरस बुद्धिनो भंडार थयो. ४३ हवे प्रस्ताव आवतां अभयकुमारे माताने पूछ्युं के मारो बाप क्यां रहे छे ? तेणीए कह्युं के ते तो राजगृहनगरमां श्रेणिकनामे राजा छे. ४४ त्यारे तेणे माने कह्युं के आपणे इहां रहीशुं नहि, एम कही सारा साथ साथे ते बापना घर तरफ चाल्यो. ४५ ते राजगृह आवी पोतानी माने बाहेर तंबुमां मेली पोते नगरनी अंदर गयो. ४६ ते समये राजाने अद्भुत बुद्धिवाळो मंत्री जोइतो हतो तेथी बनती महेनते तेने मेळववा खातर तेणे पोतानी आंगळीमां पहेरवानी वींटी एक अत्यंत सूकामणना लीधे पाणीथी रहित थयेला ऊंडा कूवामां नांखी

णं मिसं राहावके गड्डिर, अच्चंतं सुक्कसिरत्तणेण जलवज्जियतलंमि. ॥ ४८ ॥ जणिओ य सयललोगो—तम्मे निविद्वो करेण जो गहिही, एयं तस्स जहिच्छिय वित्तिपयाणं करेमि अहं. ॥ ४९ ॥ लग्गो लोओ लाउं—विविहोवायप्पओगसंजुत्तो, नय फुरइ उवाओ कोवि—तारिसो, जेण तग्गहणं. ॥ ५० पत्तो अन्नयकुमारो—तदेसं, पुच्छियं किमेयं ति ? कहिओ जणेण सव्वो—वुत्तंतो जो कओ रन्ना. ॥ ५१ फुरिओ तक्खणं मेयस्स—एयपरिग्गाहगो उवाओ त्ति, खित्तो य अल्लगोमयपिंमो तस्सोवरिं सहसा. ॥ ५२ ॥ खुत्तं तं झत्ति तहिं—जलंतगो तणमओ तओ पूलो—खित्तो तस्सुवरि—सुक्को सो गोमओ सव्वो. ॥ ५३ ॥ तीरट्ठियकूवंतरसारणिसलिलेण पूरिओ अगडो, तो तेणं सो गोमयपिंमो उप्पालिओ दूरं. ॥ ५४ ॥ पत्तो उवरिपएसे—गहि-

दीधी. ४८—४० बाद राजाए सघळा लोकने कह्युं के किनारे रही जे हाथवडे एने काढे तेने मनमानती वृत्ति आपीश. ४९ त्यारे लोको विविध उपाय अने प्रयोगो करी तेने लेवा लाग्या, पण कोइने तेवो उपाय सूझ्यो नहि के जेथी ते लइ शके. ५० ए वखते त्यां अभयकुमार आवी चड्यो तेणे पूछ्युं के आ शी गरबड छे ? त्यारे लोकोए राजाए करेलो सघळो वृत्तांत तेने जणाव्यो. ५१ अभयकुमारने तरतज वींटी कहाडवानो उपाय सूझ्यो तेणे झट लीलाछाणनुं पिंड लइ तेपर नांख्युं. ५२ ते तळियामां वींटीपर खूंच्युं एटले बळता तणखलानो पूळो लइ तेना उपर नाख्यो तेनी गरमीथी ते छाण बरोबर सूकाइ गयुं. ५३ बाद तेणे पासे रहेला बीजा कूवाना पाणीनी नीक तेमां वाळीने ते कूवो पाणीथी भर्यो, एटले ते पाणी साथे ते छाणनुं पिंड उंचे उछळ्युं. ५४ ते छेक उपर आव्युं एटले किनारे बेठेला अभये तेने लइने ते-

ओ अन्नएण तम्मनिविट्टेण, आयट्टियं च तत्तो-तं खित्तं मुद्दियारयणं ॥५५॥नीओ रायसमीवे —तक्कज्जनिउत्तगेहि पुरिसेहं, आपुच्छिओ य रण्णा-पयपणओ कोसि वच्छ तुमं? ॥५६॥ सो जणइ तुम्ह पुत्तो-किह कत्थव पूच्छिओ निवेचेइ, सव्वं विन्नायम्म नयरसंतियं पुव्ववुत्तंतं. ॥५७॥ हरिसजलपूरिच्छो—उच्छंगेऊण नियववस्छंमि, पुणयंकुरपरियरिओ—पुणो पु, णो त मवगूहेइ. ॥५८॥ पुट्ठो कत्थ तुहंवा ? —सो जणई देव नयरबाहिंमि, चलिओ सपरियरो तप्पवेसहेउं तओ राया. ॥५९॥ निन्नायवइयराए—नंदाए मंम्मिओ तओ अप्पा, अन्नएणं सा विनिवारियायनो अंव जुत्त मिणं.॥६०॥पइविरहियाउ सुकुलुग्गमाउ रापाउ जेण नेवत्थं—अच्चुज्जमं न गिण्हंति—किंतु सुपसत्थमेव त्ति. ॥ ६१ ॥ तो तक्खणाउ तीए—वयणं पुत्तस्स मन्नपाणीए—गहिओ सोच्चिय वेसो—जो पु-

मांथी वींटी कहाडी लीधी ५५ त्यारे पछी ते कामपर राखेला माणसो तेने राजा पासे तेडी गया. त्यां ते राजाने पगे लाग्यो एटले राजाए पूछ्युं के वत्सा तुं कोण छे ? ५६ ते बोल्यो के हुं तमारो पुत्र छुं. राजाए पूछ्युं ते शी रीते ? त्यारे तेणे वेणातटनगर संबंधी पूर्व वृत्तांत संभळाव्यो. ५७ त्यारे राजा हर्षना आंसुथी आंखो भरीने तेने पोताना खोळामां लइ रोमांचित थइ वारंवार तेने बाथ भीडी भेटवा लाग्यो. ५८ राजाए पूछ्युं के तारी मा क्यां छे ? तेणे कह्युं के नगरी बाहेर छे. त्यारे राजा परिवार साथे तेने लेवा चाल्यो. ५९ नंदाने ते वातनी खबर पडतां तेणीए सणगार सजवा मांड्यो त्यारे अभये तेने अटकावी के एम करवुं युक्त नथी. ६० जे माटे पतिना वियोगवाळी कुलीन स्त्रीओ अति उत्कट वेष नथी पहेरती पण सादो वेषज पहेरे छे. ६१ त्यारे तेणीए पुत्रनुं वचन मानी तरतज ते ज वेष राख्यो के जे पहेला पहेरेलो ह-

ति आगिपरिक्खुत्तो. ॥ ६२ ॥ संपाविय पवरमहं—कसियणाणा पकारयरोहिहिं, अभओ रन्ना नवरं—पवेसिओ जणणिसंजुत्तो. ॥ ६३ ॥ अह्वो पवरपसाओ—ठविओ सव्वेसि उवरि मंतीणं. उप्पत्तियबुद्धिगुणेण— एस एवं सुही जाओ. ॥ ६४ ॥—इति.

अथ संग्रहगाथाक्षरार्थः—रवकुगत्ति द्वारपरामर्शः . मंति परिक्खा इति मंत्रिणः परीक्षायां प्रक्रांतायां अभयो दृष्टांतः . कथमयं जात इत्याह—सेणियगमणत्ति श्रेणिकस्य कुमारावस्थायां पित्रावज्ञातस्य विन्नातटे गमो गमनमभूत् सुविणसेट्ठिनंदणए इति तत्र चैकेन श्रेष्ठिना निशि स्वप्नो दृष्टो यथा रत्नकरो मद्गृहमागतः . ततस्तेन नंदाभिधाना दुहिता तस्मै दत्ता. तस्यां चासावभयकुमारं पुत्रमजीजनत्. प्रस्तावे च श्रेणि-

ने. ६२ दाद आर महोत्सववाळा अने फरकती विचित्र धजाओथी शोभता नगरमां अभय अने तेनी माने राजाए तेडी आण्या. ६३ तेणे राजानी पूरती महेरबानी मेळवी अने तेने सघळा मंत्रिओनो उपरी करवामां आव्यो. आ रीते औत्पत्तिकी बुद्धिना गुणे करी ते एवी रीते सुखी थयो. ६४

हवे संग्रहगाथानो अक्षरार्थ करे छेः—रकुगद्वारमां मंत्रिनी परीक्षा पेठे अभयनो दृष्टांत छे ते शी रीते ते कहे छे. श्रेणिकने कुमारपणामां पिताए अवज्ञा करतां ते विन्नातटमां गयो. त्यां एक शेठे रातना स्वप्न जोयुं के दरियो मारे घर आव्यो. तेथी तेणे नंदा नामनी पुत्री तेने परणावी ते तेनी कूखथी अभयकुमार पुत्र पेदा थयो. अवसरे श्रेणिक पोताना राज्यमां गयो. अवसर आवतां अभयकुमार पण पोतानी माताने शहेर बहार राखीने पोते राजगृहमां पेसतो थको कूवानां फरती वींटीने जोवा लाग्यो एटले तेणे लोकोने पूछतां तेमणे कह्युं के जे किनारा पर रही आने कहाडे तेने राजा

कः स्वराज्यं गतः . अभयकुमारोपि समये स्वजननीं वहिर्व्यवस्थाप्य राजगृहं प्रविशन् सन् मुद्दाकूवत्ति मुद्रां खड्डुकमंगुलीयकमित्यर्थः कूपे पतितं ददर्श, लोकं च पप्रछ. स चावोचत् यस्तटस्थित इदमादत्ते तस्मै राजा महांतं प्रसादमाधत्ते इति. ततोऽभयकुमारेण गाणुगत्ति छगणको गोमयस्तदुपरि प्रक्षिप्तः उदकं च प्रवेशितं. ततः कथानकोक्तक्रमेण गृहीतं तत. राज्ञा च दृष्टः . तदनु जणणीपवेसणया इति जनन्या अभयकुमारसवित्र्याः प्रवेशनं नगरे कृतं राज्ञा इति.

पम जुणादंगोहलि—वच्चय ववहार सीसओविहणा, असे जायाकत्तण—तदत्तसंदंसणा णाणं. ॥ ७३ ॥

(टीका)—पट इति द्वारपरामर्शः . जुन्नादंगोहल्लित्ति—किल कौचित् द्वौ पुरुषो, तयोरेकस्य जीर्णः पटो ऽन्यस्य चादिशब्दादितरः प्रावरणरूपतया वर्त्तते. तौ च

मोटो प्रसाद आपशे. त्यारे अभयकुमारे छाण लइ तेना पर नाख्युं अने पछी तेमां पाणी भर्युं. ए रीते कथामां कहेला क्रमथी ते वींटी कहाडी. ते बनाव राजाए जोयो. बाद राजाए अभयकुमारनी मानो नगरमां प्रवेश कराव्यो.

हवे पटद्वार कहेछे:—पट ते एम के जूना नवा बे वस्त्र, अंगीकृतां वदलाय. तेनो इन्साफ मायां ओळीने करवामां आव्यो. बीजा कहेछे के स्त्रीओना कतणा तपासतां तेमां ते जूदा जणाया. ७३

टीका.—पटद्वारमां एम वात छे के कोइ बे पुरुष हता. तेमांना एकनुं जूनुं ओढण हतुं अने बीजानुं आदि पछो नवुं ओढण हतुं. ते बे जण कोइ नदी वगेरे स्थळे समकाळे न्हावा लाग्या एटले ओढण उनारी पाछे राख्यां. हवे

क्वचित्तडागादिस्थाने समकालमेवांगावक्षालनं कर्तुमारब्धौ. तदैव मुक्तौ पटौ. वञ्चयित्वा त- । १२७ ।
योर्जीर्णपटस्वामिना अन्येन विपर्ययो व्यत्यासश्चक्रे नूतनपटमादाय प्रस्थित इत्यर्थः द्वि-
तीयश्च तं निजं पटं याचितुमारब्धः .—अवलक्षश्चानेन. संपन्नश्च तयो राजभवनद्वारे
कारणिकपुरुषसमीपे व्यवहारः . (ग्रं. २०००)

कारणिकैश्च किमत्र तत्त्वमित्यजानद्भिः—सीसओलिहणा इति—शीर्षयोस्त-
न्मस्तकयोः कंकतकेन अवलेखना परोमज्ञानार्थं कृता, लब्धानि च रोमाणि. तत-
स्तदनुमानेन यो यस्य स तस्य वितीर्ण इति कारणिकानामौत्पत्तिकी बुद्धिरिति.

अत्रैव मतांतरमाह.—अन्ये आचार्या ब्रुवते—जाया कत्तणत्ति—तौ पुरुषौ
कारणिकैः पृष्टौ यथा केनैतौ भवतोः पटौ कर्त्तितौ ? प्राहतुः , निजनिजजायाभ्यां त-
तो द्वयोरपि जाये कर्त्तनं कारिते. ततस्तदन्यसंदर्शनात् व्यत्ययेन सूत्रकर्त्तनोपलंभात्

जुना ओढणवाळाए लोभाइने अदला बदला करी एटले के नवुं ओढण उपाडी ते चालतो थयो. त्यारे बीजाए पोता-
नुं ते ओढण माग्युं, पण पेला तेने ओळववा लाग्यो. तेथी तेओनो दरबारमां न्यायाधीश पासे मुकरदमो चाल्यो.

त्यारे कारणिक पुरुषोए आमां खरी वात शी हशे ते नहि जाणी शकवाथी ते बेना माथाना वाळ कांसकीथी
ओळाव्या. ते एटला खातर के तेमांथी ते वस्त्रना तांतणा मळी आवे. ते प्रमाणे तांतणा मळी आवतां तेना अनुमानथी जे
जेनुं हतुं ते तेने आप्युं ए बाबतमां कारणिकोनी औत्पत्तिकी बुद्धि जाणवी .

आ स्थळे मतांतर कहे छे.—बीजा आचार्य कहेछे के ते बे जणने कारणिकोए पूछ्युं के आ तमारां ओढण-
नुं सूत्र कोणे कांतेल छे ? तेओ बोल्या के अमारी स्त्रीओए. त्यारे ते बेनी स्त्रीओ पासेथी सूत्र कंताव्युं. ते जलदी रीते

ज्ञानं निश्चयः कारणिकानां संपन्नो, वितीर्णश्च यो यस्य स तस्येति. (७)

अथ सरमेत्तिद्दारं.—सरमहिगरणे सन्नावोसिरदरि वाहि दंसणविगमो, अ-
ण्ण तत्थणिग चेल्लणाणपुत्ताइ पुरिसादी. ॥ ७४ ॥

(टीका)—इह किल कश्चिद्वणिक् क्वचिद्बहुरंध्रायां भुवि पुरीषमूत्सृष्टुमारब्धः. तत्र च दैवसंयोगात्—सरमहिगरणे इति—द्वयोः सरमयोरधिकरणं युद्धमभूत. तत्र चैकः—सन्नावोसिरदरित्ति—संज्ञा व्युत्सृजतो वणिजः पुच्छेनापानरंध्रमाच्छाद्य तदधोनागवर्त्तिन्यां दर्यां प्रविष्टः, अन्यस्तु तद्दृष्टएव पलाय्यान्यत्र गतः. एवं च तस्यात्यंतमुग्धमतेः शंका समुत्पन्ना—यदयमेकः सरटो नोपलक्ष्यते तन्नुनं ममापानरंध्रेणोदरं प्रविष्टः—इत्येवं शंकावशेन—वाहित्ति व्याधिस्तस्याभूदुदरे.

जणायाथी कारणिकोने निश्चय थयो अने ते प्रमाणे तेमणे जे जेनुं ओढणु हतुं ते तेने अपाव्युं.

हवे सरमानुं द्वार कहे छेः—सरमानी लडाइमां एक संज्ञा मूकवाना स्थळे दरमां पेठो. तेना शकथी व्याधि थइ. तेने पाछुं जोयाथी टळी. बीजा कहे छे के शाक्यभिक्षुए चेल्लाने पूछतां तेणे कह्युं के पुरुष छे के स्त्री छे. ७४

टीका—एक वात चाले छे के कोइक वाणियो घणा दरोवाळी जमीनमां खरचु करवा बेठो. त्यां दैवयोगे बे सरमानी लडाइ थइ. तेमांनो एक ते खरचु बेठेला वाणियानी गांडमां पूछ मारी तेनी नीचेना दरमां पेसी गयो अने बीजो ते देखे तेम नाशीने बीजे स्थळे जतो रह्यो. हवे ते वाणियो बहु मुग्धबुद्धिवाळो होवाथी तेने शंका थइ पडी के एक सरमो नथी देखातो ते नक्की मारी गांडमां थइने मारा पेटमां पेसी गयो छे. आवी शंकाने लीधे तेने पेटमां व्याधि थवा लागी.

निवेदितं च तेन तथाविधवैद्याय यथा ममायं वृत्तांतः संपन्नः. वैद्येनापि स प्रतिपादितः "यदि मम दीनारशतं वितरसि तदा त्वामहं नीरुजं करोमीति." अभ्युपगतं चैतत्तेन. ततो वैद्येन लाक्षारसविलिप्तमेकं सरटं विधाय घटमध्ये च प्रक्षिप्य विरेचकौषधप्रयोगेण पुरीषोत्सर्गप्रज्ञो कारितस्तत्र. ततः—दंसणाववगमो इति पुरीषेणगाहतसरटस्य घटान्निर्गतस्य दर्शनेपगमो विनाशः संपन्नो व्याधेरिति. (७)

अत्रैव मतांतरमाह अन्ये आचार्या एवं ब्रुवंति—तव्वन्निगचिल्लाणाण पुच्छाए इति—तृतीयवर्णिकः शाक्यभिक्षुः क्षुल्लकश्च लघुश्वेतांबरव्रती. तयोः परस्परं पृच्छायां प्रवृत्तायां सत्यां क्षुल्लकेन—पुरुषादि इति—किमयं पुरुषः उत स्त्रीत्युत्तरं दत्तं.

अयमत्र भावः—क्वचित्प्रदेशे केनापि शाक्यभिक्षुणा सरटो नानाविकारैः

तेणे कोइ हुश्यार वैद्यने जणाव्युं के आ रीते मारा संबंधे हकीकत बनी छे. त्यारे वैद्ये तेने जणाव्युं के जो गंनसो सोना म्होर आपे तो तने हुं नीरोगी करुं. तेणे ते कबूल्युं एटले वैद्ये एक सरमाने लाखना रसमां झबोळीने घमामां नाखी ते वाणियाने जुल्लाब आपीने ते घमामां खरचु करवा बेसाड्यो. तेने खरचु आवतां तेना वेगथी हणायलो सरमो घमानी बाहेर नीकळ्यो ते जोइ तेने मांदगी टळी.

इहां मतांतर कहे छे.—बीजा आचार्यो आम कहे छे के तच्चणिक एटले बौद्धमती भिक्षु अने क्षुल्लक एटले नानकमो श्वेतांबर यति, ते बे जणनी पृच्छपच्छमां क्षुल्लके "आ पुरुष छे के स्त्री छे ?" एम उत्तर वाळ्यो.

आ वातनी मतलब आ छेः—कोइक ठेकाणे कोइ बौद्धभिक्षुके सरमाने अनेक चाळा साथे मायुं धुणावतो जोयो. एवामां त्यां कोइ कारणे जैननो चेलो आवी चड्यो. तेने तेणे मश्करी साथे पूछ्युं 'अरे चेला तुं सर्वज्ञपुत्र छे तो क

शिरश्चालयन्नुपलब्धः . तदनु कथंचित् तत्प्रदेशे समागतः क्षुल्लकः तेन सोपहासमेवं पृष्टः–" भो भोः क्षुल्लक, सर्वज्ञपुत्रकस्त्वं, तत्कथय किं निमित्तमेष सरटः शिरो धून्यत्येवं ?" तदनु तत्क्षणौत्पत्तिकीबुद्धिसहायः क्षुल्लकस्तस्यैवं. उत्तरं दत्तवान् यथा "भोभोः शाक्यव्रतिन्नाकर्णय—अयं सरटो भवंतमालोक्य चिंताक्रांतमानसः सन्नूर्ध्वमधश्च निभालयति–किं भवान् भिक्षु—रुपरि कूर्चदर्शनात्, उत भिक्षुकी–अधःशाटकदर्शनादिति. (७)

कागे संखे वंचिय—विन्नायम सट्ठि उण पवसादी, अहो घरिणिपरिक्खा–णिहिफुट्टे रायणुन्नाओ. ॥ ७५ ॥

(टीका)—काक इति द्वारपरामर्शः—संखे वंचियत्ति—संख्याप्रमाणं एव-

हे के शा माटे सरमो आ रीते माथुं धुणावे छे ?' त्यारे ते चेल्लो तरतबुद्धिवाळो होवाथी उत्तर देवा लाग्यो के अरे शाक्यभिक्षु! सांभळ, आ सरमो तने जोइ चितामां पडी ऊंचे नीचे जुवे छे के तुं मोढा पर दाढीमूछ होवाथी भिक्षु छे के लांबी साडी पहेरेली छे एटले भिक्षुकी छे ?

एमज कागडानी संख्या बिन्नातटमां साठहजार छे. ओछा थाय तो परदेश गया छे. बीजा कहे छे के निधि माटे स्त्रीनी परीक्षा करतां वात फूटतां राजानी रजा थइ. ७५

टीका—पूर्वना उदाहरण माफकज कोइक राता कपडावाळाए चेल्लाने पूछ्युं के बिन्नातटनगरमां केटला कागडा छे ? त्यारे चेल्लाए कह्युं के अरे भिक्षु ! साठ हजार कागडा आ नगरमां छे. भिक्षु बोल्यो के जो ओछा अधिका थशे तो शुं करीश ? चेल्लाए कह्युं के जो तारी गणतीमां ओछा थाय तो मोपिर एटले देशांतरमां गया छे एम जाणवुं, अने जो

मेव आत्मकज्ञाते इव रक्तपटेन क्षुल्लकः पृष्टः यथा विन्नायमसट्टित्ति विन्नातटे नगरे कियंतः काका वर्त्तंते ? ततः क्षुल्लकेनोक्तं—अहो भिक्षो षष्टिः काकसहस्त्राणि अत्र नगरे वर्त्तंते.—भिक्षुः—ननु यद्यूना अधिका वा काका भविष्यंति तदा का वार्त्तेति? क्षुल्लकः—ऊणपवासाई इति उना उपलक्षणत्वात् अभ्याधिका वा यदि भवतो गणयतः काकाः संपद्यंते तदा प्रोषितादयः प्रोषिता देशांतरं गताः आदिशब्दादन्यतो वा देशांतरात् प्राघुणकाः आगताः—इदमुक्तं भवति—यदि ऊनाः संजायंते तदान्यत्र गता इति ज्ञेयं,—अथाभ्यधिकास्तर्हि प्राघुणकाः समायाता इति. तदनु निरुत्तरी बभूव शाक्यशिष्यः .

अत्रैव मतांतरमाह.—अन्ये आचार्या ब्रुवते यथा केनाचिद्वणिजा तथाविधाद्-

अधिक थाय तो देशांतरथी माहुणा आवेला समजवा. आथी ते शाक्यभिक्षु निरुत्तर थयो.

इहां मतांतर कहे छेः—बीजा आचार्यो कहे छे के कोइक वाणियाने तेवा पुण्यना योगे कोइ छुपी जग्यामां निधान मळ्युं. बाद तेणे ते निधिने राखवा खातर पोतानी स्त्रीनी परीक्षा करी के ते छुपी वात छानी राखी शके छे के नहि ? एटले के तेणे पोतानी स्त्रीने कह्युं के हुं फारु फरतो हतो तेवामां मारी गांडमां धोळो कागडो पेसी गयो. हवे स्त्रीपणानी चपळताथी तेणीए ते हकीकत पोतानी सहीयरने जणावी, तेणीए वळी त्रीजीने जणावी एम छेवटे राजाए पण ए वात जाणी. त्यारे ते वात फूटतां राजाए तेने बोलावी पूछ्युं के अरे वाणिया! तारी गांडमां धोळो कागडो पेसी गयो एम संभळाय छे ते साची वात छे ? त्यारे तेणे जणाव्युं के स्वामिन्! मने निधान मळेल छे तेथी स्त्रीनी परीक्षा माटे

त्कृतपुण्यप्राग्भारोदयेन क्वापि विविक्तप्रदेशे निधिर्दृष्टो गृहीतश्च. तदनु घरिणिपरिक्खणिहित्ति—गृहिण्या भार्यायाः परीक्षा तेन निधिरक्षणार्थं कृता—किमियं रहस्यं धारयितुं शक्नोति न वेति बुद्ध्या. इदमत्रैदंपर्यं—तेन निजजायैवं प्रतिपादिता, यथा मम पुरीषोत्सर्गं कुर्वाणस्य श्वेतवायसोपानरंध्रं प्रविष्ट इति. तया तु स्त्रीत्वचापल्योपेतया निजसख्याः ख्यापितोयं वृत्तांतः . तयाप्यन्यस्याः .—एवं यावत्परंपरया राज्ञापि ज्ञातेयं वार्त्ता. ततः—फुट्टे रायणुन्नाओ इति स्फुटिते प्रकटंगतेस्मिन् व्यतिकरे पार्थिवेन समाहूय पृष्टोसौ, यथा वणिक् किमिदं सत्यं ? यतः श्रूयते त्वदधिष्टाने पांडुरांगो ध्वांक्षः प्राविक्षदिति. ततो निवेदितं तेन—यथा देव, मया निधिः प्राप्तस्ततो महिलापरीक्षणार्थमिदमसंभाव्यं मया तस्याः पुरतः प्रतिपादितं, यदीयमिदं रहस्यं धारयिष्यति, तदा निधिलाभमस्या निवेदयिष्यामि इति मत्वानेनेति. एवं च सद्भावे निवेदिते राज्ञा तस्य निधिः पुनरनुज्ञात इति. (७)

उच्चार बुड्ढतरुणी—तदणालग्गत्ति नायमाहारे, पत्तेय पुच्छसक्कुलि—सणावोसिरण णाणं तु. ॥ ८६ ॥

आ असंभवित वात में तेना आगळ करी. एवुं धारीने के जो ते आ वात छानी राखशे तो निधाननी वात एने कहीश. आम खरी वात कही आप्याथी राजाए निधाननी तेने रजा आपी.

उच्चारना दृष्टांतमां वृद्धनी तरुणी बीजामां लागतां न्यायमां मत्स्यकनो आहार पूछतां शष्कुलिनो आहार करतां खरच कराव्याथी तेनी खातरी करी. ८६

(टीका)—उच्चार इति द्वारपरामर्शः. —वुड्ढतरुणी इति कस्यचिद्वृद्धब्राह्मणस्य तरुणी जाया समजनि. अन्यदा चासौ तथाविधप्रयोजनवशात्तया सह ग्रामं गंतुं प्रवृत्तः. —सा चाभिनवतारुण्योन्मत्तमानसा तस्मिन्ननुरागं स्वप्नेप्यकुर्वाणा—तदन्तरागत्ति–तस्मान्निजभर्त्तुरन्यस्मिंस्तरुणे धूर्त्ते लग्नानुरागं गता स्वं भर्त्तारं परिमुच्य तेन सह प्रस्थिता इत्यर्थः—इति वाक्यपरिसमाप्तौ. नायत्ति ततो न्यायो व्यवहारः क्वापि ग्रामे तयोर्ब्राह्मण धूर्त्तयोरभूत्. आहारे पत्तेय पुच्छत्ति—ततः कारणिकैः प्रत्येकं त्रीण्यपि तान्यतीतदिवसाहाराभ्यवहारं पृष्टानि. सक्कुलित्ति ततो ब्राह्मणेन तद्भार्यया च सत्कुलिका लक्षण एकएवाहारः कथितस्तदनु सन्नावोसिरण णाणं तु इति विरेचकप्रदाने कृते तेषां त्रितयस्यैकाकारसंज्ञाव्युत्सर्गोपलंभात् ज्ञानं पुनरजायत कारणिकानां यदुतास्यैव ब्राह्मणस्येयं भार्या, नास्य धूर्त्तस्येति. (छ)

टीका—उच्चारना द्वारमां कोइ वृद्ध ब्राह्मणनी जुवान स्त्री हती. हवे एक वेळा कामकाज माटे तेनी साथे ते ब्राह्मण बीजा गामे चाल्यो. पण तेणी नवयौवनथी छकेल होइ तेना पर स्वप्नमां पण प्रीति नहि लावतां बीजा जुवान ठगारामां अनुराग धरी पोताना भर्त्तारने छोडी तेनी साथे चालती थइ. बाद कोइ गाममां ते ब्राह्मण अने धूर्त्तनो न्याय थयो. त्यां कारणिकोए दरेकने गया दिवसे शुं खाधुं हतुं ते पूछ्युं. त्यारे ब्राह्मण अने स्त्रीए शष्कुलि खावानुं सरखुं जणाव्युं. बाद जुलाब आपी खरचु करावतां बन्नेनी एकज आकारवाळी संज्ञा देखावाथी तेमने खातरी थइ के आ स्त्री आ ब्राह्मणनीज भार्या छे, पण ठगारानी ते नथी.

अथ गज इति द्वारं.—गयतुलणा मंतिपरिक्खणत्थ नावाइ उदगरेहाओ, पाहाणभरणतुलणा—एवं संखापरिमाणं. ॥ ८७ ॥

(टीका)—गजस्य कुंजरस्य तुलना प्रारब्धा मंत्रिपरीक्षणार्थं. अयमभिप्रायः—क्वापि नगरे मंत्रिपदप्रायोग्यविशदबुध्ध्युपेतपुरुषोपलक्षणार्थं राज्ञा पटहप्रदानपुरस्सरमेवमुद्घोषणा कारिता—यथा यो मदीय मतंगजं तुलयति तस्याहं शतसहस्त्रं दीनाराणां प्रयच्छामीति. नावाए उदगरेहाओ इति ततः केनापि निपुणधिषणेन नावि द्रोण्यां गजं प्रक्षिप्यागाधे उदके नीतासौ नौर्यावच्चासौ गजभाराक्रांता सती त्रुटिता तावति भागे रेखा दत्ता. ततो गजमुत्तार्य—पाहाणभरणत्ति पाषाणानां भृतासौ तावद्यावत्तां रेखां यावज्जलमध्ये निमग्ना. ततस्ते पाषाणास्तुलिताः .—एवं संख्याया गजगोचरभारपलादिप्रमाणलक्षणायाः परिज्ञानमभूत्तस्य.—यावती संख्या पाषाणप्रति-

हवे गजद्वार कहे छेः—मंत्रिनी परीक्षा माटे हाथीनो तोल करवा मांड्यो. नाव पाणीमां डूब्युं त्यां निशानी करी. बाद तेमां पाहाण भरी तोल करी एम वजननुं ज्ञान मेळव्युं. ८७

टीका–मंत्रिनी परीक्षा माटे हाथीनो तोल करवा मांड्यो एटले के कोइ नगरमां मंत्रिपदयोग्य उत्तम बुद्धिवाळा पुरुषने ओळखवा सारु राजाए पमो फेरवी उद्घोषणा करावी के जे मारा हाथीने तोळे तेने हुं लाख सोना म्होर आपुं. त्यारे कोइ हुश्यार माणसे हाथीने नावमां नाखीने ते नाव ऊंडा पाणीमां आण्युं. त्यां ते हाथीना भारथी जेटलुं भ्रम्युं तेटला भागमां निशानी करी लीधी. बाद हाथीने उतारी तेमां ते निशानी सुधी पाणीमां ते डूबे त्यां लगण पथ-

चद्धजारादीनां तावत्येव गजस्यापीति ज्ञातं तेनेति जावः . ततः परितुष्टमानसेन धराधिराजेन मंत्रिपदमस्यै वितीर्णमिति.

घयणे णामयदेवी—राया ह ण एव गंधपारिच्छा, णति हसणा पुच्छण—कह रोसे धाऊवाहणती. ॥ ८८ ॥

(टीका)—घयण इति द्वारपरामर्शः .—अणामयदेवी रायाहत्ति—कोपि राजा सर्वराहसिकप्रयोजनवेत्तुः स्वकीयजांरुस्याग्रत इदं प्राह,—यद्रुत मम देवी पट्टराज्ञी अनामया नीरोगकायव्रतिका कदाचित् सरोगता सूचकं वातकर्मादि कुत्सितं कर्म न विधत्ते इति—घयणः .— न एवत्ति देव नैवायमर्थः संजवति यन्मानुपेषु वातादि न संजवतीति ततो राज्ञोक्तं,—कथं त्वं वेत्सि ?

रा जर्या. वाद ते पथरा तोळी जोया एटले हाथीना वजननी खातरी थइ. एटले के जेटलुं वजन ते पथराओनुं थयुं तेटलुंज हाथीनुं वजन छे एम तेणे जाण्युं. तेथी राजाए खुशी थइ तेने मंत्रिनुं पद आप्युं.

घयणना दृष्टांतमां राजाए कह्युं के राणी नीरोगी छे.घयणे कह्युं के एम होय नहि. गंध आपतां परीक्षा करी. लुआइ जणातां हसवुं आव्युं. पूछतां वात कही. गुस्से थइ रवाने कर्यो. तेणे जोमा उचक्या एटले अटकावी राख्यो. ८८

टीका.— घयणना द्वारमां कोइक राजा पोतानी सर्वे छानी वातो जाणनार मश्करा आगळ आ रीते बोल्यो के मारी पटराणी एवी अनामय एटले नीरोगकायावाळी छे के कोइ वेळा सरोगतासूचक वातकर्म विगेरे निंदित काम करती नथी. मश्करो बोल्योः—हे देव ! ए वात बनेज नहि के माणस थइ वात विगेरे करे नहि. त्यारे राजाए कह्युं के ते तुं केम जाणी शके छे ?

घयणः—गंधपरिज्ञा इति महाराज, यदा देवी तव गंधानुपलक्षणत्वात पुष्पादि च सुरभिद्रव्यसमर्पयति तदा परीक्षणीया सम्यक्—चातकर्म विधत्ते नवेति ? कृतं चैवमेव धराधिपेन. ततो ज्ञाते देव्याः शठत्वे हसणा इति राज्ञा हसनं कृतं. पुनरपि तयाप्यकाले एव हसंतमालोक्य तं पृष्टोसौ, यथा किमर्थं देव हसितं त्वया प्रस्तावे एवेति ? कहंति ततो यथावृत्तं निवेदितं देव्या नरनाथेन—अथ—रोसे धारुवाहत्ति—तां प्रति रोषे जाते देव्या घाटितो निर्घाटितो घयणः . ततो महतीं वंशयष्टिं निबद्धप्रभूतोपानद्भारामादाय देवीप्रणामार्थमुपस्थितोसौ. पृष्टश्च तया यथा किं रे एता उपानहस्त्वया वंशे निबद्धाः ? तेनाप्युक्तं तावकीं कीर्तिं निखिलां महीवलये ख्यापयित्वा एता घर्षणीया इति. ततो लज्जितया देव्या स्थितिः तस्य कृता—विधृतोसावित्यर्थः . (छ)

मश्करो बोल्यो के महाराज ! ज्यारे राणी तमोने अत्तरफूल विगेरे सुगंधी द्रव्य आपे त्यारे तेनी बरोबर तपास करी के वातकर्म करे छे के नहि ? राजाए तेमज करतां देवीनी लुचाइ जणाइ आव्याथी तेने हसवुं आव्युं, त्यारे वगर प्रस्तावे तेने हसतो जोइ तेणीए पूछ्युं के तमे वगर प्रस्तावे केम हस्या ? त्यारे राजाए देवीने बनेली वात जणावी. तेथी मश्करा ऊपर गुस्से थइ राणीए तेने जतो रहेवा फरमाव्युं; एटले ते मोटी वांसनी लाकडीमां घणां पगरखां बांधी देवीने नमवा आव्यो. आ परथी राणीए तेने पूछ्युं के अरे ! शा माटे आटलां पगरखां तें आ वांसमां बांध्यां छे ? तेणे कह्युं के तारी तमाम कीर्त्तिने भूमंडळमां जणावीने आ बधां मारे घसाववां छे. तेथी देवीए शरमाइने तेने रोकी राख्यो.

गोलग जउमयणक्के पवेसणं दूरगमणडुक्खंमि, तत्तसलागाखोहो–सीयल गाढत्ति कट्टणया. ॥ ८ए ॥

(टीका)—गोलगत्ति द्वारपरामर्शः .—जउमयनक्के पवेसणमितिजतुमयस्य लाक्षामयस्य गोलकस्य नक्के नासिकायां क्रीमतः कस्यचिच्छिशोः प्रवेशनमभूत्. दूरगमणडुक्खंमित्ति दूरंगते च गोलके तस्य गाढं दुःखमुत्पन्नं, तस्मिन् सति तत्पित्रा वार्त्ता कथिता कलादाय. तेनापि—तत्तसलागाखोहोत्ति तप्तया यः शलाकया क्षोभो भेदः कृतो गोलकस्य नासिकामध्यगतस्यैव. तदनु—सीयलत्ति पानीयं क्षिप्त्वा शीतला कृता शलाका. ततश्च गाढत्ति कट्टणया इति–जलावसिक्ता सती गाढा लग्ना सा शलाका गोलके इति कृत्वा आकर्षणं कृतं शलाकायाः . तदाकर्षणे च गोलकोप्याकृष्टः . तदनु सुखितः समजनि दारकः . (७)

लाखनी गोळी नाकमां पेसतां अने लांबी जतां दुःख थयाथी तपावेली सळी खोसी ठंमी पाणी वळगी रहेतां खेंची लीधी. ८ए

टीका—लाखनी गोळी कोइ रमता बाळकना नाकमां पेसी गइ. ते लांबी उतरता तेने सखत पीमा थवा लागी. ते वात तेना बापे कलादने कही तेणे तपावेल लोढानी सळी नाकमां रहेली गोळीमां खोसी. बाद पाणी रेमी तेने ठंमी पामी. एटले ते पाणीथी ठंमी थइने ते गोळीमां वळगी गइ. एथी करीने तेने खेंची एटले गोळी पण खेंचाइ आवी. तेथी ते बाळक सुखी थयो.

त्वं मम नक्षणनिमित्तमेव दैवेन प्रेषितोसि. तेन चानुरूपोत्तरदानकुशलेन झगित्येव स्वं मेहनं दर्शितं.—एवं च प्रथमत एव जिता सा. तथा–काइया पजमंत्ति—कायिकया·प्रतीतरूपया शनैः शनैस्तदक्षररूपं नुवि पद्मं विलिखितं, नणिता च—" धृष्टे, संप्रति सर्वसन्यपुरुषप्रत्यक्षं स्वप्रतिज्ञां निर्वाहय यदि सत्यवादिनी त्वमसि. न च सा तल्लिखितुं· शक्नोति—अत्यंतलज्जनीयत्वात् सामग्र्यनावाच्चेति.—मतांतरमाह.—

अन्ये पुनराचार्या ब्रुवते यथा—कागविट्ठापुञ्जाए इति काकः कश्चित् क्वचित् प्रदेशे विष्टां विकिरन् केनचिद्भागवतेन दृष्टः .—

तत्कालदृष्टिगोचरापन्नश्च क्षुल्लकस्तेन पृष्टः, यथा नो लघुश्वेतांवर, किमिदं काको विष्टां विक्षिपन्नितस्ततो निजालयतीति वद—सर्वज्ञपुत्रको यतस्त्वं. अस्यां च पृष्ठायां नणितं क्षुल्लकेन —यथा —त्रिण्हुमग्गणया इति–एष हि काकः—

र्थी म्याउं? तेने मळतो उत्तर देवामां कुशळ ते चेलाए झट पोतानुं लिंग वताव्युं एरूले पहेलेथीज ते जीताइ. वाद मूत्रनी धारथी धीमे धीमे तेनुं योनिकमळ आलेखी ते तेणीने कहेवा लाग्यो के अरे लुच्ची! जो तुं साचाबोली होय तो हवे तारी प्रतिज्ञा पार पाड. पण तेणी कंइ तेम करी शकी नहि. केमके ते काम अति लज्जामणुं हतुं तेम तेनी पासे तेनी सामग्री पण न हती.

इहां मतांतर कहे छे.—बीजा आचार्यो कहे छे के कोइक नागवते कोइक ठेकाणे कागडाने वीठ फेंकतो जोयो. तेवामां एक चेलो तेनी नजरे पडतां तेने तेणे कह्युं के अरे नाना चेलका ! तुं तो सर्वज्ञनो दीकरो छे माटे कहे

" जले विष्णुः स्थले विष्णुर्विष्णुः पर्वतमस्तके, ज्वालामालाकुले विष्णुः–सर्वं विष्णुमयं जगत्— " इति श्रुतस्मृतिशास्त्रः संपन्नकौतुहलश्च किमत्र विष्णुर्विद्यते न वेति संशयापनोदाय तं मार्गयितुमारब्धः . (७)

मग्गंमि मूलकंमरि—अज्झुववाए कुडंगि पसवत्थं, जायण पेसण रमणे—आगमहासे पसग्गहणं. ॥ ८२ ॥

(टीका)—मार्ग इति द्वारपरामर्शः .—मूलकंमरित्ति मूलदेवकंमरीकधूर्त्तौ कदाचित्कुतोपि निमित्तात् पथि व्रजतः . तत्र चैकः पुरुषस्तरुणरमणीसहायो गंत्र्यारूढः सन्मुखमागच्छन्नवलोकितः. अज्झुववाए इति अध्युपपन्नश्च कंमरीकस्तस्यां योपिति, निवेदितश्च स्वाभिप्रायो मूलदेवाय. तेनचोक्तं—मा विषीद, घटयाम्येनां ते.

के आ कागको वीत्र पेंजनां आम तेम शुं जुवे छे ? आ स्थानमां चलाए उत्तर वाळ्यो के ए तो " जले विष्णुः स्थले विष्णुः " ए श्रुति सांभळी कुतूहलमां पडीने आहिं विष्णु छे के नहि ए संशय टाळवा माटे तेने शोधवा लाग्यो छे.

(मार्ग द्वार)—मार्गमां मूळदेव अने कंमरीक चाल्या. आशक थतां वांसना कुंजमां सुवावड करावत्रा माटे याचना करी. पछमार्गुए स्त्री मोकलावी. कंमरीक ते साथे रम्यो. तेणीए आवीने हसते मुखे मूळदेवनी पाघडी उतारी लीधी. ८२

टीका—मार्गद्वारमां ए वात छे के मूळदेव अने कंमरीक नामना बे ठग एक वखते कोइक कारणे मुसाफरीए नीकळ्या. त्यां तेमणे एक माणस जुवान स्त्री साथे गाडी पर चडी तेमनी सामे आवतो जोयो. कंमरीकनुं मन ते स्त्री

ततः—कुरंगिपसवत्थं जायणत्ति—मूलदेवेन कंडरीक एकस्यां कुरंग्यां वृक्षगहनरूपायां निवेशितः, स्वयं च मार्गस्थ एवासितुमारब्धः. यावदसौ पुरुषः सभार्यः तत्प्रदेशमागतः,—भणितश्च मूलदेवेन—यथैषा मम भार्यात्र वंशकुरंग्यां प्रसवितुमारब्धास्ते, एकाकिनी चासौ, ततस्तस्याः प्रसवार्थं स्वभार्यां मुहूर्तमेकं प्रेषयेत्येवं याचनं कृतं तस्याः.

पेसणत्ति—प्रेषणं च कृतं तेन तस्याः. ततः—रमणे इति—अंबं वा निंबं वा—आसन्नगुणेण आरुहइ वल्ली, एवं इत्थीओ विहु—जं आसन्नं तमिच्छंति.—इति न्यायमनुवर्त्तमानायास्तस्याः कंडरीकेन सह क्रीडने रमणे संपन्ने सति,—आगम हासे पडग्गहणमिति—मूलदेवांतिकमागत्य सहासमुखी "प्रिय तव पुत्रो जात" इति च वदंती मूलदेवमस्तकात् पटग्रहणं कृतवती सा. पठितं च तया निजभर्त्तारं प्रति,–

तरफ खेचायुं एटले तेणे मूळदेवने पोतानो अभिप्राय जणाव्यो. मूळदेवे कह्युं, धीरो रहे, हुं एने मेळवी आपुं. बाद मूळदेवे कंडरीकने एक कुंजमां बेसाड्यो अने पोते रस्तापर बेसी रह्यो. एटलामां ते ठेकाणे ते माणस तेनी स्त्री साथे आवी पहोंच्यो. तेने मूळदेवे कह्युं के आ मारी स्त्री आ वांसना कुंजमां प्रसववा लागी छे अने ते एकली छे, माटे तेने सुवावडमां मदद करवा खातर तमारी स्त्रीने थोडी वार मोकलो. ए रीते तेणे याचना करी.

ते परथी तेणे तेणीने त्यां मोकलावी. हवे एवी कहेवत छे के आंबो के लींबडो जे नजीकमां होय तेना उपर वेलडी चडे छे तेम स्त्रीओ पण जे नजीक होय तेने चाहे छे ए न्यायने अनुसरी ते स्त्री कंडरीकना साथे रमीने मूळ-

यक्ति गडुकी वइरुल्लुलुहुं—वेटा जाया तांह, राणिवि हुंति मिलावडा—मित्त सहाया जांह.

इत्थी वंतरि सच्चित्थितुल्ल नीयाटिकहण ववहारे, हत्थाविसए गावण—गह दीहा गत्तिणे णाणं. ॥ ए३ ॥

(टीका)—स्त्रीति द्वारपरामर्शः . वंतरिसच्चित्थितुल्लत्ति—कश्चिद्युवा गंत्र्या मारूढः सनार्योऽध्वनि व्रजति. नार्या च प्रस्तावे जलनिमित्तमुत्तीर्णा शकटात्. तत एका व्यंतरी तस्य यूनो रूपे लुब्धा सती सत्यतरस्त्री तुल्यरूपमाधाय गंत्र्यामारूढा. प्रस्थितश्चासौ तया सह. तदनु सत्यनार्या पश्चादवस्थिता विलपति यथा—प्रियतम किमिति मामेकाकिनीं कांतारे परित्यज्य प्रचलितोसि ? तीयाऽइकहणत्ति तेनापि

देव पासे आवीने हसते मुखे बोली के कहुं थयुं के तमारे पुत्र पेदा थयो छे. —एम बोलीने तेणीए मूळदेवना माथा परथी पायकी उतारी लीधी. अने पोताना जर्त्तारने आ प्रमाणे कहुं.

गामी, बळदो, तथा तुं पोते खरा जाना हता, तेयामां त्यां बेटो पेदा थयो. केमके जेमने मित्रोनो टेको होय तेमनो जंगलमां पण जेटो थाय छे.

स्त्रीद्वारमां व्यंतरीए साची स्त्री सरखी थइने अतीतादि कयां. इनसाफ करतां हाथ न पहोंचे त्यां कोइ वस्तु गालीने लेवा जणावी. लांबेथी खेंची लेतां व्यंतरी जाणी. ए३

टीका.—स्त्री शब्दे द्वार संजाणो. कोइक युवान पुरुष स्त्री साथे गाडीपर चडी रस्ते रवाने थयो. अवसरे ते-

निश्चयार्थं छ. अपि स्वगृहवृत्तांतमतीतमादिशब्दाद् वर्त्तमानं च पृष्टे—तदनु यथावत् द्वाभ्यामपि कथनं कृतं समग्रस्यापि तस्य.

व्यवहारे इति तदनु कारणिकाग्रतः प्रारब्धे व्यवहारे कारणिकैर्निपुणौत्पत्तिकीबुद्धियुक्तैः—हत्याविसए ठावणं ति हस्तस्याविषयेऽगोचरे स्थापनं कृतं कस्यचित् पटादेर्वस्तुनः—गहत्ति या एतद्दूरस्थितैव ग्रहीष्यति सा एतद्भार्येति वदद्भिः दीहा गरिसणे इति तदनु व्यंतर्या वैक्रियलब्ध्या दीर्घं हस्तं कृत्वा आकर्षणं कृतं तस्य वस्तुनः . तस्मिंश्च सति ज्ञानं संशयापनोदः संपन्नः कारणिकानां यद्रुतेयं व्यंतरीति. तदनु निर्घाटिता सा तैरिति.

नी स्त्री पाणी पीवा गाडी परथी उतरी तेवामां एक व्यंतरी ते युवान पुरुषना रूपमां लोभाइने तेनी ते साची स्त्रीना जेवुं रूप धारण करी गाडी पर चडी बेठी एटले ते तेणी साथे रवाने थयो. त्यारे खरी स्त्री पाछळ रही रडवा लागी के हे प्रियतम, आ जंगलमां मने एकली छोडीने केम चाल्या जाओ छो ? त्यारे तेणे खातरी करवा बन्ने स्त्रीओने पोताना घरनी पूर्वे बनेली हकीकत अने आदि शब्दथी वर्त्तमान काळनी हकीकत पण पूछी. त्यारे बे ए ते बधी बरोबर कही.

बाद कारणिक पुरुषो पासे इनसाफ करावतां तेओ रूडी रीते औत्पत्तिकी बुद्धिवाळा होवाथी तेमणे कोइक वस्त्र वगेरे चीज हाथ नहि पहोंचे त्यां रखावी, अने कह्युं के जे आने लांबे रहीनेज लइ लेशे ते एनी स्त्री सावित थशे. त्यारे व्यंतरीए वैक्रियलब्धिथी लांबो हाथ करीने ते वस्तु खेंची लीधी. तेम थतां कारणिकोने संशय जवा साथे खातरी थइ के आ व्यंतरी छे. बाद तेने तेमणे धमकावी कढावी मेली.

अथ पतिरिति द्वारं.—पतिडुगतुल्लाण परिक्ख—पेसणा वरपियस्स आइओ,
उद्दरागमंतव तुओ—समगगिलाणे असंघयणी. ॥ ९४ ॥

(टीका)—क्वचिन्नगरे कुतोपि प्रघटकात् कस्याश्चित् स्त्रिया द्वौ पती संपन्नौ, भ्रातरौ च तौ परस्परं. लोके महान् प्रवाद उद्घाटितो यथा अहो महदाश्चर्यं यदेकस्या द्वौ पती तथापि पइडुगतुल्लेत्ति पतिद्वयेपि तुल्या समानप्रतिबद्धा एका स्त्री. एष च वृत्तांतो जने विस्तरन् राजानं यावद्गतः .—तुल्योपचारसारा च किल सा तयोर्वर्त्तते नेति ?—अमात्येनोक्तं—न नैवायं वृत्तांतः संभवति यदुत समानमानसिकानुरागा द्वयोरपीति.—ततः प्रोवाच महीपतिः—कथमेतत् ज्ञायते ?

हवे पतिनुं द्वार कहे छे.—बे पति तरफ तुल्य छे तेनी परीक्षा माटे प्रिय पतिने तेणीए पश्चिममां मोकल्यो. मूर्ख तेनी पाछळ रह्यो. ए वात अजाणे पण बने एम धारी फरीने बे एक वखते मांदा पड्यानी खबर आपतां तेणी प्रियपतिने नवळो जणाववा लागी. ९४

टीका—कोइक नगरमां कोइ संयोगना लीधे कोइ स्त्रीना बे पति थया. ते बे अरसपरसमां भाइ हता. हवे लोकमां महोटो पोपाट उठ्यो के केवी मोटी अजायबीनी वात छे के एक स्त्रीना बे पति छे छतां ते बन्नेमां सरखी प्रीत राखे छे. आ वात लोकोमां फेलाती थकी राजा सूधी पहोंची. (राजाए सवाल कर्यो) शुं तेणी खरेखर बे पति तरफ सरखी मेरा चाकरी करती हशे के नहि ? मंत्रिए कह्युं—ए वात नहिज बनी शके के ते बे पति तरफ मनथी सरखी प्रीत राखती होय. त्यारे राजा बोल्यो के ते शी रीते मालम पडे?

मंत्रिणाप्युक्तं—परीक्षा इति—देव, तस्याः परीक्षार्थमेतामाज्ञां देहि यथा द्य त्वदीयभर्तृभ्यां नगरात् पूर्वापरदिग्भागवर्त्तिनोर्ग्रामयोर्गतव्यमागंतव्यं चाद्यैव. ततो वितीर्णा चेयमाज्ञा राज्ञा.—तयापि—पेसणा वरपियस्सत्ति—यः प्रियः पतिस्तस्यापरस्यां दिशि यो वर्त्तते ग्रामस्तत्र प्रेसणं कृतं, सामर्थ्यादितरस्येतस्त—ततः प्रोक्तममात्येन—आइम्मो इति—देव, योपरस्यां दिशि प्रहितः स तस्याः समधिकं प्रियः, यतः तस्य गच्छत आगच्छतश्चादित्यः पश्चाद्भवति, इतरस्य तूभयथापि ललाटफलकोपतापकारीति.

राजा—इहरासंभवत्ति इतरथाप्यनाभोगतोप्येवं प्रेषणे संभवो घटते. अतः कथं निश्चिनुसो यदुतायमेव प्रेयानिति ?—ततोमात्येन नृपः पुनःपरीक्षार्थं ग्रामे

मंत्रिए कह्युं के हे देव, तेनी परीक्षा माटे तेणीने एवी आज्ञा करो के आज तारा भर्त्तारोए आ शहेरथी ऊगमणा आथमणा गामे जवुं तथा आजेज पाछा आववुं. त्यारे राजाए ते आज्ञा आपी. तेणीए जे प्रिय पति हतो तेने आथमणी तरफ जे गाम हतुं त्यां मोकल्यो त्यारे बीजाने बीजी तरफ मोकल्यो ए वात सामर्थ्यथीज जणाइ रहे छे. त्यारे मंत्रिए कह्युं के हे देव ! जेने पश्चिम तरफ मोकल्यो ते तेने अधिक प्रिय छे, केमके तेने जतां आवतां सूर्य पाछळ रहे छे, अने बीजाने तो बे टांकणे कपाळना पट्टने तपावनार छे.

राजा बोल्यो के एम तो कदाच अजाणतां पण मोकले ए संभव छे, माटे ए परथी आपणने खातरी शी रीते थाय के एज एने प्रिय छे ? त्यारे मंत्रिए फरीने बीजी परीक्षा माटे गामे गएला ते बन्नेनी एकी वखतेज मांदगी जणावी पट-

गन्धोरेव तयोः—ममगमिष्याणि इति ममकस्यैककालमेव ज्ञानत्वं सर्वगतत्वं निवेदितं. तौ तयोर्यो छात्रपि पत्नी ग्रामगतौ ज्ञानीभूतौ इत्येककालमेव तस्या ज्ञापितमित्यिभायः—तस्मिश्च ज्ञापिते तया प्रोक्तं योपरस्यां दिशि गतो मद्भर्त्तासो—अलंघयणीत्ति—असंहननी अदृढशरीरसंस्थानवत्त्वः—इति तत्प्रतिजागरणार्थं गच्छामि तावत्. गता च तत्र.—ज्ञातं च सुनिश्चितममारयादिर्नियंदुतायमेव प्रियो विशेषत इति.

पुत्ते भवत्तिमाया—किंजग पइमरण मज्झ एसत्थो, किरियान्नावे जागा—दो पुणो वेइ णो माया. ॥ ९९ ॥

(टीका)—इह आसि कत्थवि पुरे—निवसंती सेट्ठिसत्थवाहाण, पुत्ता पवित्तचित्ता—चत्तारि कलाकलावविऊ. ॥ १ ॥ अन्नोन्नदढप्पणया—पत्ता तरुणत्तणं ज-

णी के तेना पे पति गाम गया हता ते मारा पछ्या छे एम एकी वखते तेणीने जणाव्युं. तेम जणावतां तेणी बोली के मारो जे धणी पश्चिम तरफ गयो छे ते नबळा बांधानो छे माटे पहेलां तेनी सारसंभाळ लेवा जउं एम कही ते त्यां गई. आ परथी मंत्रि वगेरे ताडरी साथे जाणी लीधुं के एज तेणीने विशेष प्रिय छे.

पुत्रमां मायरी मा नाना बाळकनो बाप मरतां आ अने पैसा टको मारो छे एम कही बेठी. बीजो उपाय न होवाथी पुत्रना वे नाग करवा मांड्या एटले खरी मा बोली के ना. ९९

टीका—इहां कोई नगरमां राजा, मंत्रि, शेठ अने सार्थवाहना पवित्र मनवाळा अने कळाना जाण चार पुत्रो हता. १ तेओ एक बीजामां जोर हेताळ रही यौवन पाम्या तोपण क्षणभर वगूटा रहेतां दिलगीर थता हता.

णमणुन्नं, खणमेत्तंपि न विरहं—सहंति, तत्तिं चिय वहंति. ॥२॥ पजणंति अन्नया ते—परोप्परं एक्कमाणसा होउं, किं सोवि नरो गणणं—अहेइ जणमज्झयारंमि ? ॥ ३ ॥ जेण न अप्पा देसंतरंमि तंतूण तोलिओ होइ, को मे कज्जारूढस्स—अत्थि सामत्थ संजोजो. ॥४ ॥ नियसामत्थपरिक्खा हेउं चलिया पन्नायसमयंपि, नियतणुमेत्तसहाया—एगं देसंतरं सव्वे. ॥ ५ ॥ पत्ता दिणद्धसमए—एगंमि पुरे अनायकुलसीला, ओइन्ना कत्थइ देवभवणट्ठाणे अइ पहाणे. ॥ ६ ॥ कह अज्ज भोयणं होहित्ति भणिराण सत्थवाह सुओ, अज्ज मए भो भोयण—मुप्पाइय देय मिइ भणइ. ॥७॥ गविन्नु तिन्निवि तहिं—गणे णगरंतरं अह गागी, पत्तो पुराणवणियस्स आवणे समुवइट्ठो य. ॥८॥ तंमि दिणे किल कस्सइ—देवस्स महूसवो अह पयट्टो, लग्गो धूवविलेवणवासाईणं विणिमओ य. ॥ ९ ॥ जाहे सो पुडियाणं—बंधं काउं न पारए वणिओ,

२ तेओ एक वेळा एक मन धरी एक बीजाने कहेवा लाग्या के जे माणसे परदेशमां जइ काम करवामां पोतानुं शुं सामर्थ्य छे ते नहि तपास्युं होय तेनी माणसोमां शुं गणती थती हशे के ? ३—४ तेओ पोताना सामर्थ्यनी परीक्षा करवा मात्र पोतानुं शरीर साथे लइ अजाते देशांतर जवा नीकळी पड्या. ५ बपोरे तेओ एक नगरमां आव्या पण त्यां ओळख विनाना होवाथी कोइ उमदा देवमंदिरना स्थानमां उतर्या. ६ आजे खावानुं केम करीशुं एम सवाल थतां सार्थवाहनो पुत्र बोल्यो के आज हुं ते पेदा करी लावीश. ७ हवे ते त्रण जणने त्यां बेसारी पोते एकलो नगरमां पेसी एक बुड्ढा वाणियानी दुकाने आवी बेठो. ८ हवे ते दिने त्यां कोइ देवनो महोत्सव चालु थयो हतो एटले अगरबत्ती चंदन तथा सुगंधी वस्तुओनो खूब विकरो थवा लाग्यो. ९ ते वाणियो पडीओ बांधतां मुंझाइ पड्यो. एटले साथ-

ताहे सत्थाहसुओ—साहेज्जं काउ माढत्तो. ॥ १० ॥ पत्ते भोयणकाले—भणिओ वणिएण पाहुणो होहि, पभिणियं तेण कहं—एगागी होमि जं मज्झ—॥ ११ ॥ अन्ने तिन्नि वयंसा—संति बहिं, तो भणाइ वाणियओ, आकारेज्जंतु लहुं—तेविय ते निव्विसेसा मे. ॥ १२ ॥ दिन्नं तेसिं भोयण—मइगउरवसार मायरं काउं, लग्गं च पंचरूवग—मेसिं किल भोयणवयंमि. ॥ १३ ॥ बीयदिणे सेट्ठिसुओ—भोयणदाणं पइण्ण मह काउं, निज्जाओ सोग्गियजणेसु सिररयणसारित्थो. ॥ १४ ॥ पत्तो गणियावाडगमज्झट्ठियपवरदेवकुलमेगं, उवविट्ठो तत्थ तया—पेच्छणगखणो महं आसि. ॥ १५ ॥ एगाए गणियाए धूया नवजोव्वणुज्जला पुरिसं, कंपि न इच्छइ रमिउं—नियसुन्दरत्तण मउम्मत्ता. ॥ १६ ॥ सा तं दट्ठुं अक्खित्तमाणसा पेछिउं समाढत्ता, स-

वाहनो पुत्र तेने मदद करवा आव्यो. १० भोजन वेळा थतां वाणियाए कह्युं के मारो प्राहुणो था. तेणे कह्युं के हुं एकलो केम प्राहुणो थाउं? केमके मारा बीजा त्रण मित्रो बाहेर छे. त्यारे वाणियाए कह्युं के झट तेमने बोलावी लाव, केमके तेओ पण मारे तारा जेवाज छे. ११—१२ तेणे भारे आदरथी तेमने भोजन आप्युं अने तेमां तेने पांच रुपिया खरच थयुं. १३ बीजा दिवसे शेठनो पुत्र के जे सोभागिक जनोना मुगटमणि समान रूपवान हतो ते भोजन लावी आपवानी प्रतिज्ञा करी नीकळी पड्यो. १४ ते गणिकाना पाडामां रहेला एक देवळ पासे आवी बेठो. ए वखते त्यां तमाशो जोवामां आवतो हतो. १५ हवे एक गणिकानी पुत्री नवयौवनथी छकेल होइ पोतानी सुंदरताना मदथी कोइ पुरुष साथे रमवा इच्छती न हती. १६ ते तेने जोइ खेंचाइने कटाक्ष करी अति स्नेहथी गाफल बनी वारंवार जोवा लागी. १७ ए

कमक्खखेव मइनिच्छमुद्धदिट्ठी पुणोपुणवि. ॥ १७ ॥ मुणिओ एस वइयरो—गणियाए तो सतोसचित्ता सा, आमंतिय नियगेहं—नेइ पणामइ य सा धूयं. ॥ १८ ॥ विहिओ चउण्हवि तओ—भोयणतंबोलवत्थमाईओ, रूवगसयसोल्लोऽकिवणभावकलियाइ उवयारो. ॥ १९ ॥ तइयदिणे मच्चसुओ—बुद्धिपहाणो गओ निवघरंमि, जत्थ विवाया वट्टंति—बहुविहा भूरिकाला य. ॥ २० ॥ तत्थय दो महिलाओ—एगं पुत्तं उवट्ठिया घेत्तुं, भणिओ ताहि अमच्चो—भो सामिय सुणसु विण्णत्तिं. ॥ २१ ॥ एत्थागयाणमम्हं—दूरा देसंताराउ पइमरणं, संजायं, दविणमिमं—पुत्तो य इमो समत्थित्ति. ॥ २२ ॥ ता जीइ एस पुत्तो—दविणंपिहु तीइ निच्छयं होइ, लग्गो य बहू कालो—अम्हे तुम्हं सरंतीण. ॥ २३ ॥ ता जह अज्ज विवाओ—एसो

वातनी गणिकाने खबर पडतां ते हर्षित थइ तेने बोलावीने घेर तेडी गइ अने त्यां तेने पोतानी पुत्री पगे पाडी. १८ बाद चारे जण माटे भोजन, तांबूल तथा वस्त्र वगेरेनी उदार दिलथी सो रूपिया खरचीने गोठवण करी. १९ त्रीजा दिने बुद्धिमान् मंत्रिकुमार राजदरबारमां जइ पहोंच्यो के ज्यां लांबा वखतना अनेक तरहना कजीया तपासवामां आवता हता. २० त्यां बे स्त्रीओ एक पुत्रने लेवा झघडती हती. तेमणे मंत्रिने कह्युं के साहेब, अमारी विनंति सांभळो के दूर देशांतरथी अमे इहां आवतां अमारो पति मरण पाम्यो, हवे आ पैसो अने आ पुत्र छे. २१—२२ माटे जेनो ए पुत्र हशे तेनोज आ पैसो पण छे. तेना खुलासा माटे अमोने तमारी पाछळ पडतां घणो वखत नीकळी गयो छे तो हवे आजना आज आ कजीयो तोडीने पुत्र अने धन एकज जणीने सोंपो. त्यारे अमात्य आ प्रमाणे बोल्यो. २३—२४

परिछिन्नई तहा कुणसु, पुत्तं धणं च दाऊण—नासियं तो अमच्चेण. ॥ २४ ॥ अन्नो पुन अवत्थो—कह छिज्जिस्सइ सुहं विवाउत्ति, इय जणिरंमि अमच्चे—जणिय मह्रा मच्चपुत्तेण.—॥ २५ ॥ जइ तुम्हाण मणुन्ना—विवाय मेयं अहं खु छिंदामि, अणुमन्निएण तेणं—जणिया महिलाउ ता दोवि. ॥ २६ ॥ अत्थ संवट्टवण धणं—पुत्तं च. तओ तहाकए ताहिं, उवणीयं करवत्तं—धणस्स जागा य दोवि कया. ॥ २७ ॥ पुत्तस्स नाभिदेसे—करवत्तं जा दुजागकरणाय, आरोवियं, न अन्नह—छिज्जइ एसो विवाउत्ति. ॥ २८ ॥ ता सुयजणणी निक्कित्तिमेण नेहेण जंपिया जणइ,—दिज्जउ पुत्तो वित्तं विमाइमा होउ सुयमरणं. ॥ २९ ॥ नायममच्चसुएणं—जह एस सुओ इमाइ, न इमीए, निछाडिया तओ सा—पुत्तो य धणं च इयराए. ॥ ३० ॥

अहो! आ अपूर्व तकरार शी रीते चूकशे एम मंत्रि बोलवा लाग्यो. तेवामां ते मंत्रिकुमारे कह्युं के जो तमारी रजा होय तो हुं तकरार चोकखी आपुं. मंत्रिए रजा आपी एटले तेणे ते बे स्त्रीओने कह्युं के, २५—२६ तमे धन अने पुत्र हाजर लावो; त्यारे तेओए तेम कर्युं. एटले तेणे एक करवत मंगावी. बाद धनना बे भाग कर्या. २७ अने ते छोकराना बे भाग करवा तेनी नाभि पर करवत चडावी; (अने कह्युं के आम कर्या शिवाय) बीजी रीते आ तकरार चूके एम नथी. २८ त्यारे ते छोकरानी खरी माता खरा प्रेमथी रोचाइने बोली ऊठी के पुत्र अने पैसो आ मारी शोक्यनेज आपो, पण आ पुत्रने मारो मा. २९ आ परथी मंत्रिकुमारे जाणी लीधुं के आ पुत्र आनो छे अने आनो नथी. तेथी पेली ढोंगी माने देशनिकाल करी बीजी खरी माने पुत्र अने धन सोंप्यां. ३० त्यारे तेणीए ते मंत्रिकुमारने पो-

एत्तो नीओ नियमंदिरंमि तो तीइ सो अमच्चसुओ, दीणाराण सहस्सं—कयन्नुयत्तेण स दिन्नं. ॥ ३१ ॥ पत्ते चउत्थदिवसे—रायसुओ निग्गओ नयरमज्झे, जणियं च संति जइ मज्झ—रज्जसंपत्तिपुन्नाइं.—॥ ३२ ॥ तो उग्घडंतु बाढं—अह तप्पुन्नोदएण तत्थ खणे, तप्पुरराया अनिमित्त—मेव जाओ मरणसरणो.—॥ ३३ ॥ अप्पुत्तो य, पउत्ता—गवेसणा रज्जजोगपुरिसस्स, नेमित्तिओवइट्ठो—ठविओ सो तस्स रज्जंमि. ॥ ३४ ॥ चत्तारि वि तो मिलिया—पजणंति परोप्परं पहिट्ठमणा, सामत्थमेत्त कित्तिय — मम्हाणं तो जणंतेवं. — ॥ ३५ ॥ दक्खत्तणयं पुरिस्स — पंचगं, सइयमाहु सुंदरं, बुध्धी सहस्समुल्ला—सयसाहस्साइं पुन्नाइं. ॥ ३६ ॥ सत्थाहसुओ दक्खत्तणेण सेठ्ठीसुओ य रूवेण, बुध्धीइ अमच्चसुओ—जीवइ पुन्नेहि राय-

ताना घरे तेमनी करेला उपकारनो बदलो वाळवा हजार सोना म्होर आपी. ३१ हवे चोथो दिवस उगतां राजकुमार नगरमां फरवा नीकळ्यो अने तेणे कह्युं के जो राज्य मळवानां मारां भाग्य होय तो ते जरूर खुल्लां थाओ. हवे तेनां पुण्यो उघडतां ते वखते ते नगरनो राजा ओचिंतो मरी गयो. ३४—३३ ते अपुत्र हतो तेथी राज्ययोग्य पुरुषनी शोध थवा मांडी; त्यारे निमित्तियाना कहाथी ते राजकुमारने ते राज्य पर स्थापित कर्यो. ३४ बाद ते चारे कुमार मळी आनंदित मनथी मांहो मांहे वात करवा लाग्या के आपणुं केटलुं सामर्थ्य छे ते तपासीए, एम कही तेओ आ रीते बोलवा लाग्याः— ३५ माणसनी हायकारीगरीनी कीमत पांच टका छे, सुंदरतानी कीमत सो टका छे, अकलनी कीमत हजार टका छे, अने पुण्योनी कीमत लाख टका छे. ३६ आ रीते सार्थवाहना पुत्रे हायकारीगरीथी निर्वाह

मुओ. ॥ ३७ ॥ एत्थय पत्थुयमेयं—अमच्चपुत्तस्स तस्स किल बुद्धी, उप्पत्तियत्ति नेया—सेसं तु पसंगओ भणियं. ॥ ३८ ॥ इति.

अथ गाथाक्षरार्थः—पुत्त इति द्वारपरामर्शः .—इह कश्चित् प्रचुरद्रव्यसहायो वणिक् भार्यायुगलसमन्वितो राष्ट्रांतरमवागमत्. तत्र चैकस्यास्तत्पत्न्याः पुत्रः समजनि. एवं च—सवत्तिमायाडिंभगदि—तस्य डिंभकस्य बालस्य तयोर्मध्यादेका माता सवित्री अन्या च सपत्नी संपन्ना. पइमरणत्ति दैवदुर्योगाच्च अघोवत्र तस्मिन् पुत्रके यशःशेषतां ययौ स वणिक्. डिंभकश्च न जानाति का मम जननी तदन्या वा. तदनु निविडमायासहाया प्राह सपत्नी,—ममैषोर्थः पत्युः संबंधी आभाव्यः यतो मया जातोयं पुत्रः इति. जातश्च तयोर्द्वयोरपि व्यवहारः प्रभूतं कालं यावत्.—न च छिद्य-

चलाव्यो, श्रेष्ठीना पुत्रे रूपथी निर्वाह चलाव्यो, मंत्रिकुमारे अपलथी निर्वाह चलाव्यो अने राजकुमारे पुण्येथी निर्वाह चलाव्यो. ३७ आ जगाए प्रस्तुत ए छे के ते मंत्रिकुमारनी जे बुद्धि ते औत्पत्तिकी बुद्धि जाणवी. ते शिवाय बाकीनी वात प्रसंगथी कही बतावी छे.

हवे गाथानो अक्षरार्थ कहीये छीये.—पुत्रद्वारमां आ वात छे के कोइक पुष्कळ पैसादार वाणियो बे स्त्रीओ साथे देशांतरमां दाखल थयो. त्यां तेनी एक स्त्रीने पुत्र थयो. एथी ते बाळकनी ते बे स्त्रीओमां एक सवित्री (सगी मा) अने बीजी सपत्नी (सोक्य मा) थइ. बाद कमनशीबे ते बाळक नानो छतांज ते वाणियो मरण पाम्यो. हवे ते नानो बाळक तो कंइ जाणतो नहि के कोण मारी सगी मा छे अने कोण बीजी छे. एथी पेली भारे कपटी सोक्य मा

तेसौ . ततः किरियाज्ञावे इति क्रियाव्यवहारस्तस्याः अज्ञावे तयोः संपन्ने सति निपुणबुद्धिना प्रागुक्तकथानकोद्दिष्टेन मंत्रिपुत्रेण प्रोक्तं.

ज्ञागा दो पुत्तो इति एष नौ पुत्रो छिन्नागी क्रियतां करपत्रकेण तदंर्धमर्धं पुत्रार्थयोर्जवत्यो दास्यामीत्यानीतं च करपत्रं. यावत् पुत्रकोदरोपरि दत्तं तावत्—बेइ नो माया इति–या सत्या माता सा ब्रवीति सस्नेहमानसा सती प्रतिपादयति यथा नो नैवामात्य त्वयैतत् कर्त्तव्यं, गृह्णात्वेषा मत्पुत्रमर्थं च, अहं तु अस्य जीवतो मुखारविंददर्शनेनैव कृतार्था ज्ञविष्यामीति. ततो ज्ञातं मंत्रिनंदनेन यदुतेयमेव माता, दत्ताश्च सपुत्रोर्थ एतस्यै, निर्घाटिता चापरा इति. (७)

महुसित्थकरुब्जामिय—रयजालीदिट्ठकिणण पतिकहणा, गमणअदंसण तह

बोली ऊठी के पतिनी आ मालमिलकत, मनेज मळवी जोइये, केमके आ पुत्र में जणेलो छे. आ प्रमाणे ते बे जणीनी लांबा वखत लगी दरबारमां तकरार चाली, पण तेनो खुलासो थयो नहि. त्यारे ते बेनो खुलासो नहि मळतां पूर्वे कहेली कथामां जणावेला निपुणबुद्धिवाळा मंत्रिकुमारे आ रीते कह्युं.—

आ तमारा पुत्रना करवतथी बे जाग करीशुं अने तेनो अकेक अर्ध पुत्र मागती तमोने आपीशुं, एम बोली तेणे करवत मंगावीने जेवी ते छोकराना पेट पर चलावी के तेटलामां जे साची माता हती ते मनमां स्नेहवाळी होवाथी कहेवा लागी के हे अमात्य, तारे ए काम नहिज करवुं. आ मारी सोक्यज भले मारा पुत्रने तथा पैसाने ल्ये, हुं तो ए जीवतानुं मुखकमळ जोइनेज आनंदी रहीश. त्यारे मंत्रिकुमारे जाण्युं के एज माता छे; एथी तेणीने पुत्र साथे पै-

ठाण—पासणा छुट्टसीअत्ति. ॥ ५६ ॥

(टीका)—मधुसित्थ इति द्वारपरामर्शः .—करुव्वामियत्ति केनापि राज्ञा सर्वस्मिन्निजदेशे मदनकरः पातितः यदुत सर्वेणापि लोकेन ममैतावत् मदनमानीय दातव्यमिति. इतश्च क्वापि ग्रामे कस्यचित् कोलिकस्य उद्भ्रामिका कुलटा वर्त्तते जाया. रयजाली दिट्ठत्ति अन्यदा च तया केनचिदुपपतिना सह रतं निधुवनमासेवमानया जाल्याः पीलुककुडंग्या मध्ये भ्रामरं दृष्टं. ततः—किणणपइकहणा इति राजदेयमदनं क्रीणतः सतः पत्युः कथनं कृतं तया यथा मा क्रीणीहि त्वमेतत् यतो मया तत्र स्थाने भ्रामरमालोकितमास्ते स्वयमेव, अतस्तेदव गृहाण, किमनेन निः—प्रयोजनेन द्रविणव्ययेन कृतेन प्रयोजनमिति. गमणे दंसणत्ति तदनु तेन सन्नार्येण

सो सोंप्यो अने बीजीने देशनिकाल कहाडी.

हवे मधुसिक्थनुं द्वार कहे छे.—मधुसिक्थ ते एम के मीणनो कर पाड्यो. हवे कोइनी उद्भ्रामिका एटले कुलटा स्त्री हशे. तेणीए कोइ साथे रमण करतां पेरुनी एक जारमां मधपूडो जोयो. बाद तेना पतिए मीण खरीदवा मांडतां तेणे ते वात कही. तेणे ते साथे जइ जोयुं तो नहि दीठुं, त्यारे ते स्त्री रमती वेळा जेम पडी हती तेम पडीने बताववा लागी. ए परथी पतिए जाण्युं के ते दुष्टशील छे. ५६

टीका—कोइक राजाए पोताना सघळा मुलकमां मीणनो कर पाड्यो के सौए आटलुं मीण लावी आपवुं. हवे कोइ गाममां कोइ कोळीनी चंचळ स्त्री हती. तेणीए एक वेळा कोइ जार साथे रमतां पेरुनी जारना झुंडमां मधपूडो जोयो. बाद

कुडंग्यां गमनं कृतं मदनोपलंनाय.—यदा चादर्शनं निपुणं निजालयतोपि अनवलोकनं मदनस्य संपन्नं तस्य, तदा जणिता तेन सा यथा हले न दृश्यते तत्. ततः तहळाणं पासणा इति तथास्थानं चौर्यनिधुवनकालजावी आकारस्तया धृतः दृष्टं च तद्व्रामरं गृहीतं च कुट्टसीलत्ति तदनु ज्ञातं कोलिकेन यडुत दुष्टशीला विनष्टशीला इत्यस्मात् स्थानकरणलक्षणाध्धेतोरिति. (७)

मुद्दिय पुरोह णासावलाव गह मंति रम्म परिपुच्छा, सिट्ठे जूए मुद्दा—गह लाज परिछय प्पिणणा. ॥ ८७ ॥

टीका—मुड्डिकेति घारोपक्षेपः—पुरोहत्ति पुरोधा पुरोहित इत्यर्थः तस्य

राजाने आपवानुं मीण खरीदता धणीने तेणीए कहुं के ए खरीदो मा, केमके में एक ठेकाणे जाते मधपूडो जोयेलो छे माटे ते लावीशुं. आ फोकटना पैसा खरचवानुं शुं काम छे? आथी कोळी स्त्री संघाते मीण मेळववा ते कुंजमां गयो. तेणे त्यां खूब जाळ्युं पण मीण दीठुं नहि, त्यारे ते स्त्रीने कहेवा लाग्यो के अली, ते तो देखातुं नथी. त्यारे तेणी रमती वेळा जेम सूती हती तेम तेणीए आकार धर्यो एटले ते जोयुं अने लीधुं. आ आकार उपरथी कोळी चेती गयो के ते वगरुंली छे.

मुद्रिकाद्वार ते एम के पुरोहिते थापण ओळव्याथी तेनो धणी गांडो वन्यो. मंत्रि तथा राजाए परपूछ करी. तेणे हकीकत कही. वाद राजाए पुरोहित साथे द्यूत रमी तेनी मुद्रा लइ थापण मेळवी परीक्षा करी तेना असल मालेकने सोंपी. ८७

टीका—कोइक नगरमां कोइक जीखारीए परदेश जतां पोतानुं द्रव्य पुरोहितने त्यां थाप्युं. ते पाछो आवी

गृहे क्वचिन्नगरे केनचिद्द्रमकेण देशांतरं यियासुना, नासत्ति—न्यासो निक्षेपो निजद्रव्यस्य कृतः . प्रत्यागतश्च यदासौ याचते तं तदा पुरोधसा अपलापत्ति— अपलापोपह्नवो न किंचित् त्वया मम समर्पितमेवं लक्षणो विहितः. ततस्तस्य स्वकीयं द्रव्यमलजमानस्य ग्रहो ग्रहिलत्वं संजातं. मंतित्ति अन्यदा राजमार्गे व्रजन्मंत्री तेन दृष्टः , ज्ञणितश्च पुरोहितभ्रांत्या यथा देहि मे पुरोहित दीनारसहस्रं यन्मया प्राग् तव समर्पितमासीदिति.

चिंतितं च मंत्रिणा.—नूनं अयं वराकः पुरोहितेन अनाथ इति संज्ञाव्य मुषितः . कृपा चास्य तं प्रति संपन्ना. निवेदितश्चायं वृत्तांतस्तेन पार्थिवाय. ततः रणा परिपुष्टा इति राज्ञा पृष्टः पुरोहितः तदग्रतोप्यपह्नुतमतेने. द्रमकश्च सर्वं सप्रत्य-

मागवा लाग्यो एटले पुरोहिते अखाणा कर्या के तें कंइ मने आप्युंज नथी. आ रीते ते ज्ञीखारीने पोतानुं धन नहि मळतां ते घेलो बनी गयो. एक वेळा तेणे रस्ते जता मंत्रिने जोइ पुरोहित मानीने तेने कह्युं के हे पुरोहित, में जे तने हजार सोनाम्होर पूर्वे सोंपी छे ते आप.

मंत्रिए धार्युं के खरेखर आ रांकने पुरोहिते अनाथ जाणी मुसाव्यो लागे छे. आथी तेने तेना पर दया आवी, एटले ते हकीकत तेणे राजाने जणावी. त्यारे राजाए पुरोहितने पूछयुं पण तेना आगळे पण तेणे ते वात जमावी. बाद राजाए ज्ञीखारीने खानगीमां खातरी साथे दिवस, मुहूर्त तथा राखती वखतना साक्षि वगेरे पूछतां तेणे ते बधी हकीकत कही. हवे राजाए एक वेळा पुरोहित साथे जुगार खेलतां तेने खबर न पडे तेम तेना नामवाळी वींटी लइ ली-

यं दिवसमुहूर्त्तस्थापनासमयसाक्षिलोकप्रभृति नृपेण निर्विजने पृष्टः . सिद्धे इति शिष्टे कथिते तेन सर्वस्मिन्नपि वृत्तांते —जूए इति अन्यदा राजा पुरोहितेन सह द्यूतं रंतुमारब्धः . तत्र चालक्षितमेव केनाप्युपायेन मुद्दागहत्ति पुरोहितस्य नामांकं मुद्रारत्नं गृहीतं भूमीभुजा. तदनु पूर्वमेव व्युत्पादितस्यैकस्यात्मपुरुषस्य हस्ते न्यस्तं तद्,— भणितश्चासावकांते यथा पुरोहितगृहे गत्वा अनेनाभिज्ञानेन पुरोहितेन प्रेषितोहमिति निवेदनपूर्वं द्रमकसंबंधिनं दीनारनकुलकं याचस्व. गतश्चासौ तत्र. लाभत्ति लब्धश्च नकुलकः, निक्षिप्तश्चान्यनकुलकमध्ये. आकारितश्च द्रमकः भणितश्च,— गृहाणामीषां मध्यात् स्वकीयं नकुलकं. गृहीतश्च तेन स्वकीय एव. परिच्छियप्पिणणा इति एवमौत्पत्तिकीबुद्धिबलेन परिच्छिद्यार्प्पणं ढौकनं कृतं राज्ञा तन्नकुलस्य. जिह्वा च छिन्ना पुरोहितस्येति.

अंकेवंचिय पल्लट्टयंमि तह सीवणा विसंवयणं, असे भुयंगगोहिय —अंकिय-

धी, अने ते पूर्वे शीखवेला पोताना एक माणसने सोंपी एकांतमां तेने जणाव्युं के पुरोहितना घरे जइ आ निशानी साथे पुरोहिते मने मोकलेल छे एम कही भीखारीनी सोनाम्होरवाळुं नोळुं मागी लाव. तेणे त्यां जइ ते मेळव्युं. बाद राजाए ते नोळाने बीजा नोळाओमां भेळवी द्रमकने बोलावी कह्युं के आमांथी तारुं नोळुं लइ ले. तेणे पोतानुं नोळुंज लीधुं. आम औत्पत्तिकीबुद्धिवडे परीक्षा करी राजाए ते तेने सोंप्युं अने पुरोहितनी जीभ कपावी.

अंकद्वार ते पूर्वनी माफकज नोळुं पलटावी पहेला माफक सीवी राख्युं. तेमां खरा रुपीया भरता समाया नहि.

गोचेभिगामुयणं. ॥ ए८ ॥

(टीका)—अंकेवंचियत्ति—अंके इति छारपरामर्शः एवमेव प्राच्यज्ञातवत् केनापि कस्यचिद्धेश्मनि खरकदीनारसहस्रभृतो नकुलको निक्षिप्तः , मुद्रा च स्वकीया दत्ता. पल्लट्टयंमित्ति तेनापि कूटरूपकन्नरणेन परिवर्त्तने कृते—तह सीवणा इति—तथैव सीवनं कृतं नकुलस्य. आगतेन स्वामिना याचितोसौ नकुलको लब्धश्च. याव न्निन्नालयति तावत् कूटकाः सर्वे दीनारा इति. कारणिकप्रत्यक्षं च व्यवहारः प्रवृत्तः. तैश्च लब्धदीनारसंख्यैस्तथैव सत्यदीनाराणां स नकुलो भृतः त्रुटितश्च. तदनु विसंवयणमिति सत्यदीनाराणां ऽव्याधिकत्वेन पुष्टरूपत्वात् तत्र अमानलक्षणं संपन्नं. ततो दापितोसौ खरकदीनारान् दंभितश्चेति.

बीजा कहे छे के हेरान थयेलाए जुगारीओनी सलाह लइ हरीफनी दीकरीने अंक आपी अटकावी एटले पछी वेनी पतावट वट थतां गाय दीकरी मोकलावी. ए८

टीका—अंकद्वारमां पूर्वना दृष्टांत माफक कोइके कोइकना घरे हजार सोनाम्होरथी जरेलुं नोलुं थाप्युं, अने ते पर पोतानुं सील कर्युं. हवे पेलाए तेमां कूमा रुपीया जरी ते पलटावी जेम हतुं तेम सीवी राख्युं. तेना मालेके आवी ते माग्युं एटले ते तेणे आप्युं. हवे ते मालेक जेवो जुवे छे के वधी खोटी म्होर जणाइ एटले तेणे दरबारमां जइ फरीयाद करी. त्यां न्याय आपनार अधिकारिओए म्होर केटली हती तेनी संख्या पूछी. बाद ते नोलामां साची म्होरो जरी के त्रूटी गयुं, केमके साची म्होरोमां अधिक द्रव्य होवाथी ते झाझी होतां माइ शकी नहि. आम विसंवाद आववाथी तेनी पासेथी खरी म्होरो कहामवी.पेलान अपावी अने दंभित कर्यो.

अन्ये आचार्या ब्रुवते यथा केनचित् पुरुषेण निजमित्रगोकुले स्वकीया गावश्चरणार्थं प्रक्षिप्ताः. मित्रेण च लुब्धेन स्वकीयास्ताश्च गावः स्वनामांकाः कृताः याचितश्च प्रस्तावे तेनासौ यथा समर्पय मदीया गाः. तेनापि प्रत्युक्तं यथा गृहाण यासां नास्त्यंकस्ताः. ज्ञातं च तेन यथा वंचितोस्मीति. ततः जुयंगगोहियत्ति जुजंगा द्यूतकाराः गोजितेन पराभूतेन सता बुद्धिलाभार्थमवलगिताः दत्ता च तैरौत्पत्तिकीबुद्धिसारैर्बुद्धिः यथा तस्य पुत्रीः केनाप्युपायेन स्वगृहमानीयमात्मपुत्रिकाभिः सह अंकियत्ति अंकिताः कुरु. कृतं च तथैव तेन. याचितश्च मित्रेण स्वपुत्री. प्रतिभणितं च तेन याः काश्चिदपातितांकाः सुतास्ता गृहाण. ततो द्वाभ्यामपि वंचितप्रतिवंचिताभ्यां—गोचेडियामुयणंति गवां चेटिकानां च मोचनं कृतं.

बीजा आचार्य कहे छे के अंकनो दृष्टांत तेएम के कोइक माणसे पोताना मित्रना गोकुलमां पोतानी गायो चरवा मोकलावी. हवे ते मित्रे लोभमां पडी पोतानी अने तेनी गायो पर पोताना नामनुं अंक लगाडी दीधुं. बाद अवसरे पेलाए पोतानी गायो मागी त्यारे तेणे जवाब आप्यो के जआ अंक वगरनी छे ते ले. आथी मित्र समजी गयो के एणे मने ठग्यो छे. तेथी तेणे पराभव पामी अक्कल मेळववा खातर जुगारीओनी सलाह लीधी. त्यारे तेओ ओत्पत्तिकीबुद्धिवाळा होवाथी तेमणे ए अक्कल बतावी के तेनी दीकरीओने तारे कोइ उपायथी पोताना घरे तेडी पोतानी दीकरीओ साथे तेमना अंग पर छाप लगाडी देवी. तेणे तेमज कर्युं. हवे पेलाए दीकरीओ मागी एटले तेणे कह्युं के जेमना पर छाप न होय ते दीकरीओ लइ जा. आम बे जण ठगाया एटले पेलाए गायो मोकलावी अने बीजाए दीकरीओ मोकलावी.

णाणेवंचिय पल्लट्ट णासकालेण नवर विम्माणं, अन्ने नरिंददेवय—ज्हाणं टं-क्ओ झत्ति. ॥ ८८ ॥

(टीका)—नाणेवंचियत्ति ज्ञानके इति द्वारोपक्षेपः—एवमेव प्रागुज्ञाते इव किल केनचित् कस्यचिन्निक्षेपकः समर्पितः. तेन च पल्लट्टत्ति—नकुलकमध्यगतानां पणानां परिवर्त्तः कृतः. प्रत्यागतेन तेन याचितोसौ. लब्धश्च नकुलकः. यावदुद्घाटयति तावन्नवान्निक्षिप्तपणान् पश्यति. विवदमानौ च तौ कारणिकानुपस्थितौ. लब्धवृत्तैश्च तैः संपन्नौत्पत्तिकीबुद्धिभिः—नासकालेण नवर विम्माणंति न्यासकालेन निक्षेपसंवत्सररूपेण नवरं केवलं पणानां ज्ञानं कृतं यथान्ये इमे पणा अल्पद्रव्यत्वात्, निक्षेपकाले च टंककसाम्येपि अन्ये आसन् बहुद्रव्यत्वात्. तस्मात्प्राच्यपणापलापकारी एष इति निगृहीतः

ज्ञानकद्वारमां एज रीते पलटामण थतां थापण राखवानां काळथी फकत खातरी थइ. बीजा कहे छे के राजाए करावेल देवतानी प्रतिमां टांचथी झट सामे दोरुवानुं करावती. ८८

टीका.—ज्ञानकद्वारमां पूर्वना दृष्टांत प्रमाणेज कोइए कोइने त्यां थापण मेली. तेणे नोळामां रहेल सिको बदली नाख्यो. थापण मेलनारे पाछा आवी नोळुं माग्युं के तेणे आप्युं. तेणे उघाड्युं के अंदर नवो सिक्को जोयो. तेथी बे लडता लडता न्याय करनारा पासे गया. तेओए हकीकत पूछी औत्पत्तिकीबुद्धिथी क्या वर्षमां थापण मेली ते वध करी सिक्कानी खातरी करी के सिको बीजो छे अने तेमां कमती माल छे. अने सरखी छाप छतां पण थापण रा-

अत्रैव मतांतरं.—अन्ये ब्रुवते नरिंददेवयत्ति नरेंद्रेण केनचित् द्रव्यलोभिना क्वापि पर्वतविषमप्रदेशे मार्गतटवर्त्तिनि यंत्रप्रयोगेण विचित्राभरणभूषिता देवताप्रतिमा कारिता. ततः सार्थवाहादिलोकस्तेन प्रदेशेन गछन् कौतुकेन तद्दर्शनार्थं देवकुलगर्भगृहे प्रविशति,—यदा चासौ तद्द्वारि पादनिक्षेपं करोति तदा—उट्ठाणं टंकओ झत्ति इति—उत्थानं संमुखं चलनं टंकात्ततो विषमपर्वतप्रदेशात् झगित्येव तस्य देवता करोति. एवं च छलेन प्रतिमाचौरस्त्वमिति कृत्वा गृह्यतेसौ प्रछन्ननियुक्तराजपुरुषैराछिद्यते च सर्वमपि धनं ततः सकाशात्. एवमौत्पत्तिकीबुध्ध्युपायेन राजा द्रव्यसंग्रहं कृतवानिति. (७)

भिक्खुंमिवि एवंचिय—जुयंग तव्वेस णास जायणया, अणे बाउड वसही

खती वेळा जूदो सिक्को हतो केमके तेमां वधु माल हतो. तेथी ते जूना सिक्काने वदलावनारने पकडी तेने सजा करी.

अहीं मतांतर कहे छेः—बीजा आचार्य कहे छे के कोइ पैसाना लोभी राजाए कोइ पहाडनी रस्ता पर आवती टोंचमां यंत्र गोठवीने अनेक आभरणोथी शणगारेली देवमूर्ति करावी. वाद ते रस्ते जता शेठ साहुकार वगेरे कौतकथी तेना दर्शन करवा देवलना गभारामां पग मेलता के ते मूर्त्ति तेमने झट त्यांथी पोता सामे खेंची लेती. एवामां छाना रहेला सिपाइओ तेमने प्रतिमाना चोर कही पकडी लेता अने तेमनुं तमाम धन तेमना पासेथी लूंटी लेता. आ रीते औत्पत्तिकीबुद्धिना वळथी राजाए द्रव्य एकठुं कर्युं.

भिक्षुद्वारमां पण पूर्वनी माफक जुगारीओए तेनो वेष लइ थापण राखवानो ढोंग कर्यो एटलामां पेलो मागवा आव्यो. बीजा कहे छे के कोइ भिक्षु नागाना मठमां रहेतां तेमणे त्यां गधेडी पूरी एटले पेलाए कपडा वाळी तेमनीज

—खरिचीवरस्राद्द जराही. ॥ १०० ॥

(टीका)—भिक्खुंमिवि एवंचियत्ति भिक्षाविति द्वारपरामर्शः—एवमेव प्रास्यज्ञातवत् केनापि भिक्षुणा कस्यचित्पुरुषस्य संबंधिनो न्यासस्यापह्नवः कृत इत्यर्थः. ततस्तेन वंचितपुरुषेण भुयंग इति भुजंगानां द्यूतकारिणां निवेदितं यथायं रक्तपटो मदीयं निक्षेपकमपलप्य स्थित इति. ततस्तैस्तस्योपरि कृपां कुर्वाणैराद्यबुद्धिसहायैः—तब्वेहनासक्ति तस्य भिक्षोर्वेषं कृत्वा रक्तपटैर्भूत्वेत्यर्थः तस्यैव भिक्षोः समीपे गमनं कृतं, भणितश्चासौ यथा—

वयं तीर्थवंदनार्थं गमिष्याम इत्येनमस्मदीयं सुवर्णं निक्षेपकं गृहाण, प्रत्यागतानामस्माकमर्पयेस्त्वमिति. एवं च ते यावदर्पयितुमारब्धा न चार्पयंति ताव-

फजेती करी. १००

टीका—भिक्षुद्वारमां पूर्वना दृष्टांत माफक कोइक भिक्षुके कोइ माणसनी थापण ओळवी. त्यारे ते माणसे जुगारीओने जणाव्युं के आ गेरुकीओ मारी थापण ओळवी बेठो छे. त्यारे तेओए तेना पर कृपा करी औत्पत्तिकीबुद्धियी भगवो वेष पहेरी बावा बनीने ते भिक्षु पासे गया अने तेने आ रीते कहेवा लाग्या.

अमे तीर्थ वांदवा जशुं, एथी करीने अमारुं सोनुं तुं थापण तरीके राख अने पाछा वळीये त्यारे अमने आपजे एम कही तेओ आपवानी तैयारी करवा लाग्या पण हजु ते तेमणे आप्युं न हतुं तेटलामां ते ठगायला माणसे संकेत प्रमाणे ते दरम्यानमां आवीने पोतानी थापणनी मागणी करी के हे भिक्षु, मारी पहेलां लीधेली थापण

तेन वंचितपुरुषेण तत्संकेतितेनैवावांतरे समागत्य जायणया इति याचनं कृतं स्वकीयनिक्षेपकस्य यथा मदीयं प्रागगृहीतं निक्षेपकं तावदर्पय भो भो भिक्षो . ततस्तेन यद्यहमेतस्य न्यासं न ढौकयिष्यामि तदा एते न समर्पयिष्यंति मम स्वीकीयनिक्षेपकान् वंचकं मां मन्यमाना इति तत्क्षणादेव समर्पितः . द्यूतकारभिक्षुभिरपि मिषांतरं कृत्वा नार्पिता निक्षेपका इति.—अत्रैव मतांतरं.

अन्ये ब्रुवते यथा कश्चिच्छाक्यभिक्षुः क्वचित् संनिवेशे संध्याकाले मार्गश्रांतः सन्—अवाउरुवसही इति अव्यापृतानां दिगंबराणां वसतौ मठरूपायां रात्रिवासायोपस्थितः . तत्र च प्रागेव भिक्षुदर्शनं प्रति संपन्नमत्सरैस्तदुपासकैः सकपाटं सदीपं चापवरकमेकं प्रवेशितः—खरिचीवरदाह उड्डाहो इति ततो मुहूर्त्तांतरे शयनी-

आप. त्यारे तेणे विचार्युं के जो हुं एने थापण नहि आपीश, तो एओ मने ठगारो गणीने पोतानी थापण नहि आपशे. एथी तरतमांज तेने ते आपी दीधी. वाद पेला जुगारी बावाओए पण बीजुं मिष करीने पोतानी थापण तेने नहि आपी. इहां मतांतर कहे छे.

बीजा आचार्य एम कहे छे कोइक बौद्धभिक्षुक रस्ते चालतां थाक्यो थको सांजे कोइक गामरुामां दिगंबरोनी वसतिमां रातवासो करवा आव्यो. हवे तेमना उपासको प्रथमथीज बौद्धभिक्षुओ तरफ इर्ष्यालु होवाथी तेमणे तेने कमाड अने दीवावाळी एक ओरडीमां उतारो आप्यो. वाद एकाद मुहूर्त्ते ते जेवो शय्या पर सूतो के तेमणे त्यां गधेडो पूरीने दरवाजो बंध कर्यो. त्यारे तेणे विचार्युं के नक्की एओ मने फजेत करवा इच्छे छे तो कहेवत छे के सौ जीवोने पोताना भाव प्रमाणेज फळ मळे छे एटले एमनेज फजेत करवा एम धारीने तेणे वळता दीवानी शिखानी अग्निथी सघ-

यस्यस्य तस्य खरीधक्करिका प्रवेशिता, द्वारं च स्थगितं. ततः परिभावितं च तेन " नूनमेते मामुड्डाहयितुमिच्छंति". ततो भावानुरूपफलभाजः सर्वे जीवा इत्येतेष्वेव पतत्ववसाय इति विमृश्य प्रज्वलत्प्रदीपशिखानलेन दग्धानि सर्वाण्यपि चीवराणि, अवलंबितं च नाग्न्यं, दैवाच्च प्राप्तापवरकमध्ये एव पिच्छिका. प्रभाते च दिगंबरवेषधारी गृहीत्वा दक्षिणकरेण खरिकां यावन्निर्गंतुमारब्धस्तावन्मीलितस्तैः सर्वोपि तत्संनिवेशलोकः. भणितं च तेनोप्फुरकंधरेणोच्चस्वरेण च भूत्वा—" यादृशोहं तादृशाः सर्वेप्येते " इति भिक्षोरौत्पत्तिकीबुद्धिरिति (७)

चेमगनिहाणलाभे—भद्दिएंगारगहण पुत्तत्ति, इयरेण लेप्पवाणरणिमंतणा चेरुपुत्तत्ति ॥ १ ॥

ळां कपडां बाळीने नग्नपणुं धारण कर्युं, तथा दैवयोगे ते ओरडामांथीज तेने मोरपीछ पण मळी आवी, सवार थतां ते दिगंबरनो वेषधारी थइने जमणा हाथे गधेडी पकडी जेवो नीकळवा मांड्यो तेवामां तेमणे सघळा गामना लोक त्यां आणेला ते वच्चे तेणे ऊंचा कंधे ऊंचे स्वरे बूम पाडी के जेवो हुं छुं तेवाज ए सघळा छे. ए बौद्धभिक्षुनी औत्पत्तिकीबुद्धि जाणवी.

चेटकद्वारमां ए वात छे के निधान मळतां सारो दिन जोवराव्यो. तेवामां एके अंगारा भरी धन लइ लीधुं अने वळतो बोल्यो के आपणे अपुण्य छीये. त्यारे बीजाए तेनी मूर्त्ति करी ते पर वांदराने खवरावना मांड्या. बाद तेना चेटक एटले छोकरा संताडी कर्युं के आपणे अपुण्य छीए. १

(टीका)—चेरुग इति द्वारपरामर्शः—किल क्वचित् कौचित् द्वौ वयस्यौ परस्परं प्रणयपरायणौ वसतः. तयोश्च कदाचित् क्वचित् शून्यगृहादौ हिरण्यपूर्णनिधानलाभः समजनि—तद्वादिणंगारगहणपुन्नत्ति परिज्ञावितं च तद्ग्रहणोचितं नर्दं दिनं ताभ्यां—लब्धं च तद्दिनात् द्वितीयदिने. गतौ च तौ स्वगृहं. तत एकेनाशुद्धाभिसंधिना तद्धात्रावेवांगाराणां भृत्वा ग्रहणमुपादानं कृतं द्रविणस्य. प्रभाते च यावदागतौ तावत् पश्यतोंगारान्—किमिदमित्थमकस्मादेवान्यथा संवृत्त—मिति यावत् परस्परं जल्पतस्तावद्भणितं निधिग्राहकेण—"अहो अपुण्यमावयोरिति रात्रिमात्रांतरे एव निधिरंगाररूपतया परिणत इति". ततो ज्ञातमितरेण नूनमस्य मायाविनः कर्मेदं.

ततः—लेप्पवानरनिमंतणा चेरु पुत्ताणि लेप्यं तस्यैव वंचकमित्रस्य प्रतिबिंबं

टीका—चेटकद्वार ते एम के कोइक स्थळे अरस्परस प्रीतिवाळा वे मित्रो रहेता हता. तेमने एक वखते कोइ शूना घरमां सोनाथी भरेल निधान जमी आव्युं. त्यारे तेमणे ते लेवा माटे सारा दिननी तपास करी तो वळतो दिवसज सारो जणायो. आथी ते दिने तेओ घेर आव्या. बाद एक जणे दानत बदलावी रातेज धन लइने ते निधानमां अंगारा भरी दीधा. हवे प्रभाते तेओ त्यां आव्या के त्यां अंगारा दीठा. तेओ अरस्परस बोल्या के आ ओचिंतुं ते केम बदलाइ गयुं, तेवामां निधान लइ जनार बोल्यो के अरे आपणे अपुण्य के एक रातना आंतरामां निधान अंगारारूप थइ गयुं. आ परथी बीजाए जाण्युं के नक्की आ काम ते कपटीनुंज करेलुं छे.

मृन्मयं निजगृहमध्ये तेन कारितं, तन्मस्तके च नित्यमसौ भक्तं मुंचति, द्वौ च वानरौ तन्मस्तकोपरि भक्तं ग्राहयति. तदभ्यासौ च तौ संजातौ. अन्यदा च तथाविधोत्सवप्रवृत्तौ निमंत्रणा भोजननिमित्तं वंचकवयस्यचेरूकयोः कृता, गोपितौ च तौ तेन, न समर्पयति च पितुः, उत्तरं च कुरुते " किं मंदभाग्या वयं कुर्मः येन पश्यत एव मे त्वत्सुतौ वानरौ जातौ." अश्रद्दधानश्च तद्गृहमागतः—उपवेशितो लेप्यस्थाने अग्रत एव प्रसारिततत्प्रतिबिंबेन तेन. मुक्तौ च वानरौ किलकिलारावं कुर्वाणावारूढौ तच्छिरसि. भणितश्च स तेन—यथा पुण्यैर्निधिः परावृत्तः तथैतावपि त्वत्पुत्राविति. ज्ञातं च तेन—शठं प्रति शठं कुर्या—दिति वचनमनुष्ठितमेतेन—तदनु दत्तो निधिभागः, प्रतिसमर्पितावितरेणापि पुत्राविति.

बाद तेणे पोताना घरे ते ठगारा मित्रनी माटीनी मूर्ति करावी, तेना माथा पर ते दररोज खोराक मेलतो, अने बे वांदराने तेना माथा पर बेसाडी ते खवरावतो. एम करतां तेमने टेव पडी रही. हवे कोइ तेवो उत्सव आवतां ते पोताने त्यां ठगारा मित्रना बे छोकराने तेडी लाव्यो, अने तेमने संताडी मेल्या. तेमनो बाप मागवा लागतां ते तेणे आप्या नहि पण जवाब दीधो के आपणे मंदभाग्य शुं करीये के जे माटे हुं जोतो रह्यो एटलामां तारा छोकरा वांदरा थइ गया. त्यारे ते वात नहि मानतां ते तेना घरे आव्यो, एटले तेणे अगाउथीज तेनी मूर्त्ति खसेडी मेली हती तेना स्थले तेने बेसाड्यो. बाद वांदरा छूटा मेल्या एटले तेओ किल किल करता तेना माथा पर चडी बेठा. त्यारे ते ठग मित्र समज्यो के कपटी सामुं कपटी बनवुं ए वचन एणे भजव्युं छे. बाद तेणे तेने निधाननो भाग आपी दीधो एटले तेणे तेना छोकरा तेने सोंप्या.

सिक्खा य दारपाढे—बहुलाहवरत्तमारसंवाए, गोमयपिंमणदीए—ठितित्ति तत्तो अवक्कमणं. ॥ ३ ॥

(टीका)—शिक्षा चेति द्वारपरामर्शः—शिक्षा चात्र धनुर्वेदविषयोऽभ्यासः. तत्रैकः कुलपुत्रको धनुर्वेदाभ्यासकुशलः पृथ्वीतलनिभालनकौतुहलेन परिभ्राम्यन् क्वचिन्नगरे कस्यचिदीश्वरस्य गृहमवतीर्णः. गृहस्वामिना च सप्रणयं परिपूज्य दारपाढे इति स्वकीयदारकपाठे नियुक्तः. तस्य च तान् पाठयतो बहुलाभः संपन्नः. ततः—अवरत्तमारसंवाए इति अपरक्तेन दारकपित्रा तदीयार्थलाभच्छेदनार्थं मारो मरणं संकल्पितं यथा केनाप्युपायेनामुं निर्गमकाले मारयित्वार्थो ग्रहीष्यते इति.

शिक्षाद्वार ते एम छे के छोकराओने शीखवतां बहु कमाणी थइ तेटलामां छोकराना बापे नाखुश थइ मारी नाखवानो इरादो कर्यो. तेणे पोतानुं धन छाणांमां जरी पोतानी कुळस्थिति जणावी ते छाणां नदीमां तरतां मेली घरे पहोंचाड्या बाद त्यांथी रवाने थयो. ३

टीका—शिक्षाद्वारमां शिक्षा ते धनुर्वेदनो अभ्यास जाणवो. त्यां ए वात छे के एक धनुर्वेदना अभ्यासमां हुशियार कुळपुत्र पृथ्वी जोवाना कौतकथी भमतो भमतो कोइ नगरमां कोइ सत्तादारना घरे उतर्यो. हवे तेणे तेने प्रीतिपूर्वक पूजीने पोताना छोकरा भणाववामां रोक्यो. ते काममां तेने घणो लाभ थयो. एवामां ते छोकराना बाप साथे तेने अणबनाव थयो एटले तेणे तेनी कमाणी छीनवी लेवा माटे तेने मारवानो इरादो कर्यो के ज्यारे ए नीकळशे त्यारे कोइ पण उपायथी एने मारीने एनी कमाणी लइ लेशुं.

न लन्नते चासौ गृहान्निर्गंतुं. संपादितश्चासौ तेन निजस्वजनानां वृत्तांतः यथा नूनमयं मां मारयितुमन्निवांछतीति. तदनु च गोमयपिंरू नईए ठिश्त्ति त्ति गोमयपिंरूेपु सर्वोपि निजोर्थः संचारितस्तेन, शोषिताश्च ते पिंमाः , न्नणितश्च स्वजनलोकः यथाहं नद्यां गोमयपिंरूकान् मध्यसंगोपितार्थान् प्रक्षेप्स्यामि—भवद्भिश्च ते तरंतो ग्राह्या इति. ततोसावस्माकं कुले स्थितिर्नीतिरीतिरेषा इत्युक्त्वा तिथिपु पर्वदिवसेषु च तैर्दारकैः समं तान् नद्यां निक्षिपति, निर्वाहितश्चानेनोपायेन सर्वोप्यर्थः . तत्तो अवक्कमणंति—तत एवं कृतेपक्रमणं ततः स्थानाल्लब्धावसरेण तेन गमनं कृतमिति. (५)

अत्थे वालडुमाया—ववहारे देविपुत्तकालोत्ति, अप्ते उ धाउवाइयजोगो सि-

हवे ते त्यांथी नीकळी शके तेम न हतुं एटले तेणे ए हकीकत पोताना सगांओने जणावी के मने नक्की ए मारवा इच्छे छे. वाद तेणे पोतानुं तमाम धन छाणांमां घाली ते सूकव्यां, अने सगांओने जणाव्युं के हुं नदीमां अंदर बुपावेल धनवाळां छाणां रवाने करीश ते तमारे तरतां लइ लेवां. वाद ते आ अमारा कुळनी स्थिति छे एम जणावी तिथि अने पर्वना दिवसोमां ते छोकराओ साथे नदीए जइ ते छाणांओने नदीमां नाखतो. आ रीते तेणे पोतानुं तमाम धन मोकलावी आप्युं. वाद ते ठेकाणेथी लाग आवतां रवाने थयो.

अर्थ पेठे एम के वाळकनी वे माताओना इन्साफमां राणीने पुत्र आवनार हतो ते जणाव्यो. वीजा कहे छे के धातुधमनारा मळतां राजाए तेनी असिद्धिथी मालम कर्युं. ३

ह्मीइ निवणाणं. ॥ ३ ॥

(टीका)—अर्थ इति द्वारपरामर्शः—बालकमाया इति कस्यचिद्बालस्य द्वौ मातरावभूतां. पिता च मृतः. ववहारे इति संपन्नश्च द्वयोरपि जनन्योर्विवादः—न चान्यः कोपि तत्र साक्षी समस्ति, दूरदेशांतरादागतत्वात्तयोः—ततो राजद्वारे उपस्थिते ते. देविपुत्रकाशोत्ति तत्र च पट्टमहादेवी गर्भवती—श्रुतश्च तयैष वृत्तांतः—उपायांतरं चापश्यंत्या प्रतिपादिते यथा ममैष गर्भे यः पुत्र उत्पत्स्यते, सोशोकपादपस्याधः उपविष्टो व्यवहारं भवत्योः छेत्स्यतीति. तावंतं च कालं यावद् भवतीभ्यां संतुष्टमानसाभ्यां उचितान्नपानवस्त्रादिभोगपराभ्यां च स्थातव्यं.

तुष्टा च सपत्नी यथा लब्धस्तावदियान् कालः, पश्चात्किं भविष्यतीति को

टीका—अर्थद्वारमां कोइ बाळकनी बे माताओ हती अने बाप मरी गयेलो हतो तेथी बन्ने माताओने झगडो थयो. त्यां बीजो कोइ साक्षी न हतो केमके ते दूर देशथी आवेला हता. तेथी तेओ बे दरबारमां गइ. एवामां पट्टराणी गर्भवाळी हती तेणे ए वृत्तांत सांभळ्यो, त्यारे बीजो उपाय नहि मळतां तेणीए कह्युं के गर्भमां मारो जे आ पुत्र थशे ते अशोकना झाड नीचे बेसी तमारो खुलासो करशे. त्यां लगी तमारे संतोषी रहीने योग्य खान, पान तथा कपडां-लतां वापरतां रहेवुं.

त्यारे जे ओरमान माता हती ते राजी थइ के एटलो वखत तो मळ्यो अने पछी शुं थशे ते कोण जाणे छे. आ वातनी पट्टराणीने तेनो हर्ष जोवाथी खबर पडी एटले तेणीए तेने धमकावी खरी मातानेज पुत्र अने पैसो सोंपाव्यो.

जानीत इति. ज्ञातं च यथावस्थितं देव्या—तदीयहर्षावलोकनात, निर्घाटिता चासौ, समर्पितश्च स्वजनन्या एव पुत्रोर्थश्चेति.—अन्ये त्वाचार्या एवं ब्रुवते यथा धाउवाइय-जोगो सिद्धीइ निवणाणमिति कैश्चित् धातुवादिकैः क्वचित् पर्वतनिगुंजे सर्वः सुवर्ण-सिद्धिसंयोगो विहितः—न च सुवर्णसिद्धिः संपद्यते—विषण्णाश्वासते ते यावत्—तावदत्रांतरे प्रागेव शैलासन्नं निवेशितकटकसान्निवेशाद्रात्रौ ज्वलंतं ज्वलनमवलोक्य कौतुकेन राजा तत्रैकाकी गतः—पृष्टाश्च ते किमिदमारब्धं भवद्भिः? कथितं च सप्रपंचं तैः. ज्ञातं चौत्पत्तिकीबुद्धियुक्तेन राज्ञा "सत्त्वसाध्योयं व्यवहारः—न च तदेतेषु समस्तीति, तत् स्वकीयं शिरश्छित्त्वा क्षिपाम्यत्र ज्वलने"—तथैव कर्तुमारब्धो यावत्तावदाकृष्टासिस्तंभितो दक्षिणभुजस्तदधिष्ठायिकया देवतया राजपौरुषाक्षिप्तचित्तया. जातं सुवर्णमिति.

बीजा आचार्यो एम कहे छे के केटलाक धातु धमनाराओए कोइ पर्वतमां सोनुं मेळवानी सघळी खटपट करी पण सोनुं तैयार थयुं नहि, तेथी तेओ दीलगीर थइ रह्या हता एवामां त्यां आगळथीज रहेली लश्करी छावणीमांथी राजा राते त्यां भट्ठी बळती जोइने कौतुकथी एकलो जोवा आव्यो. तेणे पूछ्युं के आ शुं करवा मांड्युं छे? तेमणे विस्तारथी वर्णन कर्युं त्यारे औत्पत्तिकीबुद्धिवाळा राजाए जाण्युं के आ काम हिम्मतथी सिद्ध थाय तेवुं छे अने तेओमां ते छे नहि. माटे हुं मारुं माथुं कापी आ आगमां होमावुं एम धारी ते तेमज करवा लाग्यो एटलामां तेनी अधिष्ठायक देवी तेनो तरवारवाळो सवळो हाथ थोभी राखीने तेनी हिम्मतथी खुश थइ एटले तरत सोनुं थइ गयुं.

सत्थो लग्ग परिक्खा—अदाण गम थेवदाण गहणंति, अन्ने उ पक्खवाया—
चउसत्थ विसेस विन्नाणं. ॥ ४ ॥

(टीका)—शस्त्र इति द्वारपरामर्शः. किल कस्यचिद्राज्ञः शस्त्रप्रधाना अवलगका अवलगितुमारब्धाः—परीक्षार्थं च अदाणत्ति राजा तेषां न किंचिद्ददाति ततः गमत्ति अन्यत्र गंतुमारब्धं तैः. ततः थेवदाण गहणमिति स्तोकदानेन परिमितजीविकावितरणरूपेण ग्रहणं स्वीकरणं कृतं केषांचित्, अन्ये तु स्वपौरुषानुरूपां वृत्तिमलभमानाः अन्यत्र गताः. ज्ञातं चौत्पत्तिकीबुद्धिसारेण राज्ञा—" नूनमेते महापराक्रमा इति.

अन्ये त्वाचार्या इदमित्थमभिदधति.—पक्षवादात् प्रतिज्ञापूर्वकपक्षवादकरणा-

शस्त्र ते एम के परीक्षा माटे कांइ नहि देतां केटलाक जता रह्या अने बीजाओने थोडुं दइ राख्या. बीजा कहे छे के चारे शास्त्रना पक्षनो वाद करावतां विशेष विज्ञान मेळव्युं. ४

टीका—शस्त्रद्वार ते एम के कोइक राजाने त्यां हथियारबंध सेवको आवी तेनी सेवा करवा लाग्या. तेमनी परीक्षा करवा खातर राजाए तेमने कंइ आप्युं नहि, एथी तेओ बीजे स्थळे जवा मांड्या त्यारे थोडोक पगार दइने तेमांथी केटलाकने राख्या, पण बीजाओ पोताना पराक्रमने लायक पगार नहि मळता बीजे जता रह्या. आ उपरथी औत्पत्तिकीबुद्धिवाळा राजाए जाणी लीधुं के खरेखर ए जनारा महा पराक्रमवाळा छे.

बीजा आचार्यो आ दृष्टांत आ रीते कहे छे के आत्रेय, कपिल, बृहस्पति अने पांचाळ नामे ऋषिओए कहेला

श्चतुर्णां शास्त्राणां वैद्यकधर्मार्थकामगोचराणां आत्रेयकापिलबृहस्पतिपांचालनामकऋषिविशेषप्रणीतानां विशेषेण परिज्ञानमवबोध औत्पत्तिकीबुद्ध्या कृत्तं. किल क्वचित् पाटलिपुत्रादौ नगरे कस्यचिद्राज्ञः क्वचित्समये वैद्यकादिशास्त्रहस्ताश्चत्वारः प्रवादिन उपस्थिता वन्नणुश्च यथैतच्छास्त्रावबोधानुरूपां प्रतिपत्तिमस्माकं कर्त्तुमर्हति महाराजः . परिभावितं च तेन यथा न ज्ञायते कः कीदृशं शास्त्रमवबुध्यत इति. तत्परीक्षार्थं प्रतिज्ञोपन्यासपूर्वकं परस्परं वादं कारयितुमारब्धाः . ज्ञातं च तत्र प्रज्ञाप्रकर्षाप्रकर्षौ. कृता च तदनुरूपा प्रतिपत्तिरिति. अत्र च सत्थेत्ति निर्देशस्य प्राकृतशैलीवशेन शस्त्रशास्त्रयोरविरोधादित्थं व्याख्यानद्वयं न दुष्टमिति. (७)

इच्चाइ महं रंमा—पइरिण तम्मित्तसाहुववहारे, मंतिपरिच्छा दोन्नाग—तयणु

वैद्यक—धर्म—अर्थ—अने काम संबंधी चारे शास्त्रोनो प्रतिज्ञापूर्वक पक्षवाद करावीने औत्पत्तिकीबुद्धिथी विशेष परिज्ञान मेळव्युं. कोइ पाटलिपुत्र जेवा नगरमां कोइक राजाने त्यां कोइक वखते वैद्यकादि शास्त्र हाथमां लइने चार वादिओ आवी कहेवा लाग्या के आ शास्त्रना अमारा ज्ञान प्रमाणे अमारी प्रतिपत्ति तमारे करवी जोइए. राजाए विचार्युं के कोण केवुं शास्त्र जाणे छे ते कंइ आपणे जाणता नथी. तेथी तेमनी परीक्षा सारु तेमने प्रतिज्ञा करावी अरस्परस वाद कराव्यो अने तेमां कोनी बुद्धि वधती घटती छे ते जाणी लइ ते प्रमाणे तेमनी प्रतिपत्ति करी. इहां " सत्थ " एवो प्राकृत शब्द होवाथी तेना शस्त्र अने शास्त्र एम बे व्याख्यान वगर विरोधे थइ शके छे माटे बे व्याख्यान कर्या ते वाजवी छे.

इच्छाए मोटं:ए छारमां एक विधवाने पतिना करज माटे तेना लुच्चा मित्र साथे तकरार थइ त्यारे मंत्रिओए बे

अप्पस्स गाहणया. ॥ ५ ॥

(टीका)—इच्छाइ महंति द्वारपरामर्शः—किल क्वचिन्नगरे कस्यचित्कुलपुत्रकस्य पत्नी भर्तृमरणे रंडेति वैधव्यमनुप्राप्ता. सा च—पइरिणत्ति पत्युर्भर्तुः संबंधि यद्वृत्तिप्रयुक्तं धनं लोकस्य च देयत्वेन ऋणतया संपन्नं तद्ग्राहयितुमारब्धा, न चासौ किंचिल्लभते, सर्वपुरुषापेक्षत्वात्सर्वकार्याणां. भणितं च तया तस्य पत्युर्मित्रं यथोद्ग्राहयाधमर्णलोकान् मे वित्तं. भणितं च तेन "कोत्र मे भागः?" तया च सरलस्वभावमवलंब्य निगदितं "उद्ग्राहय तावत् पश्चाद्यत्ते रोचते तन्मे दद्यास्त्वमिति."

उद्ग्राहितं च तेन तत्सर्वं. भागवेलायां च—असाहुत्ति असाधौ वंचके तुल-

भाग करावी नानो भाग ते मित्रने अपाव्यो. ५

टीका.—इच्छाए मोटुं ए द्वारमां ए वात छे के कोइ नगरमां कोइ कुलीन माणसनी स्त्री भर्तार मरी जतां विधवा थइ. ते भर्तारे वेपारमां जे धन जोडेलुं अने लोकोने धीरेलुं होवाथी लेणा तरीके नीकळ्युं ते उघराववा मांड्युं, पण सघळी दाद माणसनेज मळी शके एम होवाथी तेणी कंइ मेळवी शकी नहि. त्यारे तेणीए पोताना पतिना मित्रने कह्युं के मारुं धन जे लेणदारो पासे छे ते उघरावी आपो. तेणे कह्युं के मने तेमां शो भाग आपशो ? त्यारे तेणीए सरल भावथी कह्युं के उघरावी तो ल्यो, पछी तमने रुचे ते मने आपजो.

तेणे ते बधुं उघराव्युं. बाद भाग वखते ते लुच्चाइ करी थोडोज भाग देवा लाग्यो एटले दरबारमां तकरार

भागदानात्तस्मिन् संपन्ने व्यवहारो राजद्वारि प्रवृत्तः . लब्धवृत्तांतेन च—मंतिपरिज्ञा इति मंत्रिणा परीक्षार्थं पृच्छा कृता " कीदृशं त्वं भागमिच्छसि ? स प्राह महान्तं. ततो द्रव्यस्य द्वौ भागौ कृतौ अल्पो महांश्च. तदन्वल्पस्य भागस्य गाहणयत्यल्पं भागं ग्राहित इत्यर्थः—किलानया प्रागेवेदमुक्तमास्ते यस्ते रोचते स भागो मे दातव्यः—रोचते च ते महानित्ययमेवास्या दातुमुचित इति—प्रतिपन्ननिर्वाहित्वाच्छिष्टानां. यतः पठ्यते—अलसायंतेणवि सज्जणेण जे अक्खरा समुल्लविया, ते पत्थरटंकुक्कीरियव्व नहु अन्नहा हुंति.

सयसाहस्सी धुत्तो—अपुव्वखोरम्मि लोगमंजणया, तुज्झ पिया मज्झेवं—तदसाधुत्तेण छलणत्ति. ॥ ६ ॥

चाली. हकीकत जाणीने मंत्रिए परीक्षा माटे तेने पूछ्युं के तारे केवो भाग जोइये छीये ? ते बोल्यो के मोटो. त्यारे तेणे द्रव्यना बे भाग कराव्या एक नानो अने बीजो मोटो. बाद ते लुचाने नानो भाग पकडाव्यो ते एम कहीने के आ बाइए प्रथमथीज कहेलुं छे के जे तने रुचे ते भाग मने आपवो. हवे तने तो मोटो भाग रुचे छे माटे तेज एणीने देवो जोइये, केमके सारा माणसो जे कबूले ते पाळेज छे. जेमाटे कह्युं छे के—

सज्जन पुरुष आळसमां पण जे अक्षरो मुखे बोले छे ते पत्थर पर टांकणाथी खोदी कहाड्या होय तेम फेरफार वगरना रहे छे.

लक्षपति ठग बोलतो के अपूर्व लावे तेने लाखना मूल्यवाळुं कचोळुं आपीश एम कही लोकोने ठगतो. बाद बीजा धूर्त्ते कह्युं के तारा बापे मारी पासेथी आटलुं लीधुं छे एम कही तेने ठेकाणे आण्यो. ६

सयसहस्सत्ति. छारे शतसहस्त्री लक्षप्रमाणधनवान् कश्चिद्धूर्त्तः समासीत्. तेन च अजव्वखोरंमि लोगडंजणया इति " यः कश्चिदपूर्वं किंचन मां श्रावयति तस्याहं खोरकं लक्षद्रव्यमूल्यं कचोलकमिदं ददामि. "—एवं च लोकं मंजयितुमारब्धः—यतो यः कश्चिदभिनवकाव्यादि श्रावयति तत्रापि स " पूर्वमेतन्मे" इति मिथ्योत्तरं कृत्वा तं विलक्षी करोति, प्रवर्त्तितश्चात्मनि प्रवादो यथाहं सर्वश्रुतपारग इति. श्रुतश्चैष वृत्तांतस्तत्रस्थेनैकेन सिद्धपुत्रेण. तत्कालोत्पन्नबुद्धिना च तेन तदग्रतो गत्वा पठितं, यथा—

तुज्झ पिया मह पिउणो—धारेइ अणूणयं सयसहस्सं, जइ सुयपुव्वं दिज्जउ—अहन सुयं खोरयं देहि. एवमनेन प्रकारेण तदन्यधूर्त्तेण सिद्धपुत्ररूपेण छलना बुद्धिपरिभवरूपा तस्य कृतेति. (७) समासान्यौत्पत्तिकीबुद्धिज्ञातानि. (७)

टीका—शतसहस्त्रद्वार ते एम के कोइ लक्षपति धूर्त हतो तेणे जणाव्युं के जे कोइ मने कंइ अपूर्व संभळावशे तेने हुं लाख मूल्यनुं आ कचोळुं आपीश—एम कही ते लोकोने ठगवा लाग्यो एटलेके जे कोइ नवुं काव्य वगेरे तेने संभळावतो तेने कहेतो के ए तो मारी पासे प्रथमथीज छे एम खोटो उत्तर आपी तेने विलखो पाडतो, अने पोताना माटे ते एवो बुमाटो उठाडतो के हुं सर्व शास्त्रनो पारंगत छुं आ वात त्यां रहेला एक सिद्धपुत्रे सांभळी, त्यारे तेने तरत अकल उपजी ते प्रमाणे ते तेना आगळ हाजर थइ आ रीते बोल्यो के—

तारो बाप मारा बापनी बरोबर एक लाख (सोनाम्होर) उधारी लावेलो छे. जो आ वात तें पूर्वे सांभळी

नमः श्रुतदेवतायै.

अथ वैनयिकीज्ञातानि विव्रियंते.—वेणइयाइ निमित्ते—सिद्धसुया हत्थिपय-विसेसोत्ति, गुव्विणिदाहिणपुत्ते—थेरी तज्जायणाणादी. ॥ ७ ॥

(टीका)—वैनयिक्यां बुद्धौ निमित्ते इति द्वारपरामर्शः. सिद्धसुयत्ति कस्यचित् सिद्धपुत्रस्य पार्श्वे द्वौ सुतौ–पुत्ता य सीसा य समं विहत्ता–इति वचनात् शिष्यावित्यर्थः निमित्तशास्त्रं शिक्षितौ, अन्यदा च तृणकाष्ठाद्यर्थमटव्यां प्रविष्टौ. दृष्टानि च ताभ्यां तत्र—हत्थिपय विसेसोत्ति—हस्तिपदान्यादिष्टश्चैकेन विशेषो, यथा—हस्तिन्या एवैतानि. कथं ज्ञायते इति चेत् ? कायिकोत्सर्गविशेषात्. सा च काणा—एकपार्श्वेन तृणानां खादनादिति. तथा गुव्विणिदाहिणपुत्तत्ति तत्र च कायिकोत्सर्गविशेषा-

होय तो ते रकम आप, अने नहि सांजळी होय तो लाखनुं खोरुं आप. आ रीते ते सिद्धपुत्ररूप बीजा धूर्त्ते तेनी बुद्धिने हरावी छळना करी.—औत्पत्तिकीबुद्धिनां उदाहरणो पूरां थयां.

श्रुतदेवताने नमस्कार थाओ.

हवे वैनयिकीनां उदाहरणो वर्णवीए छीए.—वैनयिकीमां निमित्तनी ए वात छे के सिद्धना चेलामांना एके हाथीनां पगलां जोइ विशेष कही वताव्युं तथा कह्युं के तेना पर एक सगर्भा स्त्री छे, तेनुं जमणुं पगलुं भारी होवाथी ते पुत्र जणशे. वळी.एक डोशीने तेनो पुत्र आव्यानी तेणे खबर आपी वगेरे. ७

टीका—वैनयिकी बुद्धि पेठे निमित्तद्वारमां ए वात छे के कोइ सिद्धपुत्रना पासे बे सुत एटले चेला हता के-

देव एका स्त्री पुरुषश्च विलग्न इति ज्ञायते. पीवरगर्भा च सा,—भूमौ हस्तस्तंभनेनोत्थानात्. दारकश्च भविष्यति तस्याः—येन दक्षिणपादो गुरुको निविम्ननिवेशाल्लक्ष्यते—दक्षिणकुक्ष्याश्रिते च गर्भे किल पुरुषो भवतीति.

तथा रक्ता दशिका मार्गतटवर्त्तिनि वृक्षे यतो लग्ना दृश्यते ततोपि ज्ञायते पुत्रोत्पत्तिः—मार्गवृक्षलग्ना हि रक्तदशिका मार्गगमनप्रवृत्तगर्भवत्स्त्रीसंबंधिनी निमित्तशास्त्रेषु पुत्रोत्पत्तिसूचिका पठ्यते इति.

तथा थेरी तज्जायणाणाई इति तावेव सिद्धपुत्रौ नदीतीरे जलमापीय यावत्

मेक दीकरा अने शिष्य सरखाज एम कहेलुं छे. तेओने तेणे निमित्तशास्त्र शीखव्युं. हवे एक वेळा तेओ तृणकाष्ठ लेवा अटवीमां गया. त्यां तेमणे हाथीनां पगलां जोयां त्यारे एक जण जणाववा लाग्यो के आ पगलां हाथणीनांज छे. केम मालम पड्युं तो कहुं छुं के एनी मूतरवानी ढबथी. वळी ते एक आंखे काणी छे केमके तेणे एक बाजुनाज तृण खाधेला छे. तेमज तेना पर एक स्त्री अने पुरुष चडेला छे, ते पण तेमनी लघुनीति करवानी ढब परथी जणाय छे. वळी जे स्त्री छे ते पूरा थएला गर्भवाळी छे केमके जमीन पर हाथ धरीने उठी शकी छे अने तेने छोकरो आवनार छे, जे माटे तेनुं सबळुं पगलुं वधारे बेसवाथी भारे लागे छे अने सवळी कूखे गर्भ रहे तो पुरुष थाय छे.

वळी रस्ता पर रहेला झाडमां राती दसिओ लागेली देखाय छे तेथी पण पुत्र थशे एम जणाय छे, केमके रस्ते चालती गर्भवती स्त्रीनी रस्ताना वृक्षमां वळगेली राती दसिओ पुत्रनी उत्पत्ति सूचवे एम निमितशास्त्रमां कहेवाय छे.

वळी तेज बन्ने सिद्धपुत्रो नदीना कांठे पाणी पीने बेठा हता तेवामां एक डोशीए हाथमां पाणीथी भरेल

स्थितावासाते तावदेकया स्थविरया जलभृतहस्तघटया संपन्ननैमित्तिकसुतत्वज्ञानया चिरप्रोषितप्रियपुत्रया तदागमनं पृष्टौ—" कदा मे पुत्रः स्वगृहमायास्यतीति. " तस्मिंश्च क्षणे प्रश्नाव्यग्रायास्तस्या हस्तात् स घटो भूमौ पतित्वा भग्नः . भणितं चैकेन—" तज्जाएण य तज्जायं तन्निभे य तन्निभं "—इत्यादिश्लोकमुच्चार्य यथा—मृतस्ते पुत्रः , कथमन्यथायं सद्य एव घटभंगो जायेत इति.

द्वितीयेन तु प्रतिपादितं यथा गच्छ वृद्धे, सांप्रतमेव स्वगृहमागतस्तिष्ठति तेऽसौ पुत्रः गता च सा. दृष्टपुत्रा च तुष्टा चेतसि वस्त्रयुगलकं रूपकांश्च गृहीत्वा सगौरवं सत्कारितोसौ द्वितीयः सिद्धसूनुस्तया. इतरश्चादेशविसंवादाद्विलक्षीभूतो गुरुमुपस्थितो निगदति यथा " किं न मम इतरतुल्यं सद्भक्तिकस्यापि निमित्तशास्त्रसद्भावं कथ-

यतो लइ ते निमित्तियाओने ओळखी लांबा वखतथी परदेश गएला पुत्रनी खबर पूछी के क्यारे मारो पुत्र घेर आवशे ? हवे ते क्षणे पृछतां ते व्यग्र थनी तेथी तेना हाथमांथी ते घडो भूमि पर पडी भांगी गयो. त्यारे तेमांनो एक बोली उठ्यो के " ते थतां ते थाय अने तेना जेवुं थतां तेना जेवुं थाय "—एम श्लोक छे, माटे तारो पुत्र मरी गयो छे नहि तो आम आ ओचिंतो घडो केम भांगे ?

बीजाए जणाव्युं के हे वुड्ढी, जा, तारो पुत्र हमणांज घरे आवेलो छे. आ सांभळी ते घरे आवी के पुत्र जोये खुशी थइ ये कपडां अने रुपिया लइ ते बीजा सिद्धपुत्रनो सत्कार करवा लागी. पहेलो सिद्धपुत्र पोतानो आदेश जुठो पड्याथी विलखो पडी गुरु पासे आवी कहेवा लाग्यो के हुं भक्तिवाळो छतां मने तमे बीजाना जेवुं निमित्त-

यसीति." पृष्टौ च तौ तेन कथितं च ताभ्यां सर्वं यथावृत्तं. गुरुणा च भणितं—कथं त्वया तस्य मरणमादिष्टं ? स प्राह—घटविपत्तिदर्शनात्, द्वितीयेन चोक्तं—"तज्जायेण य तज्जायं" इत्यादिश्लोकमुच्चार्य एव—घटो भूमेरेव सकाशादुत्पन्नो भूम्या एव च मिलितः—एवं स पुत्रो मातुरेव सकाशादुत्पन्नो मातुरेवच मिलित इति निर्णीतं मयेति.

भणितश्चासौ गुरुणा यथा भद्र नाहमपराध्यामि किंतु भवत एव प्रज्ञाजाड्यं यो विशेषादिष्टमपि न निमित्तशास्त्ररहस्यमवबुध्यसे, किं न श्रुतं त्वया सूक्तमिदं यथा.

"वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे—ननु खलु तयोर्ज्ञाने शक्तिं करोत्यपहंति वा, भवति च पुनर्भूयान् भेदः फलं प्रति तद्यथा—प्रभवति मणिबिंबग्रा-

शास्त्रनुं रहस्य केम शीखवता नथी ? त्यारे गुरुए बन्नेने पूछी जोतां बन्ने जणाए बनेली हकीकत कही. गुरुए कह्युं के ते तेनुं मरण शा उपरथी कह्युं ? ते बोल्यो के घडो भागी पड्यो ते जोवाथी. त्यारे बीजाए पण तेज श्लोक बोलीने कह्युं के घडो माटीमांथी पेदा थइ माटीने जइ मळ्यो एम ते पुत्र मातामांथी उत्पन्न थयो अने माताने मळ्यो एम में निर्णय कर्यो.

त्यारे गुरुए पेला शिष्यने कह्युं के भला माणस, मारो एमां कशो वांक नथी पण तारीज बुद्धिनी जडता छे जेथी तुं खुलासा साथे जणावेला निमित्तशास्त्रना रहस्यने समजी शकतो नथी. शुं तें आ सूक्त नथी सांभळ्युं के—

" गुरु प्राज्ञ तथा जडने सरखी रीते विद्या आपे छे खरा पण तेमनी समजशक्तिने वधारी घटाडी श-

द्दी शुचिर्न मृदादयः ” .—इति.

अत्र च येषां सम्यक् शास्त्रं परिणमितं तस्य वैनयिकी बुद्धिरितरस्य तु तदा-ज्ञासेति. (७)

एत्थय अत्थसत्थे—कापगमाइछेदभेदणया, जक्खपडत्ती किच्चप्पओय अ-हवा सरावंमि. ॥ ८ ॥

(टीका)—सेणियराए तह कोणिए य पंचत्त मुवगए संते, कोणियसुओ उ-दाई—पाडलिपुत्तं पुर मकासि. ॥ १ ॥ चंडपयावो दिसिमंडलाइं सव्वाइं तविउ मा-ढो, मउलावियरिवुकइरवखंडो सो चंद किरणो व्व. ॥ २ ॥ परिपूरियभंडारो—गया-

कता नथी, एथी करीने फळमां मोटो फरक पडे छे. दाखला तरीके निर्मळ मणि होय छे ते प्रतिबिंबने पकडे छे पण कांइ माटी वगेरे तेने पकडी शकता नथी.”

माटे इहां जेने रुडी रीते शास्त्र परिणम्युं तेनी वैनयिकी बुद्धि जाणवी, पण बीजानी बुद्धि तो तेनी नकल जेवी छे.

इहां अर्थशास्त्रमां कल्पक मंत्री उदाहरण छे, गंडेरी (शेलडी) वगेरेना छेदन भेदने करीने. वळी यक्षनी वार्त्ता पण उदाहरण छे, कृत्यानुं उपशमन करवाथी अथवा नवो शराव बनावतां चीताराना पुत्रे यक्षने शांत करवानो उपाय कर्यो ते उदाहरण छे. ८

टीका—श्रेणिकराजा अने कोणिकराजा मरण पाम्या बाद कोणिकना पुत्र उदायिराजाए पाटलिपुत्र नगर व-सावी त्यां पोतानी राजगादी स्थापी. १ ते उग्र प्रतापी थइने सघळी दिशाओने तपावी सूर्यना माफक दुश्मनरूपी कुमु-दोने खीलता अटकाववा लाग्यो. २ तेनो भंडार भरपूर हतो, तेनी पासे हाथी, घोडा वगेरे चतुरंग लश्कर मोजु-द ...

उन्नरग साहण सणाहो, सामाइनीइनिउणो–परिपालइ रज्ज मणवज्जं. ॥ ३ ॥ तह ताव्वहगुरुपायारविंदसेवोवलद्धसंमत्तो, पसमाइगुणमणीणं—पच्चक्खो रोहणगिरि व्व. ॥ ४ ॥ तंमि पुरे कारवियं—पुरवाहीए मणोहराकारं, हिमगिरिसिहरुत्तुंगं—भुवणं सिरि वीयरायस्स. ॥५॥ अट्ठाहियाइमहिमानिव्वारंभेण मणभिरामेण, साहुपयपूयणेण य दीणाणाहाइदाणेण. ॥ ६ ॥ सम्म मणुव्वयपरिपालणेण तह पोसहाइकरणेण, तेण जिणिंदपणीओ—धम्मो परमुन्नइं नीओ. ॥ ७ एत्तोच्चिय जो तित्थयरनामकम्मं तिलोयमहिमंगं, बंधिसु जेणं भणिया—ठाणे तव्बंधिजियसंखा. ॥ ८ ॥ —जहा " सेणिय–सुपास—पोट्टिल—दढाउ—संख सयगा उदाई य, सुलसा य साविया रेवई य नव वीरतित्थंमि. " (१) सठ्ठे दंडनिवइणी—तेणु ग्गाए नियाइ आणाए,

अने ते सामादिक नीतिमां निपुण रही रुडी रीते राज्य करवा लाग्यो. ३ तेमज ते तथाविध गुरुना चरणकमळनी सेवाथी सम्यक्त्व पामीने प्रशमादिक गुणमणिओनो ते प्रत्यक्ष जाणे रोहिणाचल होय तेवो जणातो हतो. ४ तेणे ते नगरनी बाहेरमां हिमालयना शिखर जेवुं ऊंचुं अने मनोहर आकारवाळुं वीतराग प्रभुनुं मंदिर बंधाव्युं हतुं. ५ ते हमेशां मनोभिराम अष्टाह्निक महोत्सव करावतो, साधुना पग पूजतो, तथा दीन अनाथ लोकने दान आपतो–वळी ते रुडी रीते अणुव्रत पाळता अने पौषधादिक करतो. एम तेणे जिनेंद्रप्रणीत धर्मने खूब उन्नति पर आण्यो हतो. ६–७ एथीज तेणे त्रणलोकमां महिमा मेळववानुं कारण तीर्थंकरनामकर्म बांध्युं. जे माटे ठाणा प्रकरणमां ते पद बांधनार जीवोनी आ रीते गणतरी कही छेः— ८ जेमके श्रेणिक, सुपार्श्व, पोट्टिल. दृढायु, शंख, शतक, उदायि, अने सुलसा तथा रेवती एम नव जणे वीरना तीर्थमां तीर्थंकरनामगोत्र बांध्यां छे. (१) ते उदायिराजाए पोतानी उग्र आज्ञाथी सघळा खंडिया राजा-

आणाभिजंता निच्चमेव खिज्जंति चित्तेण. ॥ ९ ॥ कत्तोच्चिय अवराहा—एगो भूमी-
वई सपरिवारो, उद्दालियनियदेसो—विहिओ देसंतरावासी ॥ १० ॥ पत्तो उज्जेणीए
—जाओ सेवापरो तदहिवइणो, भणियं च अन्नया तेण निच्चआणाइभग्गेण.—
॥ ११ ॥ उज्जेणिराइणा—" नत्थि एत्थ सो कोइ अंकुसं अरिहं, जो इममुदायिरा-
यं—अवणेज्जा सिरसमारूढं. ॥ १२ ॥ तो तस्सेवगरन्नो—भणियं पुत्तेण गरुयखारेण,
साहेमि इमं कज्जं—जइ पिट्ठिवत्तं तुमं वहसि. ॥ १३ ॥ तो तेण अणुन्नाओ—स
कंकलोहस्स कत्तियं घेत्तुं, चलिओ पाडलिपुत्ते—पत्तो य कमेण तो रन्नो—॥ १४
विहिया सबाहिरब्भंतराइ परिसाइ सेवगजणस्स, उचिया सेवावित्ती—नय लद्धो चिं-
तियावसरो. ॥१५॥ सो पुण उदायिराया—अट्ठमिचउद्दसिदिणेसु सव्वाइं, मोत्तूण रज्जक-

ओ पर हुकम चलाव्याथी तेओ हमेशां मनमां खिन्न रहेता हता. ९ एवामां कोइएक राजाए कंइ अपराध कर्यो एथी तेनो देश खालसे करी तेने सपरिवार देशनिकाल करवामां आव्यो. १० ते राजा उज्जेणीमां आवी त्यांना राजानी सेवामां रह्यो. बाद एक वखते हमेशां हुकम उठाववाथी कंटाळेला उज्जेणीना राजाए जणाव्युं के एवो कोइ अमोने अंकुश मळतो नथी के जे आ माथा पर चडी बेठेला उदायिने दूर करे. ११—१२ त्यारे ते सेवक राजाना अति खारीला पुत्रे जणाव्युं के जो तमे मारी पूठ पकडो तो ए काम हुं करी आपुं. १३ त्यारे राजाए तेने मंजुरी आपी एटले ते तीखा लोखंडनी छरी लइने पाटलिपुत्र नगरमां आवी अनुक्रमे राजानी बहारनी अने अंदरनी बेठकमां चाकर रही चाकरी करवा लाग्यो, पण तेने जोइतो लाग मळी शक्यो नहि. १४—१५ हवे ते उदायिराजा आठम अने चौदशना दहाडे स-

जाइं—पोसहं कुणइ उवउत्तो. ॥ १६ ॥ सिरिधम्मघोसनामा— सूरी अच्चंतखीण-जंघवलो, गामंतरे विहारं—काउं असहो वसइ तत्थ. ॥ १७ ॥ साहुसमीवे पोसह-करणे रन्नो वहू अवाओत्ति, तत्थेव रायभवणे—पोसहदिवसेसु सो जाइ. ॥ १८॥ भ-णिओ नियपरिवारो—रन्ना, साहूण इंतजंताण—रयणीए दिवसंमि य खलणा के-णइ न कायव्वा. ॥ १९ ॥ नाओ एस वइयरो—तेणं दुट्ठाभिसंधिणा धणियं, राय-सुएणं एए—इत्थं अनिवारियप्पसरा ॥ २० ॥ तो सो वज्जिय सेवावित्तिं आवज्जिऊ-ण गुरुचित्तं, अइदढसढत्तविणओवयारसारो गहियदिक्खो—॥ २१ ॥ भावसमणो व्व जाओ विणयरओ त्तिय पइट्ठियं तस्स—नामं वच्चइ कालो—एवं छलचिंतणप-रस्स. ॥ २२ ॥ सूरीविय गीयत्थे—थिरव्वए नायजाइकुलसीले, साहू अप्पसहाए

थळां राजकाज छोडी एकाग्र चित्तथी पौषध करतो हतो. १६ ए वखते त्यां धर्मघोष नामे आचार्य वृद्ध होवाथी अति क्षीण जंघाबळ थतां स्थानांतरे विहार करवा असमर्थ बनी त्यांज वसता हता. १७ ते आचार्ये विचार कर्यो के साधु पासे पौषध करतां राजाने घणा भय रहे छे तेथी पौषधना दिवसोमां ते राजाना घरेज जता हता. १८ आथी राजाए पोताना परिवारने हुकम कर्यो हतो के राते के दिवसे साधुओने त्यां जतां आवतां कोइए अटकाववा नहि. १९ आ वात ते अति दुष्ट लागणी राखता राजकुमारने मालम थइ के आ लोको आ रीते इहां छूटथी आवजा करी शके छे. २० एथी ते राजानी चाकरी छोडी गुरुना मन पर पकी अति भारे कपटथी विनयोपचार साचवी दीक्षित थयो—अने भावश्रमण जेवो बनी रह्यो एटले तेनुं विनयरत एवुं नाम पाडवामां आव्युं. हवे ते वखत पसार थवानी साथे लाग शोधतो रहेवा लाग्यो. २१—२२ ते आचार्य पोता साथे त्यां गीतार्थ स्थिरव्रत जाणीता वंशवाळा थोडाक साधुओने मददगार तरीके

—अप्पं निवत्तनण साएइ. ॥ २३ ॥ सो निच्चंचिय पगुणत्त सप्पणो आयरेण दंसेति, पर सद्दिणवधम्मं जाविऊण वारेइ तं सूरी. ॥ २४ ॥ अन्नंमि दिणंमि मुणी—कज्जेण गिलाणपाहुणाईण, अच्चंतवाउलत्तं पत्ता—पउणो य सो जाओ. ॥ २५ ॥ बहुदिवसदिक्खिओ च्चिय—ता सोवि सहायओ गुरुहि कओ, पत्ता रायकुलब्भंतरावसालाइ रयणिमुहे. ॥ २६ ॥ पच्चिन्नं पोसहं मोसहंव रोगाउरेण नरवइणा, विहियो तक्कालोचियववहारो वंदणाईओ. ॥ २७ ॥ सुत्तेसु झाणसज्झायमाइकिच्चेण रीणदेहेसु—सूरिनिवेसु स पावो समुट्ठिओ कड्ढिया कत्ती. ॥ २८ ॥ सा पुव्वंचिय गूढा —आसि रजोहरणसाइउवहिंमि, दिन्ना कंठपएसे—रन्नो, नट्ठो य संजंतो. ॥ २९ ॥ सा रुहिरेण विलग्गा—पासेणं वीयगेण निक्खमइ, छिन्नो खणेण कंठो—तो तीइ अ-

आवता हता. २३ हवे ते कपटी साधु हमेशां आदरपूर्वक त्यां आववा तैयार होवानुं जणावतो, पण आचार्य तेने नवो सवो गणीने अटकावता हता. २४ बाद एक वेळाए मुनिओ मांदा परोणा साधुओना काममां गुंथाइ गया हता एटले ते कपटी साधु त्यां साथे आववा तैयार थतां गुरुए घणा दिवसनो दीक्षित धारी तेने साथमां लीधो अने तेओ सांजना समये दरबारनी अंदरनी शाळामां आव्या. २५—२६ त्यां रोगातुर जेम औषध लीए तेम राजाए पौषध लीधो अने ते अवसरने उचित वंदनादि व्यवहार साचव्यो. २७ हवे सूरि अने राजा ध्यान, सज्झाय वगेरे कृत्य करी थाकेला शरीरे सुइ गया एटले ते पापिष्ट उठ्यो अने तेणे छरी कहाडी. २८ ए छरी पहेलांज तेणे रजोहरण वगेरे उपकरणमां संताडी राखी हती. ते छरी तेणे राजाना गळामां लगाडी अने पोते उतावळे नासी गयो. २९ ते छरी लोहीए चराइने गळानी

वालीहि मओ निवो दिट्ठो. ॥ ४४ ॥ सहसुक्कूइय मेयाहि रज्जचिंताकरेण सो आसो, अहिवासिओ पुरोहियलोएण पुरंतरे णीओ. ॥ ४५ ॥ अवलोइओ स ण्हावियडुयक्खरो फुरियफारतणुकिरणो, जग्घामियपुव्वपक्खो—आसेणा रोविओ पिट्ठिं. ॥ ४६ ॥ चलियं चामरजुयलं—धरियं छत्तांवरं महाछत्तं, सयलाइं वाइयाइं—तूराणिवि नंदसद्दाइं. ४७ रायाभिसेयसारं—स रज्जचिंताकरेण लोएण, ठविओ उदाइरन्नो—पयंमि सुन्ने मणुन्नंमि. ॥ ४८ ॥ तयस्स डुयक्खरभावेण—ते य जमा दंरुन्नोया सव्वे, न करेंति विणय, मेसो—अह चिंतइ कस्स हं राया ? ॥ ४९ ॥ अत्थाणीमज्झगओ—अहन्नया जपिऊण निक्खंतो, पुण अइगओ न तेहिं—एसो अब्भुट्ठिओ किंचि. ॥ ५० ॥ दावियकोववियारेण—तेण एए हणेह जो गोहे, भणिय मवरोपार भिसे

हवे ते पालखी पर चमीने नगरमां फरवा नीकळ्यो. एवामां आणीमेर अंतःपुरनी शय्या साचवनारी वाइओए राजाने मरेलो जोयो. ४४ आ परथी तेओए ओचींती बूमराण करी के राज्यनी चिंता करनार पुरोहितोए घोडाने अधिवासित करी नगरमां फरतो कर्यो. ते घोडाए पहेला जपकादार नाइना दीकराने जोयो अने तेनुं नशीब जयरूवाथी तेने पोतानी पीठ पर लीधो. ४५–४६ तेना पर वे चामर ढोळावा लाग्या, आकाशने ढांकनारुं मोटुं छत्र धरवामां आव्युं, अने भला अवाजवाळां सघळां वाजां वगाडवामां आव्यां. ४७ पछी राज्यने संभाळनार लोकोए तेने राज्याभिषेक करावी उदायिराजानी खाली पडेली गादी पर स्थापित कर्यो. ४८ (परंतु) ते हजामनो पुत्र होवाथी सघळा सुभटो अने सरदारो तेने सलाम भरवा न लाग्या, त्यारे आ नंद विचारवा लाग्यो के हुं ते कोनो राजा छुं ? ४९ बाद एक वेळा ते सभामां

—लोउं हासाउला जाया. ॥ ५१ ॥ तो तिव्वरोसविसपरवसेण अत्थाणमंडवदुवारे, लेप्पमए पडिहारे—अवलोइय भासियं तेण. ॥ ५२ जइनामेए विणयं—न करेंति, किमंग तुम्ह विणयस्स—संपन्ना परिहाणी—समुट्ठिया ते तओ सहस्सा. ॥ ५३ ॥ गयपाणा केइ कया—हत्थट्ठियनिसियखग्गघाएहिं ते भउदंडाइया—अन्ने नट्ठा भ-ओ तट्ठा. ॥ ५४ ॥ तो मउलियकरकमला—भूवीढलुठंतमत्थया सव्वे, खामित्ता रा-याणं—विणीयविणयत्तणं पत्ता. ॥ ५५ ॥ तस्स कुमारामच्चो—न कोवि सव्वो तहा-विहो अत्थि, तं आयरेण मग्गइ—नय लग्गइ कोवि से हत्थे. ॥ ५६ ॥ एयं ता ए-चंचिय—नगरब्बहिं कविलनामगो विप्पो, निवसइ बंभणजणसमुचियाइं कज्जाइं कुणमा-

आवी उर्जीने बाहेर जइ पाछो आव्यो, त्यारे पण तेओ तेना सामे लगारे ऊठी ऊभा नहि थया. त्यारे तेणे गुस्सो व-ताबीने तेमने कह्युं के अरे सुभटो, गोधाओने मारी काढो. ते सांभळी तेओ परस्पर हसवा लाग्या. ५०—५१ त्यारे भारे रोषमां चढीने तेणे ते सभामंडपना दरवाजा पर बे लेप्पमय (माटीना बनावेला) छडीदार जोइने तेमने कह्युं के—५२ ज्यारे आ लोको विनय नथी करता, तो शुं तमारो पण विनय जतो रह्यो छे के? त्यारे ते लेप्पमय छडीदारो झट ऊठ्या. ५३ तेमणे हाथमां धरेली तीखी तरवारोना घाथी केटलाक सुभट सरदार वगेरेने त्यां ठार कर्या एटले बीजाओ भय पामी त्यां-थी नासता थया. ५४ बाद तेओ सघळा हाथ जोडी जमीन पर माथुं लगाडी राजाने खमावी विनीत थइ विनय करवा लाग्या. ५५ हवे तेने जोइये तेवो कोइ पण त्यां युवान मंत्री न हतो तेथी तेथी ते खंत राखीने तेनी शोध करवा लाग्यो, पण तेना हाथे कोइ तेवो मळी शक्यो नहि. ५६ आ वात एमज चाल्या करती. हवे ते नगरनी बाहेर कपिल नामनो ए-

णो. ॥ ५७ ॥ पत्ता वियालसमए—अह केई साहुणो, डुहं इणिंह—नगरंतो पविसिज्जइ—ठिया तओ तस्स होमगिहे. ॥ ५८ ॥ सो पंडियाभिमाणी—कविलो पुच्छ ज काउ माढत्तो, अवणीओ अइनिउणो—विणिच्छओ पुच्छियत्थाण. ॥ ५९ ॥ जाओ य सावगो सो—जिणवयणंचिय परंतिमन्नंतो, एवं काले वच्चंतयंमि अह अन्नया अन्ने—॥ ६० ॥ वासावासं साहू—ठिया, सुओ तस्स जायमेत्तोवि—गहिओ दारुणरूवाइ—रेवईए वणयरीए. ॥ ६१ ॥ ता माया साहूणं—भावणकप्पं करेंतियाण सहे, भावेइ तं कयाई—कप्पाण पभावओ सज्जो—॥ ६२ ॥ संजाओ सो, नट्ठा य—वणयरी, तयणु सेसजायाणि, सव्वाणि थिरीभूयाणि—तेण कप्पोत्ति नाम कयं—॥

क ब्राह्मण तेनी जातिने योग्य कामो करतो थको रहेतो हतो. ५७ त्यां सांजना वखते कोइ साधुओ आव्या. तेमणे विचार्युं के आ वखते नगरमां पेसतां दुःख थाय एम धारी तेओ तेनी यज्ञशाळामां रातवासो रह्या. ५८ हवे पोताने पंडित मानतो ते कपिल तेमने पश्नो करवा लाग्यो त्यारे तेमणे पूछेली बाबतोनो अति म्हापण भरेलो खुलासो तेने आप्यो. ५९ एथी ते श्रावक बनी जिनवचननेज उत्तम मानवा लाग्यो. एम केटलोक वखत जतां एक वेळा तेने त्यां बीजा साधुओ आवी चतुर्मास रह्या. ए वखते तेनो पुत्र जन्म्यो के तरतज तेने भयंकर रेवती नामनी वनचरी (डाकण) वळगी. ६०—६१ त्यारे तेनी माता भावनाकल्प करता साधुओनी नीचे रही ते बाळकने भावित करवा लागी एटले ते कल्पोना प्रभावथी ते साजो थयो अने पहेली वनचरी (डाकण) नासी गइ. त्यारकेडे तेना सघळा संतानो स्थिर रह्या, एथी तेनां मातपिताए सारा दिवसे स्वजनसत्कार करीने तेनुं कल्प एवुं नाम पाड्युं. हवे ते श्वेतपक्षमां जेम चंद्र वधे तेम शरीरे वधवा लाग्यो. ६२—६३—६४ बाद तेनां माबाप काळधर्म पाम्यां. हवे ते ब्राह्मणकुमार ब्राह्मणजनने भणवा योग्य चौद विद्यास्थान-

६३ ॥ अम्हापिईहिं सुपसत्थवासरे विहिय सयणसक्कारं,—परिवड्ढिउ माढत्तो—देहेण ससिव्व सियपक्खे. ॥ ६४ ॥ कालगए जणगजणे—हिज्जा ठाणाणि तेण चउदसवि, माहणजणजोग्गाइं—पढियाइं विलंवरहियाइं.—॥ ६५ ॥

तानि चामूनि.

" अंगानि, चतुरो वेदा–मीमांसा न्यायविस्तरः, पुराणं धर्मशास्त्रं च—स्थानान्याहुश्चतुर्दश. ॥ १ ॥ शिक्षा कल्पो व्याकरणं—निरुक्तं ज्योतिषं तथा, छंदश्चेति षडंगानि—प्राहुरेतानि कोविदाः " . ॥ २ ॥

सो सव्वमाहणाणं—उवरिं नामं लहेइ, नय लेइ, अइसंतोपसुवगओ—निवदाणं दिज्जमाणंपि. ॥ ६६ ॥ पत्तोवि जोव्वणज्जरं—विज्जागुणओ य परमसोहग्गं, कन्नं सुरूवपुन्नंपि—निच्छए किंपि परिणेउं. ॥ ६७॥ सो णेगछत्तसयपरिगओ पुरं हिं-

ने सघळाओमां ज्ञानी तैयार थयो. ६५

ते चौद विद्यास्थान आ रीते छेः—

" छ अंग, चार वेद, मीमांसा, न्यायशास्त्र, पुराण अने धर्मशास्त्र ए चौद स्थान छे.—त्यां शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष अने छंद ए शास्त्रोने पंडितो अंग तरीके कहे छे. " १—२

हवे ते सघळा ब्राह्मणोमां पंकाया लाग्यो, छतां ते अति संतोषवान रहीने राजाए आपवा मांडेलुं दान पण लेतो नहि. ६६ वळी ते यौवन पाम्यो अने विद्याना गुणथी परम सौभाग्य पाम्यो तोपण सुरूपवाळी कन्याने पण परणवा इच्छतो न हतो. ६७ ते हमेशां सेंकडो छात्रोनी साथे नगरमां फरवा नीकळतो हतो. हवे तेना जवा आववाना मार्गमां एक ब्राह्मण

मए सयाकालं, अह तस्सागमनिग्गमपहंमि एगो दिओ वसइ. ॥ ६७ ॥ धूया तस्स जलूसगनामगवाहीइ विहुरियसरीरा, थूलत्तण मणुपत्ता—अईव रूवस्सिणी, तं च— ॥ ६९ ॥ न वरेइ कोवि, एवं वएण सा अइमहल्लिया जाया, जाओ रिउसमओ से—नाय मिणं तीइ जणएण. ॥ ७० ॥ सो चिंतिउं पवत्तो—सत्थे पढिया उ बंभवज्झेसा, जं कन्नगा कुमारी—रिउरुहिरपवाह मुम्मुयइ. ॥ ७१ ॥ सच्चपइन्नो एसो कप्पगवडुओ तओ उवाएण, केणावि देमि एयस्स—अन्नहा नत्थि वीवाहो. ॥ ७२ ॥ नियगिहदारे खणिओ—तेणगडो तत्थ ठाविया एसा, महया सद्देण तओ—पकूविओ निवडिया अयडे. ॥ ७३ ॥ जो जो एसा कविला—जो नित्थारेइ तस्स मे दिन्ना, तं सोऊणं करुणापरायणो कप्पगो तत्तो—॥ ७४ ॥ तं उत्तारेइ तओ—भणि-

रहेतो हतो. ६७ तेनी दीकरी अति रूपाळी छतां जलूप नामनी व्याधिथी पीडाती हती तेथी वहु जाडी थइ जवाथी तेने कोइ पसंद करतो न हतो. आ कारणथी ते वयमां पण वहु मोटी थइ गइ अने तेने ऋतुकाळ प्राप्त थयो ते तेना बापना जाणवामां आव्युं. ६९—७० त्यारे ते विचारवा लाग्यो के शास्त्रमां कह्युं छे के जे कुंवारी कन्याने ऋतुकाळ आवी रुधिरप्रवाह वहे ते ब्राह्मणने परणवी वर्जित छे. ७१ माटे आ कल्प नामनो वटुक (ब्राह्मणपुत्र) सत्य प्रतिज्ञावाळो छे तो तेने कोइ उपायथी आ कन्या आपुं, ए शिवाय वीजी रीते एनो विवाह थनार नथी. ७२ पछी तेणे पोताना घरना दरवाजा पासे एक कूवो खोदावी तेमां ते कन्याने उतारी अने पछी मोटे अवाजे बूम पाडवा लाग्यो के ते कूवामां पडी गइ छे. ७३ हे कपिल, जे एने कूवामांथी कहाडीने वचावे तेने में ते आपी. ते सांभळीने करुणावान् कल्पके तेमांथी तेने वाहेर कहाडी. त्यारे ते ब्राह्मण तेने कहेवा लाग्यो के हे पुत्र, हवे तुं सत्य प्रतिज्ञावान् छे (माटे एने तुं परण). त्यारे अपय-

ओणेण जइ सच्चसंधो सि, पुत्त, तओ तेणं अजसन्नीहणा कहवि पडिवन्ना. ॥ ७५ ॥ दाऊण ओसहाइं—नीरोगसरीरगा कयाणेण, निसुयं रन्ना पंडियसिरोमणी कप्पगो एत्थ. ॥ ७६ ॥ सहाविय तो भणिओ—रन्ना, जइ रज्जचिंतगो होहि, तं कप्पय असरिससेमुहीइ उवहसियगुरुबुद्धी. ॥ ७७ ॥ तह सव्वंचिय रज्जं तुज्झ वसे जेण भइ मम्हाणं, गासच्छायणमेत्तं—मोत्तुं नहु कज्जमन्नेण. ॥ ७८ ॥ कह किव्विस मेय महं पडिवज्जेज्जा भणेइ सो ताहे, एसो न निरवराहो—चिंतइ निवो वसे होही. ॥ ७९ ॥ भणिओ रन्ना साहीइतीइजो धोयगो परिवसइ, किं कप्पगवत्थाइं–तं धोवसि अहव अन्नोत्ति ? ॥ ८० ॥ अहमेव तेण भणिए—एत्ताहे जइ समप्पई वत्थे—ता सव्वहावि मा देज्ज—एवमेसो पडिनिसिद्धो. ॥ ८१ ॥ अह इंदमहे पत्ते—भ-

शयी करीने तेणे ते कबूल करी. ७४—७५ बाद तेणे औषधो आपी तेने रोगरहित करी. एवामां राजाए सांभळ्युं के आ नगरमां कल्पक सघळा पंडितोनो शिरोमणि छे. ७६ तेथी राजाए तेने बोलावी कह्युं के हे कल्पक, तुं तारी अनुपम बुद्धिथी बृहस्पतिने हसी कहाडे एवो छे, तो तुं मारुं राज्य संभाळ अने आ सघळुं राज्य तारे आधीन छे के जेथी सारुं थाय, बाकी अमने तो खावा तथा पहेरवानुं मळे एटले बीजुं जोइतुं नथी. ७७—७८ तेणे उत्तर वाळ्यो के ए पापभरेला कामने हुं केम कबूल करुं ? त्यारे राजाए विचार्युं के आने अपराधमां सपडाव्या शिवाय ए वश थनार नथी. ७९ पछी राजाए ते बाजुमां जे धोबी रहेतो हतो तेने कह्युं के कल्पकनां कपडां तुं धोवे छे के बीजो कोइ धोवे छे ? ८० तेणे कह्युं के हुंज धोउं छुं. त्यारे राजाए तेने हुकम कर्यो के हवेथी ते जो वस्त्र आपे तो ते तारे तेने बिलकुल देवां नहि. ८१ हवे इंद्रमहोत्सव आवतां कल्पकने तेनी स्त्री कहेवा लागी के हे प्रियतम, तमे मारां कपडां सुंदर रीते रंगावी आ-

जाए कप्पगो इमं भणिओ, मम पियरस्स वत्थाइं—चंगाइं तुमं रयावेह. ॥ ७२ ॥ अइसंतुट्ठमणो सो—निच्छइ ता जा पुणोपुणो भणइ, नीयाणी ताणि रयगस्स मंदिरे ताणि वत्थाणि. ॥ ७३ ॥ सो भणइ अहं मोल्लंविणावि रंगेमि ते इमाणि त्ति, सो मग्गिओ छणादिणे—अज्जंहिज्जो समप्पेमि. ॥ ७४ ॥ इयभणिरो सो कालं गमेइ जा बीय मागयं वरिसं, एवं तइयंपि तओ—गाढं सो मग्गिउं लग्गो. ॥ ७५ तहवि न अप्पेइ जया—ताहे सो रोसरत्तसव्वंगो, तं भणइ तुज्झ रुहिरेण—जइ न रंगेमि वत्थाइं—॥ ७६ ॥ तो जलियभीमजालाउलंमि पविसामि निच्छयं जाण, तो पत्तो नियगेहे—गहिया असिपुत्तगा निसिया. ॥ ७७ ॥ रयगगिहंपि अइगओ—ताहे रयगेण भारिया भणिया, आणेहि देहि वत्थाणि—जाव सा तं तहा कुणइ. ॥ ७८ ॥

पो. ७२ कल्पक अति संतोषवृत्तिवाळो होवाथी तेम करवा कबूल नहि थयो तोपण ते वारंवार कहेवा लागी तेथी आखरे ते ते कपडां लइने धोबीना घरे देवा गयो. ७३ धोबीए कह्युं के हुं तमारा आ वस्त्रोने मफत रंगी आपीश. बाद उत्सवना दिने ते मागवा आव्यो एटले तेणे आजकाल देवाना वायदा कर्या. ७४ एम वायदा करतां करतां बीजुं वर्ष आव्युं अने छेवटे त्रीजुं वर्ष आव्युं त्यारे कल्पक आकरी रीते ते मागवा लाग्यो. ७५ तेम करतां पण तेणे ते नहि आप्यां त्यारे ते रोषथी लालचोळ थइ तेने कहेवा लाग्यो के जो तारा लोहीथी ए कपडां नहि रंगुं तो हुं बळती आगमां पेसीश ए तारे नक्की जाणवुं. बाद तेणे घेर आवी तीखी तरवार उपाडी. ७६—७७ पछी ते धोबीना घरे गयो त्यारे धोबीए तेनी स्त्रीने कह्युं के कपडां लावीने दे एटले ते कपडां लइ आवी. ७८ एवामां ते कल्पके ते धोबीनुं पेट

कप्पेण तस्स उदरं—फालित्ता ताणि रुहिररत्ताणि, विहियाणि तस्स जज्जाइ—क-प्पगो भणिउ माढत्तो. ॥ ८९ ॥ किं एस निरवराहो—हओ तए जेण वारिओ रन्ना, तणेसो चिरकालो—जाओ वत्थाण मप्पिणणे. ॥ ९० ॥ चिंतियमिमेण नूणं— नरवइ-माया इमा नउ इमस्स, हा धी कहं. असंवद्ध—मेरिसं चिट्ठियं सहसा. ॥ ९१ ॥ जं तइया मच्चत्तं—दिज्जंतंपि हु पमिच्छियं न मए, तं एयफलं जायं—जइपुण पव्वइगगो होंतो—॥ ९२ ॥ तो नो एवंविहवसण जायणं होतओ, निवसमीवे, ता वच्चमि सयंचि-य—जा नो गोहा बला नेंति. ॥ ९३ ॥ इय चिंतिय रायउलं—गओ तओ सविणयं निवो दिट्ठो, भणिओ संदिसह ममं—किं कायव्वं ? निवो भणइ. ॥ ९४ ॥ पुव्वं-चिय जं भणियं—ठिओ तओ रज्जचिंतगपयंमि, तक्खणमेवो वगया—कयारवा रा-

फामी ते वस्त्रो लोहीथी रातां कर्यां. त्यारे तेनी स्त्री कल्पकने कहेवा लागी केः—८९ तें आ विनगुन्हेगारने शामाटे मार्यो ? केमके एने राजाएज मनाइ करी हती तेथी वस्त्रो देतां आटलो वखत नीकळी गयो. ९० त्यारे कल्पक विचारवा लाग्यो के खरेखर आ राजानोज मपंच छे, एनो एमां वांक नथी. माटे हाय हाय, में वगर विचारे केम आवुं चूरूं काम कर्युं !!!. ९१ ते वखते मने अमात्यपद मळतुं हतुं छतां ते में न लीधुं तेनुं आ फळ थयुं, पण जो हुं प्रव्रजित थयो होत तो आवा संकटमां फसात नहि. खेर हवे पोतेज चालीने राजा पासे जाउं, नहितो पछी सिपाइयो खेंचीने त्यां लइ जशे. ९२—९३ एम चिंतवीने ते दरबारमां जइ विनयपूर्वक राजाने जोयो अने कहेवा लाग्यो के फरमावो, मारे शुं करवुं ? त्यारे राजा बोल्यो. ९४ पूर्वे जे कहेलुं छे ते करो. ते परथी ते राज्यचिंतकना पदे रह्यो. एवामां

जले रयणा. ॥ ९५ ॥ दट्ठुं रायासह न्नासमाण मेयं परूढपणयं च, नट्ठा दिसोदिसिं ते—इयरो बहुभज्जाओ जाओ. ॥ ९६ ॥ जायाणि पुत्तरयणाणि—अन्नया पुत्तपाणिगहणंमि, संतेउरस्स रन्नो—भत्तं दाउं समाढत्तं. ॥ ९७ ॥ आभरणाणिं घडिज्जंति—तत्थ विविहाणि पहरणाणि तहा, उवलद्धं छिद्द मिणं—पुव्वामच्चेण कुद्धेण. ॥ ९८॥ लद्धावसरेण निवो—विन्नत्तो देव सुंदरो न इमो, कप्पो जेण विरूवं—काउं तुम्हं सुयं रज्जे—॥ ९९ ॥ इच्छइ ठावेउं एव मेव एयं न अन्नहा किंचि, संगामजोगमुवगरण—मन्नहा कह घडावेइ ? ॥ १०० ॥ सारणिजलसारिच्छा—रायाणो होंति जेण पाएण, जत्तो निज्जंति तओ—धुत्तेहि तहिंचिय वलिंति. ॥ १०१ नियपुरिसपेसणेणं—सच्चविउं कप्पगो सपरिवारो, खित्तो गम्भीरकूवे—अइकोहपरेण नरवइणा. ॥

त्यां धूमराण करता धोबीओ दरबारमां आवी पहोंच्या. ९५ तेओ कल्पकने राजा पासे प्रीतिथी वातचीत करतो जोइने आमतेम नासी गया. हवे कल्पक घणी स्त्रीओ परण्यो. ९६ तेने घणा पुत्रो थया. बाद एक वेळा पुत्रना लग्नमां तेणे राजाने तेना अंतःपुर साथे जमाडवानी तैयारी करवा मांडी. ९७ एथी तेणे पोताना घरे अनेक आभरणो तथा हथियारो घडाववा मांड्यां. ते वात तेनी पूर्वेनो मंत्री जे तेना पर गुस्सो राखतो तेना जाणवामां आवी. ९८ तेणे लाग जोइ राजाने जणाव्युं के हे देव, आ कल्पक सारो माणस नथी. जे माटे ते तमने मरावीने पोताना पुत्रने राज्य पर बेसाडवा मागे छे. आ वात खरेखरीज छे, एमां लगारे फेर नथी, नहितो लडवाना बरनां हथियारो ते केम घडावे छे ? ९९—१०० हवे राजाओ प्राये नीकना पाणी जेवा होय छे तेथी तेओने ठगाराओ ज्यां दोरवा मागे त्यां तेओ दोराय छे. १०१ तेथी आ राजाए पोतानो माणस मोकलावी खातरी करीने कल्पकने तेना परिवार साथे केद करावी अति गुस्से

१०२ ॥ तत्थ त्रियसस्य दिज्जइ—कोद्दवकूरस्स सेइगा एगा, जलवाहिगा य तहा —नियवकुमंबं तओ जणइ. ॥ १०३ ॥ पत्तो कुलपलओ मे—सत्तो काउं कुलस्स उ-द्धारं, निज्जामणं च वेरस्स—सो इमं जेमउ न अन्नो. ॥ १०४ ॥ जणियं कुडुंबलो-एणं—नत्थि सत्ती तुमं पमोत्तूण, अन्नस्से यारिसिया—भुंज तुमंचिय इमं भत्तं ॥ १०५ ॥ पच्चक्खायं भत्तं—सेसेहिं पाविंय च देवत्तं, तब्भत्तभोयणेणं—धारेई कप्पगो पाणे. ॥ १०६ ॥ जाया पच्चंतनराहिवेसु वत्ता जहा गओ निहणं, कप्पो सपुत्तदारो—लद्धाहा तओ कत्ति,—॥ १०७ ॥ ते रोहंति समंता—पाडलिपुत्तं महंतसेणाहिं, जाओ य निरवकासो—नंदो सहसा निराणंदो. ॥ १०८ ॥ अह सुवायं सो अलभ-माणगो चारगाहिवे जणइ, किं कोवि अत्थि कप्पगसंबंधी तत्थ कूवंमि ? ॥ १०९ ॥

पछी तेने ऊंडा कूवामां नाख्यो. १०२ त्यां तेने फक्त बाफेला कोद्रवानी एक सेतिका तथा पाणीनी एक कावरू आपवामां आवती; तेथी कल्पक पोताना कुटुंबने आ रीते कहेवा लाग्यो. १०३ आपणा कुळनो नाश थवानो वखत आव्यो छे, माटे जे कोइ कुळनो उद्धार करी शके तथा वेरनो बदलो वाळी शके तेणे आ कोद्रवा खावा, बीजाए नहि खावा. १०४ त्यारे कुटुंबीओ बोल्या के तमारा शिवाय बीजा कोइनी एवी शक्ति नथी, माटे तमेज आ भोजन खाओ. १०५ आम कही तेओ भोजननुं प्रत्याख्यान करी मरणशरण थया, अने कल्पक ते भोजन खातो रहीने जीवतो र-ह्यो. १०६ एवामां आजुबाजुना राजाओमां वात फेलाइ के कल्पक तेना स्त्री पुत्रो साथे मरी परवार्यो छे एटले तेओए हिम्मत धरी तरतोतरत पाटलिपुत्र नगर पर मोटां लश्करो लावी चोमेरथी घेरो घाल्यो, तेथी नंदराजा ओचिंतो सपडाइ जवाथी बेबाकळो थयो. १०७–१०८ त्यारे तेने बीजो कशो उपाय नहि सूझतां तेणे केदखानाना उपरीओ-

पुत्तो वा महिला वा—दासो वा अइपहाणबुद्धिजुओ, जं तस्स परियरो बुद्धिनाथणं सुचइ जणंमि. ॥ ११० ॥ भणियं चारगपालगपुरिसेहिं देव अत्थि कोवि तहिं, जो भत्तं पडिगाहइ—खित्तो आसंदओ तत्थ. ॥ १११ ॥ तंमि समारोवेत्ता—कूवाओ कड्ढिओ किससरीरो, नाणाविहोसहेहिं—पउणसरीरो य संजाओ. ॥ ११२ ॥ पागारोवरि काउं—गहिओज्जलवेससुंदरागारो, राईण दरिसिओ सो—ते भीयमणा खणे जाया.॥ ११३ ॥ तहविय नंदं परिहीणसाहणं जाणिऊण सुठ्ठुयरं, काउ मुवद्दव महिगं—ते पारद्धा, तओ लेहो.॥ ११४ ॥ णंदेणेसिं दिन्नो—जो तुब्भं सव्वअणुमओ कोइ, तं पेसेह जमुचियं—संधिं अन्नंचं काहामो.॥ ११५॥ कप्पो नावारूढो—गंगाइ महानईइ मज्झंमि, तप्पेसिओ य पुरिसो—मिलिओ थेवंतरेण ठिओ. ॥११६॥ करसन्नाए

ने पूछ्युं के पहेला कूवामां कल्पकनो कोइ संबंधी जेवो के पुत्र, स्त्री के न्हारे बुद्धिवाळो चाकर नफर हयात छे के केम ? केमके तेनो परिकर पण बुद्धिशाळी तरके दुनियामां संभळाय छे. १०९–११० तेओ बोल्या के हे देव, कोइक छे खरो के जे खावानुं लेतो रहे छे. त्यारे कूवामां मांचो उतारी तेमां तेने चमावी कूवाथी बाहेर काढ्यो तो ते शरीरे कृश थइ गएलो कल्पकज जणायो, एटले तेने अनेक जातनां औषधोथी साजो करवामां आव्यो. १११—११२ पछी तेने उज्वल कपडां पहेरावी टापटीप करावीने किल्ला उपर चमावी घेरो घालनार राजाओने बताववामां आवतां तेओ तरत मनमां डर खावा लाग्या. ११३ तेम छतां पण नंदने ओछा पमेला साधनवाळो गणीने तेओ जोर पर रही अधिक हल्लो करवा लाग्या. १४ त्यारे नंदे तेमने लेख मोकलाव्यो के तमो बधाने पसंद होय तेवा माणसने मोकलो तो पतावट वगेरे करीए. १ ५ बाद वहाण पर चमेलो कल्पक मंत्री तथा तेमणे मोकलावेल माणस गंगा नदीना वचे थोमा छेटे ऊभा रही

न्तो—कप्पगसंती बहुं जाणइ तेसिं, जह उच्छूण कलावे—हेट्ठा उवरिं च छिन्नंमि-त्तो—कप्पगसंती बहुं जाणइ तेसिं, जह उच्छूण कलावे—हेट्ठा उवरिं च छिन्नंमि ॥ ११७॥ एवं च दहियकुंभे—हेट्ठा उवरिं च विहियछेयंमि, लहुसत्ति भूमिपडियंमि होइ तं जाणसु किं जह. ॥११८॥ वामोहजणग मेयं—जाणित्ता कप्पगो तओ झत्ति, पाया-हिणी करेत्ता—नियत्तओ आगओ तुरियं. ॥११९॥ इयरोवि अइविलक्खो—नियत्तओ पुच्छिओ सवज्जो य, नय किंचि अक्खिउं तरइ—जाणइ बहुओ बहुं लवइ. ॥१२०॥ मुणियं च तेहिं एसो—कप्पेण वसीकओ न अम्हहिओ, कह सव्वह अइकुसलो—बहुप्पलावी कओ कप्पो. ॥१२१॥ संजायचित्तभेया—दिसोदिसिं ते पलाइउं लग्गा, जणिओ कप्पेण निवो—पच्छा एसिं विलग्गेहिं. ॥१२२॥ गहिया हत्थी आसा य—बहुधणं सिविरसंनियं तेसिं, उदिओ निवेण सो तंमिचेव कप्पो नियपयंमि. १२३ सव्वंपि रज्जकज्जं—

मुकवा मळ्या. ११६ त्यारे कल्पक मंत्रीए हाथना चाळा करी घणुं समजाव्युं के जेम शेलडीना सांठाने हेठे अने उपरथी कापी कढायलो होय, अगर एज रीते दहिना वासणमां नीचे तथा उपर काणुं पाडी एकदम जमीन पर पाडी दीधुं होय तो हे जना माणस, बोल के शुं परिणाम थाय ? ११७—११८ आ रीते गुंचवण करेलुं कहीने कल्पक मंत्री त्यांथी नरतज चकरावो दइ पाछो वळीने जलावळे आवी पहोंच्यो. ११९ हवे पेलो दुश्मनोनो माणस (ते निशानीओनो भेद नहि समजायाथी) बबता पडीने पाछो वळ्यो. तेने तेमणे पूछतां ते शरममां पडी कंइ बोली शक्यो नहि, मात्र तेणे एटलुं जणाव्युं के अमुक (कल्पक) बहु लपलप करतो हतो. १२० आ परथी तेमणे धार्युं के आने कल्पके लांचेलो छे, माटे ए आपणुं नखोद वाळशे नहितो कल्पक जेवा अति हुशियार माणसने ए लपलप करतो केम जणावे? १२१ आम शकमां पडी तेओ नाशभागमां पड्या तेवे कल्पक मंत्रीए राजाने कह्युं के हवे एमनो पूठ पकडो. १२२ राजाए तेम करी तेमना हाथी, घोडा तथा मालमता हाथ करी अने कल्पकने तेना असलना पद पर मुकरर कर्यो. १२३ बाद

वसीकयं तेण निययबुद्धीए, मंती पुव्वविरुद्धो—धणियंच निरुद्धओ विहिओ.॥ १२४॥ अइतिक्खोवि दवग्गी—दहंतओ मूलरक्खणं कुणइ, मिउसीयलो जलोहो—समूल मुम्मूलइ दुमोहं. ॥१२५॥ परिभाविंतेण इमं—तेण ततो केवलेण सामेण, नियलच्चिअ मसहमाणा—समूल मुम्मूलिया रिउणो. ॥१२६॥ जह जलणाउ सुवन्नं—उत्तिसं जूरिन्नासुरं होइ, तह सो वलणाउ तओ—पत्तो अइसमहियं तेयं. ॥ १२७ ॥ अच्चुग्गयवेरग्गेण—तेण परमं समुन्नइं नीओ, धम्मो जिणाण जिणचेइयाण पुयाइकरणेण. १२८ सुइसीलाओ कुलवालियाउ वीवाहियाउ नियवंसो नीओ विसालभावं—परमं तोसं च वंधुजणो. ॥१२९॥ तस्सेसा वेणइगी—बुद्धी बुद्धाखिलत्थसत्थस्स, कालेण संसाराहियजिणवयणो सो दिवं पत्तो. ॥१३०॥ (७.) इति.

कल्पक मंत्रीए पोतानी बुद्धिना बळे सघळो कारभार स्वाधीन करी पोताना विरोधी मंत्रीने मजबूत रीते केदमां घाल्यो. १२४ " दावानळ अति आकरो थइ वळे तोपण झाडोनां मूळ बची जाय छे, पण पाणीनो प्रवाह नरम अने थंडो रही तेमने मूळथी उखेडी शके छे. " आ कहेवतने अनुसरी तेणे केवळ सामनीति वापरीने तेनी मोटपने नहि सही शकता दुश्मनोने मूळथी उखेडी नाख्या. १२५—१२६ वळी जेम आगमांथी पसार थएल सोनुं वधारे चळकतुं थाय तेम ते संकटमांथी पसार थइने अधिक तेजस्वी थयो. १२७ ते साथे तेणे उग्र वैराग्यवान् थइने जिनमंदिरोमां पूजाओ वगेरे करीने जैन धर्मने पूर्ण उन्नति पर आण्यो. १२८ तेणे पवित्र शीलवाळी कुलीन बाळाओने परणी पोताना वंशने विस्तार्यो अने बंधुजनने संतोषित कर्या. १२९ आ रीते ते अखिल अर्थशास्त्र एटले नीतिशास्त्रनो जाणनार होवाथी तेनी बुद्धि ते वैनयिकी बुद्धि जाणवी. ते अवसरे जिनवचन आराधीने स्वर्गे पहोंच्यो. १३०

अहवा सोमननामो—चित्तयरसुओ इमीइ आहरणं, जह तस्सेसा वुद्धी—संजाया वोच्छ सह मित्तो. ॥ १ ॥ सागेयं नामपुरं—समत्थि सव्वत्थसाहणसमत्थं, उत्तरपुरच्छिमाए—दिसाइ अइरेगरमणिज्जं— ॥ २ ॥ सुरपियजक्खाययणं—तत्थच्छिनपट्टनिच्चरस्समहं, धवलपणोल्लणचलधवल धयवरा जोयरमणिज्जं. ॥३॥ सन्निहियपाडिहेरो—सो जक्खो विविहचित्तकम्मेहिं, पइवरिसं चित्तिज्जइ—कीरइ य महामहो तस्स. ॥ ४ ॥ नवरं चित्तियमेत्तो—तंचेवय चित्तकारगं हणइ, जइपुण नो चित्तिज्जइ—मारिसमारं पुरे कुणइ. ॥ ५ ॥ पाणज्झएण पलाया—चित्तयरा चिंतियं च नरवइणा, एस अचित्तिजंतो—होही अम्हाणवि वहाय. ॥ ६ ॥ सव्वे जत्ति निरुद्धा—पहायमाणा पइंतरालंसि, संकलिया एगत्था,—तेसिं सव्वेसि नामाइं—॥ ७ ॥ लिहियाइं

(कल्पक मंत्रीनी कथा समाप्त थइ.)

अथवा सोमक नामे चितारानो पुत्र आ बुद्धिमां उदाहरण छे. तेने बुद्धि शी रीते प्राप्त थइ ते हवे हुं कही बतावुं छुं. १ सर्व अर्थने साधवा समर्थ साकेत नामे नगर हतुं. तेनी उत्तरपूर्व दिशामां एटले के ईशानकोणे अति रमणीय सुरप्रिय नामना यक्षनुं आयतन (देरुं) हतुं. त्यां ते यक्षनो जे पट्ट हतो तेना आगळ हमेश रमणीय महोत्सव थता हता. वळी ते देरुं पवनथी फरकती चंचळ धोळी धजाना गळपाटथी शोभायमान लागतुं हतुं. २–३ त्यां दर वर्षे ते यक्ष तेना परिकर साथे चितरवामां आवतो हतो; अने तेनो उत्सव पळातो. ४ पण ते यक्ष चितराइ पूरो थयो के तेना चितरनारने ज मारी नाखतो हतो, अने अगर नहि चितराय तो शहेरमां ते मारे मरकी पेदा करतो. ५ त्यारे मरवानी बीकथी चितारा नासवा मांड्या एटले राजाए विचार्युं के जो ए यक्ष चितरवामां नहि आवशे तो ते अमोने पण मारी नाखशे. ६

इय भणिए तेणेसो—एवं होउत्ति मन्नए सम्मं, तो रन्ना सक्कारं—साहुक्कारं च सो नीओ. ॥ २२॥ पत्तो कोसंबीए—सयाणिओ तत्थ नरवई अत्थि, सो अन्नया सुहासण—मारूढो पुच्छए दूयं. ॥ २३ ॥ जं राईणं अन्नेसि—अत्थि किं तं न अत्थि मह रज्जे ? तेणुत्तं चित्तसहा—एकच्चिय देव ते नत्थि. ॥ २४ ॥ तो मणसा देवाणं—वाथाए पत्थिवाण सिज्झंति, कज्जाइं दुसज्झाइंवि—आणत्ता तक्खणा सव्वे—॥ २५ ॥ नगरीए चित्तयरा—तेहिं पुण सा सहा विभाजिऊणं, आढत्ता चित्तेउं—सव्वुवगरणोववेएहिं. ॥ २६ ॥ लद्धवरस्स य चित्तयर—दारगस्सा जओ उ अवरोहो, तद्दिसिभागो जाओ—अह्नन्नया जालकमगओ—॥ २७ ॥ दिट्ठो मिगावईए—पायंगुट्ठो वरा य सा देवी, अइपरमपेमपत्तं—नरवइणो तस्स निच्चंपि. ॥ २८ ॥ दिट्ठाणुसा-

राखी. बाद त्यांना राजाए तेनो सत्कार करी तेने साबाशी आपी.२२ त्यांथी ते कोशांबीमां आव्यो. त्यां शतानीक नामे राजा हतो तेणे एक वेळा गादी पर बेसी दूतने पूछ्युं के—२३ एवी कइ चीज छे के जे बीजा राजाओने त्यां छे अने मारे त्यां नथी ? त्यारे कह्युं के हे देव, तमारे त्यां फक्त एक चित्रसभा नथी. २४ त्यारे कहेवत छे के " देवोना दुःसाध्य कामो मनवमें चिंतवतां सिद्ध थाय छे अने राजाओनां तेवां कामो वचन उच्चरतां सिद्ध थाय छे " ते प्रमाणे तेणे तत्काळ नगरीमां वसता सघळा चिताराओने हुकम कर्यो एटले तेमणे अरसपरस वहेंचण करीने सघळी सामग्रीवगे सभा चितरवी शरु करी. २५—२६ हवे पेला वर पामेला ते चितारांना बाळकने जे बाजु अंतःपुर हतुं ते भाग आव्यो. त्यां एक वखते तेणे जाळीमांथी—मृगावतीना पगना अंगूठो दीठो; अने ते घणी रूपवंत तथा राजाने हमेशां अति प्रिय हती. २७—२८ बाद तेणे दीठेला अंगूठाने अनुसरीने तेनुं सघळुं रूप आलेख्युं. त्यारबाद तेनी आंखोना उन्मीलनना

रिणा तेण—तयणु चित्तयरसूणुणा सव्वा, आलिहिय। सा चक्खुस्स—तीइ उम्मी-लणावसरे—॥ २९ ॥ तस्सायरसारस्सवि—हत्थाओ कज्जलस्स अह बिंदू, ऊरंतरे निवडिओ—फुसिओ जाओ पुणोवि तओ. ॥ ३० ॥ एवं जा वारतिगं—विहियम-णेणं चिंतावियं मणसा, एएणेवं होयव्व-मेव ता ऊवरओ सेओ. ॥ ३१ ॥ निम्मा-या चित्तसहा—विन्नत्तो नरवई जहा देव, पासह चित्तं, सुपसन्न—माणसो पासि-उं लग्गो. ॥३२॥ निउणं निव्वन्नंतेण तेण दिट्ठं मिगावईरूवं, बिंदू य णूणमेएण-ध-रिसिया मज्झ पत्तित्ति. ॥ ३३ ॥ काउण मणे रोसं—चित्तयरसुओ निरूविओ व-ज्झो, चित्तयराणं सेणी—उवट्ठिया एस लद्धवरो. ॥ ३४ ॥ नो जोग्गो मारेउं—सा-मि, नियो नाणइ पच्चओ को णु? खुज्जयदासी मुहमेत्त—दरिसणा पच्चओ विहिओ.

अवसरे खबरदारी राखतां छतां पण तेना हाथमांथी काजलनुं बिंदु ते राणीना चित्रना साथलमां पडी गयुं ते तेणे लू-छी नाख्युं छतां फरीने बीजी वार पडयुं. २९—३० एम ज्यारे त्रीजी वार पण पडयुं त्यारे तेणे मनमां विचार्युं के ए त्यां हशेज तेथी तेणे ते त्यां रहेवा दीधुं. ३१ हवे चित्रसभा पूरी थतां चितारा्ओए राजाने वीनंती करी के हे स्वामि, हवे खुशीथी चित्रसभा जोइ ल्यो. त्यारे राजा खुशी थइ ते जोवा लाग्यो. ३२ हवे राजाए लक्षपूर्वक निहाळतां नि-हाळतां मृगावतीनुं चित्र जोयुं तथा ते बिंदु जोयुं, एथी तेणे धार्युं के नक्की एणे मारी स्त्रीनी लाज लीधी छे. ३३ तेथी तेणे मनमां गुस्सो लावीने ते चितारानां बाळकने मारी नाखवानो हुकम कर्यो. त्यारे चितारा्ओ एकठा थइ कहेवा लाग्या के ए वरदानी छे. माटे हे स्वामि, ए मारवा योग्य नथी. राजाए कह्युं के तेनी खातरी शी? त्यारे तेमणे कुब्जा दासीनुं फक्त मुख बतावीने तेनुं आबेहूब चित्र करावी आपी खातरी करावी. ३४—३५ तेम छतां राजाए कह्युं के मारो रोष

॥ ३५ ॥ रोसो अवंज्झओ मज्झ—तहवि संमास मस्स मन्नणेह, आणत्तो निविस्सओ—गओ य सागेयनयरंमि. ॥ ३६ ॥ विहियं पाज्झिचरणं—तस्सेवय सुरपियस्स जक्खस्स, पढमुवासस्संते—भणिओ वामेणवि लिहेसि. ॥ ३७ ॥ इय पुणरवि लद्धवरो—जक्खाओ सो सयाणिए रोसं, अइदुस्सहं पवन्नो—वसणुववाएवि चिंतइ य. ॥३८॥ विहियं मिगावईए—रूवं फलयंमि अइसयसरूवं, उज्जेणीए पज्जोय—राइणो तं च दरिसेइ. ३९ ॥ दिट्ठं सिट्ठं च निवेण—पुच्छिए तेण तक्खणाचेव, कोसंबीनरवइणो —दूओ अतिदारुणो पहिओ. ॥ ४० ॥ एसा मिगावई ते—जा भज्जा तं लहुं ममं देहि, अन्नह संगामसहो—होज्ज समं एज्जमाणस्स. ॥ ४१ ॥ तो भिउडिभंगभीसण —निडालवट्टो सयाणिओ दूयं, दूरमसक्कारेत्ता—निद्धमणेणं निसारेइ. ॥ ४२ ॥ तो

खाली होयज नहि माटे हुकम कर्यो के एनुं जमणुं कांडुं कापीने एने देशनिकाल करो. एथी ते देशनिकाल थइ साकेतपुरमां आव्यो. ३६ तेणे त्यां तेज सुरप्रिय यक्षनी प्रतिचरणा (उपासना) करी एटले पहेलाज उपवासना अंते यक्षे कह्युं के जा तुं हवे डाबा हाथथी पण चित्री शकीश. ३७ एम फरीने तेणे ते यक्ष पासेथी वर मेळव्युं, अने तेने शतानीक उपर अति गुस्सो रहेवा लाग्यो तेथी ते तेने दुःखमां नाखवाना उपायो चिंतववा लाग्यो. ३८ तेणे मृगावतीनुं अतिशय शोभितुं रूप पाटीया पर आलेखीने ते उज्जयिनी नगरीना प्रद्योतन राजाने बताव्युं. ३९ ते जोइ राजाए पूछतां तेणे ते संबंधी वात कही एटले राजाए तरतोतरत कोशंबीना राजा तरफ एक बीहामणा दूतने मोकलाव्यो. ४० ते साथे कहेवराव्युं के आ तारी मृगावती नामनी जे भार्या छे ते जलदी मने पहोंचाड नहितो हुं चडी आवुं छुं माटे लडवा तैयार थजे. ४१ त्यारे शतानीकराजाए ते वात सांभळी भमर भांगी भयंकर कपाळ भरीने ते दूतने फजेत करी धक्का मारी रवाने

दूयवयणपरिकुविय—माणसो सो अवंतिनरनाहो, सव्वबलेण सणाहो—कोसंबिं पइ समुच्चलिओ. ॥ ४३ ॥ तं जमदंडागारं—सोऊणं इंतयं पतूरंतं, अप्पबलो सो राया—मओ अईसाररोगेण. ॥ ४४ ॥ अइथिरचित्तत्तणओ—मिगावई णूण एस पुत्तोवि, उदयणनामा अव्वाबगोत्ति मे नासिही सहसा. ॥ ४५ ॥ इय परिभाविय पज्जोयगस्स-पेसइ दूयं सचिरेण, भणिओ एस कुमारो—बालो अम्हेहि तुज्झ घरे.—॥ ४६ ॥ संपत्तेहिं सामंतराइणो—नाम परिभवं वहिही, अन्नेणवि संनिहिएण—केणई मा न पेल्लिज्जा. ॥ ४७ ॥ तो संपयं न कालो—पत्थुयकज्जस्स सहसु य विलंबं, सो भणइ स-ए चिंता—मरंमि को किं खमो काउं. ॥ ४८ ॥ भणियं मिगावईए—सीससमीवंमि

कर्यो. ४३ दूते आवी ते वात प्रद्योतनने जणावतां ते गुस्से थइ सघळुं लश्कर लइ कोशंबी तरफ रवाने थयो. ४४ हवे ते यमना दांता जेवा राजाने जलदी जलदी आवतो सांभळीने ओछा लश्करवाळा शतानीकराजाने अतिसारनो रोग लागु पड्यो तेथी ते मरण पाम्यो. ४४ आ वखते मृगावतीए विचार्युं के प्रद्योतन राजा मजबूत मननो होवाथी आ मारा अति नानकडा उदयनकुमारनो पण झट नाश करावशे. ४५ एम विचारीने तेणीए प्रद्योतन तरफ तरत दूत मोकलावी कहेवराव्युं के हुं तारा घेर आवीश तो आ नानो कुमार सामंतराजाओथी पराभव पामशे अने वखते बीजो पण कोइ समीपवर्त्ती एने हेरान करशे माटे तेम न थवा दीयो. ४६–४७ माटे प्रस्तुत कार्यनो हाल समय नथी तेथी थोभो विलंब राखो. प्रद्योतने जवाब वाळ्यो के हुं एनी चिंता राखनार बेठो छुं तो कोण एनुं नाम लइ शकशे? ४८ मृगावतीए कहेवराव्युं के सर्प मायानी नजीक होय अने गारुडी सो योजन पर होय तो ते ते टांकणे शुं करी शके? ४९ एम कहे-वराव्या छतां ज्यारे ते अतिरागने लीधे अटकी शक्यो नहि त्यारे तेणीए तेने एम कहेवराव्युं के वारु, त्यारे कोशंबीपुरीने मजबूत करावी आपो. ५० प्रद्योतने ते वात कबूल राखी पूछाव्युं के तेने शी रीते मजबूत करवी? राणीए कहे

निवसई सप्पो, गारुम्भिओ पुण जोयण—सयंमि किं कुणउ सो वसरे ? ॥ ४ए ॥ जाहे ज्ञणिओवि न गइ—सो दढं रागमागओ ताहे, ज्ञणियं जहा सुसज्जं—कोसंविपुरं करावेहि. ॥ ५० ॥ पम्भिवन्नं कह कीरउ—ज्ञणिओ उज्जेणिइट्टगा बलिया, कीरउ ताहिं विसालो—सालो वलवं इहपुरीए. ॥५१॥ पुरिसो मयणविहुरियो—पत्थिज्जंतो मणप्पियजणेण, किंकिं न देइ किं किं करेइ नहु बहुअकज्जंपि.॥५२॥ तस्स तया रायाणो —चोद्दस वसवत्तिणो सपरिवारा, ठविया दोण्ह पुरीणं—पहंमि गुरुअंतरालंमि ॥ ५३ ॥ पुरिसपरंपरएणं—आणीया इट्टगा तओ तेहिं, विहिओ कोसंवीए—पायारो हिमनगागारो. ॥ ५४ तत्तो इमीइ ज्ञणियं—किमिमीए धन्नमाइरहियाए, सन्नापुन्नेण तओ—ज्ञरिया धणधन्नमाईणं. ॥ ५५ ॥ उसना वेद यच्छास्त्रं, यच्च वेद वृहस्पतिः

वराव्युं के उज्जेणीनी ईंटो मजबूत होय छे, माटे तेमनावमे आ नगरीनो मजबूत कोट करावी आपो. ५१ हवे कहेवत छे के "कामातुर पुरुष तेना प्रियजननी प्रार्थनाथी शुं शुं नहि आपे तथा शुं शुं नहि करवा योग्य काम पण नहि करे५२ ए कहेवत प्रमाणे प्रद्योतन राजाए पोता पासे ते वखते जे चौद वशवर्त्ती राजाओ हता तेमने ते वे नगरीना लांबा मार्गनी वच्चे राख्या. ५३ तेमणे माणसोनी हार करीने त्यांथी ईंटो आणी एटले कोशंबीने फरतो हिमालय जेवो कोट तैयार कराव्यो. ५४ त्यारे फरीने राणीए कहेवराव्युं के आ नगरीमां धान्य वगेरे कंइ नथी माटे शा कामनी गणाय एटले विश्वास पामेला प्रद्योतने ते धनधान्यथी पण जरावी आपी. ५५ कहेलुं छे के "शुक्राचार्य जे शास्त्र जाणे छे तथा वृहस्पति जे शास्त्र जाणे छे ते बधुं स्त्रीओनी बुद्धिमां स्वज्ञावेज रहेलुं छे." ५६ आ वचनने अनुसरती तेणीए विशेष मजबूती आपी. हवे ते सरस नगरी घेरो सहेवाने समर्थ थइ पमी. ५७ ए वखते मृगावती विचारवा लागी के ते गाम तथा नगरोने धन्य छे के ज्यां सर्व जगत्ना जीवो पर वात्सल्यज्ञाव राखनार चरमतीर्थंकर वीरप्रज्जु विचरे छे. ५८ वळी तेओ ज्यां विचरे छे त्यां परचक्र, दुकाळ तथा अकाळ मरण वगेरे अनर्थ दूर थता रहे छे अने लोकोना मनमां आनंद थतो रहेछे एवा ते ज्ञगवान् छे. ५ए ते ज्ञ

खलावादेव तत् सर्वं, स्त्रीणां कुक्षौ प्रतिष्ठितं. ॥ ५६ ॥ इयवयणमणुसरंतीइ—तीए, परिचिट्ठिओ विलसलंबाओ, रोहगसज्जा सज्जा—संजाया सा पुरी पवरा. ॥ ५७ ॥ परिचिंतियं च णाए, धन्ना ते गामनगरमाईया, सव्वजगजीववच्छल—चरिओ चरमो जिणो वीरो. ॥ ५८ ॥ विहरइ जत्थ अणत्थे—परचक्कडुकालअकालमरणाई, उच्चारिंतो दूरे—जणियजणमानसाणंदो—॥ ५९ ॥ जइ इज्ज मज्झ पुन्नेहिं—एत्थ सामी करेमि पव्वज्जं, तो तस्स चलणकमलंसियंमि परिचत्तपडिबंधा. ॥ ६० ॥ परउवयारेक्करई—नाउं तच्चिंतियं महाभागो, उत्तरपुरत्थिमाए—दूरा देसंतरागम्म.—॥ ६१ ॥ ओइण्णो उज्जाणे—सामी चंदावयारनामंमि, जाओ वेरोवसमो—सगया चउविहा देवा. ॥ ६२ ॥ सव्वाजियाणं सरणं व—ओसरणं तत्थ निम्मियं तेहिं, आजोयणमे-

गवान जो मारा पुण्ये अहीं पधारे तो हुं प्रतिबंध छोडी तेना चरणकमळना नजीकमां प्रव्रज्या अंगीकार करुं. ६० हवे परोपकारपरायण महाभाग वीरप्रभु तेनो ते मनोरथ जाणीने दूरदेशांतरथी आवीने ते नगरीनी उत्तरपूर्व दिशामां (ईशान कोणमां) रहेला चंद्रावतारनामना उद्यानमां उतर्या तेथी वेरनी शांति थइ अने चारे निकायना देवताओ त्यां एकठा थया. ६१—६२ तेणे सर्व जीवोनुं जाणे शरणरूप होय तेवुं योजन प्रमाण पृथ्वीने शोभावतुं समवसरण तरतोतरत रची तैयार कर्युं. ६३ ते समवसरण आ रीते छे के मणि, सुवर्ण, अने रूपाना त्रण गढ रच्या के जेमना उपर धजाओ अने निशानोना पटला जथा करता राख्या के सूर्य ढंकाइ जतो हतो. ६४ वळी सेंकडो शाखाओथी जमीनने ढांकतुं अने घणां पांदडांओथी आकाशने जरी नाखतुं एवुं बे प्रकारनी गायाथी युक्त अशोक नामे उत्तम झाड त्यां खडुं कर्युं. ६५ तेमज शरदऋतुना चंद्र जेवां शोभतां अने वैडूर्यरत्ननां दांडावाळा त्रण छत्र ऊभां कर्यां. ६६ वळी देदीप्यमान रत्नोनां

त्तमहीमंडणनूयं खणाचेव. ॥ ६३ ॥ मणिहेमरूप्पमइयं—पागाराणं तिगं समारइयं, ऊसियपमागऊयाचिंध—नियरनिम्महियचिहिरकरं.—॥ ६४ सालासएण संबलमहियलो बहलदलहरानोगो, डुविहबायाणुगओ—असोगनासो य पवरडुमो. ॥ ६५ ॥ सरयससिकंतरूवं—दूराडुमुक्कमोत्तिजज्जलयं, वेरुलियरयणदंमं—चंमं बत्ततयं च कयं. ॥ ६६ ॥ अइज्ञासुररयणकरोह—सोहियं हरियतिमिरसंनारं, सीहासणं च विहियं—हिमगिरिसिहरं व अइतुंगं. ॥ ६७ ॥ उवविठो तत्थ जिणो—सियचामरचारुवीइयसरीरो, ताम्मियगहीरडुंडुहि—नंकाराऊरियदियंतो. ॥ ६८ ॥ मिलिओ मिगावई पमुहनय—रिलोओ निवो य पज्जेओ, विहिओ पूयापमुहो—सक्कारो तित्थनाहस्स. ॥ ६९ ॥ पारद्धा धम्मकहा—पीऊसावरिससरिसवाणीए, धम्मे कहिज्जमाणे—सवर-

किरणोथी शोनित होइ अंधकारने दूर करतुं एवुं हिमाचलनी टुंक जेवुं ऊंचुं सिंहासन रच्युं. ६७ त्यां जिनेश्वर बेठा एटले तेना ऊपर श्वेत चामर ढोलावा लाग्यां अने गंनीर दुंदुनि वागतां दिशाओना ठेरा गाजी रह्या. ६८ त्यां मृगावती वगेरे नगरना लोको आव्या तथा प्रद्योतन राजा पण आव्यो. तेमणे तीर्थनाथ प्रजुनो पूजा प्रमुख सत्कार कर्यो. ६९ हवे त्यां जगवाने अमृतनी वरसाद जेवी वाणीवमे धर्मकथा शरु करी धर्म कहेवा मांड्यो एवामां जील जेवो एक माणस हाजर थयो. ७० तेणे लोकनी वाणीना अनुसारे धार्युं के आ कोइ सर्वज्ञ छे एटले ते निश्चय धरीने ते मनथी पूछवा लाग्यो. ७१ त्यारे जगत्ना जीवोना बंधु जगवान् बोल्या के हे सौम्य, तुं वचनथी पूछ के जेथी घणा जीवो बोधि पामी शकशे. ७२ एम कह्या छतां पण ते शरम खातो थको बोल्यो के हे जगवन्, जे ने हती ते ते छे के ? त्यारे जगवाने हा पामी. ७३ ते परथी गौतमस्वामिए पूछ्युं के हे जगवन् एणे " जा सा सा सा "ए बोलवमे शुं पूछ्युं ? त्यारे जगवाने

नच्चो नरो एगो—॥ ७० ॥ लोयप्पवायवसओ—एसो किल कोइ एत्थ सव्वन्नू, निच्छंयमिमं धरंतो—मणंसि पुच्छेज माइत्तो. ॥ ७१ ॥ ताहे नणिओ जयजीव—बंधुणा नगवया जहा सोम, वायाइ पुच्छ वहवे—सत्ता जं बोहि मुवइंति. ॥ ७२ ॥ एवं नणिओवि स लज्जमाणमाणसवसेण पञ्चिनणइ, नयवं जा सा सा सा—आमंति पकविए पहुणा—॥ ७३ ॥ पन्नणइ गोयमसामी—जासासासत्ति किं नणिय मिसिणा, उट्टाणपारियावणिय—माह एयस्स तो नयवं. ॥ ७४ ॥—जहा—चंपा णामेण पुरी—पुरोगमा पुरवराण मिह अत्थि, इत्थीलोलो परिवसइ—तत्थ एगो सुवण्णारो. ॥ ७५॥ सो पंच सुवण्णसए—दाऊणं कण्णगाण जा जत्थ, रूवगुणमणहराओ—समऊरवं ताउ परिणेइ, ॥ ७६ ॥ एवं पंचसयाइं—तासिं संपिंडियाइं, पत्तेयं, कारे-

नीचे मुजब तेनी आद्यंत सुधीनी हकीकत कही बतावी.–७४ ते आ रीते के: ज्हां चंपा नामे सरस नगरीओमां प्रथम पंक्तिए गणाती नगरी छे. त्यां स्त्रीओ तरफ आशक्त रहेनार एक सोनारो रहेतो हतो. ७५ ते सोनारो ज्यां ज्यांनी कन्याओमां जे कन्या अधिक रूपवाळी जणाती तेने माटे पांचसो सोनामहोर आपीने तेने परणतो. ७६ एम ते पांचसो कन्याओ परण्यो अने दरेकना तिलक पर्यंत चौद चौद अलंकार कराव्या. ७७ हवे ते जे दिवसे जेणीना साथे जोग जोगववा इच्छतो ते दिवसज तेणीने सर्व अलंकार आपतो पण बीजा दिवसोमां आपतो न हतो. ७८ वळी ते अत्यंत वहेमी होवाथी क्यारे पण पोतानुं घर छोडी बाहेर जतो नहि तेमज बीजा कोइ मित्रने पण घरमां पेसवा देतो नहि. ७९ एक वेळा ते तेना मित्रना घरे अति आग्रहने लीधे कोइ उत्सवप्रसंगे गयो. त्यारे तेनी स्त्रीओए विचार्युं के घणा लांबा काळे आज अणगम करी एकांत मळी छे, माटे चालो न्हाइए, सारां कपडां पहेरिए तथा अलंकार सजीए. ८०—८१

इ अलंकारं—तासिं सो तिलयचउदसमं. ॥ ७७॥ जंमि दिणे जीइ समं—जोगं भुंजेज मिलइ तंमि, सव्वमलंकारं देइ—तीइ नो अन्नदिवसेसु. ॥ ७८ ॥ सो अच्चंतं ईसालुओत्ति गेहं कयाइ नो मुयइ, नय अन्नस्स पवेसं—वियरइ मित्तस्सवि गिहंमि. ॥ ७९ ॥ अन्नदिणे मित्तागिहे—अच्चंतुवरोहपरिगओ संतो, वट्टंतंमि पगरणे—गओ तओ चिंतियमिमाहिं—॥ ८० ॥ पइरिक्कमज्ज मुवलद्ध—मेय मइभूरिकालओ कह्वि, ता एहामो मंडेमो—आविद्धमो अलंकारे. ॥ ८१ ॥ विहियं ताहिं तहच्चेव—सव्व मादरिसवग्गहत्थाओ, जा पेच्छंति समंगं—सहसा सो आगओ ताहे. ॥ ८२ ॥ अइरोसारुणनयणो—दट्ठूणं ताउ अन्नरूवाओ, गिन्हइ करेण एक्कं—पिट्टेइ य जा गयं जीवं. ॥ ८३ ॥ अन्नाहि चिंतियं नूण—मेस अम्हेवि मारिही हट्ठो, ता आ-

बाद तेओ तेम करीने हाथमां आरिसा लइ पोताना अंगोने जोवा लागी एटलामां ते ओचिंतो आवी पहोंच्यो. ८२ तेतेमने बीजा रूपमां जोइने अति रोषथी लाल थयो, अने तेओमांनी एकने पकडीने ज्यांलगी मरण पामी त्यांलगी मारवा मांड्यो. ८३ त्यारे बीजी स्त्रीओए विचार्यु के आ रूठेलो छे एटले अमने पण नक्की मारी नाखशे माटे एने आरिसाना ढगलेगो करी दइए एम धारीने तेमणे चारसो नवाणुं आरिसा तेना तरफ फेंक्या तेथी ते पण मरण पाम्यो, एटले ते झंखवाणी पडी के हाय हाय आ ते केवुं ऊंधुं थयुं ! ८४—८५ तेमणे विचार कर्यो के "एओ पतिने मारी नाखनार छे" एवी रीते आपणी लोकमां फजेती फेलाशे, माटे आ अवसरे आपणे मरवुं वाजबी छे. ८६ एम एकमत करीने तेमणे दरवाजा मजबूत रीते बंध करी घरमां आग सळगावी, पोताना प्राणनो त्याग कर्यो. ८७ ते बधी पश्चात्ताप करवाथी तथा

दृस्सिगपुंजं—एयं कुणिओ तओ मुक्का—॥ ७४ ॥ एगूणा पंचसया —अद्दागाणं तओ मओ सोवि, तक्खणमेव विसगाउ ताउ ही केरिसं जायं. ॥ ७५ ॥ पइ मारियाउ एया—इय असल्लाहा जणे परिज्ञंमिही, तो पत्तकालमेयं—जं किज्जाइ मरण मिग्गहंपि. ॥ ७६॥ इय एगीभूयलणाहिं—ताहिं दारं घणं पिहित्ताणं, दिन्नो गिहंमि अग्गी—कओ य नियजीवियच्चाओ. ॥ ७७ ॥ पच्छायावेणं साणुकोसन्नावेण कामनिज्जरया, अह्नो मणुस्सनावो—एयंसि गिरिंमि सव्वाहिं. ॥ ७८ ॥ सो पुण सुवन्नगारो —अट्टवसट्टो तिरिक्खओ जाओ, जा सा पढमं पहया—सा एग नवंतरंतरिया. ॥ ७९ ॥ बंन्नणकुलंमि चेमो—आयाओ सोय पंचमे वरिसे, जा वट्टइ ता सो हेमकारजीवो तिरिक्खत्तं—॥ ८० ॥ उज्झित्तु कुले जाया—तंमिय धूया अईव रूववइ, बालत्तणेवि वेओ—तीए अइउक्कमो उदिओ. ॥ ८१ ॥ जाओ सरीरदाहो—निच्चंचिय हयइ नो धिइं लहइ, ता चेमणं तणं—पोप्पय मुअरे कुणंतेणं—॥ ८२ ॥ पहया जोणि-

भागे नागनार छे " एवी रीते आपणी लोकमां फजेती फजाशे, माटे आ अवसरे आपणे मरवुं वाजबी छे. ७६ एम एकमत करीने तेमणे दरवाजो मजबूत रीते बंध करी घरमां आग सळगावी, पोताना प्राणनो त्याग कर्यो. ७७ ते वखते पश्चात्ताप करवाथी तथा दया आववाथी तथा अकाम निर्जराथी आ पर्वतमां मनुष्यपणुं पामी ७८ पेलो सोनारो आर्त्तध्याने मरीने तिर्यंचपणाने पाम्यो अने जेणीने तेणे पहेला मारी तेणीए एक नव कर्या बाद ब्राह्मणना कुळमां पुत्ररूपे जन्म लीधो. ते पुत्र ज्यारे पांच वर्षनो थयो त्यारे ते सोनारनो जीव तिर्यंचनो नव पूरो करीने ते ज कुळमां अति रूपवान पुत्रीरूपे जन्म्यो, तेने नानपणमां ज वेदनो तीव्र उदय रहेवा लाग्यो. ७९—८०—८१ ते कारणथी तेना शरीरमां बळतरा थवा लागी एटले ते हमेश

दारे—हत्थेणं कहवि नो रुयइ ताहे, नायं तेणुवलक्खो—चिरा मए एरिसोवाओ. ॥ ९३ ॥ सो रत्तीइ दिवावि य—लज्जाचाएण तं तहा काउं, आढत्तो जणगेहिं—नाओ निच्छामिओ हणिओ. ॥ ९४ ॥ अइउक्कडवेयवसा—अपत्ततरुणत्तणावि सा नट्ठा, सो पुण चेडो अचिरेण—दुट्ठसीलत्तणं पत्तो. ॥ ९५ ॥ जाओ य चोरपल्लीइ—जत्थ एगूणगाणि चोराण, तेसिं पंचसयाइं—सिणेहबद्धाइं निवसंति. ॥ ९६ ॥ सा पुण माहणधूया—पइरिक्कं हिंडमाणिगा एगं, गामं गया स चोरेहिं—तेहिं परिमुसिउमारद्धो. ॥९७॥ गहिया य तेहिं नवजोव्वणत्ति पायच्छियनिपरूई किंचि, भुत्ता कमेण सव्वेहिं—एवमेसा गमइ कालं. ॥ ९८ ॥ जाया तेसिं चिंता—कह वरई अम्ह सुरयसम्मद्दं, एगागिणी इमा सहइ—बीयमाणेसु ता अन्नं. ॥ ९९ ॥ आणीया कइ-

रोया करती, पण चुप नहि रहेती.तेवामां ते ब्राह्मणना दीकराए तेणीने पोताना पेट पर चडावी तेना योनिद्वारमां अणजाणये कोइ रीते हाथ लगाड्यो एटले ते छानी रही गइ. त्यारे तेणे विचार्युं के मोडो वेलो पण में आ उपाय मेळव्यो छे. ९२—९३ पछी ते राते तथा दिवसे पण लाज मूकीने तेने तेम करवा लाग्यो, तेनी तेना मावापोने खबर पडतां तेमणे तेने धक्का दइ कहाडी मेल्यो. ९४ बाद अति उत्कट वेदने लीधे ते बालिका तरुणावस्था नहि पाम्या छतां पण घर छोडी नासी गइ अने पेलो छोकरो पण तरतमां दुराचारी थइ गयो. ९५ ते एक चोरनी पल्लीमां आव्यो के ज्यां चारसे नवाणुं चोरो अरसपरस प्रीति राखीने रहेता हता. ९६ हवे ते ब्राह्मणनी पुत्री एकली हिंडती हिंडती एक गाममां गइ. एवामां ते गामने ते चोरो लूंटवा आव्या.९७ तेमणे ते छोकरीने पकडी साथ लीधी. ते नवयौवनवती होवाथी तेणे कंइक इच्छा

याचि—विइया तंच पदद्ठुमेई से, मच्छरवसमुछसिया—अग्गा छिद्दे निहालेउं. ॥ १०० ॥ घरुहत्याओ छन्निवि—कूवंमि गया जलाणयणहेउं, जणिया वीया कूवे—पेच्छ हला दीसए किंपि. ॥ १०१ ॥ दट्ठुं सा आरूढा—बूढा तत्थेव पेल्लिउं पच्छा, गिहमागया जणेइय—ते नियमहिलं गवेसेह. ॥ १०२ मुणियं तेहिं इमीए—एसा जह मारिया न संदेहो, माहणचेडस्स तओ—सु हिययंमि खुडुक्कियं एयं. ॥ १०३ ॥ एसा सा मे भइणी—पावेवहया न अन्नहा एयं, सुचइ जगवं वीरो—सव्वन्नू सव्वदरिसी य. ॥ १०४ ॥ कोसंबीइ पुरीए—समागओ जामि ता अहं तत्थ, आगम्म पुच्छइ इमो—जासासासत्ति वयणेणं. ॥ १०५ ॥ एवं जणिए पहुणा—संवेगं तिव्वमागया परिसा, हही संहविवारो—कहं विसंवइ जवे जविणो. ॥ १०६ ॥ सो पव्वइ-

थतां अनुक्रमे सर्वे जणाए तेने जोगवी. एम ते वखत पसार्या लागी. एट बाद ते चोरोने विचार थयो के आ रांक छोकरी एकली होइ अमां थयानो बोजो केम नही शकशे ? माटे बीजी पण एक स्त्री लावी राखीये तो ठीक थाय. एए से प्रमाणे नपशे कोइ पेल्ला बोजी स्त्री आणी. तेने जोइ पेल्ली छोकरीने तेना उपर मत्सर आव्यो एटले ते छिद्रो जोवा लागी. १०० हवे एक वेळा ते बने जणीओ घडा हाथमां लइने कूवा उपर पाणी भरवा गइ. त्यां ते ब्राह्मणनी पुत्रीए तेनी बोलावने कह्युं के अझी, कूवामां कंइक देखाय छे ते जो. १०१ ते परथी बीजी स्त्री कूवामां जोवा लागी एटले तेणीए तेने हडसेलो मारी कूवामां नाखी दीधी. बाद घरे आवी ते चोरोने कहेवा लागी के तमारी नवी स्त्रीने शोधी लावो. १०२ तेओ समजी गया के नक्की एणे तेने मारी नाखी छे एमां शक नथी. एवामां पेल्ला ब्राह्मणना छोकराने मनमां खटको पेदा थयो के—१०३ आ पापणी तो तेज मारी बेन लागे छे तेमा फेर नथी. छतां जगवान् वीरस्वामि सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी

ओ जयवंतपायमूले अणाउलो मणसा, संबुद्धा बुद्धिधणा—बहवे अन्नेवि जव्वजिया. ॥ १०७॥ देवी मिगावईविय—वंदित्ता एवमाह जं नवरं, पुछामि अवंतिनिवं—तुज्ज्नंते लेमि तो दिक्खं. ॥ १०८ ॥ जा पुछइ पज्जोयं—मज्झंमि सजाइ तीइ महईए, तक्खणकिसाणुराओ—सो लज्जापरवसो जाओ. ॥ १०९ ॥ नतरइ तं वारेउं विसज्जिया तेण सा तओ कुमरं, निक्खेवयनिक्खित्तं—काऊण वयं पवज्जेति. ॥ ११० ॥ अंगारवईपमुहाउ—अठदेवीउ तस्सवि निवस्स, सहिया मिगावईए—तम्मी समयंमि पव्वइया. ॥ १११॥ चोराणय पंच सया—तेणं गंतूण ताइ पल्लीए, संवोहिया, मिगावइ—अज्जा सा चंदणज्जाए. ॥ ११२ ॥ उवणीया जयगुरुणा— साहुसमायारपरिणई जाया, अह अन्नंमि विहारे—रविससिणो नियविमाणेसु. —॥ ११३॥ एसुंचिय आरू-

सांजळाय छे—१०४ ते जगवान् कोशंबी नगरीमा पधारेल छे, माटे हुं त्यां जइ तेमने पूछुं, एम धारी तेणे इहां आवीने " जा सा सा सा " ए बोलयी मने पूछ्युं छे. १०५ आम जगवाने कहायो पर्षदामां बेसनाराओमां जारे संवेग पेदा थयो अने सौ बोलवा लाग्या, धिक्कार पमो मोहना विकारने के जे संसारमां जमता जीवोने केवी विटंबना आपे छे ! १०६ बाद ते शवररूपे आवेलो ब्राह्मण जगवान पासे शांत मनयी दीक्षित थयो अने बीजा पण घणा बुद्धिशाळी जव्यजीवो प्रतिबोध पाम्या. १०७ हवे मृगावती राणी पण जगवानने वांदीने बोली के हुं अवंतीना राजाने पूछी तमारी पासे दीक्षा लइश. १०८ एम बोलीने ते तेज मोटी सजामां प्रद्योतनराजाने पूछवा लागी एटले ते राजानो तेना उपर रहेलो राग ओगळी पमवा मांड्यो अने ते लज्जामां परवश थइ पड्यो. १०९ तेयी ते तेने अटकावी शक्यो नहि, तेयी तेणे तेने रजा आपी एटले ते कुमारने राज्य पर स्थापीने दीक्षा स्वीकारवा लागी. ११० तेनी साथे ते राजानी अंगारवती प्रमुख

दा—समागया वंदिउं हुवणनाहं, अवरण्हकालसमए—अज्जाओविहु समग्गाओ. ॥ ११४ ॥ नायनियइगसमया—सेसज्जाओ समागया वसहिं, अज्जा मिगावई पुण— उज्जोयपवंचिया संती—॥ ११५ ॥ तत्थेव ठिया जा चंदसूरदंसण महाइवेगेण, पत्तेसु दूरदंसंतरंमि जायं महातिमिरं. ॥ ११६ ॥ तो सा किंचि विलक्खा—जा जाइ उव- स्सयंमि ता विहिया, आवस्सयकिरिया साहुणीहिं ज्ञणियाय गुरुणीए. ॥ ११७ ॥ अकलंककुलपसूया—जगसिरमणिणा जिणेण दिणवया, एयारिसं तमज्जो—रय णिविहारं कह पवन्ना ? ॥ ११८ ॥ तो सा पावनिवत्तिया—पवत्तिणीए खमाविउं लग्गा, एसो ममावराहो—मरिसिज्जउ नपुण काहामि. ॥ ११९ ॥ एसा महाणुभा- वा—पवत्तिणी सयललोयनमणिज्जा, कह मज्झ पमाएणं—एवमसंतोप माणीया.

बीजी आठ राणीओ पण तेम वखते प्रव्रज्या लेती थइ. १११ पछी ते सघर साधुए ते पर्षदामां जइने बीजा चारसे नवा- णुं चोरोने पण प्रतिबोध्या. आणीमेर मृगावती आर्याने भगवाने चंदनबाळाने सोंपी. त्यां ते रुडी रीते सामाचारी शीखी हुशियार थइ. हवे एक अन्य विहारना समये सूर्यचंद्र पोताना मूळविमानमांज आरूढ थइने वरांढे भगवानने वांदवा आव्या. अने सघळी आर्याओ पण ते वखते वांदवा आवी हती. (११२—११३—११४) त्यां बीजी सघळी आर्याओ त्यांथी पाछा वळवानो वखत थयो जाणीने पोतानी वसतिमां आवी पहोंची, पण मृगावती आर्या अजवाळाथी छेतराइने ज्यां लगी सूर्यचंद्र देखाता रह्या त्यां लगी त्यांज अटकी रही. एवामां सूर्यचंद्र अति वेगे लांबा प्रदेशमां नीकळी गया एटले घोर अंधारुं थइ रह्युं. (११५—११६) त्यारे ते जरा विलखी थइने जेवी उपाश्रयमां पहोंची के त्यां बीजी साध्वीओए आवश्यकनी क्रिया करी लीधी हती अने तेनी गुरुणीए तेने ठपको दीधो के—११७ हे आर्या, तुं कलं-

॥ १२० ॥ एवं संवेगपरा—नियदुच्चरियं पुणो पुणो जाव, गरिहेइ ताव जायं—केवलनाणं जयपहाणं. ॥ १२१ ॥ निद्दावसीइ बाहू—अज्जाए चंदणाइ सेज्जाओ पडिओ बहिं अही पुण—तद्दिसिमागंतुमारद्धो. ॥ १२२ ठविओ सेज्जाइ मिगावईइ सो जाव ताव पडिबुद्धा, किं मे बाहू चलिओ—नणेइ नयवइ इहं नागो. ॥ १२३ ॥ संचरिओ किय नायं—नाणाइसएण सो य पडिबाई, किं होज्जा इयरो वा—सा नगवइ नणइ अन्नोत्ति. ॥ १२४ ॥ सम्मं मिच्छादुक्कडपरायणा सायणा मए विहिया उप्पन्नकेवलाए इमीइ निद्दापमायाओ. ॥ १२५ ॥ इय वेरग्गमुदग्गं—खणमेक मुवागया तओ तीए, लोयालोयविलोओ—णाणाइसओ समुप्पन्नो. ॥ १२६ ॥ निग्घाइयकम्ममला कालेण सिवं अणंतममलं च, सिद्धिगइनामधेयं—परमं ठाणं गया दोवि. ॥ १२७ ॥

क वगरना कुळमां जन्मेली छे अने जगत्‌ना शिरोमणि नगवाने तने व्रत आप्यां छे, माटे तुं एवी छतां रात पाडीने केम आवी ? ११८ त्यारे मृगावती ते प्रवर्त्तिनीना पगे पडी खमाववा लागी के आ मारो अपराध माफ करो अने हुं फरीथी एम नहि करीश. ११९ पछी ते मनमां चिंतववा लागी के बधा लोकने नमवा योग्य एवी आ महानुनाव प्रवर्त्तिनीने में आज प्रमाद करीने शा माटे नाराज करी ? १२० एम संवेगमां चडी पोतानी नूलने वारंवार निंदवा लागी, एटलामां तेणीने जगत्‌मां सौ करतां उत्तम केवळज्ञान प्राप्त थयुं. १२१ एवामां निद्राना योगे चंदनबाळानो हाथ शय्याथी बाहेर पडी गयो अने ते तरफ सर्प आववा मांड्यो. १२२ तेथी ते हाथ मृगावतीए उपाडीने शय्यामां राख्यो तेटले चंदनबाळा जागी थकी पूछवा लागी के मारो हाथ केम चलायमान थयो ? त्यारे मृगावती बोली के हे नगवती, आणीमेर सर्प हतो. १२३ ते हाथ तरफ आवतो हतो. गुरुणीए पूछयुं के तें ते केम जाण्युं ? मृगावतीए कह्युं के अतिशय ज्ञानथी. गुरुणी-

पायं पसंगमारं—नणियमिमंपत्थुयं च पुण एत्थं, वेणइयबुद्धिसारेण—सोमरूएणं न अ-न्नेणं. ॥ १२८ ॥ इति.

अथ गाथाक्षरार्थ :—अत्रैव वैनयिक्यां बुद्धौ अर्थशास्त्रे योपार्जनोपायप्रतिपादके सामोपप्रदानभेददंमलक्षणे नीतिसूचके बृहस्पतिप्रणीते शास्त्रे पूर्वमेव द्वारतयोपन्यस्ते—कप्पगत्ति—कल्पको मंत्री ज्ञातमिति गम्यते—केनेत्याह—गंमाइ छेयभेयणाया इति — गंमादिपच्छेदभेदनेन गंमादीनामिक्षुयष्टिकलापरूपाणामादिशब्दाद्धिम्नांडस्य च यथाक्रममुपर्यधस्ताच्च छेदनभेदनेन च प्रतिपक्षप्रहितप्रधानपुरुषस्य मतिमोहसंपादकेनोपन्यस्तेनेति—यक्षप्रयुक्तिः सुरप्रिययक्षवार्त्ता उक्तलक्षणा ज्ञातं—कथमित्याह—किचपओय अहवा सरावमित्ति—कृत्याया नागरिकलोकक्षयलक्षणायाः

५ पूछ्युं के ते ज्ञान प्रतिपाती छे के अप्रतिपाती. मृगावती बोली के अप्रतिपाती छे. १२४ आ सांभळी गुरुणीए तरत रुडी रीते मिच्छादुक्कड कर्युं अने बोली, अरे में निद्राना प्रमादमां आ केवलज्ञान पामेली आर्यानी आशातना करी. १२५ आ रीते चंदनबाला पण एक क्षणांतर ज्यारे वैराग्यमां चढी के तरत तेने पण लोकालोकने प्रकाश करनार अतिशयज्ञान (केवलज्ञान) उपन्युं. १२६ बाद समय आवतां बन्ने जणी कर्ममल दूर करी शिवरूप अनंत अने अचळ एवा सिद्धिगति नामना परम स्थाने पहोंची. १२७ आ बधी भाये प्रासंगिक वात कही बतावी, पण एमां प्रस्तुत वात तो वैनयिकी बुद्धिवाळा सोमरूप नामे चित्रकारना पुत्रनीज छे. १२८

हवे गाथानो अक्षरार्थ आ रीते छे.

अहींया एटले आ वैनयिकी बुद्धिमां अर्थशास्त्र के जे एटले के पैसो पेदा करवाना उपाय बतावनार अने सा-

प्रयोग उपशमनोपायव्यापाररूपः—अथवा. यदिवा—क्वसतीत्याह—शरावे मल्लके उपलक्षणत्वात् कलशकूर्चिका वर्णकादौ च प्रत्यग्रे चित्रकरदारकेण यो मल्लकादौ नूतने विहिते सति यक्षोपशमनोपाय उपलब्धः स चात्र ज्ञातमिति भावः

अत्र चार्थशास्त्रत्वभावनैवं.—परो ह्यवशीभूतः सामादिभिर्नीतिभेदैः सम्यक्प्रयुक्तैर्ग्रहीतव्यः यथा अधीष्व पुत्रक प्रात—र्दास्यामि तव मोदकान्, तान्वान्यस्मै प्रदास्यामि—कर्णावुत्पाटयामिते. इति.

साम च चित्रकरदारकप्रयुक्तो विनय इति.

लेहे लिवीविहाणं—वट्टाखेड्डेण मक्खराभिहणं, पिट्ठिंमि लिहियवायण—मक्खर विंदाइ सुयणाणं. ॥ ए ॥

म दाम भेद दंमरूप नीतिने जणावनार बृहस्पतिप्रणीत शास्त्र के जे पूर्वे घारूपे लीधेल छे ते पटे कल्पकमंत्री उदाहरण छे. शी रीते ते कहे छे के सेलकीना गंगा तथा दाहिना भाजनने अनुक्रमे उपर तथा नीचे छेदन भेदन कर्युं तेवमे शत्रुए मोकलावेल मुखी माणसने गुंचवणमां नाखी दीधो ते रीते. तथा सुरप्रिय यक्षनी पूर्वे कहेली वार्त्ता पण उदाहरण छे, ते शी रीते ते कहे छे के नगरना लोकनी कतलने अटकाववानो जे व्यापार कर्यो ते रीते, अथवा शरावलुं, वालाकुंची तथा वर्णक वगेरे चितारानां पुत्रे नवा करीने यक्षने उपशमाववानो उपाय मेळव्यो ते पण इहां उदाहरण छे.

इहां अर्थशास्त्रपणानी भावना आ रीते छे के सामो माणस वश थतो न होय तो सामादिक नीति बरोबर वापरीने तेने वश करवो जेमके—

दीकरा, तुं सवारे ऊठी भणीश तो तने लाडु आपीश अगर तेम न करीश तो ते बीजाने आपीश अने तारा कान उपाडीश. त्यां साम एटले चितारानां पुत्रे जे विनय वापर्यो ते जाणवो.

मूळगाथा

लेखमां लिपिविधान ते पासाओनी रमतमां अक्षरो चितरी शीखाडवुं, तेमज पूठे लखेल वांचवुं तथा अक्षर

लेख इति द्वारोपक्षेपः . तत्र लिपिविधानं लिपिभेदो ज्ञातं. तच्चाष्टादशधा.—
हंसलिवी भूयलिवी—जक्खी तह रक्खसी य बोधव्वा, उड्डी जवणि फुरुक्की—कीडी द-
विडी य सिंधविया. ॥ १ ॥ मालविणी नड नागरि—लाडलिवी पारसी य बोधव्वा,
तह अनिमित्ता णेया—चाणक्की मूलदेवी य. ॥ २ ॥

तद्देशप्रसिद्धाश्चैताः

तत्र किल केनचिद्राज्ञा कस्यचिदुपाध्यायस्य निजपुत्रा लिपिशिक्षणार्थं समर्पि-
ताः—ते च दुर्ललिततया आत्मानं नियंत्र्य न शिक्षितुमुत्सहंते, अपि तु क्रीडंत्येव.
ततो राजोपालंभभीरुणा उपाध्यायेन—वट्टक्खेडेणमक्खरा लिहणंति—वृत्तानां ख-
टिकामयगोलकानां खेलनं क्रीडनं तैः सह कृतं—तेन चाक्षरपातानुरूपपतद्गोलक-

के विंदु पडी गया होय ते वांची लेवा. ए

त्यां लेख शब्दथी द्वारने याद करेल छे. लिपिविधान एटले जूदी जूदी लिपिओ अढार छे. हंसलिपि, भूतलि-
पि, यक्षलिपि, राक्षसलिपि, उड्डी, यवनलिपि, फुरुक्कीलिपि, कीडलिपि, द्राविडी, सिंधी, मालवी, नटलिपि, नागरीलि-
पि, लाटलिपि (गुजराती), फारसी; तेमज अनिमित्तलिपि, चाणाक्कीलिपि तथा मूळदेवी (मूडी) लिपि एम अढार लिपि छे.

ए बधी ते ते देशमां चालती प्रसिद्ध छे.

त्यां एक राजाए एक शिक्षकने पोताना पुत्रो लिपि शीखामवा माटे सोंप्या. तेओ रमतियाळ होवाथी कबजामां
रही शीखवा तैयार थता नहि, किंतु रमतमांज मन राखता. त्यारे राजाना ठपकाथी डरता शिक्षके माटीना

प्रतिबिंबद्वारेणाक्षराणामकारीदामालेखनं कारितास्ते ते हि यदा शिक्ष्यमाणा अपि न शिक्षामाद्रियंते तत उपाध्यायेन तत्क्रीडनकमेवानुवर्त्तमानेन तथा गोलकपातं शिक्षितं यथा भूमावक्षराणि समुत्पन्नानीति—यद्वा—पिठिम्मित्ति—भूर्यपृष्ठादौ लिखितानामक्षराणां यद्वाचनं तद् वैनयिकी बुद्धिः—तथाक्षरबिंद्वादिच्युतज्ञानं अक्षरस्य वर्णरूपस्य बिंदोः प्रसिद्धस्यैवादिशब्दान्मात्रायाः पदादेश्च च्युतस्य पत्रादवलिखितस्य यत् ज्ञानं तदपि वैनयिकी.

तत्राक्षरस्य च्युतं यथा—गोमायोर्वदरैः पक्वै—र्यः प्र=दो विधीयते स तस्य स्वर्गलाभेपि—मन्ये न स्यात् कदाचन.

बिंदुच्युतं यथा—सोष्माणं कोमलं नव्यं—जनः शीतनिपीडितः हिमर्त्तावी·

गोळानी रमत तेमना साथे रमवा मांडी. तेमां जे अक्षर पाडवो होय तेवा गोळानी छापथी अकारादि अक्षरो जमीन पर चितराव्या. मतलब के तेमने शीखाडतां पण तेओ नहि शीखता त्यारे शिक्षके तेमनी रमतने ज कायम राखीने तेवी रीते गोळा पाडवा शीखव्या के जेथी जमीन पर अक्षरो थवा लाग्या. अथवा भोजपत्रनी पूठ पर लखेला अक्षरोनुं जे वांचन ते वैनयिकी बुद्धि जाणवी; तेमज अक्षर एटले वर्ण तथा बिंदु तथा आदिशब्दथी काना मात्र तथा पद वगेरे पडी गया होय एटले पत्र पर नहि लखाया होय तोपण समजी लेवा ते वैनयिकी जाणवी.

त्यां अक्षरच्युत ते आ प्रमाणे छेः—पाकेला बोरवडे शीआळने जे प्र–द (प्रमोद) थाय छे ते हुं धारुं छुं

दते को न—कलं मार्गमाश्रितः इति.

(मूलगाथा)—गणिए य अंकनासो—अहोउ सुवण्णजायणं दंके, आय-व्ययचिंता तह—अहोउ हियायरियसंखा. ॥ १० ॥

गणिते चेति द्वारपरामर्शः—इह च चत्वार्युदाहरणानि तद्यथा अंकनाशः (१), सुवर्णयाचनं (२), आयव्ययचिंता (३), हता जीताचार्याश्चेति.(४).

तत्रांकनाशः संपन्नः पुनर्लब्धः सत ज्ञातं—द्यूतकाराणां द्यूतं रममाणानां तल्ले-ख्यकं च कुर्वतो यदा कुतोपि दुःप्रयोगात् कस्यचिदंकस्य नाशो भवति तदा प्रस्तुत-बुद्धिवशेन तेषां पुनरप्यसावुन्मीलतीति.—अन्येतु ब्रुवते–सुवर्णयाचनं चामीकरप्रार्थ-नं दंके राजसंबंधिनि सर्वनगरसाधारणे पतिते सति ज्ञातं—किल क्वचिन्नगरे केन-

के. तेने स्वर्ग मळतां पण कोइ वेळा नहि थाय. (इहां प्रमोइ शब्दमां " मो " पडी गयो छे.)

बिंदुच्युत ते आ प्रमाणे:—शीआळामां टाढथी हेरान थतो मुसाफर हुंफाळा अने पशमदार नवां कंबलने के-म नहि इच्छे ? (इहां कंबलने बदले कवल छे ते बिंदुच्युत छे.)

मूलगाथा—गणितद्वारमां अंकनाश, बीजा कहे छे के सुवर्णयाचन तथा आयव्ययनी चिंता अने बीजा कहे छे के आचार्यनुं हरण. १०

गणित शब्दे द्वार याद कर्युं छे. गणित पदे चार उदाहरण छे ते ए के अंकनाश, सुवर्णयाचन, आयव्ययचिं-ता अने जीताचार्यनुं हरण.

चिन्नरनाथेन दंमः पातितः. कारणिकैश्च चिंतितं, मा लोक उद्विजतामिति व्युत्पत्त्यासौ ग्राह्यः.ततो जणिता नागरिकास्तैः परिमितकालव्यवधानेन सुवर्णं द्विगुणत्रिगुणादिलाजमुत्प्रेक्षमाणैर्यथा,—" दंडमूल्यप्रमाणं जवतां विजज्य सुवर्णं राज्ञो दातुमुचितं, स्वल्पकालादेव तच्च तत्तुल्यरूपमेव ऽव्यं यथा हस्ते जवतां चटिष्यते तथा विधास्यते, न कश्चिदसंतोषो विधेयः." दत्तं च तत्तैः कालांतरे च महर्घीभूतं विक्रीय कारणिकैस्तद्द्विगुणादि लाजो राजजांमागारे निक्षिप्तः मूलधनं च तेषामेव समर्पितमिति.

अन्ये त्वित्युनुवर्त्तंते—राज्यचिंतकानां कुटुंबचिंतकानां च प्रस्तुतबुद्धिप्रधानानां

त्यां अंकनाश थतां फरीने ते मेळववा ते उदाहरण ए प्रमाणे छे के जुगार रमता जुगारीओ तेनी नोंध करता रहे छे तेमां कोइ गमबमथी कोइ अंक जूसाइ जाय तो आ प्रस्तुत बुद्धिना योगे तेओ फरीने याद करी ल्ये छे. बीजा आचार्यो कहे छे के राजा संबंधी आखा नगरपर दंम पमतां सोनुं मागी लीधुं ते उदाहरण छे. ते ए रीते के कोइ नगरमां कोइ राजाए दंम पाड्यो. त्यारे अधिकारीओए विचार्युं के लोको नाराज नहि थाय तेटलाखातर तेमने समजावी पतावीने आ दंम लेवो घटे छे. तेथी तेमणे थोमा वखत बाद सोनु बमणुं त्रमणुं मोंघुं थनारुं धारीने नगरना लोकोने कह्युं के तमारे वहेंचण करी राजाने दंमनी कीमत जेटलुं सोनुं आपवुं अने तरतमांज तेटली कीमतना पैसा जेम तमारा हाथे चमशे तेम करशुं माटे तमारे नाराज थवुं नहि. नगरजनोए ते आप्युं. बाद थोमो वखत जतां सोनुं मोंघुं थयुं एटले अधिकारिओए ते वेची तेमांथी जे बमणा जावनो नफो थयो ते राजाना जंमारमां दाखल कर्यो अने मूळ धन तेमने पाछुं जरपाइ कर्युं.

वळी त्रीजा आचार्यो कहे छे के राज्यचिंता करनार तथा कुटुंबचिंता करनार आत्री प्रस्तुत बुद्धिवाळा पुरुषो

पुरुषाणां राज्येषु कुटुंबेषु च आयस्यापूर्वधनलाभलक्षणस्य व्ययस्य च लब्धधनविनियोगरूपस्य या चिंता सा ज्ञातं–तथेति ज्ञातांतर समुच्चयार्थः.—मतिमंतो हि ताम्रालुकावदायव्यययोः प्रवर्त्तंते—तथाहि—ताम्रालुका घृतजलादिमुत्कलेन मुखेन गृह्णाति व्ययं चातिसंकीर्णमुखेन नालकेन करोति, यतो बहुर्व्ययकालोऽल्पश्चायकालः–इतीत्यमेव व्यवहरतां सांगत्यमुत्पद्यते इति.–अन्ये तु हृतज्ञौताचार्यसंख्या प्रस्तुतबुद्धिविषयतया वर्त्तते इति व्याख्यांति–यथा केनचित्कृपालुना केचिज्ज्ञौताचार्याः कांचिद्गंभीरजलां सरितमुत्तरंतो जलपूरेण ह्रियमाणाः समुत्तारिताः . तेषां च प्रागेव समवधारितदशादिप्रमाणं स्वसंख्यानां समकालमेव जडत्वेनात्मानं विमुच्य परिगणयितुमारब्धानां यदा प्राक्कृतसंख्या न पूर्यते तदा सविषादमुखास्ते विलपितुमारब्धा यथैकोऽस्मासु न-

राज्यमां तथा कुटुंबमां जे नवुं धन मेळवुं आवे छे तेनी अने पासे रहेलुं धन शी रीते खरचवुं तेनी चिंता राखे छे ते उदाहरण छे. कारणके बुद्धिवान माणसो तांबानी घारोटी माफक आवक तथा खरचमां वर्त्ते छे. एटले के जेम ते घारोटी घी के पाणीने मोकळा मुखथी ग्रहण करे छे अने अति सांकडा म्होंवाळा नाळथी तेनो वपरास करे छे. जे माटे खरचवाना वखत घणा आवे छे अने पेदा करवानो वखत तो थोडोज होय छे. माटे ए रीतेज वापरवाथी सगवड रही शके. बीजा आचार्य कहे छे के हरेला जौताचार्यनी संख्या आ बुद्धिना पेटे उदाहरण छे. ते ए रीते छे के कोइ दयाळु माणसे केटलाक जौताचार्यो (भुवा) कोइ ऊंडी नदीमांथी पसार थता पाणीथी तणाता जोइ किनारे उतार्या. तेओए पूर्वे पोताने साथे गणीने "दश छीए" एम मुकरर करेलुं हतुं पण जडपणाथी हमणा पोताने मूकीने गणवा मांड्या एटले पृ-

दीपूरेण हृत इति—जणिताश्च ते संप्रति समीपवर्त्तिना केनचित् यथा जो जवता-मात्मा विस्मृतो यदेवं गणनमारब्धमिति.

(मूलगाथा)—कूवे सिराइणाणं—तुल्ले तत्थवि तिरिक्षमाहणणं, अन्ने णि-हाणसंपत्तु—वायमोविंति एवं तु. ॥ ११ ॥

कूप इति द्वारपरामर्शः . शिराया जलोद्गमप्रवाहरूपाया ज्ञानमवगमः—क-थमित्याह—भूमिमध्यगततथाविधकूपकारादिष्टखातप्रमाणरूपाराधनेपि खातकानां यदा जलं न प्रवर्त्तते तदा तुल्ये खातप्रमाणसदृशे जागे तत्रापि तस्मिन्नेव कूपे तिर्यग्वामद-क्षिणादि रूपे आहननं पार्ष्णिप्रहारादिना ताम्नं कृतं. —अयमत्र जावः—क्वचित् कैश्चिद् ग्रामेयकादिजिरतीस्वादुजलार्थिजिरनन्योपायं जलमवबुध्यमानैः कश्चित् कूप-

थे करेली संख्या पूराइ नहि त्यारे तेओ विषाद नाथे विलाप करवा लाग्या के अमारामांनो एक जण नदीमां तणाइ गयो छे. त्यारे ते वखते पासे ऊनेला कोइए तेमने कह्युं के अरे नला माणसो, तमे पोताने केम वीसरो छो के आवी रीते गणती करो छो?

कूवा पेटे तेनी शीर जाणवी त्यां पण सरखा जागमां तिरछुं हणावबुं. अन्य कहे छे के एवी रीते निधान पामवानो उपाय ते उदाहरण छे. ११

कूप शब्दे द्वार सूचव्युं छे. शीर एटले पाणीनो प्रवाह तेनी समज ते ए रीते छे के जमीनमां तेवा कोइ कूवा करावनारना हुकम प्रमाणे खाडो खोद्या छतां पण ज्यारे पाणी न मळ्युं त्यारे खोदनाराओ पासे तेज कूवामां ते खणावेला जागमां तिरछी सवळी अवळी लातो मरावी. एटले के कोइक स्थळे कोइक गामडियाओए अति मीठुं पाणी मेळ-

कारस्तथाविधांजनवशेन भूमिगतानि जलान्यवलोकमानः पृष्टः—" किमस्यां भुवि जलमस्ति नवेति "—उक्तंच तेन " निश्चितमस्ति" . तर्हि कियत्प्रमाणे खाते सति तद्व्यक्तिमायास्यतीति? स प्राह—" पुरुषदशादौ. प्रारब्धश्च तैः कूपः खनितुं. संपादितं चोक्तप्रमाणं खातं, तथापि जलानामनागमने निवेदितमस्य किं जलं नोद्गच्छतीति? तेनापि स्वांजनावंध्यरूपतामवगम्य भणितं खातप्रमाणसंमितं वामं दक्षिणं वा कूपस्थानं पाषाणादिना प्रहतं कुरुत. विहितं च तथैव तैः . उद्घटितं च विपुलं जलमिति. अन्ये ब्रुवते इत्युत्तरेण योगः—एवमेवांजनवशेन भूमिगतानि निधानानि कश्चित् पश्यन् केनापि पृष्टः—" किमस्मदीयं निधानमत्रास्ति न वेति "? अस्ति चेत् कियत्यां भुवि ? ततस्तेनापि कूपे भूविवररूपे प्राग्वत् खानिते—निहाणसंपत्तुवायमो इति—

पण बीजो कोइ उपाय नथी एम धारी कोइ कूवा बनावनार के जे कोइ तेवी जातनां अंजनथी जमीनमां रहेला पाणी जोइ शकतो हतो तेने पूछ्युं के आ भूमिमां पाणी छे के नहि ? तेणे कह्युं के नक्की छे. त्यारे फरीने तेमणे पूछ्युं के ते केटली ऊंडाइए नीकळशे ? तेणे कह्युं के दश माथोडा पर नीकळशे. त्यारे तेमणे कूवो खोदाववा मांड्यो अने तेणे कह्युं हतुं ते प्रमाणे खाडो खोद्यो तेम छतां पाणी न नीकळ्युं एटले तेमणे तेने कह्युं के केम हजु पाणी नथी नीकळतुं? ते कूवा खोदनारे पण पोतानी अंजननी सचाइ धारीने कह्युं के जेटलुं खोदेलुं छे तेटला भागमां सवळी के अवळी बाजु मारो. तेमणे ते प्रमाणे कर्युं एटले झट पाणी नीकळतुं थयुं. बीजा आचार्य कहे छे के एज रीते अंजनना योगे करी जमीनमां रहेला निधानने जोनार कोइ शख्सने कोइए पूछ्युं के इहां अमारुं निधान छे के नहि ? अगर छे तो केटली ऊंडाइए छे ? त्यारे तेणे पण पूर्वना माफक कूवो खोदाव्यो. त्यां निधान मळ्या केडे तेणे सूचव्या प्रमाणे ए

निधानसंपत्तेरुपायो हेतुर्वामस्य दक्षिणस्य वा पार्श्वस्य अद्यातरूपस्तदादिष्टेनैव प्रवर्त्तितः . लब्धं च निधानमिति एतत्विदं पुनः .

(मूलगाथा)—आसे रक्खियधूया—धम्मोवलरुक्खधीरजायणया, असे कुमारगहणे—लक्खणजुयगहणमाहंसु. ॥ १२ ॥

(अश्वपति कथा)—इह अत्थि समुद्दतडे—पारसकूलं जणाणुकूलगुणं, एगो अस्साहिवई—तत्थासि विसाल विहवजुओ. ॥ १ ॥ अह अन्नया हयाणं—एगो कुलदारओ कओ रक्खो, अइनिउणविणयसंपाडणेण आणंदिओ तेण. ॥ २ ॥ तस्स य धूया अहरूव—मणहरा तंमि राय मणुपत्ता, पन्नवेइ जया तुह देइ—वेयणं ए-

उपाय कर्यो के तेना-सवळा के अवळा जागमां लातोना घा कर्या एथी निधान मळी आव्युं ए उदाहरण छे.

मूळगाथानो अर्थ.—अश्वरखारमां घोडानो रखेवाळ बाळक अने अश्वपतिनी दीकरी. ते बाळके काम परथी धर्मनापथरावडे मजबूत बे घोडानी मागणी करी. बीजा कहे छे के बीजा कुमारोए ज्यारे जाडा घोडा लीधा त्यारे कृपणे लक्षणयुक्त पातळो घोडो ग्रहण कर्यो. १२

इहां समुद्रना कांठे लोकोने माफक आवतो पारस नामे कांठानो प्रदेश छे, त्यां एक जारे पैसादार अश्वपति रहेतो हतो. १ तेणे एकवेळा कोइ कुलीन बाळकने घोडाओनो रखेवाळ राख्यो तेणे अतिशय विनय करवे करीने ते अश्वपतिने खुश कर्यो. २ ते अश्वपतिनी एक अतिरूपवान दीकरी हती ते ते छोकरा उपर आशक थइ तेने कहेवा लागी के ज्यारे आ मारो बाप तने पगार चूकावे त्यारे तुं खूब परीक्षा करीने बे घोडा मागजे. त्यां परीक्षा करवानो उपाय ए कह्यो के घोडा ऊभा होय, तेमां जे घोडो जरके नहि ते घोडो मागवो. त्यारे ते वात ते छोकराए खुशीनी साथे-

निधानसंपत्तेरुपायो हेतुर्वामस्य दक्षिणस्य वा पार्श्वस्य अघातरूपस्तदादिष्टेनैव प्रवर्त्तितः. लब्धं च निधानमिति एतत्विदं पुनः.

(मूलगाथा)—आसे रक्खियधूया—धम्मोवलक्खधीरजायणया, अष्टे कुमारगहणे—लक्खणजुयगहणमाईसु. ॥ १२ ॥

(अश्वपति कथा)—इह अत्थि समुद्दतमे—पारसकूलं जणाणुकूलगुणं, एगो अस्साहिवई—तत्थासि विसाल विहवजुओ. ॥ १ ॥ अह अन्नया हयाणं—एगो कुलदारओ कओ रक्खो, अइनिउणविणयसंपाडणेण आणंदिओ तेण. ॥ २ ॥ तस्स य धूया अहरूव—मणहरा तंमि राय मणुपत्ता, पन्नणेइ जया तुह देइ—वेयणं ए-

पाय कर्यो के तेनां सवला के अवळा नागमां लातोना घा कर्या एस्ले निधान मळी आव्युं ए उदाहरण छे.

मूळगाथानो अर्थ.—अश्वरक्षामां घोडानो रखेवाळ बाळक अने अश्वपतिनी दीकरी. ते बालके ढाम पत्थी मीनापथरावमे मजबूत बे घोडानी मागणी करी. बीजा कहे छे के बीजा कुमारोए ज्यारे जाडा घोडा लीधा त्यारे कृष्णे लक्षणयुक्त पातळो घोडो ग्रहण कर्यो. १२

इहां समुद्रना कांठे लोकोने माफक आवतो पारस नामे कांठानो प्रदेश छे, त्यां एक भारे पैसादार अश्वपति रहेतो हतो. १ तेणे एकवेळा कोइ कुलीन बाळकने घोडाओनो रखेवाळ राख्यो तेणे अतिशय विनय करवे करीने ते अश्वपतिने खुश कर्यो. २ ते अश्वपतिनी एक अतिरूपवान दीकरी हती ते ते छोकरा उपर आशक थइ तेने कहेवा लागी के ज्यारे आ मारो बाप तने पगार चूकावे त्यारे तुं खूब परीक्षा करीने बे घोडा मागजे. त्यां परीक्षा करवानो उ

पाय ए. कलो के घोमा ऊंचा होय,तेमां जे घोमो चमके नहि ते घोमो मागवो. त्यारे ते वात ते छोकराए खुशीनी साथे-

स मे ताओ.—॥ ३ ॥ तइया तुमं विमग्गसु—तुरयं काउं परिक्ख मइनिउणं, कहिओ य एसुवाओ—वीसत्थेसुं तुरंगेसु. ॥ ४ ॥ जो तुरओ संतासं—नो वच्चइ तत्थ तं विमग्गेसु, तेणावि पच्छिसुयं तीइ—वयणं माणंदियमणेणं. ॥ ५ ॥ वेयणधणावसरे—पुव्विंपि परिक्खिए दुवे तुरए, सो मग्गइ तो जासइ—अस्साहिवईवि सप्पणयं. ॥ ६ ॥ एएसिं अस्साणं—मज्झे एए तुरंगमा लट्ठा, ता जइ एए गिण्हसि—ता सव्वे किं न गिण्हेसि ? ॥ ७ ॥ सो जणइ न सव्वेहिं—पओयणं मज्झ, चिंतियं ताहे, अस्साहिवेण जहएस—दारओ लक्खणनिहाणं. ॥ ८ ॥ कहमन्नह एएसिं—अस्सेसु इमस्स वीसमइ दिट्ठी, ता नियधूयादाणेण—गेहजामाउओ कज्जो. ॥९॥ कहियं नियजाए—सा नेच्छइ तो जणाइ हे मुद्धे, लक्खणजुत्तो एसो—होही मे गेहवुड्ढिकरो . ॥ १० ॥ सुण एत्थमुदाहरणं—जह वट्टइ एत्थ दारगो कोवि, नियधूया मा-

…ान्य करी (३—४—५) वाद पगारना टांकणे तेणे अगाउथी परखेला बे घोमा माग्या. त्यारे अश्वपति प्रीतिपूर्वक …ोलवा लाग्यो के-६ आ बधा घोमाओमां ए बे घोमाज सौथी सरस छे, माटे जो ए बे तुं ले तो बधा कां लेतो नथी? ७ …ो बोल्यो के बधानुं मने कंइ काम नथी. त्यारे अश्वपतिए विचार्युं के आ बाळक लक्षणवंत लागे छे. ८ नहि तो ए घोमा…ओ उपर एनी नजर केम खूंचे, माटे एने आपणी दीकरी आपीने घरजमाइ करवो जोइए. ९ ते वात तेणे पोतानी स्त्री…ने कही त्यारे तेणीए नामरजी वतावी एटले अश्वपति तेने कहेवा लाग्यो के अरे भोळी, आ लक्षणवंत शख्स छे, माटे …आपणा घरनी आबादी करशे. १० इहां एक उदाहरण आपुं छुं ते सांभळः—कोइ एक छोकरो हशे तेने तेना मामा-

जलगेण—तस्स दिन्ना परं गेहे—॥ ११ ॥ न करेइ किंपि कम्मं—अरुवीइ गओ विरत्तओ एइ, खिंसिज्जइ जज्जाए—तमकिंचिकरो कहं होसि ? ॥ १२ ॥ ठ्ठे मासे लध्धं—तं दारु सलक्खणं हवइ जत्य दम सय सहस्समुलो—कुरुवो घडिओ य सो विहिणा. ॥ १३ एगस्स धन्नवणिणो—दिन्नो लध्धं जहिच्छियं मुल्लं, तस्स गिहे तेणेगा—जाया तस्साणुन्नाओ. ॥ १४ ॥ एवं लक्खणजुत्ते—गिहे पविठ्ठंमि वड्ढइ कुरुंबं, दिन्ना नियया धूया—लक्खणजुतस्स तस्स तओ—॥ १५॥ अहवा बारवईए—पुरीइ कण्हंमि रज्जमणुपत्ते, कइयावि अस्सवाणिय—हत्थाओ किणिजमाढत्ता—॥ १६ ॥ हरिणा कुमरेहिं तहा—तुरया, कुमरेहिं तत्थ थूलतणू, एए किल बलवंतो—कलिऊणंगीकया तेउ.—॥ १७॥ कण्हेणेगो अइदुब्बलोवि गहिओ सल-

ए पोतानी दीकरी आपी पण ते घरमां कंइ काम करे नहि अने जंगलमां जाय तो खाले हाथे आवे त्यारे तेनी स्त्री पण तेने ठपको देवा लागी के तुं शा माटे आवो अकिंचित्कर (आळसु) थइ रहे छे ? ११—१२ हवे तेणे (अटवीमां नमतां नमतां) ज्यां लक्षणवंत लाकडुं हतुं त्यां ते छठ्ठे मासे मेळव्युं अने तेमांथी तेणे एक लाख म्होरनी विधि प्रमाणे एक पाली घडी. १३ ते तेणे एक धान्यना वेपारीने आपीने धारेली कीमत मेळवी अने ते पालीना प्रतापे ते वाणियाना घरे ध । वालबच्चा थइ पड्या. १४ ए रीते लक्षणवाळी चीज घरमां पेसतां कुटुंबनी वृद्धि थाय छे. (ए रीते तेणे पोतानी स्त्रीने समजावीने) ते लक्षणवंत छोकराने पोतानी पुत्री परणावी. १५ अथवा द्वारिकामां ज्यारे श्री कृष्ण राज्यगादी पर बेठा त्यारे एक वेळा कोइ घोडाना वेपारी पासेथी कृष्णे तथा तेना कुंवरोए घोडा खरीदवा मांड्या. त्यां कुंवरोए

क्खणो काउं, तो ते तं हसमाणा—जणंति कहमेरिसो गहिओ ? ॥ १८ ॥ परिज्ज-णियं अह हरिणा—जह कज्ज समत्थओ इमो न इमे, अन्नेसिंपि वहूणं—इमेसि सं-पायगो होही. ॥ १९ ॥ अस्सवइणो हरिस्सय—पत्थुयबुद्धीइ विलसियं एयं, जं सो-घरजामाया—अस्सो य वसित्तणं नीओ. ॥ २० ॥ इति.

अथ गाथाक्षरार्थः—अश्व इति द्वारपरामर्शः—रक्खियत्ति—रक्षकोश्वरक्षा-वान् दारकः—धूयत्ति—दुहिताचाश्वपतेरेव—तत्प्रेरितेन च तेन—धम्मोवलत्ति—धर्मोपलैः कुतपमध्यक्षिप्तपाषाणखंडरूपैर्वृक्षान्मुक्तैः—धीरत्ति—धीरयोरत्रस्तयोस्तुरंग-योर्वेतनदानकाले—जायणाया इति—याचनं कृतं. शेषस्तु प्रपंच उक्त एव.—अन्ये—कुमारगहणइति—कुमारैः शांबादिभिः स्थूलाश्वग्रहणे सति विष्णुना यल्लक्षणयुतस्या-

जे जाडा शरीरवाळा घोडा हता तेमने बळवंत धारीने ते खरीद्या. १६—१७ श्री कृष्णे तो एक दूबळो पण सलखणो घोडो खरीद्यो. त्यारे कुंवरो तेना तरफ हसता थका कहेवा लाग्या के आवो घोडो केम खरीद्यो ? १८ श्री कृष्णे जवाब आप्यो के काम करी शके तेवो आ ज छे पण पेला नथी; तेमज आ वळी एना जेवा बीजा पण घणा घोडा लावी आपनार थशे. १९ आ रीते अश्वपति तथा श्री कृष्णनी वैनयिकी बुद्धिनो विलास छे के जेथी पेलाए घरजमाइ तथा घोडो बन्ने पोताने कबजे राख्या. २०

हवे गाथानो अक्षरार्थ करीए छीए.—अश्वशब्दे द्वार संभार्युं. रक्षक एटले घोडाने संभाळनार छोकरो. धूया एटले अश्वपतिनी ज दीकरी. तेनी प्रेरणाथी ते छोकराए कुतामां धर्मना पत्थरा भरीने झाड परथी पडता मेली कया वे घोडा भडकता नथी ते शोधी तेमने पगारना वखते माग्या. बाकीनी वात तो कथाथी कहीज छे. बीजा आचार्यो शांब

श्वस्य दुर्बलस्यापि ग्रहणं कृतं—तदाहुर्दृष्टांततयेति.

(मूलगाथा)—गद्दन्नतरुणो राया—तप्पियवुड्ढाण दंसणं करुगे, पिइन्नत्तणयण वसणे—तिसाइ खरमुयणसिरसलिलं. ॥ १३ ॥

गर्दन्न इति द्वारपरामर्शः—इह तरुणः कश्चिद्राजा—तप्पियत्ति—ते तरुणाः प्रिया यस्य स तत्प्रियः—अन्यदाचासौ विजययात्रायां प्रचालितः . नणितश्च तेन स र्वोपि लोकः—यथा—वुड्ढाणदंसणं करुगे इति—मदीयकटके यथा वृद्धानामदर्शनं नवति तथा नवद्भिः कर्त्तव्यं—वृद्धः कोपि नानेतव्यो मदीयकटके इति नावः—तथेति प्रतिपन्नं च तैः . गतश्च सपरिवारोसौ विजययात्रायां—पिइनत्तणयणत्ति—पितृनक्तेन चैकेन कटकवासिना नरेण पितुर्गुप्तस्य नयनं कृतं कटके—वसणे तिसाइ वगेरे कुमारोए जाता घोमा खरीदतां विष्णुए जे दूबलो पण लक्षणवंत घोमो खरीद्यो तेनुं दृष्टांत इहां आपे छे.

(मूळगाथानो अर्थ)—गर्दन्नना द्वारमां तरुण राजाने तरुणोज प्रिय हता तेथी तेणे लश्करमां वृद्धो न देखाय तेम हुकम कर्यो. छतां कोइ पितृनक्ते बापने साथे छानो राख्यो. बाद पाणीनुं संकट पमतां तरसना वखते ते बुड्ढाए गधेमाने बूटो मुकावी पाणीनी सीर शोधी आपी. १३

गर्दन्नशब्दे द्वार याद कर्युं छे. इहां कोइ युवान राजाने युवानोज प्रिय हता. हवे ते एक वखतें विजययात्राए नीकळ्यो त्यारे तेणे सघळा लोकोने हुकम कर्यो के मारा लश्करमां जेम कोइ बुड्ढो न देखाय तेम तमारे करवुं, मतलब के बुड्ढाने मारा लश्करमां नहि आणवो. तेमणे ते वात कबूल राखी. बाद ते परिवार सहित विजययात्राए चाल्यो. त्यां कोइ एक

इति—अन्यदा च तथाविधविजलकांतारांतर्गतस्य सैन्यस्य दिनप्रहरद्वयसमये तृषः संबंधिनि व्यसने आपतिते सति राजा तांस्तरुणान् पप्रछ—यथा—आकर्षयत त्नोः केनाप्युपायेन सजलां भुवमवगम्य जलमिति. ते च तरुणत्वेनापरिणतबुद्धयो न जानंति तडुपायं. ततो वृद्धगवेषणा कृता—नोपलब्धश्च केनापि कोपि—ततः पटहप्रवादनपुरस्सरं समुद्घोषणा कारिता—यथा—आगत्य कोपि वृद्धः कथयतूपायं. ततस्तेनानीतजनकेन छुसः—आनीतश्च तत्र पिता.—तेनापि कथितं यथा—खरमुयणत्ति—खरान् मुंचताटवीमध्ये—यत्र च ते उत्सिंघनं कुर्वंति तत्र सिरत्ति सिराः प्रतीतरूपाएव संभवंति. कृतं च तथैव—तदनु सलिलमुपलब्धमिति. अन्ये तु व्याख्यांति ते गर्दभास्तावडुत्सिंघनं कुर्वंतो गछंति यावन्नीरपरिपूर्णं सरः संप्राप्तमिति.

पितृभक्त सिपाइए बापने छानी रीते लश्करमां लीधो. बाद एक वेळा कोइ निर्जल अटवीमांथी पसार थता लश्करने बपोर थतां तरसनुं संकट आवी पड्युं त्यारे राजा ते युवानोने पूछवा लाग्यो के भला माणसो, कोइ पण उपायवडे पाणीवाळी जमीन शोधी कहाडीने पाणी खेंची काढो. हवे ते बधा तरुण होवाथी काची बुद्धिवाळा होवाथी कंइ उपाय जाणी शक्या नहि. त्यारे बुड्ढानी तपास करावी; छतां कोइने पण कोइ बुड्ढो मळ्यो नहि. त्यारे पडो वगडावी उद्घोषणा करावी के कोइ पण बुड्ढो आवीने उपाय बतावो. त्यारे जेणे बापने साथे आण्यो हतो तेणे ते पडो छबीने पोताना बापने त्यां आण्यो. तेणे कह्युं के गधेडाओने जंगलमां फरता मूको अने तेओ ज्यां जमीन सूंघशे त्यां पाणीनी सीर हशे. ते सांभळी तेमणे तेम कर्युं एटले पाणी मळी आव्युं. बीजा छेल्ला पदनी एम व्याख्या करे छे के ते गधेडाओ त्यां सूधी जमीन सूंघता चाल्या गया के ज्यां सूधी पाणीथी भरेल तळाव हाथ लाग्युं.

(मूलगाथा)—लक्खणराये देवी हरणे सोगंमि आलिहे चलणा, उवरिं ण दिठ्ठजोगो—अत्थित्ता सासणे चेव. ॥ १४ ॥

(कथा)—ओज्झा नरीइ दसरह—राया रघुवंसनंदणो आसि, अच्चब्भुय-नियचरणा—वज्जियसुरअसुरखयरपहू. ॥ १ ॥ तस्संतेउरसारा—तिन्नि अन्नविंसु पियमा रम्मा, कोसल्ला य सुमित्ता—तहावरा केकई नाम. ॥ २ ॥ जाया तिन्नि पहाणा—तासिं पुत्ता कमेण ते एए, सिरिमं रामो तह लक्खणो य भरहो य नय निउणा. ॥ ३ ॥ तो दसरहराया केकईइ कइयावि तोसिओ संतो, देइ वरं, तीएविय—समए मग्गिस मिइ भणिओ. ॥ ४ ॥ वयपरिणामे किल दसरहेण रामो पयंमि नियंमि, आढत्तो ठावेउं—तओ वरो मग्गिओ तीए. ॥ ५ ॥ जइ भरहो मज्झ सुओ

(मूळ गाथानो अर्थ)—लक्ष्मण छतां रामचंद्रनी राणी सीतानुं हरण थयुं. बाद ते मळी त्यारे रामे तेने त्याग करी ते वखते तेनी शोक्ये सीता पासेथी रावणना हाथ चितराव्या. सीताए कह्युं के पग उपरांत में कंइ जोयुं नथी माटे बीजुं चितरी शकुं तेम नथी. छतां शोक्ये तेनी गरज बतावी. १४

(कथा)—अयोध्या नगरीमां रघुवंशी दशरथ नामे राजा हतो. तेणे पोताना उत्तम आचरणथी सुर असुर तथा खेचरना इंद्रोने खुश कर्या हता. १ तेना अंतःपुरमां तेनी त्रण राणीओ हती. एक कौशल्या, बीजी सुमित्रा अने त्रीजी केकयी. २ ते त्रणे राणीओना अनुक्रमे राम, लक्ष्मण तथा भरत ए नामे त्रण न्यायवंत पुत्रो थया. ३ हवे एक वेळा केकयीए दशरथ राजाने खुशी करवाथी तेणे तेने वर आप्युं. त्यारे तेणीए कह्युं के अवसरे ते मागीश. ४ बाद वृद्धावस्थाए

—कीरउ राया, विलक्खओ जाओ—राया, विन्नायमिणं—रामेणं विणयरामेणं. ॥ ६ ॥ पायप्पणाममपुव्वं—जणगं विन्नवइ ताय सच्चगिरो, तं होसु, वणविहारं—काह मह्वं लक्खणसहाओ. ॥ ७ ॥ सुयवच्छलोवि राया—अणमुवायं मणे अलब्भमाणो, अणुमन्नइ सुयविरहे—सुन्नं मन्नंतओ पुहविं. ॥ ८ ॥ चलिया दोवि कुमारा—सीयासहिया दिसाइ जम्माए, अइगरुयं रणरणयं—जणयंता सयलनयरीए. ॥ ९ ॥ पत्ता मरहट्ठयमंडलंमि गहिरे वणंतरे तत्थ, संजाया बद्धठिई—हिमगिरिरम्मे मइंदव्व. ॥ १० ॥ फलफुल्लकंदभोयण—रयाण निज्झरजलं पियंताणं, चिंतंताणं सहलत्त—मप्पणो जणगविणयाओ. ॥ ११ ॥ परउवयारे चित्ते—तहा तहा निच्च मायरंताण, सीयाविहियसरीरट्ठिइण संतुट्ठचित्ताण. ॥ १२ ॥ वच्चंति वासरा ताण—जाव, लंकाहि-

पछीं चतां दशरथे रामने पोतानी गादी आपवा मांडी त्यारे कैकयीए वर माग्युं के—५ मारा दीकरा भरतने राज्य आपो. त्यारे दशरथ राजा मुंझाइ पड्यो. ते वात विनयथी रमता रामचंद्रना जाणवामां आवी. ६ त्यारे रामचंद्र पिताने पगे लागी विनववा लाग्या के हे तात, तमे तमारो बोल पालो, अने हुं लक्ष्मणने संघाते राखी वनवास करीश. ७ राजाने रामचंद्र पर प्रीति छतां पण बीजो कोइ उपाय नहि रहेतां तेणे ते वात कबूल राखी; छतां पुत्रोना विरहमां तने पृथ्वी शून्य जेवी भासवा लागी. ८ हवे बन्ने कुमार सीताने साथे लइ दक्षिण दिशा तरफ रवाने थया त्यारे नगरीना लोक बहु भारे दिलगीर थवा लाग्या. ९ तेओ चालता चालता महाराष्ट्र देशमां एक गहन अटवीमां आवी पहोंच्या. त्यां तेमणे जेम एकलो हाथी हिमालयमां रहे तेम निवास करवा मांड्यो. १० त्यां तेओ फळ, फूल तथा कंदमूळनो आहार करता अने नीझरणानुं पाणी पीता हता छतां बापनो विनय साचव्याथी पोताने कृतार्थ मानता हता. ११ वळी हमेशां तरेहवार परो-

वेण तो नायं, पुव्विपिय सीयाए—आरूढदढाणुराएण.—॥ १३ ॥ जह रामो जण-
गनिवंगयाइ जुत्तो वणंमि परिवसइ, पारद्धो तग्गहणोवाओ ब्लचारिणा तेण. ॥ १४
॥ कत्थइ समए अइवाउलाण तेणेव तेसि विहियाण, पुप्फगएणं सा रावणेण लंका-
उरिं नीया. ॥ १५ ॥ नियठाणमागया जा—ता ते सीयं कहिंवि न निचंति, सव्व-
स्सवंचिया इव—सोगं च पराभवं च गया. ॥ १६ ॥ सुग्गीवसहाएहिं—हणुवंतचरो-
वलद्धवुत्तंता, गंतुं लंकानयरिं—सबंधवो रावणो निहओ. ॥ १७ ॥ उवलध्धा जणग-
सुया—तिव्वतुसमित्तं अखंडियारा, चोद्दसवरिसाणंते—समुवज्जियपोढजसपसरा. ॥
॥ १८ ॥ उज्झाउरिं च पत्ता—परलोगगएण विरहियं पिउणा, जरहेणं निरवज्जं—
परिचिंतिय=रज्जकज्जं ते—॥ १९ ॥ जाओ रज्जनिसेओ लक्खणकुमरस्स रामणुन्ना-

पकार करता रहेता अने फक्त सीताजीज तेमनी शुश्रूषा लेतां हतां तेओ घणा संतुष्ट जणाता हता. १२ एम तेओ दि-
वसो पसार करता हता तेवामां लंकानो अधिपति रावण के जे प्रथमथीज सीता ऊपर राग धरतो हतो तेने मालम
पड्युं के—१३ सीता साथे राम वनमां रहे छे तेथी तेणे तेने लाग जोइने हरण करवानी युक्ति रचवा मांडी. १४ एक
वेळाए तेणे ते बन्ने भाइओने अति व्याकुळपणामां नाखी सीताने पकडी पुष्पविमानमां ऊपाडी लंकामां आणी. १५
हवे रामलक्ष्मण पोताना मुकामे आवी जोवा लाग्या तो कोइ रीते सीतानो पत्तो न लाग्यो, त्यारे जाणे एकदम बधा धन-
मालथी लूंटाया होय तेम शोक अने पराभव पाम्या. १६ बाद हनुमान नामना दूत पासेथी बातमी मेळवी सुग्रीवनी सहा-
यथी लंकामां जइने तेमणे भाइभांडु सहित रावणने मार्यो. १७ अने तेम करीने अखंड शीलवंत सीता पाछी मेळवी. एम
चौद वर्षनी आखरे भारे यश उपार्जीने—१८ ते राम अने लक्ष्मण अयोध्यापुरीमां आव्या. त्यां तेमना पिता परलोकवासी

।३७७॥ ए, रज्जसुह मणुरयाणं—जा जंति दिणा सुहमणाणं—॥ २० ॥ अलिएणय—वलिएणय—ताहे लोएण जणगतणयाए, आरोविओ महंतो—सीलक्खलणाक्खो अयसो. ॥ २१ ॥ जहा परमहिला लोलमणे—सव्वत्थेसुवि विरुद्धसंचारे, कह रावणंमि तग्गिहगयाइ सुद्धसील मेयाए. ॥ २२ ॥ नियजायासुद्धभावं—रामो जाणंतओवि जणवाया, किंचि अवन्नं दंसेइ—सा गया बहु तओ सोगं. ॥ २३ ॥ अंतेउरम ज्झगया—अइन्नया मच्छरं वहंतीए, होउ खए खारो इय—चिंततीए सवत्तीए—॥ २४ ॥ भणिया हले स रावणराया रूवेण विजियतेल्लुको, इय वड्डइजणवाओ—ता लिहसु स केरिसो आसि. ॥ २५ ॥ निययाणुमाणकप्पियपरासओ स-

थया हता अने राजकाज रुडी रीते भरत संभाळतो हतो. १९ बाद रामचंद्रजीना हुकमथी लक्ष्मणकुमारने राज्यगादी पर बेसाडवामां आव्या. एम राज्यसुख भोगवतां तेमने आनंदमां दिवसो जवा लाग्या. २० एवामां जूठा आळ चडाववामां बळवान एवा लोकोए सीताजी उपर शीळथी भ्रष्ट थवानो मोटो अपजश उराड्यो. २१ तेओ एम बकवा लाग्या के पर स्त्रीमां लंपट अने बधी बाबतोमां ऊंधा चालनार रावणना घरे रहेली आ सीतानुं पवित्रपणुं शी रीते रहे ? २२ हवे रामचंद्र पोतानी स्त्रीनुं पवित्रपणुं अंदरथी समजता हता तोपण लोकोपवादथी डरीने बहारथी कंइक अवज्ञा दर्शाववा लाग्या तेथी सीताजी भारे शोकमां पड्या. २३ हवे अंतःपुरमां रहेतां थकां सीता उपर मत्सर करनारी शोक्ये जखममां क्षार नाखवो ठीक पडशे एम चिंतवी तेणीने कह्युं के अली, रावण रूपे करी त्रणे लोकने जीत्यो छे एम लोकोमां वात चाले छे माटे तुं तेनुं चित्र करी बताव के ते केवो छे ? २४—२५ हवे एवी कहेवत छे के सौ कोइ पारका

व्वहा जणो सव्वो, नीयाण नावंलोना—महाणुजावो महंताण—॥ २६ ॥ इय मग्गमणुसरंतीइ—तीइ लिहियं पयाण पमिबिंबं, उवरिं मए न दिठ्ठो—अओ न जाणे किमागारो ? ॥ २७ ॥ तं पमिबिंबं संगोविऊण रामस्स दंसियं तीए, अज्जवि इमा न तं पइ—पमिबंधं मुयइ इह पेच्छ. ॥ २८ ॥ सीयाउवरिं रामस्स विप्पियं तीइ संजणं तीए, किल वेणइया बुध्धि—तेणोवाएण सब्बधिया. ॥ २९ ॥ एवं रामायणसंकहाइ अइवित्थरेण पन्नत्तं, तो तत्तो विन्नेयं--तयत्थिणा सोवओगेण . ॥३० ॥ इति

अथ गाथाक्षरार्थः—लक्षदर्शनांकनयोरिति वचनात् लक्षयतः पश्यतो रामस्य सीतालिखितचलन—प्रतिबिंबं यत् सपत्न्या प्रयोजनं कृतं तल्लक्षणमित्युच्यते. तत्र च रामे इति रामदेवः तस्य च देवी सीता—हरणे तस्या रावणेनापहरणे कृते प्रत्यागमने च

आशयने जेम बने तेम पोताना अनुमाने कल्पे छे तेथी नीच माणसने सामो माणस नीच लागे छे अने मोटा मनवाळाने सामो माणस मोटा मनवाळो लागे छे. २६ आ कहेवतने अनुसरी तेणीए रावणना पगनुं प्रतिबिंब चितर्युं अने बोली के ए उपरांत उपर तो में जोएल नथी माटे ते केवो छे ते हुं जाणती नथी. २७ वद ते शोक्ये ते प्रतिबिंब छुपी रीते रामने बताव्युं के हजु पण सीता रावणना उपरथी मन उतारती नथी. २८ एम सीता उपर रामनो मनफेर कराववामां तेणे पोतानी वैनयिकी बुद्धि वापरी. २९ आ बधी वात रामायणनी कथामां अति विस्तारे कहेल छे माटे तेना अर्थीए ध्यानपूर्वक ते वात त्यांथी जाणी लेवी. ३०

हवे गाथानो अक्षरार्थ करे छेः—लक्ष धातु जोवामां तथा आंकवामां चाले छे. तेथी लक्ष करता एटले के जोता रामने सीताए चितरेल पगनुं प्रतिबिंब जे तेणीनी शोक्ये बताव्युं ते लक्षण जाणवुं. त्यां राम एटले रामचंद्र तेनी देवी

लोकापवादभयेन रामेणावज्ञायां कृतायां शोके च संपन्ने कदाचित् सपत्नी प्रयुक्ता सीता—आलिहे इति—आलिखितवती चरणौ रावणसंबंधिनौ—उपरि·पादप्रदेशादूर्ध्वं न दृष्टो मया असावित्ययोगो लेखनस्य सीतया कृतः . ततः सपत्न्या लब्धच्छिद्रया—अत्थित्तासासणेचेयत्ति—अर्थितायाः अर्थित्वस्य शासना कथना च समुच्चये एवं पादाले—खदर्शनन्यायेन कृता . अत्र च अर्थिताशासने व्याख्यातेपि अत्थित्ता सासणे इति यः पाठः स प्राकृतलक्षणवशात्.

तच्चेदं—नीया लोय मभूया य—आणिया दोवि बिंदुदुब्भावा अत्थं वहंति तंचिय—जो एसिं पुव्वनिद्दिट्ठो. ॥ १ ॥

(मूळगाथा)—गंठी मुरुंडगूढं–सुत्तं समदंड मयणवट्टो य, पालित्त मयणगा-

एटले सीता तेनुं रावणे हरण कर्युं. बाद ते पाछी आवतां लोकापवादनी बीकथी रामे अवज्ञा करी एटले तेणीने शोक थयो. एवामां कोइ शोक्यनी प्रेरणाथी सीताए रावणना पग चितर्या अने कह्युं के पगथी ऊपर में जोएल नथी तेथी तेणे बाकीनुं चित्र नहि चितर्युं. बाद शोक्ये लाग जोइ ते पगलां रामचंद्रने बतावी कह्युं के हजु पण ए रावणनी इच्छा राख्या करे छे. इहां " अर्थिताशासने " ए संस्कृत पदनुं प्राकृतमां " अत्थियासासणे " एवुं रूप थाय तेना बदले अत्थित्तासासणे एवुं रूप कर्युं छे ते प्राकृतना प्रयोगोनी विचित्रताना लीधे छे.

प्राकृतमां एम कहेलुं छे के बिंदु (अनुस्वार) अने द्वित्व लोप कर्या होय अगर न होय त्यां आण्या होय तो पण अर्थ तो जे पूर्वे रहेलो होय ते ज कायम रहे छे. ?

(मळ गाथाना अर्थ)–ग्रंथिना द्वारमां मुरुंडराजाने गूढ छेडावाळुं सूत्र, सरखी करेली लाकडी अने मीणनो

लए-अट्ठी=तर लाबुसिव्वण या . ॥ १५ ॥

(व्याख्या)-ग्रंथिरिति द्वारं-स चात्र गूढाग्रसूत्रपिंडलक्षणो ग्राह्यः-तत्र पाडलिपुत्रे नगरे मुरुंडो नाम राजा—तस्य कुतोपि स्थानात् कैश्चित् ज्ञानिनमात्मानं मन्यमानैर्मुरुंडराजपरिषत्परीक्षार्थं गूढमिति गूढाग्रं सूत्रं—समदंडत्ति-समः समवृत्तो मूले उपरि च दंडकः—मदनवृत्तश्च मदनलेपोपलिप्तवृत्तसमुद्गकश्च प्रेषित इति . दर्शितानि च तानि तथाविधकोविदानां . न लब्धं तत्वं. ततः पादलिप्ताचार्यस्य तत्र पर्यायात् कृतविहारस्य दर्शितानि राजकुलागतस्य.—ततः—पालित्तत्ति—पादलिप्ताचार्येण—मयणगालणत्ति—मदनगालना गूढसूत्रे उष्णोदकेन कृता, ततः सूत्राग्रमुन्मीलितं. लट्ठीतरत्ति—यष्टेर्नदीजले प्रवहति तारणं कृतं तत्र यो भागो गुरुतर एव

दावलो मोकलाव्यो. तेणे पादलिप्तसूरिने बतावतां तेमणे मीण गळावी सूत्रनो छेडो शोधी आप्यो, लाकडीने तारी तथा तुंबडाने बारीक रीते सीवडाव्युं. १५

(गाथानी व्याख्या) -ग्रंथिद्वारमां गूढ छेडावाळा सूत्रनी दडी लेवी ते ए रीते के पाटलिपुत्रमां मुरुंड नामे राजा हतो. तेना ऊपर कोइक ठेकाणेथी कोइक पोताने हुशियार मानता लोकोए तेनी सभानी परीक्षा करवा गुप्त छेडावाळुं सूत्र तथा सरखी रीते गोळ उतारेल लाकडी तथा मीणना लेपथी लींपेलो गोळ दावलो मोकलाव्यो. राजाए ते केटलाक तेवा पंडितोने बताव्या पण कंइ खुलासा मळ्यो नहि. एवामां पादलिप्तसूरि विहार करता त्यां दरबारमां आव्या तेने ते बताव्या. त्यारे तेमणे सूत्रनी दडीने गरम पाणीमां नखावी एटले मीण लपटेलुं हतुं ते गळी जतां सूत्रनो छेडो मेळवी उ-

यद्भुरुति स मूलमिति ज्ञातं.

सदनवृत्तगोलकश्चात्युष्णे जले निक्षिप्य मदनगालनेन व्यक्तीभूतद्वारदेशः समुद्घाटितः—स्वयं च—लाघुसिव्वणाया इति—अच्छिद्रं महाप्रमाणमेकमलाबु गृहीत्वा सूक्ष्मां च राजिरेखामुत्पाद्य मध्ये रत्ननिक्षेपः कृतः—ततो जैनशास्त्रप्रसिद्धचोरसेवन्या स्यूता—भणिताश्च ते यथा—" एतदलाबु अविदारयद्भिः रत्नग्रहः कार्यः "—न शक्तिश्च तैः सोर्थः संपादयितुं प्रस्तुतबुद्धिविकलैरिति. ७.

(मूलगाथा)—अगए विसकर जवमेत्त—वेज्जसयवेह हत्थिवीमंसा, मंतिपभिववक्खअगए—दिट्ठे पच्छा पवत्ती उ. ॥ १६ ॥

केळी आवी तथा लाकडीने नदीना वहेता पाणीमां नाखी तारी जोइ त्यां जे भाग जोरे हावाथी वधारे बूड्यो ते तेनुं मूळ छे एम शोधी आप्युं—

तेमज मीणथी जडेलो दाबडो अति गरम पाणीमां नाखी मीण गळावी तेनो उघाडवानो प्रदेश खुल्लो करी उघाडी आप्यो. ते साथे वधारामां पोते एक मोटुं काणा वगरनुं तूंबडुं लइ तेमां एक झीणो काप पाडी तेमां रत्न नाखी दीधुं. बाद जैन शास्त्रमां वर्णवेल छुपी सिलाइथी ते काप सीवी लीधो. बाद ते माणसोने एवुं जणावी मोकल्युं के आ तूंबडुं फाड्या तोड्या वगर तमारे तेमांथी रत्न कहाडी लेवुं; पण तेओ आ वैनयिकी बुद्धिथी विकल होवाथी ए बाबत करी शक्या नहि.

(मूळ गाथानो अर्थ.)—अगदद्वारमां विषनो कर पाड्यो. त्यां कोइ वैद्य एक यव जेटलुं विष लाव्यो. तेणे ते

(व्याख्या)—अगद इति द्वारपरामर्शः—कश्चिद्राजा निजपुरोपरोधकारि परचक्रं स्वदेशांतः प्राप्तं श्रुत्वान्योपायेन तन्निग्रहमनीक्षमाणस्तदागममार्गजलानि विषेण नाशयितुमिच्छुः सर्वत्र नगरे—विसकरत्ति—विषकरं पातितवान्—यथा पंचपलकादिप्रमाणं सर्वेणापि मम भांडागारे विषमुपढौकनीयं.

जवमित्तत्ति—यवमात्रं—विज्जत्ति—कश्चिद्वैद्यो विषमानीतवान्. कुपितश्च राजा—" किंत्वमेवं मदाज्ञानंगीकारी संवृत्त इति? " स त्वाह—" तुच्छस्याप्यस्य देव—सयवेहत्ति—शतवेधः आत्मनः शकाशात् उपलक्षणत्वात् सहस्रादिगुणवस्त्वंतरस्य च वेधः आत्मना परिणमयितुं शक्तिः समस्ति. "—ततो—हत्थिवीमंसत्ति—हस्तिनि क्षीणायुषि पुच्छैकवालोत्पाटनं कृत्वा तस्मिन्नियोजनेन विमर्शः कृतः—

सोगणुं काम करी शके एम सूचव्युं. पछी तेनी हाथी पर अजमायस करी. मंत्रिए ते विषनुं प्रतिपक्षी औषध परखी जोयुं अने ते वाद ते विष वापर्युं. १६

(व्याख्या)—अगदशब्दथी द्वार याद कर्युं छे. त्यां वात ए छे के कोइक राजाए पोताना नगरने घालनार शत्रुनुं लश्कर पोताना देशमां आवतुं सांभळी बीजा कोइ उपायथी तेने हराववानुं नहि सूजतां तेने एम विचार थयो के जे रस्ते ते आवे छे त्यांना पाणी विषवाळा करी नाखवा, तेथी तेणे आखा शहेरमां विषनो कर पाड्यो एटले के जणाव्युं के पांच पळ प्रमाण विष सघळा लोकोए मारा भंडारमां पहोंचतुं करवुं.

त्यारे कोइक वैद्य फक्त यव जेटलुं विष लइ आव्यो एटले राजाए गुस्से थइ तेने कह्युं के केम तें मारी आज्ञा-

ज्ञं च तद्धिषं क्रमेण हस्तिनमभिभवितुं. मंत्रिणा चोक्तं—" प्रतिपक्षोगदः एतस्य निवर्त्तकमौषधं किं किंचिदस्ति न वेति ? अस्ति चेत् प्रयुंक्त " . प्रयुक्तं च. ततो यावद्धिषेणाभिभूयते तावत् पश्चात्प्रयुक्तेनौषधेन प्रगुणीक्रियते. एवं दृष्टे विषसामर्थ्ये पश्चान्मंत्रिणा प्रयुक्तिस्तु प्रयोगः पुनर्व्यापारणलक्षणः कृतः .—अत्र च वैनयिकी बुद्धिर्यन्मंत्रिणा दृष्टसामर्थ्यं विषं व्यापारितमिति.

(मूलगाथा)—गणियारहिए एक्कं—सुकोससड्ढित्ति थूलन्नद्दगुणे, रहिएण अंबलुंबी—सिद्धत्थगणट्टदुक्करया. ॥ १७ ॥

(स्थूलिभद्र कथा)—इह नवमनंदकाले—कप्पगवंसंमि आसि सुपसिद्धो,

नो अस्वीकार कर्यो ? ते बोल्यो के महाराज, ए थोडुं छे छतां एनाथी सोगणी वक्के हजार के लाखगणी बीजी वस्तुने ए पोताना जेवी करी शके छे. त्यारे राजाए एक बुड्ढा हाथीना पूछडाना वाळ उखेडावी ते विष त्यां लगावी जोयुं. हवे विष त्यांथी चढीने हाथीना शरीरमां व्यापवा लाग्युं त्यारे ते राजाना मंत्रीए कह्युं के ए विषनो पाछो उतार करे एवुं औषध कोइ छे के केम ? अने ते होय तो ते पण वापरी बताव. त्यारे वैदे ते वापरी बताव्युं तो जेटला भागमां विष चढ्युं हतुं तेटलामां ते औषधथी पाछुं उतरी शक्युं. त्यारे ते विष मंत्रीए वापरवा मांड्युं. इहां मंत्रीए ते विषनुं सामर्थ्य शुं छे ते तपासी जोइने ते वापर्युं ए वैनयिकी बुद्धि जाणवी.

(मूळ गाथानो अर्थ.)—गणिका तथा रथिकनुं मळी एक उदाहरण.त्यां सुकोशा गणिका श्रद्धावंत थइ स्थूलभद्रना गुण प्रशंसती. त्यारे रथिके आंबानी लुंबी कापी बतावी एटले सुकोशाए सरसवना ढगला पर नाच करी बताव्यो एमां शी दुष्करता छे ? १७

सयसंखावच्चत्तण—गुणाउ सयडालगो मंती. ॥ १ ॥ तस्स पहाणकलत्तंमि—उप्पि जाया सुया सुयवरिठा, सिरियूलभद्दनामो—पढमो बीओय सिरिउ त्ति. ॥ २ ॥ जक्खा य जक्खदिन्ना—भूया तह भूयदिन्नया नाम, सेणा वेणा रेणा—तह सत्त इमाउ धूयाओ. ॥ ३ ॥ एया कमेण इग–दो–तिगाहिं वाराहिं सुणियगहणसहा, जिणवयणरत्तचित्तो—एगंतेणेव सडालो. ॥ ४ ॥ तत्थत्थि वररुई नाम—माहणो सयलविप्पकुलकेऊ, अठसएण सिलोगाण—नंद मुवचरइ सो निच्चं. ॥ ५ ॥ राया सगडालमुहं—पासइ मिछत्त मिय मुणंतो सो, जा न पसंसइ एसो वि—तस्स न पसन्नओ होइ. ॥ ६ ॥ तब्भज्जाए सेवापरायणो सो तओ इढं जाओ, भणिओ तीइ किमत्थं—तमेव माराहिसि ममंति ? ॥ ७ ॥ परिकहिए सब्भावे—तह काहं जह

(स्यूलभद्रनी कथा)—नवमा नंदना वखते कल्पकमंत्रीना वंशमां सो संताननना कारणे तेवा नामथी प्रसिद्ध थएलो शकटाळ नामे मंत्री हतो. १ तेनी मुख्य स्त्रीना पेटथी बे विद्यावंत पुत्रो थया हता जेमांना एकनुं नाम स्यूलभद्र हतुं अने बीजानुं नाम श्रीयक हतुं. २ तेमज यक्षा, यक्षदिन्ना, भूता, भूतदिन्ना, सेणा, वेणा अने रेणा ए नामनी सात दीकरीओ हती. ३ तेओ अनुक्रमे एक बे त्रण वगेरे वार जे सांभळती ते ग्रहण करी लेती; अने शकटाळ मंत्री पोते एकांते जिनवचनमां रक्त हतो. ४ त्यां सौ ब्राह्मणोमां पंकायलो वररुचि नामे ब्राह्मण हतो. ते हमेश एक सो आठ नवा श्लोक रची नंदराजाने अर्पण करतो. ५ त्यारे शकडाल तरफ जोवा लाग्यो, पण तेणे तेने मिथ्यात्व भरेलुं धारी प्रशंस्युं नहि एटले राजा तेना उपर तुषमान नहि थयो. ६ त्यारे वररुचि ते मंत्रीनी स्त्रीनी सेवा करवा लाग्यो एटले तेणीए पूछ्युं के तुं शा माटे मने सेवे छे ? ७ वररुचिए खरी हकीकत कही जणावी त्यारे ते बोली के हुं हवे तेम करीश के जे-

पसंनए एसो, इय पडिवज्जिय तीए—भणिओ मंती किमत्थं तं—॥ ८ ॥ न पसंस-
सि वररुइकव्व—साह एसोवि मिच्छमिय काउं, अइनिब्बंधुवरुद्धो—महिलाए कारि-
ओ करणिं. ॥ ९ ॥ अन्नदिणे रायपुरो—वररुइणा गाहियं नियं कव्वं, पासट्ठिओ
अमच्चो—भणाइ अन्नो सुपढियं ति. ॥ १० ॥ तो अट्ठसयं रन्ना—दीनाराणं दवा-
वियं तस्स, जाया पइदिवसंचिय—एत्तियमित्ता य से वित्ती. ॥ ११ ॥ अत्थक्खयं प-
लोइय—भणिय ममच्चेण देव किं लिंगस्स, देहित्ति तेण वुत्तं—सलाहिओ जं तए
एसो. ॥ १२ ॥ भणिय ममच्चेण मए—अविणट्ठं पढइ पुव्वकव्वंति, सलहिय सेयस्स
तओ—रन्ना पुट्ठो कहं एवं. ॥ १३ ॥ तेणं भणियं मज्झं—धूयावि पढंति पढइ जं
एसो, उचियसमएण पत्तो—पढणत्थं सो निवस्संते,—॥ १४ ॥ जवणियअंतरियाए

थी ए प्रशंसा करशे. एम कबूलात आपीने तेणे पोताना स्वामिने कह्युं के तमे वररुचिना काव्यनी केम प्रशंसा नथी कर-
ता ? तकरारे कह्युं के तेम करतां मिथ्यात्व लागे—त्यारे तेनी स्त्रीए बहु आग्रह करी तेम करवा हा पडावी. ८—
९ नवता दिने राजानी आगळ वररुचिए पोतानुं काव्य कही बतायुं एटले पासे बेठेलो ते मंत्री बोल्यो के ठीक
कह्युं. १० ते परथी राजाए तेने एकसो आठ सोनामहोर अपावी अने ए रीते दररोज तेने एटलुं इनाम मळवा लाग्युं. ११
आम पैसानो व्यय थतो जोइ मंत्रीए राजाने कह्युं के एने आटलुं इनाम शा माटे आपो छो ? राजाए कह्युं के तें एने वखा-
ण्यो माटे आपुं छुं १२ मंत्रीए कह्युं के में तो ते जूनां काव्य बरोबर बोली बतावे छे तेटला खातर तेने वखाण्यो हतो.
त्यारे राजाए पूछ्युं के एम केम होय ? १३ मंत्रीए जणाव्युं के जे ए बोले छे ते तो मारी दीकरीओने पण आवडे छे.
बाद उचित समये वररुचि राजा पासे काव्य बोलवा आव्यो त्यारे राजाए मंत्रीनी साते दीकरीओने पडदामां त्यां बेसा-

—धरिया मंतीए सत्त धूयाओ, जक्खाइ पढमवाराइ—अहिगयं से पढंतस्स. ॥ १५ ॥ तो तीए नरवइणो—पुरओ अविणट्ठमुच्चरंतीए, वाराहिं दोहिं अहियं—बीआए तीइ वुत्तंमि. ॥ १६ ॥ तइयाए वाराए—तइयाए अहिगयं च वुत्तं च, एवं वारावुड्ढीइ—सेसगाहिंपि जवलद्धं. ॥ १७ ॥ तो कुविएणं रन्ना—दुवारमवि वारियं वररुइस्स, पच्छा सो गंगाए—जंतपओगेण दीणारे.—॥ १८ ॥ ठविऊण देइ नणइ य थुइतुट्ठा देइ मज्झ गंगत्ति, कालंतरेण रन्ना—सोउं सिट्ठं अमच्चस्स. ॥ १९ ॥ तेणं नणियं जइ गह—पुरो इमा देइ ता वरं देव, वच्चामो य पन्नाए—गंगाए पक्खिसुयं रन्ना. ॥ २० ॥ अह मंतिणा वियाले—पच्छइओ नियनरो समाइट्ठो, गंगाए पच्छन्नो—अच्छसु जं वररुई सलिले.—॥ २१ ॥ किंपुण ठवइ तं गिण्हिऊण मह नइ ज-

मी. त्यां यक्षाए पहेली वार सांजळीने ते शीखी लीधुं. १४—१५ तेथी ते राजा आगळ बरोबर बोली गइ एटले तेणीए ते उच्चार्यथी बे वारमां बीजीने ते कंठस्थ थइ गयुं. १६ त्रण वार सांजळीने त्रीजीए शीखीने ते कही बताव्युं. एम दरेक वार वधतां सघळीओए ते कही बताव्युं. १७ त्यारे राजा वररुचि पर एटलो गुस्से थयो के तेने दरवाजामां पण पेसवानी मनाइ करी. त्यारे वररुचिए गंगामां यंत्र गोठवी त्यां सोनाम्होरो राखीने ते लइ कहेवा लाग्यो के मारी स्तुतिथी गंगाजी प्रसन्न थइ मने सोनाम्होरो आपे छे. ते वातनी कोइक वखते राजाने खबर पडी एटले तेणे मंत्रीने ते वात कही. १८—१९ मंत्रीए कह्युं के जो मारी सामे गंगा तने ते आपे तो खरी वात. माटे काले प्रभात आपणे गंगा पर चालवुं. ते वात राजाए कबूल राखी. २० पछी मंत्रीए सांज पोताना खातरीदार माणसने कह्युं के गंगा पर छानो बेठो रहे

वणसेज्जाणि, गंतूण नरेण तओ—आणीया दम्मपोट्टलिया. ॥ २२ ॥ गोसंमि गओ नंदो—मंतीए पञोइओ थुणंतो सो, गंगजलंमि निबुड्डो—थुइअवसाणे य तं जंतं—
॥ २३ ॥ करचरणेहिं सुचिरंपि—घट्टियं जाव वियरइ न किंपि, अच्चंतविलक्खत्तण—मणुपत्तो वररुई ताव. ॥ २४ ॥ पायकिया सयडालेण—राइणो सा य दम्मपोट्टलिया, हसिओ य राइणा सो—कुविओ मंतिस्स उवरि तओ. ॥ २५ ॥ आरद्धो छिद्दाइं—पलोएउं अन्नया य सयडालो, वीवाहं काउमणो—सिरियस्स नरिंदजोग्गाइं.—
॥ २६ ॥ विविहाइं आउहाइं—पच्छन्नं कारवेइ एयं च, उवयरियाए कहियं—वररुइणो मंतिदासीए. ॥ २७ ॥ पावियछिद्देण तओ—तेणं डिंभाणि मोयगे दाउं, सिंगाडयतियचच्चर—गणेसुं पाढियाणि इमं. ॥ २८ ॥ एउ लोउ न वियाणइ—जं स-

अने त्यां पाणीमां वररुचि जे कंइ गावे ते तुं लइने अहीं मने पहोंचाडजे. ते प्रमाणे ते माणसे जइ त्यांथी सोनामहोरनी पोटली आणी. २१—२२ प्रभात थतां नंदराजा मंत्री साथे त्यां जइ पहोंच्यो. त्यां वररुचिने पाणीमां रही स्तुति करतो तेमणे जोयो. बाद स्तुतिना अंते पेला यंत्रने वररुचिए हाथ पगवडे खूब हलाव्युं पण तेणे कंइ आप्युं नहि, त्यारे वररुचि नीचे जोइ रह्यो (?)

नि नारे झंखवाणो पडी गयो. २३—२४ ए टांकणे शकडालमंत्रीए ते पोटली राजा आगळ खुल्ली करी, तेथी राजा वररुचि तरफ खूब हसवा लाग्यो; तेथी वररुचि मंत्री उपर बहु क्रोध भरायो. २५ एथी ते तेना छिद्रो जोवा लाग्यो. एवामां शकडालमंत्रीए पोताना श्रीयक नामना पुत्रनो विवाह करवाना इरादाथी राजाने योग्य एवा अनेक हथियारो छानी रीते बनाववा मांड्या. २६ आ वातनी खबर वररुचिए मंत्रीनी दासीने कंइ चीज वस्तु आपी वश करीने तेणीनी पासेथी मेळवी. २७ आ छिद्र पामीने तेणे नाना छोकराओने लाडु आपीने शृंगाटक—त्रिक—चोक वगेरे नगरना स्थानोमां

गमाश्रु करसइ—नंदु राउ मारेवि णु—सिरियउ रज्जि ठवेसइ. ॥ २९ ॥ सुणियं च इमं रन्ना—चरेहिं पेहावियं च मंतिगिहं, दठ्ठूण कीरमाणाइं—आउहाइं पभूया- इं—॥ ३० ॥ सिठ्ठं रन्नो तेहिं—कुविओ राया ठिओ पराहुत्तो, सेवागयस्स चल- णेसु—निवडमाणस्स मंतिस्स. ॥ ३१ ॥ कुवियंति निवं नाउं—सयडालो मंदिरंमि गंतूण, कहइ सिरियस्स पुत्तय—राया मारेइ सव्वाइं.—॥ ३२॥ जइ न मरिस्सामि अहं,—ता रन्नो पाय निवडियं वछ, मं मारिज्जासि तुमं—ठगिया सिरिएण ता सवणा. ॥ ३३ ॥ सयडालेणं जणियं—तालउडे भक्खियंमि मइ पुव्वं, निवपायपडणकाले— मारेज्जसु तं गयासंको. ॥ ३४ ॥ सव्वविणाससंकियमणेण पडिसुय मिमं च सिरिएण, तहमेव पायपडियस्स—सीस मेयस्स छिन्नंति. ॥ ३५ ॥ हाहा अहो अकज्जंति—जंपि-

नीचेनो दोहरो बोलातो कराव्यो. २८ आ दुनिया जाणे नहि—करशे जे शकडाल; नंदराजने मारीने—श्रियाने राज्य देनार. २९ आ दोहरो राजाए पण सांभळ्यो एटले तेणे छाना माणसो मोकली मंत्रीना घरनी तपास करावी. तेमणे त्यां अनेक जातना हथियारो घमाता जोइ ते वात राजाने कही, तेथी ज्यारे मंत्री सलाम भरवा राजाना पगे पड्यो त्यारे राजा पूठ फेरवी उभो रह्यो. ३०—३१ आ रीते राजाने कोपेलो जाणीने शकडाल मंत्रीए घेर जइ श्रीयक नामना पुत्रने कह्युं के ह कार, जो हुं नहि मरुं तो राजा आपण बधाने मरावशे, माटे हुं ज्यारे राजाना पगे पडुं के तुं मने मारी नाखजे. त्यारे श्रीयके कान आडा हाथ धर्या. ३२—३३ त्यारे शकडाले कह्युं के हुं पहेलांथीज तालपुट विष खाइने पछी राजाने पगे पडुं ते वखते तुं शंका लाव्या वगर मने मारजे. ३४ त्यारे बधाना नाशनी बीके श्रीयके ते वात कबूल राखीने ते ज पगे पडता बापनुं माथुं उडाव्युं. ३५ ते जोइ हाहाकार करतो नंदराजा उठी बोलवा लाग्यो के आ तें शुं अकार्य कर्युं ?

रो भणिओ य नंदनिवो, नणिओ सिरिएण तआ–देव अलं वाउलत्तेण. ॥ ३६ ॥
जो तुम्हं पडिकूलो–तेणं पिउणावि नत्थि मे कज्जं, तो सो रन्ना वुत्तो–पडिवज्जसु मं-
तिपयविं ति. ॥ ३७ ॥ तेणं नणियं जाया–जेट्ठो मे थूलभद्द नामो त्ति, वारसमं से
वरिसं–कोसाइ गिहे वसंतस्स. ॥ ३८ ॥ सद्दाविओ य रन्ना–वुत्तो य जयाहि संतिप-
यविं ति, तेणं नणियं चिंतेमि–राइणा पेसिओ ताहे. ॥ ३९॥ सन्निहियअसोगवणे–
तत्थय सो चिंतिउं समाढत्तो, परकज्जवावडाणं–के नोगा किंच सोक्खं ति. ॥ ४० ॥
नोगेहिंवि गंतव्वं–नरए वस्सं अहो तदेतेहिं, इय चिंतिऊण वेरग्ग–मुवगओ नवविरत्त-
मणो. ॥ ४१ ॥ काऊण पंचमुट्ठिय—लोयं सयमेव गहियमुणिवेसो, गंतूणं नणइ
निवं–इमं मए चिंतियं राय. ॥ ४२ ॥ उववूहिओ निवेणं–नीहरिओ मंदिराउ स

त्यारे श्रीयके जवाब वाल्यो के महाराज, तमे कंइ व्याकुळ न थाओ. ३६ केमके जे तमने प्रतिकूळ रहे ते बापनुं पण मने काम नथी. त्यारे राजाए तेने कह्युं के ठीक, त्यारे हवे तुं मंत्रीनी पदवी स्वीकार. ३७ श्रीयके कह्युं के मारो मोटो भाइ स्थूलभद्र आज बार वर्ष थया कोशा नामनी वेश्याना घरे रहे छे. ३८ त्यारे राजाए तेने बोलावीने कह्युं के तुं मंत्रीपदवी स्वीकार. स्थूलभद्रे कह्युं के हुं विचार करी जवाब आपुं. त्यारे राजाए तेने नजीकनी अशोकवाडीमां मोकलाव्यो. त्यां ते विचारवा लाग्यो के पराया काममां मशगुल रहेनारने शी मोज अने शुं सुख होय ? ३९—४० वळी भोगथी अवश्य नरके जवुं पडे तेम छे, माटे हवे ए भोगथी दूर रहेवुं सारुं छे एम चिंतवी ते ज्यारे वैराग्य पामीने संसारथी विरक्त थयो. ४१ तेणे पंचमुष्टि लोच करीने पोतानी मेळे मुनिनो वेष लइ राजा पासे जइने कह्युं के हे राजन्, में आ विचार्युं छे. ४२ राजाए तेना वखाण कर्या पछी ते महात्मा घर छोडी चालता थया, त्यारे राजाए तेने कह्युं के गणिकाना घरे थइने

महप्पा, नगिणयाइ गिहे जाहि त्ति पेहिओ राइणा जंतो. ॥ ४३ ॥ दट्ठूण मयकले-वरदुग्गंधगहेण वच्चमाणं तं, रन्ना नायं निविन्नकामभोगो धुवमिमो त्ति. ॥ ४४ ॥ ठविओ पयंसि सिरिओ—इयरो संभूयविजयपामूले, पव्वइओ अच्चुग्गं—करेइ विविहं तवच्चरणं. ॥ ४५ ॥ अह विहरंतो कइयावि—पाडलीपुत्त आगओ एसो, संभूयवि-जयगुरुणा—सद्धिं सद्धम्मनिरयमणो. ॥ ४६ ॥ पत्ते वासारत्ते—तिन्नि मुणी तिव्वभव-भउव्विग्गा, गिण्हंति कमेणेए—अभिग्गहे उग्गहसरूवे. ॥ ४७ ॥ एगो सीहगुहाए—अन्नो दारुणविसाहिवसहीए, कूवफलयंमि अन्नो—चाउम्मासं कयाणसणा. ॥ ४८ ॥ भयवं स थूलभद्दो—कोसागेहंमि अतवकम्मरओ, निवसिस्सामि स गुरुणा—अहिग-यसत्तेण गुन्नाओ. ॥ ४९ ॥ संपत्तो घरदारे—तुट्ठाए उट्ठिऊण जह भग्गो—एसो परी-

जाओ. ४३ त्यारे ते मरेला कलेवरवाळा दुर्गंधी रस्ते चालतो थयो. ते जोइने राजाए जाण्युं के खरेखर ए कामभोगथी विरक्त थयो लागे छे. ४४ तेथी राजाए श्रीयकने मंत्रीपदे स्थाप्यो अने स्थूलभद्र संभूतविजय आचार्य पासे प्रव्रजित थइ उग्र तपश्चरण करवा लाग्यो. ४५ हव एकवेळा विहारक्रमे ते पोताना गुरुनी साथे पाटलीपुत्रमां आव्यो, छतां तेनुं मन तो खरेखरा धर्ममांज रहेलुं हतुं. ४६ त्या वर्षाकाळ आवतां भवना आकरा भयथी उद्विग्न थएला त्रण मुनिओए नीचे मुजब त्रण दुष्कर अभिग्रह लीधा. ४७ एके सिंहनी गुफामां रहेवानो, बीजाए भयंकर सर्पना दर उपर उभा रहेवानो अने त्रीजाए कूवाना आरोट पर उभा रहेवानो. एम अणसणपूर्वक चार मास उभा रहेवाना अभिग्रह लीधा. ४८ त्यारे भगवान् थूलभद्रे एवो अभिग्रह लेवा मांड्यो के कंइ पण तप कर्या वगर कोशाना घरमां मारे रहेवुं. तेनी हिम्मतनी गुरुने खातरी होवाथी तेणे तेने रजा आपी. ४९ ते कोशाना घरना दरवाजे आव्यो एटले तेणीए धार्युं के

सहेहिं—नाणाहि जं काह मेत्ताहे. ॥ ५० ॥ पुव्वोवज्झुत्तरइमंदिरंमि उज्झाणमज्झयारंसि, वेसु निवासं, दिन्नो—जुत्तो सव्वेहिंवि रसेहिं. ॥ ५१ ॥ एहाणगुणसुद्धसरीरा—सव्वालंकारभूसिया रम्मो, पत्ता दीवयहत्था—कयरय सप्पाणमिछंती ॥ ५२ ॥ चाडुपट्टपारद्धा—सा तं रसिउं न सक्किया जाव. नत्तो पसंतमोहा—सुयधम्मा साविया जाया. ॥ ५३ ॥ रायाभिओगविरहेण—कोइ पुरिसो मए न रमियव्वो, इय सा अबंभविरती—पडिवज्जइ वज्जियवियारा. ॥ ५४ ॥ उवलभियसीहसप्पा—चउमासोवासिया गुरुसयासे, कयकूवफलावासो—तइओवि मुणी समायाओ. ॥ ५५ ॥ अब्भुट्ठिया मणागं—डुक्करकारीए सागयं तुब्भं, आभासिया कया जा—गुरुणा ता सूलभद्दोवि— ॥ ५६ ॥ गणियागिहंमि पढमासरंति गिण्हिय सगुन्नमाहारं, भुंजंतो रम्मतणू— स-

ए परीषहोथी जय पमो लागे छे, तेथी तेणीए जल्दी जल्दी थइने कह्युं के हवे जे बोलो ते करुं. ५० स्थूलभद्रे कह्युं के मारे तारी चित्रशालामां चोमासुं विश्राम करवो छे, ते मुजब तेणीए तेने त्यां उतारो आप्यो अने तेने सर्व रस वाळा खाद्य रांध्या. ५१ हवे कोशा वेश्या न्हाइ धोइ पवित्र थइ सर्व अलंकार सजी हाथमां दीवो लइ पोताने कृतार्थ करवा इच्छती थकी अनेक कामचाळा करवा लागी, पण तेने रमाडवा समर्थ थइ शकी नहि, त्यारे तेनो मोह शांत पडतां धर्म सांभळी ते श्राविका थइ. ५२—५३ तेणीए एवी प्रतिज्ञा लीधी के राजाभियोग शिवाय मारे कोइ पुरुष साथे रमवुं नहि. एम तेणीए विकारभाव मूकीने अब्रह्मनी विरति स्वीकारी. ५४ हवे चारे मासना उपवासवाळा ते साधुओ सिंह तथा सर्पने उपाश्रयवाळी गुरु पासे आव्या तथा त्रीजो कूवाना कांठा पर रहेनार साधु पण आवी पहोंच्यो. ५५ तेमना सामे जरा उठीने "तमे दुष्कर काम करी भले पधार्या"—एम गुरुए कह्युं, एट-

माहिगुणओ य संपन्नो– ॥ ५७ ॥ अइदुक्करदुक्करकारयस्स अब्भुट्ठिऊण सप्पणयं, जणियं गुरुणा तव सागयं ति ते मउरं पत्ता. ॥ ५८ ॥ तिन्निवि जणंति खमगा–पेच्छह सूरी कहं इमं जणइ, एस अमच्चस्स सुओ–अतवोवि पसंसिओ एवं. ॥ ५९ ॥ मणसज्झवियरोसेण–पाउसंमी समागए इइए, सीहगुहाखमगेणं–जणिओ सूरी अहं जामि. ॥ ६० ॥ उवकोसाइ गिहंमी-कोसावेसाइ बहुगजणणीए, तं बोहेमि किमूणो कोवि इहं थूलभद्दाओ. ॥ ६१ ॥ उवउत्तेणं गुरुणा—णायं पारं न पाविही एसो, पडिसिद्धो तहवि गओ–तो मग्गियलद्धवसहीओ.–॥ ६२ ॥ लग्गो वासारत्तं–काउं सा जद्दिगा सुणइ धम्मं, अइफारसरीरा जूसिया य अविभूसिया चेव. ॥ ६३ ॥ सो मयणगोझगो इव–जलणसमीवे तओ पलोयंतो, जाओ अईवदढजाववज्जिओ फु-

लामां थूलभद्र पण त्यां आवी पहोंच्या. ५६ ते भगवान् गणिकाना घरे दररोज मनपसंद आहार लइ खाता एटले शरीरे ताजा थइ आव्या हता अने तेम छतां समाधि साचवीने आव्या हता. ५७ तेना सामे गुरुए बरोबर ऊठी प्रीतिपूर्वक कह्युं के अति दुष्करमां दुष्करना करनार एवा तमे भले पधार्या. ते सांभळी पेला त्रणे साधुने मत्सर प्राप्त थयो. ५८ ते त्रणे कहेवा लाग्या के जुवो, आपणा गुरु एने केवुं कहे छे ? ए मंत्रीनो दीकरो छे एटले वगर तपे पण एना आ रीते गुरु वखाण करे छे. ५९ हवे मनमां रोष राखीने बीजुं चोमासुं आवतां सिंहगुफावासी तपस्वी मुनिए गुरुने कह्युं के हुं कोशानी नानी बेन उपकोशाना घरे जाउं छुं अने तेने प्रतिबोधी आवीश एटले खबर पडशे के थूलभद्र करता कोइ ऊतरतो नथी. ६०—६१ गुरुए उपयोग आपी जोतां तेमने जणायुं के आ कंइ पार पहोंचे तेम नथी, एटले तेमणे तेने ना पाडी. तेम छतां ते चालतो थयो अने त्यां तेणे वसति मेळवी. ६२ त्यां ते चोमासुं पसार करवा मांड्यो. ते उपकोशा भद्रिक होवा-

रियकामसरो. ॥ ६४ ॥ वज्जियलज्जो अज्झोववष्णुओ मग्गिउं तओ लग्गो, निउण-मईए तीए—जणिओ किं देसि तं अम्हं ? ॥ ६५ ॥ सो जणइ नत्थि मे किंचि—जेण ग्गिंथओ अहं जद्दे, तहविय जणसु किमिच्छसि—लक्खं, निसुयं च तेणेवं— ॥ ६६ ॥ नेवालजणवए जह—राया पुव्वस्स साहुणो देइ, कंबलरयणं सयसहस्समोल्ल मेसो तहिं जाइ. ॥ ६७ ॥ लद्धं तं तत्थ महापमाण वंसस्स नूमियं मज्झं, ठइयं छिद्दे जह नं—न कोवि किंचिवि वियाणाइ. ॥ ६८ ॥ नगिणप्पाओ जा एइ—एक्कओ विस्समं अकुणमाणो, ता कत्थविय पएसे—सउणो वासइ जहा लक्खो. ॥ ६९ ॥ एसो इ-हेति बुत्तं—चोरवई सउणरुयवियारं तु, जा पासइ ता पासइ—एक्कंचिय इंतयं समणं. ॥ ७० ॥ अवहीरियसउणरुओ—जा चिट्ठइ ता पुणोवि वाहरइ, हत्थगओ सयसह-

थी धर्म सांजळवा आवती. ते शरीरे एवी रूपवान हती के वगर सणगारे पण सणगार सज्या होय तेवी लागती. ६३ हवे ते साधु आगना पासे जेम मीणनो गोळो गळे तेम तेणीने जोतो थको पोतानी दृढता मूकीने कामबाणथी वींधायो ६४ ते शरम मेलीने तेना ऊपर आशक थइ तेनी मागणी करवा लाग्यो त्यारे डाही गणिकाए कह्युं के तु मने शुं आपी श ? ६५ ते बोल्यो के हे भद्रे हुं निर्गंथ छु एटले मारी पासे कंइ नथी, छतां तुं शुं मागे छे ते कहे तेणीए कह्युं के एक लाख त्यारे ते साधुए एम सांजळ्युं हतुं के—६६ नेपाळदेशमां त्यानो राजा नवा साधुने लाखनी कीमतनु कंबलरत्न आ-पे छे तेथी त्यां गयो. ६७ त्यां तेणे ते मेळवी एक मोटी वांसनी लाकडीने वचेथी पोकल करी तेना विवरमां ते घर्युं के जेथी तेने कोइ जाणी शके नहि. ६८ पछी पोते लगजग नागा जेवो थइने क्यां पण वीसामो नहि लेतां पाछो वळ्यो ते-वामां अमुक स्थळे आवतां त्यां पक्षी बोलवा लाग्या के इहां लाख आवे छे, त्यारे चोरोनो सरदार ते पक्षीना अवाजने

सो—एसो तुज्झं अइगओ त्ति. ॥ ७१ ॥ संजायकोउगेणं—भणिओ चोराहिवेण सो गंतुं, जं इत्थमत्थि तत्तं—नयरहिओ तं कहेसु तुमं. ॥ ७२ ॥ कहियं कंबलरयणं—वंसंतो एत्थ अत्थि तो मुक्को, आगंतु गणियाए—समप्पई जाव ता तीए— ॥ ७३ ॥ गिहखालंमि निहित्तं—निरिक्खमाणस्स तक्खणं तस्स, भणइ तओ कह मेयं—रयण मिणं मइलियं तुमए ? ॥ ७४ ॥ मुद्धोसि तुमं सोयसि—ज मेय मप्पाणगं नउण समण, एयाओवि विलीणं—रयणसमो मं जमणुसरसि. ॥ ७५ ॥ अइनिप्पिवास मेसो—तीए पडिचोइओ पडिनियत्तो, इच्छामो अणुसट्ठिं—भणिय गओ गुरुसमीवंमि. ॥ ७६ ॥ अइदुक्करदुक्करकारगो त्ति एवं स्थूलभद्दमुणी, चिरपरिचिया असब्भी—सम्मं अहियासिया इमिणा. ॥ ७७ ॥ तुमए अदिट्ठदोसा—जवकोसा जा-

तपासवा लाग्यो तेवामां एक श्रमण आवतो तेने देखायो. ६९—७० ते परथी ते सरदारे ते अवाजनी अवज्ञा करी एटले पक्षी फरीने बोलवा लाग्या के तमारा हाथे आवेलुं लाख चाली गयुं छे. ७१ त्यारे चोरोना सरदारे कौतक पामी तेनी पाछळ जइ कह्युं के तारी पासे जे सार होय ते तुं वगर बीके कही दे. ७२ ते साधुए कह्युं के आ वांसनी अंदर कंबलरत्न छुपावेल छे एम तेणे साचुं कही दीधुं तेथी तेणे तेने जतो मेल्यो एटले तेणे आवीने ते गणिकाने सोंप्युं के तरत तेणीए तेनी रूबरूमांज ते घरनी खाळमां नांखी दीधुं, त्यारे साधु बोल्यो के तें आ रत्न केम मेलुं कर्युं. ७३—७४ गणिकाए जवाब वाळ्यो के अरे श्रमण, तुं मुग्ध लागे छे के जेथी तुं आ कंबलनी चिंता करे छे अने तुं पोते रत्न समान होइ मारी पाछळ पडी पोताने आ कंबल करतां वधु मलिन करे छे तेनो विचारज करतो नथी. ७५ आ रीते तेणीए तेने कंइ पण पिपासा राख्या वगर झाटक्यो एटले ते समजीने बोल्यो के तारी शीखामण वाजबी छे एम कही ते गु-

इया कच्चया य, निव्वडिओ पवन्नो—पडित्तं चित्तसारंति. ॥ ७ठ ॥ कइयाइ नंदरन्ना—दिन्ना तुट्ठेण नियगरहियस्स, कोसा सा पुण निच्चं—पसंसए थूलभद्दमुणिं. ॥ ७ए ॥ कह अन्नो तह इत्थीपरीसहं जिणइ जिय मयणपसरो, जो न ममाओ तिलतुसतिभागमित्तंपि संखुद्धो. ॥ ठ० ॥ संतिच्चिय अच्छेरगकरा जणा नूरिणो इहं लोए, नहु थूलभद्दसरिसो नूओ होउच्चिय कयाइ. ॥ ठ१ ॥ एवं तग्गुणगउरवखित्तमणा उवचरेइ तं न तहा, नियसोहग्गुप्पायणहेउं सा अन्नया नीया—॥ ठ२ ॥ नियविन्नाणस्सयदंसणत्थ मावाससोगवणियाए, आरोवियधणुदंडो—अंबगपिंडीइ कंडाणि— ॥ ठ३ ॥ अणुपुंखं लायंतो—ता खिवइ जाव नियकरब्नासं, आणीया खिविहीणं—छिन्ना सा अद्धचंदेण. ॥ ठ४ ॥ सा नणइ सिक्खियस्सेह—डुक्करं किंव पेच्छसि म-

रु पासे आव्या. ७६ आथी गुरुए तेने ठपको दीधो के ते स्यूलभद्रमुनि, खरेखर अति दुष्कर दुष्करनो करनार हतो के जेणे चिरपरिचित अने अणश्रद्धालु कोशाने एमी रीते प्रतिबोधित करी. ७७ अने तें तो दोष जोया विनानी अने व्रत पालती उपकोशाने जइ मागणी करी. एम गुरुए तेनी निर्भछना करी एटले तेणे चित्त आप्या पूर्वक प्रायश्चित्त स्वीकार्युं. ७ठ वाद एक वेळा तुष्ट थएला नंदराजाए पोताना रथिकने कोशा आपी. हवे ते कोशा तेनी आगळ हमेशां स्यूलभद्रमुनिना वखाण करती हती. ७ए ते आ रीते के स्यूलभद्र के जे माराथी तिलना तुष जेटलो पण क्षोभ पाम्यो नहि तो तेना माफक बीजो कोण कामना जोरने हठावी स्त्रीनो परीषह जीती. शके? ठ०—आ जगतमां आश्चर्यकारक घणा लोको छे पण स्यूलभद्रना जेवो कोइ थयो नथी अने कदापि थशे पण नहि. ठ१ एम ते कोशा तेना गुणना गौरवमां मन राखती थकी ते रथिकनी काजी दरकार करती न हती ते पोतानुं सौभाग्य थवा खातर तथा पोतानी हुंशयारी

मंपि; नट्टविहिं तो सरिसवरासिट्ठियसूइयग्गेसु. ॥ ८५ ॥ कयनट्टा हरिसमुही—नणाइ तो कस्स मच्छरो गुणिसु ? तंचिय मणे वहंती—तह जणइ सुनासियं एयं. ॥ ८६ ॥ न डुक्करं अंबयलुंबि तोमणं—न डुक्करं नच्चय सिक्खियाए, तं डुक्करं तंच महाणुभावं,—जं सो मुणी पमयवणंमि वुत्थो. ॥ ८७ ॥ पुव्वं सव्वंचिय से—निवेइयं तीइ तस्स वुत्तंतं, तच्चरियाक्खित्तमणो—विहिओ सो सावगो परमो. ॥ ८८ ॥ जाओ य तम्मि समए—डुक्कालो दोय दसय वरिसाणि, सव्वो साहुसमूहो—गओ तओ जलहितीरेसु. ८९ तदुवरमे सो पुणरवि—पाडलिपुत्ते समागओ विहिया—संघेणं सुयविसया—चिंता किं कस्स अत्थित्ति. ॥ ९० ॥ जं जस्स आसि पासे—उद्देसज्झयणमाइ संघडियं—तं सव्वं एक्कारय अंगाइं तहेव ठवियाइं. ॥ ९१ ॥ परिकम्मं सु-

बतावबा खातर तेने अशोक वाडीमां लइ गयो. त्यां तेणे धनुष्य बाण चमावीने केरीओनी जुमखीने दरेक बाण लगावीने पोताना हाथनी नजीक आणी तेने अर्द्धचंद्र (वांकिया) नामना हथियारथी कापी लीधी. ८२—८३—८४ त्यारे कोश्या बोली के शीखेलाने इहां शुं दुष्कर होय ? दाखलातरीके मारुं नाच जुवो एम कही तेणे सरसवना ढगला पर सूइओ गोठवी तेमनी अणीओ ऊपर नाच करी बताव्यो. ८५ एम ते नाच करी हसते मुखे बोली के भला माणस गुणवंतो ऊपर कोने मत्सर होय ? एम बोलीने तेनेज मनमां ताकीने नीचे मुजब सुभाषित कहेवा लागी. ८६ " शीखेलाने आंबानी लूंब तोडवी अगर नाच करवुं ए कांइ पण दुष्कर नथी, पण जे ते मुनि मदजनक वनमां अडग रह्या ते ज दुष्कर अने मोटुं काम छे. " ८७ पछी तेणीए तेने पूर्वनी सघळी हकीकत संभळावी स्थूलभद्रना चरित्र तरफ तेनुं मन खेंची तेने परम श्रावक कर्यो. ८८ आ वखते बार वर्षी दुकाल पड्यो तेथी सघळा साधुओ दरिया कांठे जइ रह्या.

त्ताइ—पुव्वगयं मूलिया णुओगो य, दिट्ठीवाओ इय पंचहावि नो अत्थि तत्थित्ति. ॥ ९२ ॥ नेपालवत्तिणीए—विसए किल नद्दबाहवो गुरवो, विहरंति दिट्ठिवायं—धरति इय चिंतियं तेण. ॥ ९३ ॥ संघेण साहुजुयलं—पहियं तस्संतिए पवाएहि—दट्ठीवायं जं संति अत्थिणो साहुणो एत्थ. ॥ ९४ ॥ कहियंमि संघकज्जे—पम्नि-न्नणिय तेण संपइ पयट्टो— साहेउ महापाणज्झाणं—पुव्विंच दुक्कालो—॥ ९५ ॥ जं आसि पयट्टो तेण—नाह मेयंमि उवरए संते—दाहामि वायणं जं—न जाइ एयंमि सा दाउं. ॥९६॥ आगम्म तेण संघस्स साहियं तो पुणोवि संघाम्नो, तस्संतिए विसड्ढो—संधाणं जा न मन्नेइ—॥९७॥ को तस्स होइ दंमो—एयं नणाविओ नणइ तस्स, उग्घाम्नणं तओ सो—तुब्भंचेवा गया मिणं ति. ॥ ९८ ॥ मा उग्घाम्नह पेसह—साहुणो ज

८९ बाद दुकाल मटतां तेओ फरीने पाटलीपुतनगरमां आव्या एटले सर्वे मळीने तपाश करी के कोना पासे कयुं कयुं श्रुत रह्युं छे. ९० हवे जेना पासे जे कांइ उद्देश तया अध्ययन याद हता ते सर्वे एकठा करी अग्यार अंग स्थापित कर्यां. ९१ परंतु परिकर्म –सूत्र—पूर्वगत—चूलिका अने अनुयोग एम पांच प्रकारनो दृष्टिवाद त्यां कोइ पासे नहि मळ्यो. ९२ त्यारे संघे विचार्युं के नेपाळदेशमां भद्रबाहुस्वामि विचरे छे तेमना पासे ते छे. ९३ तेथी तेणे तेमना पासे बे साधु मोकली कहेवराव्युं के तमारे इहां आवी दृष्टिवादनी वाचना देवी जोइशे केमके इहां तेना अर्थी साधुओ रहेला ९४ आए संघनुं काम फरमावतां भद्रबाहुस्वामिए उत्तर वाळयो के में हमणा महाप्राण नामे ध्यान साधवा मांड्युं के पूर्वे दुकाल प्रवर्त्ततो हतो तेथी हवे ए ध्यान पूरुं नहि थाय त्यां लगण वाचना आपीश नहि केमके ए काम-शकाय तेम नथी. ९५—९६ त्यारे ते बे साधुए संघसमीपे आवीने संघने ते वात कही एटले फरीने सं-

जुया सुमेहाए, दिवसेण सत्त पडिपुच्छणाउ दाहामि जा झाणं. ॥ ९९ ॥ एगा भिक्खाउ समागयस्स दिवसद्धकालवेलाए, बीया, तइया सण्णावोसग्गे कालवेलाए—॥ १०० ॥ दिवसस्स भावणीओ—चउत्थिगा वासए कए तिन्नि, तो थूलभद्दपमुहा—मेहावीणं—सया पंच—॥ १०१ ॥ पत्ता तस्स समीवे—पडिपुच्छाए य वायणं लिंती, एक्कासि दोहिं तिहिंवा न तरंतवधारिउं जाहे. ॥ १०२ ॥ ताहे ते ऊसरिया—एक्कं मोत्तूण थूलभद्दमुणिं थोवावसेसए सइ झाणे अह पुच्छिओ गुरुणा. ॥ १०३ ॥ न किलिम्मसि तं स भणइ—कोवि भगवं ममं किलामेत्ति, तो खमसु किंचि कालं—तो दिवसं वायए सव्वं. ॥ १०४ ॥ पुच्छइ सूरिं भयवं—कित्तियमित्तं मए इहाधीयं, अठासी सुत्ताइं—उवमा मेरूसरिसवेहिं. ॥ १०५ ॥ एयकालाओ ऊणगेण काले-

घे तेना आगळ बे साधु मोकलावी कहेवराव्युं के जे संघनी आण न माने तेनो शो दंड लागे भद्रबाहुए तेमने कह्युं के " उद्घाटन " नामे प्रायश्चित्त लागे त्यारे तेमणे जणाव्युं के ते तमोनेज लागु थयुं छे. ९७—९८ भद्रबाहुए कह्युं के मने संघबाहेर नहि करो, पण जे सारी बुद्धिवाळा साधुओ होय तेमने इहां मोकलावो तो हुं मारा ध्यान पर्यंत दररोज सातवार तेमनी पृच्छाना जवाब आपतो रहीश. ९९ एक प्रतिपृच्छा भिक्षाए जतां आवतां करीश, बीजी मध्यान्हनी काळवेळाए करीश, त्रीजी संज्ञाए जतां करीश, चोथी सांजनी काळ वेळाए करीश, अने बाकीनी त्रण सूती वखते करीश. त्यारे संघे स्थूलभद्र वगेरे पांचसो बुद्धिमान् साधुओने त्यां मोकलाव्या. तेओ तेमना पासेथी प्रतिपृच्छावडे वाचना लेवा लाग्या. तेओमांना घणाओ एक वार बे वार तथा त्रण वार सांभळतां पण अवधारी शक्या नहि.—१००—१०१—१०२ त्यारे तेओ एक स्थूलभद्रमुनिने त्यां मेलीने बीजा बधा पाछा वळ्या. हवे ध्याननो थोडो काळ बाकी रह्यो ह-

ण पढिहिसि सुहेण, सव्वंपि दिठ्ठिवायं—पढिया य कमेण दसपुव्वा. ॥ १०६ ॥ वत्थूहिं दोहिं ऊणा—सथूलजद्दा गुरू विहरमाणा; पत्ता पाडलिपुत्तं—ठिया य बाहिं तदुज्जाणे. ॥ १०७ ॥ जक्खाइयाउ सत्तवि—जइणीओ थूलजद्दसाहुस्स, गुरुणो जेठ्ठज्जस्सय—समागया वंदणनिमित्तं. ॥१०८॥ वंदिय गुरूं कहिं सो—जिट्ठज्जो पुच्छिओ गुरू जणइ, देउलियाइ इमाए—गुणमाणो चिठ्ठइ पहिट्ठो. ॥१०९॥ आयंतीओ दठ्ठूण ताउ इड्ढीइ दंसण निमित्तं, सीहागारो जाओ—सो तं ताओ नियच्छित्ता— ॥ ११० ॥ नठ्ठाउ गुरुसयासे—जणंति सीहेण खइयगो जंते, जाया, गुरुणा जणिया-उ थूलजद्दो न सो सीहो. ॥ १११ ॥ पडियागया य वंदिय ठिया तओ पुच्छिया कुसलवत्तं, कहियं जह पव्वइओ सिरिओ पव्वोववासेणं. ॥ ११२ ॥ काराविएण अम्हे-

तो त्यारे गुरुए तेने पूछ्युं के—१०३ तुं थाकतो तो नथीने ? स्थूळजद्रे कह्युं के हे जगवन् मने कोइ थकवनार नथी. त्यारे गुरुए कह्युं के थोडो वखत सबुरी राख तो पछी तने आखो दिवस वाचना आपीश. १०४ स्थूलजद्रे पूछ्युं के जगवन् हुं एमांथी केटलुं शीखी रह्यो छुं ? गुरुए कह्युं के तुं हजु अठ्यासी सूत्र शीख्यो छे एटले सरसव जेटलुं थयुं छे अने हजी मेरु जेटलुं बाकी छे. १०५ छतां एटलुं शीखतां जे तने वखत लाग्यो छे तेनां करतां थोडा वखतमांज तुं ते सघळो दृष्टिवाद सुखे शीखी रहीश. बाद तेणे अनुक्रमे बे वस्तु ऊणा दश पूर्व जणी लीधा. एवामां तेने साथे लइ तेना गुरु विहरता विहरता पाटलिपुत्रमां आवी बाहेरना उद्यानमां ऊतर्या. १०६—१०७ त्यारे स्थूलजद्रमुनिनी यक्षा वगेरे सात बेनो ते गुरु तथा ते मोटा जाइने वांदवा माटे त्यां आवी. १०८ तेओए गुरुने वांदीने पूछ्युं के अमारो मोटो जाइ क्यां छे ? गुरुए कह्युं के पेली देव कुलिका (देवडी) मां आनंदित मने सूत्रपाठ गणतो थको रहेलो छे. १०९ हवे पोतानी

हिं—सो मओ अमरवास मणुपत्तो, सिरिवज्झाज्जीयाहिं—तवेण जह देवया खित्ता. ॥ ११३ ॥ नीया महाविदेहं—जह पुट्ठा तत्थ तित्थरायाणो, दो अज्झयणा णीया—एगं जावण विमुत्तवरं. ॥ ११४ ॥ एवं वंदित्ताणं गयाउ बीए विणंमि संपत्ते, नवसुत्तद्देसत्थं—उवट्ठिओ सो, न उद्दिसइ—॥ ११५ ॥ जा सूरी, को हेउ—तमजोगोसि त्ति तेणिमं नायं, कह्ले कओ पमाओ—जो सो एवं वियंभेइ. ॥ ११६ ॥ न पुणो काहामि भणइ—सूरिणो जइवि नो तुमं कुणसि, अन्ने काहिंति तओ—किह्लेण काहिंचि पभिवन्नं—॥ ११७ ॥ चत्तारि उवरिमाइं पुव्वाणि पढाविउं नवण अन्नं—पाठिज्जसु, वोच्छिन्ना तो तंमि डुवेय वत्थूणि. ॥ ११८ ॥ दसमस्स अंतिमाइं—सेसं अणुमन्नियं सुयं सव्वं, इह गणियारहियाणं—पगयं वेणइयबुद्धीए. ॥११९॥ ७

वेनोने त्यां आवती जोइने तेमने पोतानी ऋद्धि शक्ति वताववा माटे स्थूलभद्रे सिंहनो आकार धारण कर्यो तेने जोइने तेओ गुरु पासे नाशी जइ कहेवा लागी के हे पूज्य, अमारा भाइने तो सिंह खाइ गयो लागे छे. गुरुए कह्युं के जे सिंह छे ते खरेखर सिंह नथी पण स्थूलभद्रज छे. ११०—१११ त्यारे तेओ त्यां पाछी आवीने तेने वांदीने त्यां रही त्यारे स्थूलभद्रे तेमने कुशळवार्त्ता पूछी एटले तेमणे कह्युं के श्रीयके दीक्षा लीधी. बाद अमे पर्वना दिवसे तेने उपवास कराव्यो तेथी ते मरीने स्वर्गवास पाम्यो तेथी तेना घातथी मने अमे तप करी शासन देवीने बोलावी. तेणी यक्षाने महाविदेह लइ गइ. यक्षाए त्यां रहेला तीर्थकरने ते वात पूछी. वळतां तेणी त्यांथी भावना तथा विमुक्ति नामे बे अध्ययन लइ आवी. ११२—११३—११४ एवी रीते ते बेनो तेने वांदीने स्वस्थाने गइ. बाद बीजा दिने स्थूलभद्र नवा श्रुतनो उद्देश लेवा गुरु पासे ऊभो रह्यो, छतां गुरुए उद्देश्युं नहि, त्यारे तेणे कारण पूछतां गुरुए कह्युं के तुं अयोग्य छे. ते उपरथी

अथ गाथाक्षरार्थः—गणिका तथा रथिक उक्तरूपः—एकं ज्ञातं न पुन द्वे.—सुकोससड्ढित्ति—सुकोशा प्रागेव या कोशानामतयोक्ता—श्राद्धा जिनशासनातिरूढातिशयश्रद्धाना—इति अस्माद्धेतोः स्थूलन्नद्रगुणान्निरंतरं प्रशंसंतीं तां दृष्ट्वा रथिकेन तदाक्षेपार्थं आम्रलुंबी प्रागुक्तप्रकारेण छिन्ना . तयाच—सिद्धत्थगरासित्ति—सिद्धार्थकराशिस्थितसूच्यग्रेषु नाटयमादर्शितं, नणितं च शिक्षितस्य का दुःकरतेति. (९)

(मूळगाथा)—सीता साम्मी कज्जं—दीहं तण गद्ध कुंचपइवाणी, देहायरियपणामण—अवहंमि तहा सुसिस्साणं. ॥ १० ॥

(व्याख्या)—सीया साम्मी दीहं च तणं अवसव्वयं च कुंचासोत्तिद्धारे केनचि-

णे जाणी लीधुं के काले जे प्रमाद कर्यो तेनुं आ फळ मळ्युं छे. ११५—११६ स्थूलन्नद्रे कहुं के फरीने एम नहि करुं, त्यारे गुरुए कहुं के जो के तुं फरी नहि करे तो पण वीजा करशे. वाद वहु कालावाला करतां तेमणे उपरला चारपूर्व नणाववा कबूल्युं पण कहुं के ते वीजाने नहि नणाववा तेथी ते तथा दशमा पूर्वनी छेल्ली वे वस्तु स्थूलन्नद्रना साथे विच्छेद पाम्या. ते शिवाय वाकीनुं सघळुं श्रुत वीजाने नणाववा अनुज्ञा आपी. इहां गणिका तथा रथिकनी वैनयिकी बुद्धि प्रस्तुत जाणवी. ११७—११८—११९

(कथा समाप्त थइ.)

हवे गाथानो अक्षरार्थ करे छे.—गणिका तथा रथिक जे कथामां वर्णव्यो छे ते मळीने एक उदाहरण गणवुं, नहि के वे सुकोशा एटले पूर्वे जे कोशा नामे कहेली छे ते श्राद्धा एटले जिनशासनमां अतिशय श्रद्धावाळी यइ ए हेतु-

त् कलाचार्येण क्वचिन्नगरे कस्यचिन्नरनायकस्य पुत्रा अतिसन्मानदानगृहीतेन ले-ख्यादिकाःकला ग्राहिताः—संजातश्च कालेनातिभूयान् द्रव्यसंयोगः—लुब्धश्च राजा इच्छति तं व्यपरोपयितुं तत्र. ज्ञातंच पुत्रैः—

जनेता चोपनेता च—यस्तु विद्यां प्रयच्छति, अन्नदाता भयत्राता—पंचैते-पितरः स्मृताः ॥

इति नीतिमद्वाक्यं कृतज्ञतयानुस्मरद्भिः—परिभावितंच तैः (ग्रं. ३०००) यथा केनाप्युपायेन अक्षतमेवामुमतःस्थानान्निःसारयामः . ततो यदा जेमितुमागतोसौ तदा स्नानशाटिकां याचमानस्तैरूक्तः शुष्कायामपि शाटिकायां यथा शीता शिशिरा शाटी—किमुक्तं भवति—शीतकार्यं ते इति . तथा दीर्घं तृणं द्वाराभिमु-

थी ते स्थूलभद्रना गुणोने हमेशा प्रशंसती ते जोइने रथिक तेने खेंचवा माटे आंबानी लूंब पूर्वे कहेली रीते कापी अने कोशाए सरसवनी राशि उपर सूइओ गोठवी तेनी अणीओ उपर नाच करी बताव्युं, अने कह्युं के शीखेलाने शुं दुष्कर छे.

(मूळगाथानो अर्थ)—ठंडी साडी तथा लांबु घास बतावी जणाव्युं के चालतो था अने क्रूंजने प्रतीप एटले आडी उतारी जणाव्युं के दरबार नाराज छे एम लेखाचार्यने हजु मारवामां आव्यो न हतो तेटलामां तेने ते चीजो आपीने जणाव्युं ते रीते एवा सुशिष्योनी वैनयकी बुद्धि जाणवी. १८

ठंडी साडी—लांबुं—घास—अने अवळी कुंज ए द्वारमां कोइ कळाचार्यो कोइ नगरमां कोइक राजाना दीकराओने भारे सन्मान तथा दानथी खुश थइने लेख्य वगेरे कळाओ शीखाडी. बाद वखत जतां तेना पासे घणो पैसो,

खं दत्वा सूचयंति यथा दीर्घं मार्गं प्रतिपद्यस्वेति. तथा क्रौंचस्य मंगलार्थं स्नानस्य प्रदक्षिणतयोत्तार्यमाणस्य प्राक् तदानीं पइवाणित्ति प्रतीपरूपतयोत्तारणं कृतं —प्रतिकूलं संप्रति ते राजकुलमिति लेख्याचार्यप्रणामनं कलाचार्यस्य शाट्यादीनां समर्पणं कुर्वतां अवधे अव्यापादनेऽपि राज्ञा वधेऽक्रियमाणे इत्यर्थः—तथा शीता शाटी इत्यादिना प्रकारेण सुशिष्याणां कृतज्ञतया सुंदरांतेवासित्वात्तं प्राप्तानां वैनयकी बुद्धिःसंपन्ना. निःसृतश्चासावनुपहत एव. (७)

(मूळगाथा)—णिव्वोदे पोसियजार—खुरकए रत्तितिसियदगमरणे, उजूण णावियपुत्ता—णाए तयगोणसुलद्धो . ॥ १ए ॥

(व्याख्या)—निव्वोदे इति नीव्रोदकेज्ञाततयोपन्यस्ते—पोसियजारखुरकए

जमा थयो तेथी राजाए लोभाइने तेने मारवानी इच्छा करी ते वातनी ते राजाना पुत्रोने खबर पडी त्यारे तेमणे विचार्युं के जन्म आपनार, जनोइ आपनार, विद्या आपनार, अन्न आपनार, तथा भयथी बचावनार ए पांच बाप कहेवाय छे एम कृतज्ञपणाथी नीतिनुं वाक्य याद करीने तेमणे विचार्युं के कोइ पण उपाये एने वगर जोखमायो आ ठेकाणेथी रवाने करवो. तेथी ते ज्यारे जमवा आव्यो अने तेणे नावानुं कपडुं माग्युं त्यारे ते सूकेलुं होवा छतां तेमणे कह्युं के साडी तो थंडी छे एटले के तने थंडुं पाडवानुं छे तथा दरवाजानी सामे लांबुं घास धरी सूचव्युं के लांबे रस्ते रवाने थइ जा, तथा पूर्वे मंगळ माटे न्हाएलाने सवळी बाजु उतारवामां आवता कौंच (कुंजना आकारना कलश) ने अवळुं उतार्युं.

ते वडे सूचव्युं के दरबारनी तारा पर इतराजी छे. आ रीते ते कळाचार्यने हजी राजाए मार्यो न हतो तेटला-

इति—कयाचित् प्रोषितभर्तृकया जारो विटो गृहे प्रवेशितः—तस्यच क्षुरकर्म नखाद्युद्धरणादि कृतं . कृतेच रत्तितिसियदगमरणे इति—रात्रौ तृषितःसन्नुदकं सन्निहितान्यजलाभावे नीव्रसलिलं पायितस्तत्क्षणादेव मरणं तस्य संपन्नं . निश्चिते च तत्र उज्झनं बहिर्देवकुलिकायास्त्यागः कृतः .

दृष्टश्च लोकेन गवेषितश्च कथमसौ मृत इति . सद्भावं चालभमानेन तत्र केनचित् सप्रतिभेनोक्तं—" नवमेवास्य क्षुरकर्म नापितविहितं च दृश्यते " ततो लोकेनाहूय नापितानां पृच्छा कृता—"केनास्य क्षुरकर्म विहितमिति ? " कथितंचैकेन यथा मयामुकस्यगेहे इति . ज्ञाते च पृष्टा सा किं त्वया मारित इति ? साचाह " तृषितो मया नीव्रोदकमेव केवलं पायितः " . ततो लोकस्य नीव्रस्थितत्वग्विषगोनसोप-

मां शाम्ती वगेरे आपनार ते सुशिष्यो कृतज्ञपणाथी सारा शिष्य थया. तेमनी ए बुद्धि ते वैनयिकी जाणवी. एम ते कुमार जोखमायो त्यांथी नीकळी शक्यो

(मूळगाथानो अर्थ)—प्रोषितभर्तृका स्त्रीए जारने क्षौरकर्म (हजामत) करावी. राते तरस लागतां नेवतुं पाणी आप्युं तेथी तेनुं मरण थतां तेने बाहेर फेंकाव्यो. बाद हजामोने पूछतां खबर पडी के त्वचामां विषवाळा गोनस सर्पना झेरथी ते मरण पाम्यो छे. १ए

(व्याख्या)—नीव्रोदरेकना उदाहरण पेटे ए वात छे के कोइक स्त्रीनो भर्त्ता परदेश जतां तेणीए कोइ जारने घरमां बोलावी तेनी हजामत वगेरे करावी. बाद राते तेने तरस लागतां बीजुं पाणी नहि मळवाथी तेणीए तेने नेवानु पाणी पीवराव्युं. तेथी ते तरतज मरण पाम्यो. ते मरी गयो छे एम खातरी थतां तेणीए तेने देवकुलिकानी बाहेर नांखी दीधो.

लब्धिः प्रस्तुतबुद्धिप्रभावात संपन्ना. (७)

(मूलगाथा)—गोणे णेत्तुच्छरणं–घोडगजीहाइपरूणमो उवरिं, मंदमई ववहारे—रिउत्ति मंतिस्स अणुकंपा. ॥ २० ॥

(व्याख्या)—गोणेत्ति गोणो घोरुगपडणं च रुक्खाओ इतिद्वारपरामर्शः —तत्र क्वचिद् ग्रामे केनचिन्मंदभाग्येन निर्वाहोपायांतरमन्यदलभमानेन मित्राद् याचितैर्बलीवर्दैर्हलं वाहयितुमारब्धं विकालेच तेनानीयैते गावो मित्रस्य संबंधिनि गोवटके क्षिप्ताः .

तच्च मित्रं तदा जेमितुमारब्धं. लज्जया चासौ नोपसर्पितः . दृष्टाश्च तेन ते वाटके क्षिप्यमाणाः—अकृततयश्च निर्गतास्ते ततो हृताश्चौरैः—गृहीतश्च मंदभाग्यो

तेनुं मरुडुं लोकोना जोवामां आवतां तेमणे तपाश करी के ए केम मरेलो छे ? पण तेनो कंइ पत्तो न मळ्यो. एवामां त्यां कोइक बुद्धिमान् माणसें कह्युं के आनी नवीज हजामत थएली देखाय छे, ते परथी लोकोए हजामोने बोलावी पूछ्युं के आनी हजामत कोणे करी छे? त्यारे एके कह्युं के मे एनी हजामत अमुक ठेकाणे करी छे. ते जाणी लोकोए ते स्त्रीने पूछ्युं केम तें एने मार्यो ? ते स्त्री बोली के एने तरस लागतां मे एने फक्त नेवानुं पाणीज पीवराव्युं छे. तेथी लोकोए तपास करतां त्यां विषमय चामडीवाळो गोनस सर्प मळी आव्यो एम प्रस्तुत बुद्धिना प्रभावथी सघळो पत्तो लाग्यो.

(मूळगाथानो अर्थ)—गोणना द्वारमां मंदमतिनो इन्साफ करतां मंत्रीने तेने सरल जाणी मंत्रीने तेना पर अनुकंपा आवतां तेणे एवो न्याय आप्यो के मालेकनी आंखो कढावी' घोडावाळानी जीभ कपावी अने मंदमतिना ऊ-

मित्रेण यथा समर्पय मे बलीवर्दान्. असमर्पयमाणश्च राजकुले नेतुमारब्धो यावत्तावत् प्रतिपथेन तुरंगमारूढः एकः पुरुषः समागच्छति सच कथंचित्तुरगेण नूमौ पातितः पलायमानश्च तुरग आहत आहतेति तदुक्ते तेन मंदनाग्येन कशादिना ताम्तिः क्वचिन्मर्मणि मृतश्च तत्क्षणादेव—गृहीतश्च तुरंगस्वामिनाप्यसौ. संपन्नश्च गलतामेव विकालः उषिताश्च नगरबहिरेव. तत्रच केचिन्नटा आवासिताः संति—सुप्ताश्च ते सर्वेपि. चिंतितं च तेन रात्रौ मम नास्ति जीवतो मोक्ष इति वरं आत्मा उद्बद्धः इति परिनाव्य दंम्खिंमेन वटवृक्षशाखायां आत्मा उल्लंबितः—साच दंम्दुर्बला ऋटित्येव त्रुटिता. पतितेन च तेन नटमत्तरको मारितः—तैरप्यसौ गृहीतः नीतिकरणे

पर कोइ नटे उपरथी पम्युं. ९०

व्याख्या.—गोण शब्दथी द्वार संनार्यु छे. त्यां आ वात ए छे के के कोइ गाममां कोइक नाग्यहीन माणसे पोतानो निर्वाह चलाववानो कोइ बीजो उपाय नहि सूजतां मित्र पासेथी बेल मागीने खेम्वा मांम्युं. सांजे तेणे ते बेलो ते मित्रना वामामां बांध्या.

ते मित्र ते वखते जमतो हतो तेथी पेलो मंदनाग्य शरमना लीधे तेना पासे नहि गयो छतां तेणे बेल वाम्मामां पूर्या ते तेणे जोया हता. तो पण तेनी संनाळ न लीधी एटले तेओ बाहेर नीकळ्या एटले चोरोए हरण कर्या. त्यारे ते मित्रे पेला मंदनाग्यने पकम्यो के मारा बेल मने सोंप. ते ज्यारे नहि सोंपी शक्यो त्यारे तेणे तेने दरबारमां खेंचवा मांड्यो. एवामां सामेथी घोमा पर चम्रीने कोइ माणस आवतो हतो तेने घोमाए कोइक रीते जमीन पर पाम्री दीधो अने घोमो नाशवा माड्यो त्यारे तेणे बूम करी के "मारो मारो" ते परथी मंदनाग्ये घोमाने ताजाणो एवा ठेकाणे मा-

कथितं च यथावृत्तं तैः—पृष्टोसावमात्येन प्रतिपन्नश्च सर्व. ततो मंत्रिणा निः-प्रतिनोयमिति महतीमनुकंपां तं प्रति कुर्वता प्रस्तुतबुद्धिप्रज्ञावान्न्यायो दृष्टः—यथा—नेतुध्धरणमिति—बलीवर्दविषये नेत्रोध्धरणं लोचनोत्पाटः कर्त्तव्यः—अयमभिप्रायः—बलीवर्दस्वामी मंदभाग्यश्च भणितौ मंत्रिणा यथा द्वावपि भवंतावपराधिनौ. तत एकस्य बलीवर्दान् वाटके प्रक्षिप्यमाणान् दृष्टवतो नेत्रोत्पाटनं द्वितीयस्य च वाचा बलीवर्दानसमर्पितवतो बलीवर्दप्रदानं दंड इति.—घोडगजीहाइ इति—अनेन घोटको दातव्यः, घोटकस्वामिनश्च घोटकमहताहतेति भणितवतो जिह्वायाः छेदो दंडः—पडणमो उवरित्ति—नटमहत्तरकश्च तथा कश्चित् दंडीखंडेनात्मानमुद्बध्य पतनमस्योपरि करोतु. एवं मंदभाग्यो व्यपहारे प्रवृत्ते—ऋजुरिति कृत्वा मंत्रिणानुकं-

र्यो के ते तरतज मरण पाम्यो. तेथी घोडाना मालके पण तेने पकड्यो तेओ बधा दरबार तरफ चालता थया तेटलामां रात पडी एटले तेओ नगरना बाहेरज रह्या. त्यां केटलाक नट उतरेला हता. हवे तेओ बधा सूइ रह्या त्यारे मंदभाग्ये विचार्युं के जीवतां तो मारो छूटको नथी माटे मारे फांसो खावो सारो छे एम विचारीने दोरीना कटकाथी पोताने वडनी डाळमां लटकतो कर्यो पण ते दोरी नबळी होवाथी झट दइ त्रूटी पडी तेथी ते मंदभाग्य नटना सरदार पर पड्यो एटले ते सरदार मरण पाम्यो तेथी तेमणे पण तेने पकडीने कचेरीमां ऊभो कर्यो.

हवे तेमणे बनेली हकीकत कही संभळावी. ते परथी मंत्रिए मंदभाग्यने पूछतां तेणे ते सघळी कबूल राखी. त्यारे आ निर्बुद्धि छे एम जाणीने मंत्रिने तेना उपर बहु दया आवतां तेणे आ प्रमाणे न्याय आप्यो त्यां बेलनी बाबतमां आंखो काढवी ठरावी एटले के बेलना धणी अने मंदभाग्यने मंत्रिए कह्युं के तमे बन्ने गुन्हेगार छो, माटे जेणे बेलो-

मित्रेण यथा समर्पय मे बलीवर्दान्. असमर्पयमाणश्च राजकुले नेतुमारब्धो यावत्तावत् प्रतिपथेन तुरंगमारूढः एकः पुरुषः समागच्छति सच कथंचित्तुरगेण भूमौ पातितः पलायमानश्च तुरग आहत आहतेति तदुक्ते तेन मंदभाग्येन कशादिना ताडितः क्वचिन्मर्मणि मृतश्च तत्क्षणादेव—गृहीतश्च तुरंगस्वामिनाप्यसौ. संपन्नश्च गच्छतामेव विकालः उषिताश्च नगरबहिरेव. तत्रच केचिन्नटा आवासिताः संति—सुप्ताश्च ते सर्वेपि. चिंतितं च तेन रात्रौ मम नास्ति जीवतो मोक्ष इति वरं आत्मा उद्बद्धः इति परिभाव्य दंडिखंडेन वटवृक्षशाखायां आत्मा उल्लंबितः—साच दंडिर्दुर्बला झटित्येव त्रुटिता. पतितेन च तेन नटमत्तरको मारितः—तैरप्यसौ गृहीतः नीतिकरणे

पर कोइ नटे ऊपरथी पडयुं. २०

व्यायख्या.—गोण शब्दथी द्वार संभार्यु छे. त्यां आ वात ए छे के के कोइ गाममां कोइक भाग्यहीन माणसे पोतानो निर्वाह चलाववानो कोइ बीजो उपाय नहि सूझतां मित्र पासेथी बेल मागीने खेडवा मांड्युं. सांजे तेणे ते बेलो ते मित्रना वाडामां बांध्या.

ते मित्र ते वखते जमतो हतो तेथी पेलो मंदभाग्य शरमना लीधे तेना पासे नहि गयो छतां तेणे बेल वाडामां पूर्या ते तेणे जोया हता. तो पण तेनी संभाळ न लीधी एटले तेओ बाहेर नीकळ्या एटले चोरोए हरण कर्या. त्यारे ते मित्रे पेला मंदभाग्यने पकड्यो के मारा बेल मने सोंप. ते ज्यारे नहि सोंपी शक्यो त्यारे तेणे तेने दरबारमां खेंचवा मांड्यो. एवामां सामेथी घोडा पर चडीने कोइ माणस आवतो हतो तेने घोडाए कोइक रीते जमीन पर पाडी दीधो अने घोडो नाशवा माड्यो त्यारे तेणे बूम करी के "मारो मारो" ते परथी मंदभाग्ये घोडाने ताजणो एवा ठेकाणे मा-

कथितं च यथावृत्तं तैः—पृष्टोसावमात्येन प्रतिपन्नश्च सर्वं. ततो मंत्रिणा निः-प्रतिज्ञोयमिति महतीमनुकंपां तं प्रति कुर्वता प्रस्तुतबुद्धिप्रज्ञावान्न्यायो दृष्टः—यथा—नेतुद्धरणमिति—बलीवर्दविषये नेत्रोद्धरणं लोचनोत्पाटः कर्त्तव्यः—अयमत्रिप्रायः—बलीवर्दस्वामी मंदजाग्यश्च जणितौ मंत्रिणा यथा द्वावपि जवंतावपराधिनौ. तत एकस्य बलीवर्दान् वाटके प्रक्षिप्यमाणान् दृष्टवतो नेत्रोत्पाटनं द्वितीयस्य च वाचा बलीवर्दानसमर्पितवतो बलीवर्दप्रदानं दंरु इति.—घोमगजीहाइ इति—अनेन घोटको दातव्यः , घोटकस्वामिनश्च घोटकमहताहतेति जणितवतो जिह्वायाः छेदो दंमः—परुणमो उवरित्ति—नटमहत्तरकश्च तथा कश्चित् दंमीखंमेनात्मानमुद्बध्य पतनमस्योपरि करोतु. एवं मंदजाग्यो व्यपहारे प्रवृत्ते—ऋजुरिति कृत्वा मंत्रिणानुकं-

र्यो के ते तरतज मरण पाम्यो. तेथी घोमाना मालके पण तेने पकड्यो तेओ वधा दरवार तरफ चालता थया तेटलामां रात पमी एटले तेओ नगरना बाहेरज रह्या. त्यां केटलाक नट उतरेला हता. हवे तेओ वधा सूइ रह्या त्यारे मंदजाग्ये राते विचार्युं के जीवतां तो मारो छूटको नथी माटे मारे फांसो खावो सारो छे एम विचारीने दोरीना कटकाथी पोताने वमनी माळमां लटकतो कर्यो पण ते दोरी नवळी होवाथी झट दइ त्रूटी पमी तेथी ते मंदजाग्य नटना सरदार पर पड्यो एटले ते सरदार मरण पाम्यो तेथी तेमणे पण तेने पकमीने कचेरीमां जत्थो कर्यो.

हवे तेमणे वनेली हकीकत कही संजळावी. ते परथी मंत्रिए मंदजाग्यने पूछतां तेणे ते सघळी कबूल राखी. त्यारे आ निर्बुद्धि छे एम जाणीने मंत्रिने तेना उपर बहु दया आवतां तेणे आ प्रमाणे न्याय आप्यो त्यां बेलनी बावतमां आंखो काढवी ठरावी एटले के बेलना धणी अने मंदजाग्यने मंत्रिए कह्युं के तमे बन्ने गुन्हेगार छो, माटे जेणे बेलो-

पा संपन्ना. नपुनरसौ दंडित इति. (७)

समाप्तानि वैनयिकीबुद्धिज्ञातानि. (७)

नमः श्रुतदेवतायै.

अथ कर्मजाबुद्धिज्ञातानि—कम्मयबुद्धीएविहु—हेरण्णियमातिया तदब्भासा;
पगरिस मुवेंति तीसे—तत्तो णेयंमि बहु सिद्धी. ॥ २१ ॥

(व्याख्या)—कर्मबुद्धावपि ज्ञातान्युच्यंते. तत्रच—हेरन्नियमाइया इति—हैरण्यिकादयः सौवर्णिकप्रभृतयः कारवः—किमित्याह—तदभ्यासात् सुवर्णघटना-

ने वामामां पूगता जोया तेनी आंखो काढवी जोइए अने बीजाए जवानथी बेल सोंप्या नहि तेणे बीजा बळद लइ सोंपवा एम दंड करवामां आवे छे. वळी आ मंदभाग्ये घोडो आपवो अने घोडानो धणी के जेणे घोडाने मारो मारो पोकार्यु छे तेनी जीभ कापवी. तेमज कोइ नटनो मेतर दोरीथी पोताने बांधीने एना ऊपर पड्यो एम इन्शाफ चालतां मंदभाग्यने सरल जाणी मंत्रिने तेना पर दया लावी. तेथी तेनो दंड नहि कर्यो.

आ रीते वैनयिकी बुद्धिना दाखला पूरा थया छे.

श्रुतदेवताने नमस्कार थाओ.

हवे कर्मजा बुद्धिना उदाहरणो कहे छे.—कर्मजा बुद्धि पेठे ए उदाहरण छे के सोनारा वगेरे तेवा अभ्यासना योगे एटले के सोनुं घडवा वगेरे कामना वारंवार करवामां आवता अभ्यासथी ते बुद्धिनी अतिशय हुश्यारी मेळवे छे. तेथी तेओने सोनुं वगेरे पारखवामां झट फतेह प्राप्त थाय छे.

ते ज वात कही बतावे छे—सुवर्णनो वेपारी अभ्यासना योगे राते पण सोनाने पारखे छे तेमज खेडुत पण

दिकर्मणां पुनःपुनरनुशीलनात् प्रकर्षमतिशयमुपयांति प्रतिपद्यंते तस्याः प्रस्तुतबुद्धेस्ततः प्रकर्षात्—ज्ञेये सुवर्णादौ लघु झटित्येव सिद्धिः सुवणघटनादिगोचरा तेषां संपद्यत इति. (७)

एतदेव न्नावयितुमाह—हेरखिओ हिरन्नं—अन्नासाओ णिसिंपि जाणइ, एमेव करिसगोविहु—वीयक्खेवाति परिसुद्धं ॥ ४२ ॥

(व्याख्या)—हैरण्यिकः हिरण्यपण्यप्रधानो वणिक् हिरण्यं दीनारादिरूपकरूपं अन्यासात् पुनःपुनरनुशीलनान्निश्यपि रात्रावपि जानाति यथेदं सुवर्णं पलादिप्रमाणं च वर्त्तते—एमेवत्ति—एवमेव—करिसगोविहुत्ति—कर्षकोपि कृषीवललोकः बीजक्षेपादि बीजक्षेपं मुद्गादिबीजवपनरूप—मादिशब्दात् क्षेत्रगुणान् तुल्यांतरतया च वीजनिपातमूर्ध्वमुखमधोमुखं पार्श्वं जानाति—कीदृशमित्याह—परिशुद्धमविसंवादि—अन्यासादेव.

पूरती रीते वीज वाववा वगेरेना कामते जाणी शके छे. ४२

हैरण्यिक एटले सोनानो वेपारी दीनार वगेरे सोनाना चलणनो वारंवार ज्यत्न पायल करतो होवाथी राते पण जाणी शके छे के आ सोनुं छे अने ते आटला वजननुं छे. एज रीते खेडु माणस पण मग वगेरे वाववानुं काम तथा आदि शब्दथी खेतरना गुणो तथा सरखे अंतरे वीज वाववुं ते तथा अमुक बीज ऊंचुं मुख राखी वाववुं अमुक नीचा मुखे वाववुं अने अमुक पमखानुं राखी वाववुं ते बाबत अन्यासना लीधे चोकश रीते जाणे छे.

४१० ॥ अत्रचेदमुदाहरणं—क्वचिन्नगरे केनचित् म्लेच्छाचरिणा मलिम्लुचेन कस्यचिद्वणिक्पतेर्वेश्मनि रात्रौ क्षात्रं अष्टपत्रपद्माकारं पातितं निःकृष्टश्चार्थसारः—प्रभाते च स्वकर्मणा विस्मयमागतः स च शुचिशरीरः कृतशिष्टलोकोचितनेपथ्यश्च तद्देशमागतो जनवादं श्रोतुमारब्धः—" अहो कुशलता धृष्टता च चौरस्य य इत्थं प्राणसंकटस्थानप्रविष्टोपि व्युत्पत्तिमान् वर्त्तते. "

प्रहृष्टश्चासावतीव समागतश्चात्रांतराले कर्षकः स्कंधारोपितकर्षणोचितकुशीयूपादिसामग्रीस्तद्दर्शनार्थं. दृष्ट्वाचोक्तमनेन—" किं शिक्षितस्य दुःकरमिति " ? श्रुतं तस्करेण—रुष्टश्च मनसा—अग्नो गृहीतशस्त्रस्तदनु मार्गेण—गतः क्षेत्रं—गृह-

इहां आ उदाहरण छेः—कोइक नगरमां कोइक म्लेच्छोना आचारवाळा चोरे कोइक पैशादारना घरमां राते अष्टदल कमळना आकारे खातर पाडीने कीमती माल चोर्यो. प्रभाते पोताना ते कामथी विस्मय पामीने ते न्हाइ धोइ सारा माणसने योग्य रूपमां पहेरीने ते ठेकाणे आवी लोकोनी वाणी सांभळवा मांड्यो. लोको कहेवा लाग्या के " आ चोरी करनार चोरनी हुश्यारी अने निडरता जुवो के जेणे आवा प्राणना जोखममां पेशीने पण आवी चतुराइ बतावी छे."

तेथी ते खूब राजी थयो. एवामां त्यां खभे खोयो तथा दांता वगेरे खेडनो सामान लइने एक खेडुत ते जोवा आव्यो. तेणे जोइने कह्युं के शीखेलो करी शके तेमां शुं नवाइ छे ? ते वात चोरे सांभळी एटले गुस्से थइ हथीयार लइ तेनी पाछळ पड्यो पड्यो तेना खेतरमां पहोच्यो. त्यां तेणे तेनो चोटलो पकडी कह्युं के तने मार मारीश. खेडुते का-

तोसौ केशेषु भणितश्च यथा त्वां मारयामि—पृष्टश्च तेन निमित्तं. निवेदितंचानेनात्मकृतपद्माकारक्षात्रावज्ञारूपं. ततः कृषीवलेन—" मुंच क्षणं दर्शयामि ते कौतुक " मित्युक्त्वा पटं प्रस्तार्य स्ववचनं सत्यं कर्त्तुकामेन बीजानां मुष्टिभृता—भणितश्चौरः—" पराङ्मुखान्यधोमुखानि ऊर्ध्वमुखानि पार्श्वतोमुखानि एकाद्यंगुलांतराणि वा एतानि बीजानि क्षिपामीति वदेच्छानुरूपं. च तदिच्छानुरूपेण. तुष्टश्च चौर इति. (७)

(मूलगाथा)—एमेव कोलिगोविहु—पुंजा माणाइ अविगलं मुणइ, लोए परिवेसंतो—तुल्लं अब्भासओ देइ. ॥ २३ ॥

(व्याख्या)—एमेवत्ति एवमेव कोलिगोविहुत्ति कोलिकोपि पुंजात् सूत्रपिंडरूपात् दृष्टाद्धस्तगृहीताद्वा — मानादि—मानं तंतुप्रमाणं—आदिशब्दात्तन्निःपा-

रण पूछ्युं त्यारे तेणे पोते करेला पद्माकार खातरनी तें अवज्ञा करी ते कारण जणाव्युं. त्यारे खेडुए कह्युं के थोडी वार मने छूटो मूक तो हुं तने कौतुक बतावुं एम कहीने पोतानो बोल खरो करवा माटे तेणे कोयलो (?) जमाडी बीजनी मूठ भरीने चोरने कह्युं के तुं कहे तो एमन अवळां वावुं, कहेतो नीचा म्होंडे करी वावुं, कहे तो ऊंचा म्हों करी वावुं, कहे तो पडखाना वावुं अने कहे तो एक एक आगळना आंतरे वावुं. माटे तारी मरजी प्रमाणे वावुं तेनी इच्छा प्रमाणे तेणे ते वावी आप्या एटले चोर खुशी थइ चालतो थयो.

(मूळगाथानो अर्थ)—ए प्रमाणेज वणकर पण सूत्रनी दडीथी तेनुं बरोबर माप जाणी ल्यइ तेमज रसोइयो दोइथी परसतां थकां बधाने सरखुं पिरसे छे. २३

(व्याख्या)—एज रीते कोलिक एटले वणकर पण पुंज एटले सूत्रनी दडी जोइ अथवा हाथमां लइ ते

व्यपटप्रमाणं च अविकलमव्यभिचारि मुणति जानीते.—तथा मोए इति—दर्व्या परिवेषयन् निपुणसूपकारः तुल्यं महत्यामपि पंक्तौ समं अभ्यासतो ददाति नपुन र्हीनमधिकं वा.

(मूलगाथा)—मोत्तियउक्खेवेणं—अब्भासा कोलवालपोतणया, घम्मसगमा- रूढस्सवि—एत्तोच्चिय कूवगे धारा. ॥ २४ ॥

(व्याख्या)—मोत्तिएत्यादि—मौक्तिकोत्क्षेपेण मुक्ताफलस्योर्द्धोत्पाटनेन अभ्यासात् पुनःपुनः प्रोतनानुशीलनरूपात्—कोलवालपोतणया इति—कोलवाले शूकरकंधराकेशरूपे प्रोतना प्रवेशनं मौक्तिकप्रोतका हि सिध्दतक्रिया अधस्तादूर्ध्वमुखं क्रोडकेशं धृत्वा ऊर्ध्वमुखं मौक्तिकं क्षिपंति यथा नूनं तत्र प्रवेशं लभत इति—

ऊपरथी तेमुं मान एटले केटलां तांतणा थशे तेनुं माप तथा आदि शब्दथी तेमांथी कपडुं वणाशे ते बरोबर जाणी ल्ये छे. तेमज कोइ वखते पिरसनार हुशियार रसोयो मोटी पंगतमां पण अभ्यासना योगथी ओछुं के अधिक नहि पिरसतां सरखुंज पिरसे छे.

(मूळगाथानो अर्थ)—वळी मोतीने उछाळीने सूवरना वाळमां परोववुं तथा गाडा पर रहीने कुवामां सरखी धार पाडवी ते पण ए बुद्धियीज थाय छे. २४

मोतीने ऊंचे उछाळीने अभ्यासथी एटले वारं वार परोववाथी शुवरना गळाना वाळमां परोववुं. जे माटे मोतीने परोवनारनी एवी हथरोटी पडी रहे छे के नीचे वाळ ऊंचुं धरीने ऊपरथी मोती एवी रीते नाखी द्ये छे के खरेखर ते तेमांज पेशी जाय छे.

तथा घृतशकटारूढस्यापि निपुणवणिजः—एत्तोच्चियत्ति—अतएवाभ्यासादेव कुतपे धारा घृतप्रवाहरूपा उपरिष्टान्मुक्तवतोपि निपतति. (४)

(मूलगाथा)—पवए तरंमचागा—सम्मं तरणं नहंमि वा एयं, तुन्नाए पुण तुणह—मणायसंधिं दुयंचेव. ॥ ४९ ॥

(व्याख्या)—प्लवकस्तारकस्तरकांमत्यागान्नदीसरोवरादिजलेषु सम्यक् स्वयमब्रुवन्नेव तरणं प्लवनं नभसि वा आकाशे तत्तरणमभ्यासात् करोति. तुन्नाए इति तुन्नावायस्तुटितवस्त्रादिसंधानकारी पुनः तुणणत्ति तुणणं वस्त्रसंधानं अज्ञातसंधि परैरनुपलक्षितविभागं दुतं चैव शीघ्रमेवाभ्यासात् करोति यथा भगवता स्कंधवस्त्रस्य—

वळी घीना गामा पर चमेल हुशियार वेपारी एज अभ्यासना योगे दवामां घीनी धार उपरथी मूंके छे तो पण ते तेमांज पमे छे.

(मूळगाथानी व्याख्या)—तारुओ तरवानुं साधन पमतुं मेली बरोबर तरे छे ते अथवा आकाशमां तरे छे ते तथा संध मालम नहि पमे ते रीते झट वारमां कपमुं तुणवुं ते कर्मजा बुद्धि छे.

तारु तरवारना साधन छोमी नदी तथा तळावमां बुड्या वगर बरोबर तरे छे अगर आकाशमां पण महावराथी उमी शके छे. तेमज तूटेलुं सांधनार बीजाने सांधानी खबर नहि पमे तेम झट वस्त्रने झटवारमां सांधी द्ये छे जेमके भगवानना खांधनुं वस्त्र संधायुं हतुं ते एम वात छे के भगवान् महावीर संवच्छरीदान दइ दीक्षित थया ते वखते इंद्रे तेमना स्कंधपर

तथाहि—जगवान् महावीरः सांवत्सरिकदानपूर्वं प्रतिपन्नव्रतस्तत्कालमेव शक्रारोपितस्कंधप्रदेशदेवदूष्यःकुंमग्रामाद्बहिर्देशे विहरन् दानकालासन्निहितगृहस्थपर्यायमित्रब्राह्मणेनागत्य प्रार्थनयोपरुद्धः सन् तस्मै देवदूष्यार्द्धं ददौ. साधिकवर्षांते च सुवर्णवालुकानदीतटप्ररूढवृक्षकंटकाक्षेपात् जूमौ पपात द्वितीयमर्द्धं. गृहीतं च तत्तेनैव पृष्टलग्नेन ब्राह्मणेन. समर्पितं च खंमद्वितयमपि तुन्नवायस्य. तेनापि तथा तदज्ञात संधि योजितं यथा लब्धप्राच्यलक्षप्रमाणमूल्यं संजातमिति. (७)

(मूलगाथ)—वड्ढइरहाइदारुग-पमाणणाण महवेहदक्खत्तं, एमेव पूइयंमिवि—मसाइदले मुणेयव्वं. ॥ २६ ॥

(व्याख्या)—वर्द्धके रथकारस्य रथादिदारुकप्रमाणज्ञातं रथादेः रथशिविका-

देवदूष्य मेळ्युं तेओ कुंमग्रामथी बाहेर विहरवा लाग्या. हवे दानना वखते गेरहाजर रहेल एक ब्राह्मण जे गृहस्थपणामां जगवाननो मित्र थतो हतो तेणे जगवान्ने खूब प्रार्थना करी एटले तेमणे तेने देवदूष्यमांथी फामी अर्द्धो आप्यो. बाद कंइक जाजेरो एक वर्ष व्यतीत थतां सुवर्णवालुका नदीना कांठे जगेला जामना कांटाथी खेंचाइने बीजो जाग जमीन पर पमी गयो ते पण पूठे फरता ते ब्राह्मणे लइने बे कटका कोइ तुणनारने आप्या. तेणे ते कोइने सांधनी खबर न पमे तेम सांध्या तेथी ते प्रथम प्रमाणे लक्ष मूल्य थया.

(मूलगाथानो अर्थ) सुतार जे रथादिकना लाकमानुं माप अगाउथी जाणे छे ते तथा ते तैयार करवामां तेनी हुशियारी तेमज कंदोइने अमद वगेरेना लोटना मापनी जे खबर होय छे ते पण ए बुद्धि जाणवी. २६

(व्याख्या)—वर्द्धकि एटले रथ घमनारने रथ, पालखी, गामीनी धुंसरी वगेरे घमतां तेमां जोइता लाकमाना

यानयुग्यादेघटयितुमारब्धस्य दारुकाणां काष्टानां दलजूतानां यत् प्रमाणं तस्यापि ज्ञानं प्रपद्यतएव.—अथवेति पक्षांतरे इह रथादौ निर्मापणीये यद्दक्षत्वं निर्माणशीघ्रत्वमज्यासाद्भवति.—एमेवत्ति—एवमेव प्रागुक्तहैरण्यकादिवत् पूतिकेत्ति—कादविके माषादिदले माषमुद्गगोधूमचूर्णादौ पक्तुमिष्टजोजनयोग्ये प्रमाणज्ञानं दक्षत्वं वा मुतिणव्यं प्रस्तुतबुद्धिप्रजावादिति. (६९)

(मूलगाथा)—घरुकारपुढविमाणं—तह सुवकुत्तारणं सयराहं, चित्तकरे एवंचिय—वसातो विष्फलिहणं. च. ॥ २७ ॥

(व्याख्या)—घटकारः कुंजकारःपृथ्वीमानं घटादिदलजूतमृत्पिंरूप्रमाणं जानाति यथा इयता मृत्पिंरेन इयं घटादिनिष्पत्तिः निःपत्स्यते—तथेति समुच्चये—स-

मापतुं ज्ञान थाय छे ते अथवा तो ए रथ वगेरे जलदीमां तैयार करी आपवानी हुशियारी रहे छे ते पण अज्यासथी थाय छ. तेमज पूर्वे कहेला सोनारा वगेरेनी माफक कंदोइ पण अरुद मग के घजंनो लोट पकववा योग्य जोजनमां केटला प्रमाणनुं जोशे ते जाणी शके छे तथा जे चपलता वतावे छे ते पण आ बुद्धिनोज प्रजाव छे.

मूळगाथानो अर्थ—कुंजार घरुामां केटली माटी जोइशे ते जाणी शके छे तेमज चक्र उपरथी जराक सूकुं थतां तेने उतारी ले छे तेमज चीतारो रंग उपरथी चित्रनुं माप करी ल्ये छे तथा चिह्न एटले जीवता जेवा प्राणिनुं चित्र चितरी शके छे ते पण आ बुद्धिज छे. २७

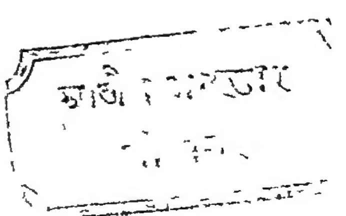
(व्याख्या) कुंजार घरुा वगेरेना माटे माटीनुं माप जाणे छे एटले के आटली माटीमांथी अमुक घरुा वगेरे

चक्कुत्तार लंति—शुष्कस्य मनाक् शोषमुपागतस्य ऽामस्य घटादेरुत्तारणं चक्रादवरकेण पृथक्करणमित्येतत्—सयराहंति—शीघ्रं करोति.—चित्तकरेएवंचियत्ति–चित्रकरोप्येवमेव वर्णात् वर्णकाद्रक्तपीतादेः सकाशात् प्रमाणं लेखनीयचित्रस्य बुध्यते, विद्धस्य जीवतइव गजतुरंगमादेर्जीवस्य लेखनं करोति प्रक्रांतबुद्धिमाहात्म्यात् चः समुच्चये. (७)

समाप्तानि कर्मजाया मतेर्ज्ञातानि, (७)

वनी शकशे ते जाणे छे, तेमज चाक परथी घमा वगेरे वासण जराक सूका थया के दोराथी कापी झट छूटा करी ल्ये-छे. वळी एज रीते चितारो पण राता पीळा वगेरे रंग उपरथी आलेखवाना चित्रनुं माप जाणी शके छे, अने विद्ध एटले जीवता होय तेवा हाथी घोमा वगेरे प्राणिओना चित्र काढे छे ते पण आ बुद्धिनोज प्रभाव छे.

आ रीते कर्मजा बुद्धिना उदाहरणो समाप्त थया छे.



प्रथम भाग समाप्त.